माणिक मोती

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब अर्थ प्रबोध

भाग—१

जगजीत कौर सलवान

हरमन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
1990

आभार

गुरुवाणी शोध के समस्त विद्वानों, टीकाकारों और व्याख्याकारों के प्रति आभार प्रकट करतो हूं जिनको महत् कृतियों से मैंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहायता प्र।प्त की है।

तेरो कीआ तुझहि किया अरपउ ।

समर्पण

गुरुवाणी के समस्त प्रेमियों, श्रद्धालुओं और जिज्ञासुओं को !

मैं मूरख की केतक बात है
कोट पराधी तरिआ रे ।
गुरु नानक जिन सुणिआ पेखिआ
से फिर गरभासि न परिआ रे ।।

वाणी—एक दृष्टि

आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब परम्परा से सिक्ख पंथ का मान्य ग्रन्थ है किन्तु इसमें जिस शाश्वत सत्य की व्याख्या की गई है वह समग्र मानव जाति के लिए आध्यात्मिक उन्नयन एवं सत्यान्वेषण की प्रेरणा का स्रोत है। इस वाणी की रचना भी उस काल में की गई जब विभिन्न संस्कृतियों, धर्म और परम्पराओं का टकराव हो रहा था और इस संघर्ष के परिणाम-स्वरूप मानव मानव के बीच परस्पर कटुता, वैमनस्य, विद्वेष, साम्प्रदायिक तनाव, जाति भेद, वर्ग भेद की कट्टरता बढ़ती जा रही थी। किन्तु इस वाणी ने जयघोष किया :

नाको हिन्दू न मुसलमान
अलहु राम के पिंड पराण

"खत्री ब्राह्मण सूद वैस उपदेसु चहुंवरना कउ सांझा"

इस सांझे उपदेश ने तत्कालीन समाज पर जादुई प्रभाव छोड़ा और समग्र भारत वासियों, विशेषतः पंजाब प्रदेश के निवासियों ने भारत के इतिहास में कुछ गौरवशाली स्वर्णिम पन्नों को जोड़ा। कारण था अपरिमेय नैतिक बल जो इस वाणी से प्राप्त हुआ। महान सिक्ख गुरुओं, मध्यकालीन अनेक प्रख्यात सन्तों और भक्तों द्वारा रचित वाणियों के इस विशाल संकलन में जहां खंडन-मंडन, वाद-विवाद की प्रक्रिया से दूर, शुद्ध रूप से एक ही सत्य का स्वरूप निरूपण किया गया है, ब्रह्म जीव, माया सृष्टि आदि दार्शनिक तत्वों का सूत्रात्मक और काव्यात्मक विवेचन किया गया है, वही नैतिक मूल्यों की प्रस्थापना द्वारा अपरिमेय आतमबल संचय की भी प्रेरणा दी गई है। नैतिक उच्चता के अभाव में धर्म की कल्पना ही निराधार है। ऐसी महान गुरुओं की धारणा रही है। "सचहु औरै सभु को उपरि सचु आचारु" और "हरि को नाम जप निरमल करम" असीम सत्य उस अकाल पुरुष के साथ तादात्म्य की स्थिति तक पहुँचने के लिए अन्तःशुद्धि साधना का प्रथम

सोपान है और अन्त:शुद्धि के लिए अनिवार्य है कि व्यक्ति के 'करम' पवित्र हो। साधना के बाह्य साधनों की अपेक्षा सत्य और न्याय के प्रति निष्ठा अधिक आवश्यक है। साधना के इस पवित्र मार्ग का अन्वेषी किसी भी वर्ग का हो, किसी भी जाति का हो, परम सत्य से एकात्म को प्राप्त कर सकता है। ऐसा निर्देश ही इस महत संकलन में दिया गया है। प्रभु प्रेम और भक्ति रस की अजस्र स्रोतस्विनी इस में प्रवाहित हो रही है। कोई भी जीवात्मा इसमें अवगाहन कर आपादमस्तक रससिक्त हो सकती है। अनमोल मणियों से परिपूर्ण यह विशाल रत्नाकर है। कोई भी जिज्ञासु डुबकी लगाकर अमूल्य मणियों का प्रकाश देख सकता है, अपनी अपनी भावनानुसार ज्ञान, प्रेम, सन्तोष, सुख, शान्ति और परम आनन्द को प्राप्त कर सकता है।

समग्र मानवता को यह अनुपम उपहार दिया पंचम गुरु अर्जुन देव जी ने। इस विशाल संकलन में सर्वाधिक वाणी उनकी अपनी रची हुई है। संकलन जैसे दुरूह कार्य को सम्पन्न कर उन्होंने अपनी दूरदर्शिता, क्रियाशीलता और साहित्यिक रुचि का परिचय दिया। यद्यपि वाणी एकत्र करने और इसके संकलन के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार के मत प्रस्तुत किए हैं तथापि इतना तो निश्चित है कि पूर्व गुरुओं की वाणी परम्परा से एक गुरु से दूसरे के पास पहुंचती रही है और गुरु गद्दी के समय गुरु अर्जुन देव जी को यह वाणी परम्परा से प्राप्त हुई है। वाणी रचना की शैली और भाव साम्यता इसका प्रमाण है। इसी प्रकार सन्तों भक्तों की वाणी भी कुछ तो गुरु जी को परम्परा से प्राप्त हुई और कुछ इधर उधर के प्रयास से उन्होंने प्राप्त की और भाव साम्यता और विचारधारा के अनुकूल भक्तों सन्तों की वाणी को गुरु जी ने पूर्व गुरुओं की वाणी के साथ मिलाकर ग्रन्थ में स्थान दे दिया है। समस्त वाणी को उन्होंने बहुत सुन्दर वैज्ञानिक क्रम और तरतीब से आदि ग्रन्थ में संगृहीत किया। कहा जाता है कि रामसर (अमृतसर) के तालाब के किनारे एकान्त एवं शान्त स्थल पर तंबू लगाकर गुरुदेव प्रातः से सायंकाल तक बैठे रहते थे और भाई गुरदास जी से लगातार वाणी लिखवाते रहते थे। यह संपादन कार्य सन् 1604 ई० में पूर्ण हुआ। समापन काल इसकी मूल पाण्डुलिपि पर इस प्रकार लिखा है "सूची पत्र पोथी का ततकरा रागां दा संवत् 1661 मिति भादों वदी एकम् 1 पोथी लिखि पहुंचे' भादों सुदी प्रथम को इसकी स्थापना हरि मन्दिर (स्वर्ण मंदिर) में पाठ कीर्तन निमित्त को गई और बाबा बुड्ढा जी को इसका प्रथम ग्रन्थी नियुक्त कर इसकी सेवा का भार सौंपा गया। मूल ग्रन्थ करतारपुर में अब भी

सुरक्षित है ऐसा सिद्ध हो चुका है। मूल ग्रन्थ जिसका संकलन गुरु अर्जुन देव जी ने किया 974 पृष्ठों का है इसमें नवें गुरु तेगबहादुर जी की वाणी नहीं है। दसवें गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने जीवनकाल में इसका पुनर्संकलन किया और उसमें अपने पिता नवें गुरु तेगबहादुर जी की वाणी को स्थान दिया। यह कार्य उन्होंने अपने एक श्रद्धालु भाई मनी सिंह जी से "दमदमा" नामक स्थान पर रहकर करवाया इसलिए इसे "दमदमा साहिब वाली बीड़" या "दमदमी बीड़" कहते हैं। इस बीड़ को ही सन् 1708 ई० में परम ज्योति में विलीन होते समय "गुरु ग्रन्थ साहिब" नाम देकर शिष्यों से उसे गुरु मानने का आदेश दिया। गुरु ग्रन्थ साहब के सभी प्रकाशन इसी दमदमी बीड़ के आधार पर होते हैं। यह 1430 पृष्ठों का संकलन है। गुरद्वारों में इसी का "प्रकाश" होता है। सिक्ख जगत में यही गुरु तुल्य मान्य है।

छठे गुरु हरि गोबिन्द सिंह जी, सातवें गुरु हरिराय जी, अष्टम गुरु हरिकृष्ण साहिब जी ने कोई वाणी रचना नहीं की। गुरु गोबिन्द सिंह जी उच्चकोटि के कवि थे। यह रीतिकाल के महान कवि माने जाते हैं। रामावतार, कृष्णावतार, चण्डी चरित्र, विचित्र नाटक, अकाल उसतति जैसी बृहद रचनाएं इन्होंने की। इनकी रचनाओं का अलग ही संकलन है। 1428 पृष्ठों का यह बृहद संकलन दशम ग्रन्थ के नाम से प्रसिद्ध है।

इस प्रकार 1430 पृष्ठों के गुरु ग्रन्थ साहिब में छ: गुरुओं 12 वीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी के बीच हुए 15 प्रमुख भक्तों, सन्तों और भाटों की वाणी है जिसका विवरण इस प्रकार है :

गुरु नानक देव जी 976 पद श्लोक
गुरु अंगद देव जी 62 (केवल श्लोक)
गुरु अमरदास जी 907 पद और श्लोक
गुरु रामदास जी 979 पद और श्लोक
गुरु अर्जुन देव जी 2218 पद और श्लोक
गुरु तेग बहादुर जी 116 पद और श्लोक

15 प्रमुख सन्तों और भक्तों की वाणी इस प्रकार है :

1. भक्त कबीर दास जी 292 पद और 249 श्लोक
2. भक्त जयदेव 2 पद
3. भक्त नाम देव 60 पद

4. शेख फरीद 4 पद और 130 श्लोक
5. त्रिलोचन 4 पद
6. रामानन्द 1 पद
7. पीपा 1 पद
8. सधना 1 पद
9. सेन 1 पद
10. धन्ना 4 पद
11. रविदास 41 पद
12. वेणी 3 पद
13. परमानन्द 1 पद
14. भीखन 2 पद
15. सूरदास 1 पद

इसके अतिरिक्त भाटों द्वारा रचित वाणी भी इसमें संकलित है । इन भाटों ने पांचों गुरुओं की प्रशस्ति में पद रचे हैं जो "भट्टा के सवैये" शीर्षक से संकलित है । इनकी संख्या इस प्रकार है :

1. कलसहार 54 पद
2. जालप 5 पद
3. कीरत 8 पद
4. सल्ह 3 पद
5. भल्ह 1 पद
6. नल्ह 16 पद
7. मथुरा 14 पद
8. गयंद 13 पद
9. भीखा 2 पद
10. बल्ह 5 पद
11. हरबंस 2 पद

कुल पद 123

ग्रन्थ साहिब में सत्ता और बलवंड, मरदाना सुन्दर जी के पद हैं :

बाबा सुन्दर जी 6 पद
डूम सत्ता जी 3 पद
राय बलवंड जी 5 पद
भाई मरदाना जी 3 पद

कुल 17

सत्ता और बलवंड दोनों भाई थे, जाति के डूम थे। ये भाई गुरु नानक जी के साथी भाई मरदाना की सन्तान में से बताए जाते हैं। इन्होंने रामकली राग में वार के पद रचे हैं। "वार" आश्रयदाता की प्रशस्ति में गाई जाने वाली वीर रसात्मक रचना होती है। यों तो गुरु ग्रन्थ साहिब में 22 वारें हैं जो विभिन्न गुरुओं द्वारा प्रभु की स्तुति में गाई गई हैं। परन्तु सत्ता और बलवंड की वार का विषय गुरुओं की प्रशस्ति है।

बाबा सुन्दर जी के छः पद "सद्द" शीर्षक से संकलित हैं। बाबा सुन्दर जी तृतीय गुरु अमरदास जी के परपौत्र थे। सद्द का अर्थ है बुलावा। इसमें इन्होंने ईश्वर के घर से मनुष्य को किस प्रकार बुलावा आता है, उसे मृत्यु के अटल सत्य को कैसे स्वीकार कर लेना चाहिए, प्रभु स्मरण कैसे मरण के कष्ट को दूर कर देता है आदि वैराग्य भावना का वर्णन किया है।

वाणी का संकलन करते समय इसका क्रम अत्यन्त वैज्ञानिक रखा गया है। संपूर्ण वाणी रागों में रचित है। प्रत्येक राग की वाणी का प्रारंभ गुरु नानक देव जी की से करके पुनः गुरु अंगद देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुन देव जी और नवें गुरु तेग बहादुर जी की वाणी को रखा गया है। एक ही ज्योति के विभिन्न रूप होने की मान्यता गुरुओं में होने के कारण सभी गुरुओं ने नानक नाम से ही वाणी की रचना की है। विभिन्नता दर्शाने के लिए नानक देव जी के लिए महला '1' का प्रयोग किया गया है और इसी प्रकार क्रमशः महला 2, 3, 4, 5 और 9 का प्रयोग गुरुओं की वाणी रचना के लिए किया गया है। महला का अर्थ है "शरीर"। महला 1 प्रथम ज्योति गुरु नानक देव जी और इसी क्रम में 2, 3, 4, 5, 9 आदि। गुरुओं को वाणी के पश्चात भक्तों की वाणी रखी गई है जिसका प्रारंभ अधिकांशतः कबीर जी से ही हुआ है।

वाणी रचना के क्रम में चरण के आधार पर रचित पदों का क्रम एक पदे, द्विपदे, त्रिपदे, चउपदे, पंचपदे, छःपदे, (छप्पय), अष्टपदियां, सोलहे, विशेष पद, छंत वार के क्रम में वाणी को सजाया गया है। किसी राग विशेष में प्रत्येक गुरु की कुल जितनी वाणी है इसकी संख्या साथ ही साथ लिखी गई है। यहां तक कि कितने द्विपदे हैं कितने त्रिपदे आदि इनकी संख्या भी साथ ही साथ दी गई है और अन्त में उस राग विशेष में सभी गुरुओं को मिलाकर कुल कितने शब्द कितनी अष्टपदियां हैं, इसकी भी संख्या अंकित कर दी गई हैं।

रागों में संकलित शब्दों (पदों) के अतिरिक्त कुछ रागों में विशेष शीर्षक की वाणियां भी है जैसे:

1. सिरी राग (श्री राग) में 'पहरे' और 'वणजारा'।
2. माझ राग में 'बारह माहा' और 'दिन रैणि'।
3. आसा राग में बिरहड़े और 'पट्टी'।
4. गौड़ी राग में 'करहले' 'बावन अखरी' 'सुखमनी' और 'थिति'।
5. वडहंस राग में 'घोड़िया' और 'अलाहणीयां'।
6. धनासिरी (धनाश्री) राग में 'आरती'।
7. सूही राग में 'कुचज्जी', 'सुचज्जो' और 'गुणवंती'।
8. रामकली राग में 'अनंदु', 'सद्', 'ओंकार' और 'सिद्ध गोसटि'।
9. बिलावल राग में 'थिति' और 'वारसत'
10. माझ राग में 'अंजुलियां' और 'सोलहे'।
11. तुखारी राग में गुरु नानक जी द्वारा रचित 'बारहमासा'।

वाणी का आन्तरिक क्रम इस प्रकार है। पृ० 1 से 8 तक 'जपु' वाणी है इसका प्रारम्भ मूल मंत्र से है जो 'गुरु प्रसादि' पर समाप्त होता है। फिर एक श्लोक है। उसके बाद ३८ पद (पउड़ीआं) हैं। अन्त में एक श्लोक है। यह गुरु नानक देव जी द्वारा रचित है। प्रात: कालीन इसके पठन का आदेश है। इसके आगे 8 से 10 तक सोदरु है। इसमें पांच शब्द हैं पृ० 10-12 तक 'सोपुरखु' के चार शब्द हैं। इसे 'रहिरासि' कहने का प्रचलन है। यह सायंकालीन पठन योग्य है। पृ० 12-13 'सोहिला' शीर्षक से पांच शब्द हैं जो कीर्तन सोहिला नाम से प्रसिद्ध शयनकाल में पठन योग्य वाणी है। इसके बाद :

पृ० 13 से 1353 तक विविध रागों में निबद्ध वाणी।
,, 1353 से 1360 तक सह सक्रति श्लोक महला 1-4 महला 5-67 पद।
,, 1360 से 1361 तक गाथा महला 5-24 पद।
,, 1361 से 1363 तक फुनहे महला 5-23 पद।
,, 1363 से 1364 तक चउबोले महला 5-11 पद।
,, 1364 से 1377 तक कबीर जी के 243 श्लोक।
,, 1377 से 1384 तक शेख फरीद जी के 130 श्लोक।
,, 1385 से 1389 सवंये श्री मुखवाक म० 5-20 सवैये।
,, 1389 से 1409 भाटों के सवैये 123 सवैये
,, 1410 से 1426 श्लोक वारां ते वधीक 152 श्लोक।
,, 1426 से 1429 श्लोक महला 9-57 श्लोक।

पृ. 1429 ...... मुंदावणी महला 5-1 पद।
„ 1429-1430 रागमाला

रागमाला को कुछ विद्वान गुरु अर्जुन देव जी द्वारा रचित मानते हैं और कुछ बाद में जोड़ी गई मानते हैं। इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं है।

गुरु ग्रन्थ साहिब की संपर्ण वाणी रागों में निबद्ध है। सिक्ख गुरुओं का संगीत के प्रति विशेष आकर्षण रहा है। भावनाओं का जितना तीव्र उन्मेष संगीत द्वारा संभव है शायद किसी अन्य माध्यम द्वारा नहीं। आलौकिक आनन्द की अनुभूति, अतिशय भावुकता की चरम अभिव्यक्ति संगीत द्वारा ही संभव है। इसलिए गहन तल्लीनता की अवस्था में प्रभु के प्रति अपनी प्रेमानुभूति और बिरहानुभूति को गुरुओं ने संगीत द्वारा ही व्यक्त किया है। गुरुओं द्वारा प्रयुक्त राग इस प्रकार हैं :— 1. सिरी राग 2. माझ राग 3. राग गौड़ी 4. राग आसा 5. राग गूजरी 6. देवगन्धारी 7. बिहागड़ा 8. वडहंस 9. सोरठि 10. धनासिरी (धनाश्री) 11. जैतसरी 12. टोडी (टोढ़ी) 13. बैराड़ी 14. तिलंग 15. सूही 16. बिलावलु 17. गौंडं 18. रामकली 19. नट नाराइन 20. माला गउड़ा 21. मारु 22. तुरवारी 23. केदारा 24. भैरउ (भैरव) 35. बसंत 26. सारंग 27. मलार 28. कानड़ा 29. कलिआन (कल्याण) 30. प्रभाती 31. जैजैवंती।

कहीं-कहीं दो-दो रागों को भी मिलाया गया है जैसे :

1. गउड़ी माझ 2. गौड़ी दीपकी 3. आसा काफी 4. तिलंग-काफी 5. सूही-काफी 6. सूही ललिता 7. बिलावल गौड 8. माझ काफी 9. बसंत हिंडोल 10. कलिआन-भोपाली 11. प्रभाती-विभास 12. आसा-आसावरी।

संकलन कर्ता को संगीत का कितना गहरा ज्ञान था यह इस बात से स्पष्ट है कि स्थान-स्थान पर गायन के योग्य संकेत दिए गए हैं जैसे— इआनड़ीए कै घरि गावणा, एक सुआन के घरि गावणा, लला बहलोमां की धुनी उपरि गावणी, राइ कमाल दी मौजदी की धुनी उपरि गावणो, पहरिआं कै घर गावणा, मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी जैसे अनेकानेक संकेत वाणी में प्राप्त होते हैं। गायन के लिए 'घर' का भी संकेत दिया गया है। घर से तात्पर्य ताल से है। एकताल, दोताल, त्रिताल, चौताल आदि की भांति घर 2, घर 3, घर 4, घर 5, घर 6 आदि ताल संकेत हैं। समूची वाणी में 1 से लेकर 17 तक के घरों का संकेत है। इन संकेतों की सहायता

से कीर्तनकारों को लय एवं ताल बैठाने में बहुत सहायता होती है । राग कानड़ा, कल्याण, रामकली, वसन्त, सारंग, प्रभाती, मलार एवं धनासरी में पड़ताल का भी संकेत है । पड़ताल से गुरुदेव का तात्पर्य सम्भवतः वाणी के ताल को परत परत कर (फर-फेर कर) गाने से है । इसी सन्दर्भ में 'रहाउ' शब्द का भी महत्व है । रहाउ का अर्थ टेक से है । रहाउ की पंक्ति से सम्बन्धित वाणी में पूरे शब्द का सार समाहित किया गया है । गायन के लिए संगीतकार 'रहाउ' से ही शब्द का गायन प्रारम्भ करते हैं ।

संगीत के शास्त्रीय पक्ष के साथ-साथ लोकगीत शैलियों को भी स्थान दिया गया है । वारों को गाने के लिए लोकगीत ध्वनियों के संकेत दिए गये हैं । बारहमासा फुनहें, अंजुलिया, बिरहड़े, पहरे, थिति, रुति आदि लोकगीत शैली पर रचित वाणी है । इन रागों की एक विशेषता यह भी है कि इनके द्वारा साधना के विविध सोपानों को स्पष्ट किया गया है । रागों का प्रारम्भ श्री राग से किया गया है । श्री राग हेमन्त ऋतु की संध्या में विशेष रूप से गेय राग है । यह अपनी तरह का अनुपम राग है और अन्य संध्या कालीन रागों में इसकी प्रकृति भी भिन्न है । यह अत्यन्त गंभीर और कठिन राग है । 'श्री' सुख सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य का प्रतीक है । इस राग से वाणी को प्रारम्भ करके गुरु नानक देव जी के शब्द 'मोती त मंदर उसरहि' के द्वारा जीव को सतर्क किया गया है कि कस्तूरी सुवासित रत्न-मणि जटित भव्य भवनों में रहते हुए प्रभु नाम को विस्मृत नहीं करना है । श्री राग, माझ, गौड़ी, आसा, गूजरी, वडहंस, सोरठ आदि प्रारम्भिक रागों में माया लिप्त जीव को सांसारिक ऐश्वर्य एवं सुखों की क्षणिकता, नश्वरता तथा अस्थिरता का ज्ञान कराया गया है और उनके प्रति उसके मन में वैराग्य भावना भरने का प्रयास किया गया है । धीरे-धीरे उसका झुकाव प्रभु प्रेम की ओर होने लगता है । सूही, बिलावल, रामकली आदि रागों में मानव के लिए साधना के मार्ग को स्पष्ट किया गया है । नाम ही वह साधन बताया गया है जिसके द्वारा वह साध्य को पा सकता है । तुखारी, बसंत, सारंग, मलार तथा प्रभाती राग भक्त की ब्रह्मानुभूति एवं प्रेमानुभूति से उत्पन्न आनन्द की अभिव्यक्ति है । यह आनन्द उसने निरन्तर साधना द्वारा प्राप्त किया है । यही उसके जीवन का लक्ष्य है । इन रागों में मिलन सुख और चिर सुख की अनुभूति को व्यक्त किया गया है । इस प्रकार रागों का क्रम उनके स्वभाव के अनुकूल इस ढंग से रखा गया है कि उससे साधना के विविध सोपान स्पष्ट होते हैं ।

गुरु ग्रन्थ साहिब की भाषा प्रादेशिक विशेषताओं से परिपूर्ण मूलरूप से ब्रजभाषा ही है परन्तु इसकी विविधता भी देखने योग्य है । इसकी भाषा

की विविधता को देखकर ही ट्रम्प ने इसे भाषा का अजायबघर कहा है। सिद्धों और नाथों की परम्परागत शब्दावली के साथ संस्कृत के तत्सम, अर्धतत्सम तद्भव, प्राकृत और अपभ्रंश के शब्दों का विशाल भंडार इसमें प्राप्त है। अरबी फारसो के शब्द भी हैं। पंजाबी भाषा के पश्चिमी (लहंदी), पूर्वी और दक्षिणी (जिसमें डखणे रचे गए हैं) आदि सभी रूप प्राप्त होते हैं। लोकमानस के निकट होकर रची जाने के कारण भाषा व्यावहारिक भी है और इसीलिए इसमें लोकोक्तियों, मुहावरों और सूक्तियों का खुलकर प्रयोग किया गया है,। किन्तु वैविध्यपूर्ण होते हुए भी भाषा भावों की पूर्णरूपेण अनुगामिनी है और यह सरल, सुबोध एवं व्यावहारिक है।

यद्यपि सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक मीमांसा, वेदान्त आदि समस्त दार्शनिक धारणाओं का भक्ति ज्ञान और प्रेम की विविध साधना पद्धतियों का विवेचन किया गया है; ब्रह्म, जीव, सृष्टि, माया, गुरु, नाम महिमा, सत्संगति, योग साधना आदि अनेकानेक दार्शनिक एवं ज्ञान प्रेम भक्ति आदि विषयों की व्याख्या की गई है तथापि भावनाओं की अतिशयता और भाषा की सरलता और सुबोधता इस वाणी को सर्वग्राह्य बनाने में सहायक हुई है। दुरुह दार्शनिकता का बोझ इस पर नहीं है। अत्यन्त सरल शैली में बताया गया है कि अकाल पुरुष परम ब्रह्मा एक है। इसे राम, हरि, कृष्ण, केशव, मधुसूदन, अल्लाह, करोम, रहीम, परवदिगार किसी भो नाम से पुकारा जा सकता है।

साहित्यिक दृष्टि से भी इस वाणी का महत्व अक्षुण्ण है। यह साहित्य की एक अनुपम कृति है। इसके भावपक्ष और कलापक्ष दोनों ही सबल हैं। भावपक्ष में रसों का सुन्दर परिपाक हुआ है और इसके लिए प्रभु के साथ अनेक कोमल सम्वन्धों को जोड़ा गया है जिसमें जोवात्मा और परमात्मा के दाम्पत्य सम्बन्धों की तीव्रता को दर्शाया गया है। भगवत विषयक रति सम्बन्धों में माधुर्यभाव का द्योतन हुआ है। शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सुन्दर उद्घाटन हुआ है। आलंबन और उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत प्रतीक और रूपकों द्वारा प्रकृति के कोमल और कठोर रूपों का भी सुन्दर चित्रण किया गया है। रहस्यानुभृति, प्रेम, विरह एवं प्रकृति चित्रणों के माध्यम से व्यक्त भक्ति भावनाएं वाणो को रसात्मक बना रही है। रूपकों और प्रतीकों के संयोजन में कल्पना तत्व और बिम्ब योजना देखते बनतो है।

उक्ति के अनुकूल प्रभावपूर्ण शैली का प्रयोग किया गया है। संबोधन शैली, कथा शैली, प्रसंग शैलो, वर्णन शैली, प्रश्न, प्रश्नोत्तर, संवाद, खंडन,

प्रशंसात्मक दैन्य प्रकाशन, नेतिवादी, स्वानुभव प्रकाशन, निरुपण, प्रबोधन, प्रतिबोधन, अनुताप, प्रतीक आदि अनेकानेक शैलियों का प्रयोग किया गया है । सिद्धों, नाथों से चलो आ रही प्रतीक शैलो तो है ही जिसमें अनेकानेक साधनात्मक, आध्यात्मिक और भावनात्मक प्रतोकों और उलट बांसियों का प्रयोग किया गया है । कथन के लिए दोहा, चौपाई, छप्पय, सवैयों, झूलना हरिगीतिका, कुण्डलो, अष्टपदी, श्रीखंडी, निसाणी, विष्णुपदें आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है । अनेकानेक शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का भी प्रयोग किया गया है। जिनमें अनुप्रास और छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास, श्रुत्यानुप्रास, यमक, भाषाचित्र, अर्थप्रहेलिका, पुनरुक्ति प्रकाश जैसे शब्दालंकारों और उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, दृष्टांत, उदाहरण, विरोधाभास, विभावना, विशेपोक्ति, तद्‌गुण, अतद्‌गुण परिसंख्या, यथाक्रम आदि अर्थालंकारों से उक्तिवैचित्र्य का समावेश हुआ है । रोति और गुण की भी सम्यक संयोजना हुई है । यद्यपि गुरुग्रन्थ साहब की वाणी का विषय उदात्त है और अनुभूत को अभिव्यक्ति इतनो शक्तिशाली है कि उसे शैली के कृत्रिम आवरण की आवश्यकता नहीं है लेकिन कथन में स्वभावत: ही शैली, छन्द, अलंकार, रोति, गुण आदि उाकरणों के समावेश से विषय की उदात्तता में कलात्मकता बन पड़ी है ।

साधनात्मक, भावात्मक एवं व्यावहारिक जीवन के उन्नयन की अद्‌भुत प्रेरणा देने वाली यह वाणी कुछ कट्टर पंथियों की संकीर्ण साम्प्रदायिक विचार-धारा के परिणामस्वरूप एक वर्ग विशेष तक ही सीमित करके रख दी जाय ऐसा करना महान गुरुओं के प्रति कर्त्तव्य विमुखता होगी । यह पुनीत वाणी अधिकाधिक प्रचार और प्रसार की उपेक्षा रखती है । राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से जन जन तक इस अमूल्य निधि को पहुंचाकर ही हम महान गुरुओं को सच्ची श्रद्धाँजलि अर्पित कर सकते हैं । इसी दिशा में यह तुच्छ प्रयास है । प्रयास कहाँ तक सार्थक होगा यह तो नहीं जानती ! गुरुतर भार वहन कर एक नन्हीं सी चींटी ने पर्वत शिखरारोहण का संकल्प ले लिया है, गंतव्य तक पहुंचेगी या नहीं यह तो निश्चित नहीं है । हाँ यदि महान गुरुदेव की कृपा दृष्टि हो जाय और उदारमना, भूलों को गंभीरता से न लेकर उन्हें सुधार देने वाला सुधी पाठक मिला तो शायद सपना साकार हो जाय । गुरु देव कृपा करेंगे । पाठक इस तुच्छ प्रयास को स्वोकार करेंगे ऐसी आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है ।

पिंगलु परबत पारि परे खल चतुरबकीता ॥
अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुरि भेटि पुनीता ॥

(बिलावलु म० 5, पृ० 809-10)

जगजीत कौर सलवान

विषय सूची

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

१ ओंङ्कार : वह एक है अद्वितीय है।

सतिनामु : उस प्रभु का अस्तित्व सदैव सत्य है। उसका नाम सदा रहने वाला है और (भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालों में वह सत्य है)।

करता : वह सृष्टि का एक मात्र कर्त्ता है। (वह सृष्टि का रचयिता है)

पुरखु : सर्वत्र व्यापक है।

निरभउ : भय से रहित है।

निरवैरु : वैर विरोध के द्वन्द्व से रहित है।

अकाल मूरति : वह कालातीत है। भूत भविष्य वर्तमान की सीमाओं से परे है।

अजूनी : योनियों से परे है।

सैभं : स्वयंभू है स्वतः प्रकाशित है।

गुरु प्रसादि : तत्त्ववेत्ता सद्गुरु की कृपा से उसकी प्राप्ति होती है।

गुरु नानक देव जी द्वारा रचित यह वाणी गुरुमत का मूल मन्त्र है। गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रारंभ इसी मूल मन्त्र से किया गया है और लगभग प्रत्येक राग में रचित वाणी का प्रारम्भ करते समय इस मूल मन्त्र का प्रयोग किया गया। कहीं-कहीं यह मन्त्र इसी तरह संपूर्ण और कहीं-कहीं '१ओंङ्कार सतिगुरु प्रसादि' के संक्षिप्त रूप में प्रयुक्त किया गया है। वह एक प्रकार से मंगलाचरण के रूप में प्रयुक्त किया गया है। एक तथ्य यहां यह भी स्पष्ट करना है कि यह मूल मन्त्र 'जपुजी' का एक अंश नहीं है स्वतः स्वतन्त्र रचना है जपुजी की वाणी जपु शीर्षक से प्रारंभ होती है।

॥ जपु ॥

मूल मन्त्र के पश्चात जिस वाणी का संकलन किया गया है उसका शीर्षक 'जपु' दिया गया है जिसका तात्पर्य है इस शीर्षक के साथ चलने वाली वाणी के माध्यम से प्रभु के विभिन्न गुणों का जाप करना है। इस शीर्षक के अन्तर्गत ३८ पद (पउड़ीआं) है और एक श्लोक आरंभ में और एक श्लोक अन्त में दिया गया है। आरंभ का श्लोक है :

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

नानक जी (कथन करते हैं) वह प्रभु आदिकाल से सत्य है युग युगान्तर से सत्य था वर्तमान में भी सत्य है और भविष्य में भी सत्य रहेगा। इस श्लोक के पश्चात जपुजी साहिब की ३८ पउड़ीआं (पद) हैं जिसमें बताया गया है कि मूलमन्त्र और प्रथम श्लोक में जिस प्रभु का स्वरूप वर्णन किया गया है उसकी उपासना कैसे की जाये।

सोचै सोच न होवई जे सोची लख वार ॥

(बाहर की शारीरिक) पवित्रता से (राग द्वेष और विकारों से अपवित्र अन्तः करण) पवित्र नहीं होता भले ही उसे लाख बार पवित्र किया जाये।

चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिवतार ॥

चुप रहने से (वाणी का संयम करने से संकल्पों से मुक्त व) चुप नहीं होता भले ही एकाग्रचित होकर ध्यान लगा रहे।

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥

(कठिन व्रत उपवास आदि द्वारा) भूखे रहने से तृष्णा को भख उतरती नहीं (समाप्त नहीं होती) भले ही समस्त पुरियों (भुवनों) के धन पदार्थों का भार बांध कर रख लिया जाये।

सहस सियाणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥

यदि हजारों लाखों निपुणताएँ हों तो भी (प्रभु को मिलाने में) एक भी निपुणता साथ नहीं चलती (सहायक नहीं होती)।

किव सचिआरा होईए किव कूड़ै तुटै पालि ॥

(गुरु जी के अनुसार न शुचिता रखने से, न मौन साधने से, न भूखे रहने से, न ज्ञान की चतुरता से प्रभु की प्राप्ति होती है तो फिर प्रश्न उठता है) सत्य को धारण करने वाले सच्चे पुरुष हम कैसे बन सकते हैं और मिथ्या अहंकार व ममता की झूठी दीवारें कैसे टूट सकती है ?

हुकुमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ।।१।।

(श्री गुरु) नानक जो (उत्तर देते हैं) प्रभु के हुकुम में चलना (परमात्मा की आज्ञा में चलने से मिथ्या अहंकार और ममता की झूठी दीवारें टूट जाती हैं और पुरुष सत्य मार्ग को धारण करने वाला (सच्चा पुरुष) बन सकता है क्योंकि परमात्मा के हुकुम को मान कर वह सुख व दुःख दोनों अवस्थाओं में अविचलित रहता है ऐसी स्थिर प्रज्ञा में ही सत्य का प्रकाश होता है) प्रभु ने अपनी आज्ञा प्रारंभ से ही (जीव के) साथ लिख दी है। (जिसे मिटाने का सामर्थ्य किसी में नहीं हैं) ।।१।।

□

(दूसरी पउड़ी में प्रभु के हुकुम का स्वरूप निरूपित किया गया है)

हुकुमी होवनि आकार हुकुमु न कहिआ जाई ।।

प्रभु की आज्ञा से ही जीवों के आकार बनते हैं। प्रभु की आज्ञा शब्दों में निश्चित रुप से कही नहीं जा सकती।

हुकुमी होवनि जीअ हुकुमि मिलै वडिआई ।।

समस्त स्थूल सूक्ष्म जीव प्रभु की आज्ञा से ही अस्तित्व में आते हैं परमात्मा की आज्ञा से ही जीवों को बड़प्पन व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

हुकुमी उत्तम नीचु हुकुमि लिखि दुख सुख पाईअहि ।।

प्रभु की आज्ञा से ही जीव उत्तम मध्यम और नीच कोटि के होते हैं और प्रभु की आज्ञानुसार लिखे गये शुभ व अशुभ कर्मों का फल जीव सुख व दुख के रूप में प्राप्त करता है।

इकना हुकुमी बखसीस इकि हुकुमी सदा भवाईअहि ।।

प्रभु की आज्ञा से ही कुछ लोगों को नाम की बखशीश प्राप्त होती है और वे जन्म मरण से मुक्त हो जाते हैं और प्रभु की आज्ञा से ही कुछ लोग सदैव आवागमन के चक्र में घूमते ही रहते हैं।

हुकुमै अंदरि सभु को बाहरि हुकुम न कोइ ।।

सृष्टि के बड़े से लेकर छोटे तक समस्त चर-अचर स्थूल, सूक्ष्म जीव प्रभु की आज्ञा के भीतर है प्रभु की आज्ञा से बाहर कोई जीव नहीं है।

नानक हुकुमै जे बुझै त हउमै कहै न कोई ।।२।।

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) यदि जीव प्रभु की आज्ञा को समझ जाये तब अहंकार युक्त बातों को कोई नहीं कहेगा (कि ऐसा

धर्म, सत्य, दान, दया, उपकार, सेवा पूर्ण महत् कार्य मैंने किया है और इस प्रकार जब व्यक्ति की अहंता समाप्त हो जायेगी तो उसके अन्दर सत्य का प्रकाश होगा और असत्य की दीवारे टूट जायेंगी) ।।२।।

□

(वह प्रभु सर्वशक्तिमान है उसकी समर्थता और शक्ति का वर्णन कोई नहीं कर सकता। इस पउड़ी में गुरुदेव जी द्वारा यही बताया जा रहा है)।

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ।। गावै को दाति जाणै नीसाणु ।।

उस प्रभु के समग्र बल का गायन कौन कर सकता किसमें इतनी है शक्ति है ? उसकी दी हुई वस्तुओं का कौन वर्णन कर सकता उसके चिन्ह व परिचय को कौन जान सकता है।

गावै को गुण वडिआई आचार गावै को विदिआ विखमु वीचारु ।।

उस प्रभु के गुणों का उसके बड़प्पन का और उसके श्रेष्ठ आचरण का बखान कौन कर सकता है ? उसके ज्ञान का बखान कौन कर सकता है जबकि उस प्रभु का विचार मात्र ही इतना कठिन है ?

गावै को साजि करे तनु खेह ।। गावै को जीअ लै फिरि देह ।।

मिट्टी से सुन्दर शरीरों को रचने की क्षमता का गायन कौन कर सकता है। उसके द्वारा प्राण लेकर पुनः जीवन दान देने का बखान कौन कर सकता है ?

गावै को जापै दिसै दूरि ।। गावै को वेखै हादरा हदूरि ।।

उस प्रभु को दूर से ही जानने और देखने की शक्ति का बखान कौन कर सकता है और उसको प्रत्यक्ष होकर देखने की शक्ति का बखान कौन कर सकता है ?

कथना कथी न आवै तोटि ।।

कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ।।

करोड़ों ही लोगों ने उस प्रभु का कथन किया है। करोड़ों ही लोग कथन कर रहे हैं और करोड़ों ही लोग कथन करते रहेंगे परन्तु इतना कथन करने पर भी उस प्रभु का अन्त न कोई पा सका है न पा रहा है और न पायेगा।

देदा दे लैंदे थकि पाहि ।। जुगा जुगंतरि खाही खाहि ।।

वह दाता प्रभु सब को इतना देता है कि लेने वाले थक जाते हैं, युग-युगान्तर से सभी जीव प्रभु द्वारा दिए गये खाद्य पदार्थों को खा रहे हैं।

हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

वह हुकम चलाने वाला हाकिम प्रभु अपने हुकम से ही बनाये गए रास्ते पर जीवों को चला रहा है। (श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) वह प्रभु बेपरवाह (पूर्ण काम द्वन्द्वातीत) है और इतने विशालप्रसार का नियंत्रण करते हुए भी सदैव प्रसन्न चित्त है ॥३॥

□

(इस पउड़ी में श्री गुरु देव जी बता रहे हैं कि उस अनन्त प्रभु की बोली प्रेम की बोली है। प्रेम द्वारा ही हम उसके निकट होकर उससे बातें कर सकते हैं। उसके दरबार की प्राप्ति कर सकते हैं।

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिया भाउ अपारु ॥

वह सृष्टि का मालिक सत्य स्वरूप है उसका नाम सदैव स्थिर है और उस पर ब्रह्म परमात्मा की बोली प्रेम है।

आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥

हमें (यह) दो हमें (वह) दो ऐसा कह कह कर संसार के लोग प्रभु से (पुत्रधन पदार्थ आदि) माँगते रहते हैं और वह दाता प्रभु सबको पदार्थ देता रहता है।

फेरि कि अगै रखिऐ जितु दिसै दरबारु ॥

(जब सभी पदार्थ देने वाला वह स्वयं दाता है) फिर उसके आगे क्या भेंट किया जाये जिससे उसका दरबार देख सकें।

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥

मुख से कौन से बोल बोले जायें जिन्हें सुनकर वह हृदय में हमारे प्रति प्रेम धारण करें (हमें अपना प्रेम दें)।

अमृत वेला सचु नाउ वडिआई बीचारु ॥

(विकारहीन पूर्णपवित्र घड़ियों में) प्रभात बेला में उस परमात्मा के सच्चे नाम और उसके महान गुणों का विचार करें।

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥

कर्मों के अनुसार जीव को प्रेम रूपी वस्त्र प्राप्त होता है और प्रभु की कृपा दृष्टि होने पर मिथ्या अहं से मुक्ति होती है और प्रभु के द्वार की प्राप्ति होती है।

नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) इस तरह जाना जाता है कि सत्य स्वरूप प्रभु स्वयं ही सर्वत्र व्याप्त है ॥४॥

थापिया न जाइ कीता न होइ ।। आपे आपि निरंजनु सोई ।।

प्रभु किसी के द्वारा स्थापित (उत्पन्न) नहीं किया गया न ही वह किसी के द्वारा बनाया गया है। माया की कलुषिता से दूर वह निरंजन प्रभु अपने आप में अद्वितीय है।

जिनि सेविआ तिनि पाइया मानु ।। नानक गावीए गुणी निधानु ।।

जिन जीवों ने उस सत्यस्वरूप प्रभु की सेवा की है उन्हें ही सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। (श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) इसलिए गुणों के भण्डार उस प्रभु के गुणों का गायन करें।

गावीयै सुणीयै मनि रखियै भाउ ।। दुख परहरि सुख घरि लै जाइ ।।

उस प्रभु के गुणों का ही गायन करो, प्रभु के गुणों को ही सुनो, उस प्रभु के गुणों का ही चिन्तन मनन करो और प्रभु का प्रेम ही (मन में) टिका कर रखो ! (ऐसा करने से जीव) अज्ञान से उत्पन्न दुखों का परिहार कर हृदय को स्थायी सुखों (परम आनन्द) की ओर ले जाता है।

गुरुमुखि नादं गुरुमुख वेदं गुरुमुखि रहिआ समाई ।।

(प्रभु के गुणों का गायन, श्रवण, मनन करने से दुखों का नाश व परमानन्द की प्राप्ति होती है। यह ज्ञान कैसे प्राप्त होता है गुरुदेव बताते हैं) सद्‌गुरु के सम्मुख होने पर (शरण में आने पर) अनन्त नाद सुनाई देता है; गुरु के सम्मुख होने पर ज्ञान प्राप्त होता है और गुरु के सम्मुख होने पर गुरु द्वारा विदित होता है कि सर्वव्यापक प्रभु सब में समाया हुआ है।

गुरु ईसरु गुरु गौरखु बरमा गुरु पारबती माई ।।

गुरु ही शिव है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही सत्य निष्ठा धारिणी पार्वती माता है और गुरु ही बुद्धि दायिनी सरस्वती है।

जे हउ जाणा आखानाही कहणा कथन ना जाई ।।

यदि मैं उस प्रभु को जान भी जाऊं तब भी मैं उसका वैसा वर्णन नहीं कर सकता जैसा वह है। वह अकथनीय है इसलिए कथन द्वारा उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

गुरा इक देहि बुझाई ।। सभना जीआ का इकु दाता सो मैं विसरि न जाई ।।५।।

हे मेरे सद्‌गुरु मुझे इतनी सूझ दो कि समस्त जीवों को जीवन दान देने वाला जो एकमात्र दाता प्रभु है वह मुझे कभी भी विस्मृत न हो जाये ।।५।।

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणै कि नाइ करी ॥

(श्री गुरु नानक देव जी के मतानुसार तीर्थों का स्नान प्रभु प्राप्ति में सहायक नहीं होता आप बता रहे हैं) मैं तीर्थ स्नान पर जाकर स्नान तब करूँ (मेरा तीर्थ स्नान तब सार्थक है) यदि ऐसा करने से मैं उसे (प्रभु को) भा जाऊँ वह मुझे प्यार करने लगे ऐसा करने से यदि मैं उसे प्रसन्न नहीं कर सकता तो तीर्थ स्थानों पर स्नान करके मैं क्या करूंगा ?

जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥

प्रभु द्वारा उत्पन्न की गई जितनी भी सृष्टि है उसमें मैं देखता हूं कि बिना प्रभु की कृपा दृष्टि से क्या किसी को कुछ भी मिलता है ?

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥

यदि शिष्य को गुरु की एक ही ज्ञान प्रदायिनी शिक्षा सुनने को मिल जाये तो उसकी बुद्धि में रत्न जवाहर और माणिक्य जैसा प्रकाश उत्पन्न हो जाता है (अर्थात् उसकी बुद्धि में सत्य और ज्ञान का प्रकाश फैल जाता है) ।

गुरा इक देह बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता, सो मैं विसरि न जाई ॥६॥

हे मेरे सद्गुरु मुझे इतनी सूझ दो कि समस्त जीवों को जीवन दान देने वाला जो एक मात्र दाता प्रभु है वह मुझे कभी भी विस्मृत न हो जाये ॥६॥

□

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥

(योगबल से आयु को बढ़ा लेने का कोई लाभ नहीं है क्योंकि महत्व प्रभु की कृपा दृष्टि का है लम्बी आयु का नहीं इसी बात को स्पष्ट करते हुए श्री गुरुदेव जी कथन करते हैं) यदि मनुष्य की आयु चार युगों के समय जितनी हो जाये और इससे भी दस गुणा और अधिक आयु हो जाये ।

नवाखंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभुकोइ ॥

पृथ्वी के नवखण्डों में वह प्रसिद्धि प्राप्त करले और सभी लोग उसके अनुयायी बन कर उसके साथ चलने लगे (उसका नेतृत्व स्वीकार कर लें) ।

चँगा नाउ रखाइकै जसु कीरति जगि लैइ ॥

बड़ी बड़ी श्रेष्ठ उपाधियों से विभूषित हो जाये और सारे संसार का यश और कीर्ति लूट ले ।

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ।।

परन्तु यदि वह (प्रसिद्ध पुरुष) उस प्रभु की दृष्टि में नहीं आता (प्रभु की कृपा उस पर नहीं होती) तब कोई भी उसकी बात नहीं पूछता (उसका सम्मान नहीं करता)।

कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ।।

(प्रभु की कृपा दृष्टि विहीन वह पुरुष) कीड़ों के भीतर अत्यन्त तुच्छ कीड़ा बना दिया जाता है और दोषी भी उस पर दोषारोपण करते हैं।

नानक निरगुण गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ।।

(श्री गुरु) नानक जो (कथन करते हैं) प्रभु गुणहीनों को गुणवान कर देता है और गुणवानों के गुणों में श्रेष्ठता भर देता है।

तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ।।७।।

(मुझे) ऐसा कोई भी दिखाई नहीं देता जो उसके दिए हुए गुणों के बदले उसका कुछ (प्रत्युपकार) कर सके ।।७।।

□

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथि। सुणिए धरति धवल अकास ।।

(श्री गुरु नानक देव जी इस ८वीं पउड़ी से लेकर ११वीं पउड़ी तक प्रभु नाम के श्रवण के महात्म्य का वर्णन कर रहे हैं)

प्रभु का नाम श्रवण करने से (साधारण मनुष्य) सिद्ध, पीर, देवता, नाथ (गोरख नाथ) आदि उच्च पद को प्राप्त कर लेता है। प्रभु का नाम श्रवण करने से धरती के नीचे दबे हुए बैल की तरह निचले स्तर पर पड़ा हुआ व्यक्ति आकाश की ऊंचाईयों को छूने लगता है उसकी चेतना ऊर्ध्वमुखी हो जाती है।

सुणिऐ दीप लोअ पाताल। सुणिऐ पोहि न सकै कालु ।।

प्रभु का नाम श्रवण करने से पाताल में दीपकों का प्रकाश हो उठता है। अर्थात जिस मनुष्य की बुद्धि में अन्धकार युक्त पाताल की भांति अज्ञान का गहन अन्धकार छाया रहता है उसके स्थान पर ज्ञान के दीपक जल जाने से बुद्धि प्रकाश युक्त हो उठती है। प्रभु का नाम श्रवण करने से काल स्पर्श नहीं कर सकता।

नानक भगता सदा बिगासु। सुणिए दूख पाप का नासु ।।

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं कि) प्रभु के भक्तों का हृदय सदैव कमल की भांति प्रफुल्लित रहता है क्योंकि प्रभु के नाम श्रवण से उनके समस्त दुखों और पापों का नाश हो जाता है ।।८।।

सुणिऐ ईसरु बरमा इन्दु । सुणिऐ मुखि साला हण मंदु ।।

प्रभु का नाम श्रवण करने से व्यक्ति शिव, ब्रह्मा तथा इन्द्र के समान बन सकता है । प्रभु का नाम श्रवण करने से मंदबुद्धि व अशुभ कर्मी निकृष्ट मनुष्य भी अपने मुख से प्रभु की श्लाघा करने लगता है (विकारयुक्त जीवन का त्याग कर प्रभु भक्ति में आसक्त हो पवित्र जीवन यापन करने लगता है) ।

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद । सुणिऐ सासत सिम्रति वेद ।।

प्रभु का नाम श्रवण करने से (साधारण बुद्धि) मनुष्य भी शरीर का भेद, (इन्द्रियों का रहस्य) और (उन पर नियन्त्रण रख कर) प्रभु से मिलन युक्ति (उपाय) जान सकता है । प्रभु का नाम श्रवण करने से (षट्) शास्त्रों, (सत्ताईस) स्मृतियों और (चार) वेदों को समझने योग्य हो जाते हैं ।

नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पाप का नासु ।।९।।

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु के भक्त संतजन सदैव कमल पुष्प की भांति प्रफुल्लित रहते हैं क्योंकि प्रभु का नाम श्रवण करने से उनके त्रिविध दुखों और पापों का नाश हो जाता है ।।९।।

□

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु । सुणिऐ अठ सठि का इसनानु ।।

प्रभु का नाम श्रवण करने से सत्य संतोष और ज्ञान की प्राप्ति होती है । प्रभु का नाम श्रवण करने से अड़सठ तीर्थों के स्नान के तुल्य फल प्राप्त होता है ।

सुणिऐ पढ़ि पढ़ि पावहि मान । सुणिऐ लागै सहज धिआनु ।।

प्रभु का नाम श्रवण करने से वह सम्मान प्राप्त होता है जो सम्मान विद्वानों को विराट अध्ययन करने के बाद प्राप्त होता है । प्रभु का नाम श्रवण करने से स्थिर अवस्था की प्राप्ति होती है जिससे प्रभु के चरणों में ध्यान टिक कर लग जाता है ।

नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पाप का नासु ।।१०।।

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु के भक्त सन्तजन सदैव कमल पुष्प की भांति प्रफुल्लित रहते हैं क्योंकि प्रभु का नाम श्रवण करने से उनके त्रिविध दुखों और पापों का नाश हो जाता है ।।१०।।

सुणिऐ सरा गुणा के गाह । सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ।।

प्रभु का नाम श्रवण करने वाला गुणों के समुद्र में अवगाहन करने (गुणों की परख और श्रेष्ठ गुणों को अपनाने) वाला हो जाता है । प्रभु का नाम श्रवण कर साधारण मनुष्य शेख पीर और बादशाह के समान सम्माननीय बन जाता है ।

सुणिऐ अंधे पावहि राहु । सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ।।

प्रभु का नाम श्रवण करने से अज्ञान में अन्धे मनुष्य को भी प्रभु प्राप्ति का मार्ग मिल जाता है । (अन्धाधुंध दुष्कर्म करने वाला मनुष्य भी सत्मार्ग की प्राप्ति कर लेता है ।) प्रभु का नाम श्रवण करने से वह अगम्य अगाध गहन परमात्मा (हथेली में आया हुआ अर्थात) सरलता से जानने योग्य हो जाता है ।

नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पाप का नासु ।।११।।

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु के भक्त सन्तजन सदैव कमल पुष्प की भांति प्रफुल्लित रहते हैं ।।११।।

□

श्रवण का महात्म्य बताने के पश्चात श्री गुरु देव जी अगली चार पउड़ीयों १२, १३, १४ व १५ में मनन का महात्म्य बता रहे हैं ।

मंने की गति कही न जाइ । जे को कहै पिछै पछुताइ ।।

प्रभु का नाम मनन करने वाले की उच्च आत्मिक अवस्था अकथनीय है । उसका कथन शब्दों में नहीं हो सकता । यदि कोई कहने का प्रयास करता है तो बाद में पछताता है ।

कागदि कलम न लिखण हारु । मंने का बहि करनि बीचारु ।।

मननशील व्यक्ति की उच्च अवस्था पर बैठ कर विचार किया जाय और उसे कागज पर लिख दिया जाय ऐसा लिखनें के लिए न तो कोई कागज बना है न ही कोई कलम है और न ही कोई लिखने वाला समर्थ व्यक्ति है ।

ऐसा नाम निरंजन होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।।१२।।

प्रभु का नाम माया की मल से रहित है और यह ऐसा नाम है जो कोई भी मनन करता है वह माया की मैल से रहित हो जाता है. परन्तु प्रभु नाम का मनन करने वाला कोई विरला मन ही ऐसा जानता है ।।१२।।

मंनै सुरति होवै मनि बुधि । मंनै सगल भवण की सुधि ।।

प्रभु नाम का मनन करने वाले का मन और बुद्धि जागृत हो जाती है । अज्ञान में सुसुप्त बुद्धि और मन होश में आकर जाग जाते हैं) मनन करने वाले को सभी लोकों की सूझ हो जाती है ।

मंनै मुहि चोटा ना खाइ । मंनै जम कै साथ न जाइ ।।

प्रभु नाम का मनन करने वाला अपने मुख पर यमदूत की चोटें नहीं खाता । प्रभु नाम का मनन करने वाला यमदूत के साथ नहीं जाता ।

ऐसा नामु निरंजन होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।।१३।।

प्रभु का नाम माया को मल से रहित है और यह ऐसा नाम है कि इस नाम का जो भी कोई मनन करता है वह माया की मल से रहित हो जाता है परन्तु प्रभु नाम का मनन करने वाला कोई विरला मन ही ऐसा जानता है ।।१३।।

□

मंनै मारगि ठाक न पाइ । मंनै पति सिउ परगटु जाइ ।।

प्रभु नाम का मनन करने वाला भक्ति मार्ग पर चलते हुए विकारों की विधाओं को प्राप्त नहीं होता (उसके रास्ते में कोई रुकावट नहीं आती) प्रभु नाम का मनन करने वाले के गुण संसार के सामने प्रकट हो जाते हैं, उसकी प्रतिष्ठा होती है और वह सम्मान सहित संसार से जाता है ।

मंनै मगु न चलै पंथु । मंनै धरम सेती सनबंधु ।।

प्रभु नाम का मनन करने वालों का धर्म के साथ (गहरा) सम्बन्ध हो जाता है इसलिए मनन करने वाला धर्म की वास्तविकता को पहचानते हुए मग्न होकर परमार्थ के मार्ग पर चलता रहता है (विभिन्न धर्मों, समुदायों के विवाद में नहीं पड़ता) ।

ऐसा नाम निरंजन होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।।

प्रभु का नाम माया की मल से रहित है और यह ऐसा नाम है कि इस नाम का जो कोई भी मनन करता है वह माया को मल से रहित हो जाता है परन्तु प्रभु नाम का मनन करने वाला कोई विरला मन ही ऐसा जानता है ।।१४।।

मंनै पावहि मोखु दुआरु । मंनै परवारै साधारु ।।

प्रभु नाम का मनन करने वाला माया के मिथ्या मोह से मुक्त होने का साधन प्राप्त कर लेता है । मननशील व्यक्ति अपने सारे परिवार को ही प्रभु के सहारे पर विश्वास रखने वाला बना देता है ।

मंनै तरै तारे गुरु सिख। मंनै नानक भवहि न भिख ॥

मनन करने वाला स्वयं संसार सागर से तैर जाता है और ज्ञाननिष्ठ गुरु बनकर अपने शिष्यों को भी पार करा देता है। (श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) मननशील व्यक्ति घर घर भिक्षा मांगने के लिए घूमता नहीं फिरता (उसकी तृष्णा शान्त हो जाती है और वह भटकता नहीं फिरता)

ऐसा नाम निरंजनु होइ। जे को मन जाणै मनि कोइ ॥१५॥

प्रभु का नाम माया की मल से रहित है और यह ऐसा नाम है कि इस **नाम** का जो कोई भी मनन करता है वह माया की मल से रहित हो जाता है परन्तु प्रभु नाम का मनन करने वाला कोई बिरला मन ही ऐसा जानता है ॥१५॥

□

इस १६वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी बता रहे हैं कि जिन्होने प्रभु नाम का श्रवण किया है मनन किया है ज्ञानवान निष्ठावान वे व्यक्ति ही श्रेष्ठ हैं पंच है। प्रभु के दरबार में प्रतिष्ठा सहित स्वीकार किए जाते हैं। प्रभु की महिमा शक्ति और क्रिया कलापों का अन्त नहीं पाया जा सकता और न ही इन विषयों का विवेचन करना भक्त का कार्य है। निष्ठावान भक्त विवाद में नहीं पड़ता।

पंच परवाण पंच परधान ॥ पंचे पावहि दरगह माण ॥

प्रभु नाम के श्रवण मनन चिन्तन में जिन लोगों ने चित्तवृत्ति लगाई है वे ही कबूल किए जाते हैं वे इस संसार में प्रधान हैं और वे ही प्रभु के दरबार में सम्मानित किए जाते हैं।

पंचे सोहहि दर राजानु ॥ पंचा का गुर एक धिआनु ॥

राज दरबारों में भी वे ही श्रेष्ठ जन शोभायमान होते हैं। ऐसे श्रेष्ठ जनों का पूरा ध्यान एकमात्र गुरु (के शब्द उपदेश) पर ही केन्द्रित होता है।

जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥

भले ही कोई कथन करे या विचार करके देखले (परन्तु इतना निश्चित है) कि कर्त्ता प्रभु की करनी (सृष्टि) का कोई अन्त नहीं है।

धौलु धरमु दइआ का पूत ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥

(परम्परागत रुप से जो यह मानता है कि धरती का भार बैल ने उठा रखा है कल्पना मात्र है वस्तुतः) धर्म (जीवन को निश्चित अनुशासन में बांधना) ही बैल है (जिस पर पृथ्वी टिकी है) यह धर्म दया का पुत्र है

और इसी धर्म ने सन्तोष को स्थापित कर संसार को मर्यादा में बाँध रखा है (धर्म रूपी बैल पर यह सृष्टि आश्रित है धर्म ने ही संतोष को जन्म देकर सृष्टि की मर्यादा बांध रखी है) ।

जे को बूझै होवे सचिआरु ॥ धवलै ऊपरि केता भारु ॥

यदि कोई मनुष्य इस बात को समझ ले कि धरती धर्म पर ही आश्रित है तो वह अपने जीवन को धर्म के अनुसार चलाने वाला बन जायेगा और उसमें तब सत्य का प्रकाश हो जाएगा। (यदि हम यह मानते हैं कि धरती का बोझ बैल के ऊपर है तो ज़रा विचार करें कि) बैल के ऊपर कितना भारी बोझा होगा ?

धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भार तलै कवणु जोरु ॥

जिस बैल ने इस पृथ्वी को उठा रखा है उस बैल को सहारा देने वाली कोई और धरती होगी उस दूसरी धरती को जिस बैल ने उठा रखा है उस बैल को सहारा देने वाली तीसरी धरती होगी और उसके परे इसी तरह और पृथ्वी खंड होंगे तो प्रश्न उठता है कि वह अन्तिम बैल जिसने धरती के बोझ को उठा रखा है उसके नीचे कौन सी शक्ति है (वह बैल किस पर आश्रित है) (गुरुजी के अनुसार यह मानना भूल है कि पृथ्वी का बोझ बैल ने उठा रखा है वस्तुतः यह सृष्टि धर्म पर आश्रित है धर्म ही श्वेत बैल है जिसके सहारे यह सृष्टि टिकी हुई है)।

जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

इस धरती पर अनेक जातियों, अनेक रंगों और अनेक नामों के जीव हैं। सभी जीवों का भाग्य प्रभु ने अपनी विशेष वाणी में लिखा है (जिसे कोई नहीं पढ़ सकता)।

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ । लेखा लिखिआ केता होइ ॥

यदि भाग्य के इस लेखे को कोई और लिखना जाने तो उससे पूछा जाये कि जिसने यह लेखा लिखा है वह कितना (बड़ा) है (इतने सारे जीवों के भाग्य का लेखा लिखने वाला कितना बड़ा होगा इसका अनुमान लगाना कठिन है) ।

केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥

उस प्रभु का कितना बल है और उसका रूप कितना शोभनीय है। प्रभु की दी हुई वस्तुएँ कितनी है यह कौन जान सकता है कौन माप तोल सकता है।

कीता पसाउ एको कवाउ । तिसते होए लख दरिआउ ॥

प्रभु ने एक ही वाक्य से (एकोऽअहं बहुस्याम मैं एक हूँ बहुत हो जाऊँ) इस सृष्टि का प्रसार किया है उस एक संकल्प मात्र से ही अनन्त प्रवाह से युक्त यह सृष्टि अस्तित्व में आ गई ।

कुदरति कवण कहां वीचारु वारिआ न जावां एक वार ॥

हे प्रभु ! तुम्हारी शक्ति कितनी है इसका विचार करने की मुझमें शक्ति कहां ? मैं तो तुम पर एक बार बलिहार न जाऊँ इस सुन्दर रचना को देखकर बार बार बलिहार जाता हूँ ।

जो तुधु भावै साई भलिकार । तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

हे निरंकार प्रभु तुम नित्य शाश्वत सनातन हो जो तुम्हें भाता हो वही उत्तम कार्य है ॥१६॥

□

असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥

(प्रभु द्वारा रची गई सृष्टि का वर्णन हो ही नहीं सकता) इस सृष्टि में असंख्य जीव जप करते हैं असंख्य जीव प्रेम मार्गी हैं। असंख्य जीव पूजा विधान में लगे हैं और असंख्य जीव तप साधना कर रहे हैं ।

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि उदास ॥

असंख्य जोव वेद और अन्य धार्मिक ग्रन्थों का मौखिक पाठ कर रहे हैं । असंख्य योग साधक मन से संसार के प्रति उदासीन रहते हैं ।

असंख भगत गुण गियान वीचारु ॥ असंख सती असंख दातार ॥

असंख्य भक्त प्रभु के गुणों का ज्ञान पूर्वक विचार कर रहे हैं । असंख्य सत्यवादी हैं असंख्य दानी हैं ।

असंख सूर मुह भखसार ॥ असंख मोनि लिव लाइ तार ॥

असंख्य शूरवीर हैं जो अपने मुंह पर (सम्मुख होकर) शस्त्रों की चोटे खाते हैं। असंख्य मोनी प्रभु में एक रस वृत्ति लगाए हुए हैं ।

कुदरत कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥

हे प्रभु ! तुम्हारी यह सुन्दर सृष्टि कैसी है इसका विचार करने की शक्ति मुझ में कहां ? तुम्हारी अद्भुन रचना शक्ति को देखकर मैं गद् गद् हो रहा हूँ मन चाहता है हे मेरे प्रभु ! तुम पर एक बार बलिहार नहीं बार बार बलिहार जाऊँ ।

जो तुधु भावै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

हे मेरे निराकार प्रभु ! तुम नित्य शाश्वत सनातन हो जो तुम्हें भाता हो वही कार्य उत्तम है ॥१७॥

असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर ॥

असंख्य मूर्ख अज्ञान के घोर अन्धकार में पड़े हुए हैं। असंख्य हरामखोर चोर हैं।

असंख अमर करि जाहि जोर ॥

असंख्य अत्याचारी बलपूर्वक शासन करके संसार से चले जाते हैं।

असंख गलवढ हतिया कमाहि ॥

असंख्य लोगों के गले काटने के हिंसक कार्यों में लगे हैं।

असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥

असंख्य पापी पाप कर्म करते जाते हैं। असंख्य झूठे झूठ बोलते फिरते हैं।

असंख मलेछमलु भख खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥

असंख्य म्लेच्छ मल खाने वाले जीवों को खाते हैं। असंख्य निन्दक निन्दा का भार सिर पर ढोते फिरते हैं।

नानकु नीच कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥

श्री गुरु नानक जी नीच प्रकृति के लोगों के सम्बन्ध में विचार करके कहते हैं कि प्रभु की इस अद्‌भुत सृष्टि को देखकर एक बार बलिहार नहीं बार बार बलिहार जाता हूँ।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

हे मेरे निराकार प्रभु तुम नित्य शाश्वत सनातन हो जो तुम्हे भाता है वही उत्तम कार्य है ॥१८॥

□

असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥

सृष्टि के जीवों और पदार्थो के असंख्य नाम हैं और उनके स्थित होने के असंख्य स्थान हैं। अगणित लोक ऐसे हैं जो अगम्य हैं मनुष्य की पहुंच के बाहर हैं।

असंख कहहि, सिरि भारु होइ ॥

सृष्टि का लेखा जोखा करने के लिए असंख्य शब्द ही पर्याप्त नहीं है असंख्य कहने से सिर पर (पाप का) बोझ होता है।

अखरी नामु अखरी सालाह। अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥

(यद्यपि असंख्य शब्द का प्रयोग उचित नहीं है परन्तु) सर्वशक्तिमान प्रभु का नाम अक्षरों में ही तो लिया जा सकता है (प्रभु का नाम लेने के

लिए अक्षरों का प्रयोग करना ही पड़ेगा) और उसकी सराहना भी अक्षरों में ही की जाएगी। प्रभु का ज्ञान भी अक्षरों के द्वारा ही होता है अक्षरों में ही उसकी सराहना के गीत गाए जायेंगे और अक्षरों के द्वारा ही उसके गुणों का अवगाहन किया जायेगा।

अखरी लिखणु बोलणु बाणि। अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥

वाणी का लिखना और बोलना भी अक्षरों के द्वारा ही होता है अक्षरों के द्वारा ही जीवों के मस्तकों पर संयोग भाग्य का लेख लिखा गया है।

जिनि इहि लिखे तिसु सिरि नाहि। जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥

जिस प्रभु ने जीवों के मस्तकों पर लेख लिखा है उसके मस्तक पर कोई लेख नहीं है (क्योंकि उसका भाग्य विधाता कोई हो ही नहीं सकता) वह प्रभु जैसा आदेश करता है जीव को वैसा भाग्यफल पाना ही पड़ता है।

जेता कीता तेता नाउ। विणु नावै नाहि को थाउ ॥

प्रभु ने जितनी सृष्टि उत्पन्न की है उतनी ही नाम रुपात्मक है । नाम के बिना कोई भी स्थान नहीं है।

कुदरत कवण कहा वीचार। वारिआ न जावा एक वार ॥

हे प्रभु तुम्हारी रची हुई सृष्टि कैसी है इसका विचार करने की शक्ति मुझमें कहां है? तुम्हारी अद्‌भुत सृष्टि को देखकर मैं एक बार बलिहार नहीं जाता बार बार बलिहार जाता हूँ।

जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार ॥

हे निराकार प्रभु तुम नित्य शाश्वत सनातन हो, जो तुम्हें भाता है वही उत्तम कार्य है ॥१९॥

□

यहां श्री गुरुदेव जी बता रहे हैं कि माया के प्रभाव से कलुषित हुआ मन नाम स्मरण से ही निर्मल हो सकता है। मनुष्य के कर्म ही उसे पुण्य शाली अथवा पापी बनाते हैं।

भरीऐ हथु पैरु तनु देह। पाणी धोतै उतरस खेह ॥

हाथ या पाँव या देह शरीर यदि धूल में सन जाये तो जल से धोने पर धूल उतर जाती है।

मूत पलीती कपड़ु होइ। दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥

यदि वस्त्र मूत्र से भ्रष्ट हो जाये तो उन पर साबुन देकर उन्हें धो लिया जाता है (और वे साफ हो जाते हैं)।

भरीऐ मति पापा कै संगि ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥

किन्तु, यदि बुद्धि पापकर्म से भ्रष्ट हो जाये तो वह प्रभु नाम के प्रेमरंग से ही धुल सकती है।

पुंनी पापी आखणु नाहि। करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥

पुण्यशाली और पापी ये केवल कहावतें मात्र नहीं है जीवों द्वारा किए गए कर्मों का लेखा जोखा लिख लिया जाता है और इसी आधार पर उन्हें पुण्यात्मा व पापात्मा घोषित किया जाता है।

आपे बीजि आपे ही खाहु। नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

जीव आप ही बोजता है और अपने द्वारा बीजे गए बीज रूपी कार्यों का फल आप ही खाता (भोगता) है। (श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) कर्मों के फलानुसार प्रभु की आज्ञा होती है और जीव जन्म और मरण के चक्र में आता है और जाता है ।।२०।।

□

तीरथु तपु दइआ दतु दानु। जे को पावै तिलका मानु ॥

तीर्थ स्नान, तपस्या, जीवों के प्रति दया भाव से यदि कोई दान देता है तो प्रभु के द्वारा वह तिल मात्र सम्मान प्राप्त करता है (सम्पूर्ण सम्मान नहीं)।

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ। अंतर गति तीरथि मलि नाउ ॥

परन्तु जिस व्यक्ति ने प्रभु के नाम को सुना है सुनकर मनन किया है और पूर्ण मन से उस प्रभु को प्यार किया है वह अन्तःकरण की उच्च अवस्था (आत्मज्ञान) रूपी तीर्थ में ही मल मल कर स्नान कर लेता है।

सब गुण तेरे मैं नाही कोइ। विणु गुण कीते भगति न होइ ॥

हे गुणों के निधान प्रभु ! सभी गुण आपमें ही हैं, मुझ में तो कोई भी गुण नहीं है। बिना गुणों के गुणहीन इस दास को जब तक गुणवान नहीं करोगे तुम्हारी भक्ति नहीं हो सकेगी।

सुअसति आथि बाणी बरमाउ। सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥

हे कल्याण स्वरूप प्रभु जी आप ही माया हैं आपकी वाणी ही ब्रह्मा हैं। आप सत्य स्वरूप हैं, परम सौन्दर्यवान है, सनातन आनन्द स्वरूप हैं।

कवणु सवेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणु सिरुति माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥

वह कौन सी बेला थी, कौन सा वक्त था, कौन सी तिथि थी और कौन सा दिन वार था, कौन सी ऋतु थी, महीना कौन सा था जब नानारूपात्मक सृष्टि अस्तित्व में आई।

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥

विद्वान पंडितों को सृष्टि की उत्पत्ति के समय का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ जिसका कि पुराणों में उल्लेख होता (समय का ज्ञान होता तो अवश्य धर्म ग्रन्थों व पुराणों में इसका उल्लेख होता) काजियों को भी सृष्टि उत्पत्ति के समय के ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकी जिसका वर्णन कुराणों में लिखते (ज्ञान होता तो अवश्य कुराण में इसका उल्लेख होता)।

थिति वारु न जोगी जाणै रुति माहु न कोई ॥
जा करता सिरठि कउ साजे आपे जाणै सोई ॥

योगियों को भी तिथि और वार का ज्ञान नहीं है। अन्य कोई (ज्योतिषी वगैरह) भी सृष्टि रचना की ऋतु व मास आदि को नहीं जानता। ये तो जिस कर्त्ता प्रभु ने सृष्टि की रचना की है वह आप ही जानता है (कि सृष्टि कब और कैसे अस्तित्व में आई)।

किव करि आखां किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥

परमात्मा की इस विशाल सृष्टि की रचना, पालन, संरक्षण की अद्‌भुत शक्ति और संचालन प्रक्रिया का मैं कैसे कथन करूं ? किन शब्दों में और कैसे सराहना करूं ? किस प्रकार वर्णन करूं ? जानू कैसे ?
नानक जी (कथन करते हैं) कहने को तो सभी व्याख्यान और कथाएं कहते हैं और स्वयं को एक से एक चतुर समझते हैं। (परन्तु प्रभु का अन्त कोई नहीं पा सका है)।

वडा साहिब वडी नाई कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपों जाणै अगै गइया न सौहै ॥२१॥

सृष्टि का स्वामी परमात्मा ही सबसे बड़ा है और उसी का यश सबसे महान है संसार में जो कुछ होता है उसके करने से ही होता है। (श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) यदि कोई मनुष्य अपने आपको जानता है तो वह अहंकारी जीव आगे प्रभु के दरबार में जाने पर शोभा को प्राप्त नहीं होता ॥१२॥

□

पाताला पाताल लख अगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥

पाताल के नीचे (पर्त दर पर्त) लाखों पाताल हैं और आकाश के ऊपर लाखों आकाश हैं। (भूगोल और खगोल विद्या के विशेषज्ञ इनका)

अन्तिम छोर खोज खोज कर थक गए और ज्ञान का भंडार होते हुए भी एक ही बात कहते रहे (कि इसका अन्त नहीं जाना जाता)।

सहस अठारह कहनि कतेबा असलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होई विणासु ॥

मुसलमानों के धर्म ग्रन्थों का कथन है कि अठारह हजार लोक हैं परन्तु असलियत में वे भी एक ही वस्तु को मानते हैं (एक अल्ला ही सत्य है) क्योंकि परमात्मा की सृष्टि का कोई हिसाब किताब हो तो लिखा जाये नाशवान वस्तु का ही लेखा जोखा हो सकता है (सर्वशक्तिमान प्रभु की अदम्य क्षमता अलेखनीय है)।

नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) बड़ा कहा जाने वाला वह प्रभु आप अपने आप को जानता है (तुच्छ जीव उसके सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता) ॥२२॥

□

सालाही सालाहि ऐती सुरति न पाइआ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥

हे सराहने योग्य प्रभु जी ! अनेकों भक्त जन आप की सराहना करते हैं परन्तु उनमें इतनी बुद्धि नहीं है कि आपका अन्त पा सके जैसे कि बड़ी बड़ी नदियां और छोटे मोटे प्रवाह समुद्र में ही जाकर गिरते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि समुद्र कितना विशाल है।

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

बादशाहों के बादशाह सुलतान समुद्र जितनी विशाल धन सम्पत्ति को बेशक गांठों में बांध कर फिरते रहें परन्तु वे उस चींटी तुल्य अकिंचन भक्त की तुलना में नहीं हो सकते जिसके मन से हे प्रभु ! तुम विस्मृत नहीं हुए हो ॥२३॥

□

अंतु न सिफती कहणि न अंतु । अंतु न करणै देणि न अंतु ।

न तो प्रभु के गुणों का अन्त है और न उन गुणों का बखान करने वालों का अन्त है । न तो प्रभु के किए हुए कार्यों का अन्त है और न ही उसके द्वारा जीव को दिए गए पदार्थों का अन्त है ।

अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु । अंतु न जापै किआ मनि मंतु ।

जो वह देखता है उसका कोई अन्त नहीं । जो वह सुनता है उसका कोई अन्त नहीं उसके मन में छिपे हुए मंतव्यों का कोई अन्त नहीं ।

अंतु न जापै कीता आकारु । अंतु न जापै पारावारु ।

उस प्रभु द्वारा किए गए आकार (सृष्टि के स्वरूप) का अन्त नहीं जाना जा सकता । उसके विस्तार की सीमा का अन्त भी विदित नहीं हो सकता ।

अंतु कारणि केते बिललाहि । ता के अंतु न पाए जाहि ।

सृष्टि के कर्त्ता प्रभु का अन्त पाने के लिए कितने ही जिज्ञासु बिलखते रहते हैं परन्तु उनसे उस प्रभु का अन्त नहीं पाया जाता ।

एहु अंतु न जाणै कोइ । बहुता कहीए बहुता होए ।

इस अथाह प्रभु का अन्त कोई नहीं जानता जितना इस विषय में कथन किया जाता है उतना ही यह विषय और विस्तृत होता जाता है ।

वडा साहिबु ऊचा थाउ । ऊचे ऊपरि ऊचा नाउ ॥

सृष्टि के मालिक उस प्रभु का स्थान अत्यन्त ऊंचा है और उसका नाम ऊंचे से भी ऊंचा है ।

एवड ऊचा होवै कोइ । तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ।

यदि उस महान प्रभु क तुल्य कोई और महान हो तो वही उस महान प्रभु को जान सकता हे ।

जे वडु आपि जाणै आपि आपि । नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

वह परमात्मा जितना बड़ा आप है वह आप ही अपने-आप को जानता है (श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु कृपा दृष्टि करके दयालु होकर जीवों को सब कुछ देता है ॥२४॥

□

बहुता करमु लिखिया ना जाइ । वडा दाता तिलु न तमाइ ॥

प्रभु बहुत दयालु है, उसकी दयालुता के सम्बन्ध में लिखा नहीं जा सकता । वह महान दानी है और दान देकर बदले में कुछ भी लेने की उसे तृष्णा नहीं हे ।

केते मंगहि जोध अपार । केतिआ गणत नहीं वीचारु ॥

कितने ही अपार वीर योद्धा प्रभु के द्वार पर मांगते रहते हैं । कितने ही ऐसे मांगने वाले हैं जिनकी गणना का विचार ही नहीं हो सकता ।

केते खप तुटहि बेकार ।

कितने ही जोव प्रभु के दिए हुए पदार्थों को भोग कर मरते खपते टूटते व्यर्थ जीवन गँवाते हैं ।

केते लै लै मुकरि पाहि । केते मूरख खाहि खाहि ।।

कितने ही जीव प्रभु के द्वार से भोग्य पदार्थ लेकर मुकर जाते हैं (प्रभु का धन्यवाद भी नहीं करते) कितने ही मूर्ख प्रभु के दिए हुए पदार्थों को खाते रहते हैं और भोग में आसक्त हो प्रभु को भूल जाते हैं ।

केतिआ दूख भूख सद मार ।। ऐहि भि दाति तेरी दातार ।।

कितने ही जीवों को सदैव दुख: क्लेश और भूख की मार सहनी पड़ती है । हे मेरे दाता प्रभु यह अवस्था भी तुम्हारी ही दी हुई है ।

बंदि खलासी भाणै होइ । होरु आखि न सकै कोइ ।।

हे प्रभु ! तुम्हारी आज्ञा से ही इन दुखों क्लेशों से जीवों की मुक्ति हो सकती है अन्य कोई भी साधन कोई व्यक्ति नहीं बता सकता ।

जे को खाइकु आखणि पाइ । उह जाणै जेतिआ मुहि खाइ ।।

यदि कोई इन दुखी जीवों के दरिद्र खान पान के सम्बन्ध में कुछ कहता है तो जितनी उसे मुंह की खानी पड़ती है यह तो बस वही जानता है ।

आपे जाणै आपे देइ । आखहि सिभि केई केइ ।।

वह प्रभु आप ही जानता है और आप ही देता है पर ऐसा कोई कोई ही कहता है ।

जिसनो बखसे सिफति सालाह ।। नानक पातिसाही पातिसाहु ।।२५।।

जिसे प्रभु अपनी प्रशंसा व स्तुति करने की शक्ति प्रदान करता है (श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) वह (दरिद्र होते हुए भी) बादशाहों का बादशाह है ।।२५।।

□

अमुल गुण अमुल वापार । अमुल वापारीए अमुल भंडार ।

प्रभु के गुण अमूल्य हैं और इन गुणों का व्यापार भी अमूल्य है । जो जीव प्रभु के महान गुणों का व्यापार करते हैं वे भी अमूल्य है और उन के पास जो गुणों का भंडार होता है वह भी अमूल्य है ।

अमुल आवहि अमुल लै जाहि । अमुल भाइ अमुला समाहि ।।

वे जीव अमूल्य हैं जो गुणों को लेकर इस पृथ्वी पर आते हैं और वे जीव भी अमूल्य है जो गुणों को लेकर यहां से जाते हैं । अमूल्य हैं वे जीव जो प्रभु के गुणों से प्रम करते हैं और अमूल्य हैं वे जीव जो गुणों के भंडार प्रभु म समा जाते हैं ।

अमुलु धरमु अमुलु दीवाण । अमुल तुलु अमुल परवाणु ।।
अमुल बखसीस अमुलु नीसाणु । अमुल करमु अमुल फुरमाणु ।।

प्रभु के नियम भी अमूल्य है वह दरबार भी अमूल्य है (जहां बैठ कर नियम बनाए गये हैं) । वह तुला भी अमूल्य है और बाट भी अमूल्य हैं

(जिन पर इन नियमों की माप तोल होती है। प्रभु की कृपा भी अमूल्य और कृपा के चिन्ह भी अमूल्य हैं। प्रभु की दया भी अमूल्य है और दया दर्शाने का विधान भी अमूल्य है।

अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ। आखि आखि रहे लिव लाइ ॥

हे प्रभु ! आप अमूल्य से भी अमूल्य है आपका मूल्य अकथनीय है। आपके मूल्य का वर्णन करते करते लोग प्रभु चिन्तन में ही तल्लीन हो जाते हैं !

आखहि वेद पाठ पुराण। आखहि पढ़े करहि वखिआणु ॥
आखहि बरमें आखहि इन्द। आखहि गोपी तै गोविन्द ॥

प्रभु के यश का बखान वेद पाठी तथा पुराण पाठी करते हैं। पढ़े लिखे विद्वान प्रभु के यश का कथन करते हैं, व्याख्याकार प्रभु के यश पर व्याख्यान देते हैं ? प्रभु यश का वखान ब्रह्मा करते हैं वखान इन्द्र करते हैं गोपियां प्रभु यश का वखान करती हैं गोबिन्द प्रभु यश का कथन करते हैं।

आखहि ईसर आखहि सिध। आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव। आखहि सुर नर मुनि जन सेव ॥

प्रभु की महिमा का बखान शिव करते हैं चौरासी सिद्ध करते हैं। प्रभु द्वारा बनाये गये कितने हो बुद्धिमान पुरुष प्रभु की महिमा का कथन करते हैं। असुर प्रभु यश का कथन करते हैं। दैत्य कहते हैं। देवता मनुष्य ऋषि–मुनि, प्रभु के कई भक्त कई सेवक प्रभु यश की महिमा का कथन करते हैं।

केते आखहि आखणि पाहि। केते कहि कहि उठि उठि जाहि।
ऐते कीते होरि करेहि। ता आखि न सकहि केई के ॥

कितने ही प्रभु को महिमा का बखान कर चुके हैं और कितने ही करने का यत्न कर रहे हैं। कितने हो प्रभु यश का वखान करते करते यहां से उठ उठ कर चले जाते हैं (मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं)। हे प्रभु जितने जीव तुमने बनाए हैं (सभी तुम्हारी महिमा का बखान कर रहे हैं) यदि इतने ही जीव और कहें तब भी किसी प्रकार कोई नहीं कह सकता कि तुम्हारा स्वरूप कैसा है।

जेवडु भावै तेवड होइ। नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोल विगाडु। ता लिखीयै सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

वह प्रभु जितना बड़ा होना चाहता है उतना ही बड़ा हो जाता है। श्री

गुरु देव नानक जी (कथन करते हैं) वह सत्यस्वरूप प्रभु स्वयं ही जानता है (कि वह कितना बड़ा है)। यदि कोई मनुष्य बातों को तोड़ मरोड़ कर तुम्हारा वर्णन करने लगे तो वह मूर्खों में सर्वश्रेष्ठ मूर्ख गिना जायेगा ।।२६।।

□

सो दरू केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ।।

कैसा है वह द्वार कैसा है वह घर, जहां बैठ कर प्रभु सब जीवों की संभाल करते हैं।

वाजे नाद अनेक असंखा केते वावण हारे ।

वहां अनेक प्रकार के नाद करने वाले असीम बाजे हैं और कितने ही उन संगीत वाद्यों को बजाने वाले हैं।

केते राग परि सिउ कहीअनि केते गावणहारे ।

कितने ही राग कितनी ही रागनियों सहित उस दरबार में हैं और कितने ही वहां राग रागनियों को गाने वाले बताए जाते हैं।

गावहि तुहनों पउणु पाणी बैसंतरु । गावै राजा धरमु दुआरे ।।

हे प्रभु तुम्हारे द्वार पर आकर वायु देवता, जल देवता और अग्नि देवता तुम्हारे यश को गाते रहते हैं। तुम्हारे द्वार पर आकर धर्मराज तुम्हारे यश का गायन करता है।

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि । लिखि लिखि धरमु वीचारे ।।

चित्रगुप्त जो लोगों के कर्मों के लेखे जोखे को लिख कर जानता है और जिस के लिखे हुए लेखों पर धर्मराज न्याय के लिए विचार करता है वह भी तुम्हारे द्वार पर आकर यश गायन करता है।

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ।।

हे प्रभु ! तुम्हारे द्वारा संवारे गए शिव ब्रह्मा अपनी समस्त शोभनीय शक्तियों सहित सदैव तुम्हारे द्वार पर गायन करते हैं।

गावहि इन्द्र इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ।

सिंहासन पर बैठे इन्द्र अपने सभी देवताओं के दल सहित तुम्हारे यश का गायन करते हैं।

गावहि सिध समाधी अन्दरि गावनि साध विचारे ।।

समाधि में स्थित सिद्ध आपके यश का गायन करते हैं और साधुजन विचार द्वारा आपका गायन करते हैं।

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥

यति सत्यवादी और संतोषो आपका गायन करते हैं और निर्भय वीर योद्धा आपके गुणों का गायन करते हैं ।

गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥

ज्ञानी पण्डित और अध्ययनशील ऋषिजन युग युगान्तर से वेद मन्त्रों के द्वारा आपके द्वार पर गायन कर रहे हैं ।

गावहि मोहणीआं मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥

स्वर्ग लोक, मत्यलोक और पाताल लोक में निवास करने वाली मन मोहक सुन्दरियां आपके यश का गायन करती हैं ।

गावन रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥

तुम्हारे द्वारा उत्पन्न किये गये चौदह रत्न अड़सठ तीर्थों सहित तुम्हारा गायन कर रहे हैं ।

गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥

महाबल शाली शूरबोर योद्धा तुम्हारा गायन करते हैं और अन्डज, जरायुज स्वेदज और उद्भुज चारों खानियों के जीव तुम्हारे द्वार पर गाते हैं ।

गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥

पृथ्वो के समस्त खण्ड सारे मण्डल और ब्रह्ममाण्ड जिन्हें तुमने उत्पन्न किया है और उत्पन्न करके अपनी सत्ता में धारण कर रखा है तुम्हारे द्वार पर गायन करते हैं ।

सेई तुधु नो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥

हे प्रभु जी वही तुम्हारा गायन करते हैं जो तुम्हें अच्छे लगते हैं तुम्हारे प्रेम रंग में रंगे हुए रंगीले भक्त ही तुम्हारा गायन करते हैं ।

होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥

(श्री गुरु) नानक देव जो (कथन करते हैं) हे प्रभु ! और भी कितने ही जीव तुम्हारे द्वार पर गायन करते हैं जो मेरी स्मृति में नहीं आ रहे हैं इस विषय में मैं कहां तक विचार करु ?

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥

वही केवल वही सत्यस्वरूप सच्चो महिमा बाला सच्चा प्रभु (सत्य है सनातन है) नित्य है ।

है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ।।

जिस कर्त्ता प्रभु ने सृष्टि की रचना की है वह वर्तमान में भी है भविष्य में भी होगा न वह विनष्ट होता है और न ही उसका नाश होगा ।

रंगी रंगी भाँती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ।।

रंग बिरंग भांति भाति की वस्तुओं को घड़ घड़ कर जिस प्रभु ने इस माया रूपी सृष्टि को उत्पन्न किया है ।

करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिसदी वडिआई ।।

जैसी प्रभु की इच्छा होती है वैसे ही वह संसार की वस्तुओं की रचना करता है । और रचना करने के बाद अपनी बनाई हुई वस्तुओं को देखता रहता है ।

जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ।।

उस प्रभु को जो अच्छा लगता है वही कार्य करता है और भविष्य में भी वही करेगा किसी से भी उस पर हुकुम नहीं किया जाता (प्रभु पर कोई शक्ति अपनी आज्ञा नहीं चला सकती कि ऐसा नहीं ऐसा करो) ।

सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ।।२७।।

(श्री गुरु देव) नानक जी कथन करते हैं) वह बादशाह है राजा महाराजाओं की शान शौकत का स्वामी है इसलिए समस्त जीवों को उसकी आज्ञा में रहना उचित है ।।२७।।

□

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ।।

बाहरी वेशभूषा का खंडन करते हुए योगी की सच्ची वेश भूषा क्या होनी चाहिए इसका निरूपण करते हुए श्री गुरुदेव जी कहते हैं:

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ।।

(योगी को कानों में धातु की मुंद्रा नहीं) सन्तोष तथा लज्जा की मुँद्राएँ (कुन्डल) पहननी चाहिए, (उसे बगल में भिक्षा हेतु झोला नहीं लटकाना चाहिए, विकार और पाप मुक्त जीवन द्वारा संसार में अर्जित की गई) प्रतिष्ठा को ही झोला बना कर बगल में लटकाना चाहिए, (योगी शरीर पर भस्म रमाते हैं परन्तु मन भटकता है इस लिए उसे भस्म के स्थान पर) एकाग्रचित से परम ब्रह्म से टिके हुए ध्यान की ही भस्म शरीर पर रमानी चाहिए ।

खिंथा कालु कुआरी काईआ जुगति डंडा परतीति ॥

योगो गुदड़ी धारण करता है परन्तु मृत्यु की याद उसकी गुदड़ी, विकार रहित शरीर ही योग साधना की युक्तियां होनो चाहिए (और आश्रय लेने के लिए जिस डंडे को योगी धारण करता है उसक स्थान पर) श्रद्धा और विश्वास का डंडा धारण करना चाहिए।

आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥

(आई पंथी योगी अपनो शिष्य मंडलो को लेकर संसार का भ्रमण करते हैं परन्तु) सारे संसार के लोगों को जमात (अपनी शिष्य मंडली समझकर सबके उद्धार के लिए सामूहिक प्रयास करना ही) आई पंथी बनना है (समाज में रह कर जग को जोता जा सकता है और जग को जीतने के लिए मन पर विजय पाना आवश्यक है जो योगी अहंकार आदि विकारों से लड़ कर मन पर विजय पा लेता है वही जग पर विजय पा लेता है।

आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

योगी लोग परस्पर मिलने पर शिष्टाचार वश 'आदेश' शब्द का प्रयोग करते हैं श्री गुरुदेव जो फरमाते हैं) मैं परब्रह्म को नमन करता हूँ जो सृष्टि का मूल कारण है जो शुद्ध स्वरूप है, जिसका मूल खोजना कठिन है, जो नाशरहित है और युग युगान्तर से जो अखण्ड है ॥२८॥

□

भुगति गिआनु दइआ भण्डारणि घटि घटि वाजहि नाद ।

(योगियों को उपदेश देते हुए गुरू साहिब फरमा रहे हैं कि हे योगो!) ज्ञान ही हमारा भोजन है दुखो जोव मात्र के प्रति मन में दया भावना होना ही हमारे भंडार घर का भंडारी है प्रत्येक जीव के हृदय में बजने वाली धड़कन को सुनना ही हमारे लिए दशम द्वार में सुने जाने वाले नाद का बजना है।

आपि नाथु नाथी सभ जाकी रिधि सिधि अवरा साद ।

वह प्रभु आप ही हमारा नाथ (गोरख नाथ) है (स्वामी है) समस्त सृष्टि जिसके वशोभूत है, ऋषियों और सिद्धियों से प्राप्त किए गए स्वाद से हमें अन्यथा रहना है।

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥

प्रभु संयोग और वियोग दोनों से संसार का कार्य चला रहे हैं ये (सुख और दुख अथगा संयोग व वियोग) भाग्यानुसार ही हिस्से में आते हैं।

आदेसु तिसै आदेसु। आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२६॥

मैं परब्रह्म को नमन करता हूं। उस परब्रह्म को नमन करता हूं जो सृष्टि का मूल कारण है जो शुद्ध स्वरूप है, जिसका मूल खोजना कठिन है, जो नाश रहित है और युग युगान्तर से जो अखण्ड है ॥२६॥

□

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु।
इकु संसारी इकु भंडारी ईकु लाए दीबाणु।

(मान्य विचार है कि) एक अकेला परमात्मा जब माया से मिला तो माया प्रसूत हुई और प्रत्यक्ष रूप से तीन पुत्र उत्पन्न हुए। एक संसार को उत्पन्न करने वाला ब्रह्मा, एक संसार का भरण पोषण करने वाला विष्णु और एक का स्वभाव जीवों को ठिकाने लगाने अथवा संहार का है, शिव।

जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥

(गुरु साहिब इस मान्यता का खण्डन करते हुए कहते हैं नहीं) उस प्रभु को जैसा अच्छा लगता है वैसे ही वह सृष्टि का संचालन करता है (समस्त सृष्टि उसी क्रम में चलतो है) जैसा उसका आदेश होता है।

ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥

सर्वाधिक आश्चर्य यह है कि प्रभु तो संपूर्ण सृष्टि के क्रिया कलापों को देख रहा है परन्तु सृष्टि के उन जीवों को (जिन्हें वह देख रहा है) वह प्रभु दिखाई नहीं देता।

आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

(इसलिए मैं उसी सर्वशक्तिमान) परब्रह्म को नमन करता हूँ। उस परब्रह्म को नमन करता हूँ जो सृष्टि का मूल कारण है जो शुद्ध स्वरूप है, जिसका मूल खोजना कठिन है, जो नाश रहित है और युग युगान्तर से जो अखण्ड है ॥३०॥

आसणु लोइ लोइ भंडार। जो किछु पाइया सु एका वार ॥

उस प्रभु का निवास स्थल प्रत्येक लोक में है और उसके भंडार भी प्रत्येक लोक में हैं। उन भंडारों में जो कुछ डाला गया है एक ही बार में डाल दिया गया (जो निरन्तर बाँटने पर भी समाप्त नहीं होता)।

करि करि वेखै सिरजणहारु। नानक सचे की साची कार ॥

सृष्टि का रचयिता प्रभु सृष्टि की उत्पत्ति करके स्वयं ही उसकी देख भाल करता है। (श्री गुरु देव नानक जी (कथन करते हैं) सत्य स्वरुप प्रभु की सृष्टि को संभालने की यह क्रिया शाश्वत है।

आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

मैं परब्रह्म को नमन करता हूं उस परब्रह्म को नमस्कार करता हूं जो सृष्टि का मूल कारण है, जो शुद्ध स्वरूप है, जिसका मूल खोजना कठिन है, जो नाश रहित है जो युग युगान्तर से अखण्ड है ॥३१॥

□

इक दू जीभौ लख होहि, लख होवहि लख वीस ॥
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥

हे प्रभु ! मेरी एक जिह्वा से लाख जीभें हो जायें और उन एक लाख जीभों से पुनः बीसीयों लाख जीभें हो जाये। हे सम्पूर्ण जगत के स्वामी ! उन लाखों लाखों जीभों से मैं लाखों लाखों बार तुम्हारे पवित्र नाम का उच्चारण करता रहूं।

ऐतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीयै होइ इकीस ॥

संसार के स्वामी प्रभु की प्राप्ति के मार्ग के विभिन्न सोपान है जिन पर जब साधक धीरे धीरे चढ़ता जाता है तो उस स्वामी प्रभु से एक हो जाता है (मिल जाता है)।

सुणि गला आकास की कीटा आई रीस।

(कोई व्यक्ति ब्रह्म ज्ञानी प्रभु भक्तों की भक्ति-साधना की कथाएँ सुन कर उन साधकों की स्पर्धा करने लग जाये लेकिन भक्ति के कठिन मार्ग पर चलने का स्वयं उद्यम न करें तो उसकी यह इच्छा उसी प्रकार होगी जैसे कि) आकाश पर उड़ने वाले पक्षियों से आकाश की ऊंचाईयों की बातें सुन कर पृथ्वी पर रेंगने वाला कीड़ा आकाश में उड़ने की इच्छा करने लगे।

नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु की कृपा से ही सहज पद की प्राप्ति होती है अन्यथा झूठे व्यक्ति की बातें सारहीन और मिथ्या होती हैं ॥३२॥

□

आखणि जोरु चुपै न जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥

(प्रभु की कृपा के बिना तो इस मनुष्य में) न कुछ करने का बल है न चुप रहने की शक्ति है। न इसका किसी से माँगने का बल है न कुछ देने की शक्ति है।

जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥

मनुष्य में न जीवित रहने का बल है और न मरने का बल है न ही मनुष्य में राज्य प्राप्त करने का सामर्थ्य है और न ही धन सम्पदा जिसके कारण मनुष्य के मन में हलचल मची रहती है।

जोरु न सुरती गिआनि बीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारि ॥

मनुष्य में न तो चित्रवृति प्रभु चरणों में जोड़ने की क्षमता है और न ही ज्ञान व विचार करने का बल है। न ही मनुष्य में संसार सागर से मुक्त होने की युक्ति सोचने का सामर्थ्य है।

जिसु हथि जोरु करि वेखै सोई ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

जिसके हाथ में बल है उसी प्रभु ने जीवों को बनाया है और स्वयं सब की देखभाल करता है (श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) न कोई व्यक्ति श्रेष्ठ है और न कोई नीच है (जिसको प्रभु ने जैसा बना दिया है वह वैसा ही है ॥३३॥

□

३४ से ३७ तक की चार पउड़ीओं (पदों) में साधक की उस अवस्था का वर्णन किया गया है जिसमें एक साधारण जिज्ञासु प्रभु की कृपा दृष्टि प्राप्त कर साधना पथ पर निरन्तर चलता हुआ प्रभु में अभेद हो जाता है। साधक की प्रथम अवस्था को धर्म खण्ड कहा गया है जबकि विषय विकार और सांसारिक लिप्सा में आसक्त जीव के अन्दर एका-एक प्रभु कृपा से यह चेतना जागृत होती है कि वह इस संसार में क्या करने आया है और क्या कर रहा है ? उसके जीवन का प्रयोजन का क्या है ? उसका धर्म क्या है ? कर्त्तव्य क्या है ? दूसरी अवस्था को गुरु देव जी ने 'ज्ञान खंड' बताया है। धर्म का विचार आते ही जीव के मन में ज्ञान की आंधी उठ खड़ी होती है। अपने को जानने और प्रभु को

जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है अध्ययन और चिन्तन मनन द्वारा उसकी सूझ बढ़ने लगती है। आध्यात्मिक विषयों के ज्ञान में उसे आनन्द की उपलब्धि होती है। तीसरी अवस्था 'श्रम खंड' है। जब साधक धर्म ग्रन्थों धर्म चर्चाओं से अर्जित ज्ञान के द्वारा स्वयं को सही अधिकारी बनाने का श्रम करता है वह अपने आचरण में परिवर्तन लाता है गुरु उपदेशानुसार जीवन को ढालने का श्रम करता है। चौथी अवस्था 'करम खंड' है जब साधक के कर्म वस्तुत प्रशंसनीय हो उठते हैं। उठते बैठते उसका मन प्रभु की याद से जुड़ा रहता है। उसका प्रत्येक कर्म प्रभ की स्मृति को समर्पित होता है। पांचवीं अवस्था में 'सच खंड' है जब साधक पर सर्वशक्तिमान प्रभु की कृपा हो जाती है और वह उसके चरणों में जा पहुंचता है प्रभु से उसका एकाकार हो जाता है। इस सम्पूर्ण प्रकिया को चार पदों में निरुपित किया गया है।

राती रुती थिति वार। पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विच धरती थापि रखी धरमसाल ॥

राते, ऋतुएं, तिथियां और वार, पवन पानो अग्नि पाताल इन सबके बीच में प्रभु ने धरती की स्थापना धर्मशाला के रूप में की है।

तिसु विच जीअ जुगति के रंग। तिनके नाम अनेक अनन्त ॥

इस संसार रूपो धर्मशाला में अनेक प्रकार के रंगों वाले और विभिन्न प्रथाओं को मानने वाले जीव बनाये गये हैं जिन अनन्त जीवों के अनेकों नाम हैं।

करमी करमी होइ वीचारु। सचा आपि सचा दरबारु ॥

कर्मों के अनुसार यहां जीव का विचार होता है (किसी के साथ अन्याय नहीं होता क्योंकि) वह प्रभु आप भो सत्य है और उसका दरबार भी सत्य है।

तिथै सोहनि पंच परवाणु। नदरी करमि पवै निसाणु ॥

(प्रभु के सच्चे दरबार में) वहां प्रभु द्वारा कबूल कर लिए गये सन्तजन ही सुशोभित होते हैं। प्रभु की कृपा दृष्टि का प्रत्यक्ष चिन्ह उनके मस्तक पर चमकता ह।

कच पकाई ओथै पाई। नानक गईआ जापै जाई ॥३४॥

कच्चेपन और पक्केपन की वहीं (प्रभु दरबार) में ही परीक्षा होती है (श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) वहां जाने पर ही जाने जाते हैं कि कौन जीव वास्तव में सच्चा है और कौन मिथ्या व पाखंडी है ॥३४॥

धर्मखण्ड में साधक जानता है कि प्रभु दरबार में अच्छे व बुरे कर्मों का निर्णय होता है अतः प्रेरणा जागृत होती है कि उसे शुभ कार्य करने चाहिए।

धरम खंड का एहो धरमु। गिआन खंड का आखहु करम ।।

धर्म खंड का यही धर्म है (कि यहां भले-बुरे, कच्चे व पक्के का निर्णय होता है) अब मैं ज्ञान खंड का कर्म बताता हूं।

केते पवण पाणी बैसंतर केते कान महेस।
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ।।

(ज्ञान खंड में साधक जानता है कि) प्रभु द्वारा रची गई सृष्टि में कई वायु, जल और अग्नि देवता हैं कितने ही विष्णु और महेश हैं कई ब्रह्मा हैं विभिन्न रूपों विभिन्न रंगों और विभिन्न वेशों के आकारों को घड़ा जा रहा है।

केतीआ करम भूमी, मेर केते केते धू उपदेस ।
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ।।

कई पृथ्वियां हैं, कई सुमेरु पर्वत हैं कई ध्रुव और कई उसके उप-देश हैं कितने हो इन्द्र हैं कितने ही चन्द्रमा हैं, कई कई सूर्य हैं और कई मण्डल व देश हैं।

केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ।।

कितने ही (सिद्धियों को प्राप्त) सिद्ध (पुरुष) हैं कितने ही प्रबुद्ध (बुद्धिमान) कितने ही नाथ पंथी कितने ही विभिन्न वेशों को धारण करने वाले देवी देवताओं के उपासक हैं।

केते देव दानव, मुनि केते केते रतन समुंद।
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ।।

कितने ही देवता हैं कितने ही दानव हैं कई कई मुनि हैं कितने ही समुद्र और कितने ही उनमें छिपे रत्न हैं कितनी ही खानियां (जीव योनियां) कितनी ही बोलियां कितने ही बादशाह और कितने ही राजे हैं।

केतीआ सुरती सेवक केते नानक अन्त न अन्तु ।।३५।।

कितने ही चित्तवृत्ति को एकाग्र करने के साधन हैं कितने ही प्रभु के सेवक हैं (श्री गुरुदेव) नानक जो (कथन करते हैं) (ज्ञान द्वारा साधक जानता है) प्रभु के द्वारा रचित सृष्टि के अन्त का कोई अन्त नहीं ।।३५।।

गिआन खंड महि गिआन परचंडु ॥
तिथै नाद विनोद कोड अनंदु ॥

ज्ञान खंड में आध्यात्मिक ज्ञान की प्रचण्डता होती है वहां ज्ञान को अवस्था में जिज्ञासु को अनहृद नाद की करोड़ों विलास लहरें आनन्दित करती रहती हैं।

सरम खंड की बाणी रूपु। तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥

श्रम खंड में पहुँचने पर साधक की वाणी अति मनोहर व मधुर हो जाती है। वहां साधक के मन की अवस्था बहुत अनुपम हो जाती है।

ता कीआं गला कथीआँ ना जाहि। जे को कहै पिछै पछुताइ ॥

इस खण्ड की बातें कही नहीं जा सकती यदि कोई कहने का प्रयास करता है तो बाद में पछताता है।

तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥
तिथै घड़िऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

वहां (श्रम खण्ड में) वृत्ति, चित्त, मन और बुद्धि को शुद्ध किया जाता है और वहां देवताओं और सिद्ध पुरुषों जैसी शुद्धि मन की बनाई जाती है ॥३६॥

□

करमखंड की बाणी जोरु। तिथै होरु न कोई होरु।

करमखंड में जीव पर प्रभु की कृपा दृष्टि हो जाती है और तब उसकी बाणी में बल आ जाता है (वह बलवान हो जाता है विकार उस पर हावी नहीं हो सकते अन्य लोगों से भी वह बल पूर्वक अपने विचार कह सकता है) वहां (इस अवस्था में) और किसी मनुष्य का बल उसे रोक नहीं सकता (साधना मार्ग से हटा नहीं सकता)।

तिथै जोध महाबल सूर। तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥

उस अवस्था में साधक महाबली वीर योद्धा के समान बलशाली हो जाता है क्योंकि उसके रोम रोम में राम प्रभु परिपूर्ण हो रहा होता है।

तिथै सीतो सीता महिमा माहि। ता के रुप न कथनै जाहि ॥

वहां (उस अवस्था में) साधक का अन्तः करण पूर्णत प्रभु की महिमा में गुंथा जाता है। (और प्रत्येक पल भर प्रभु के यश गायन में सुरति लगी रहने से) वह जिस रूप-लावण्य को प्राप्त हो जाता है उस रूप का कथन नहीं किया जा सकता।

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि । जिन के रामु वसै मन माहि ॥

इस अवस्था पर पहुंच कर जिस साधक के मन में राम प्रभु का निवास होता है वह न तो मरता (अमर कीर्ति हो जाता है) और न ही माया द्वारा ठगा जाता है ।

तिथै भगत वसहि के लोअ । करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥

(और तब भक्त साधना के उस लोक में पहुंचता है जिसे सचखंड कहा गया है जहां सत्य ही सत्य का प्रकाश होता है) उस लोक में कितने ही लोकों के भक्त निवास करते हैं । उनके मन में उस सत्य स्वरूप प्रभु का निवास होता है इसलिए वे प्रतिपल आनन्द का अनुभव करते हैं ।

सचखंड वसै निरंकारु । करि करि वेखै नदरि निहाल ॥

प्रतिपल हृदय में सत्यस्वरूप प्रभु को धारण करने वाले भक्तों के हृदय खंड में वह निराकार प्रभु निवास करता है जो समस्त सृष्टि की रचना करके उसे कृपा दृष्टि से देखता है (ऐसा कृपालु प्रभु अपने भक्तों को भी कृपा दृष्टि से देखता है) और वे कृतार्थ हो जाते हैं ।

तिथै खंड मंडल वरभंड । जे को कथै त अंत न अंत ॥

(साधक जब प्रभु से तदाकार हो जाता है तो उस अवस्था में उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है (जिसके द्वारा) उसे अनन्त पृथ्वी खंड अनन्त मण्डल और अनन्त ब्रह्माण्ड दिखाई देते हैं जिनका वह वर्णन नहीं कर सकता क्योंकि प्रभु की अनन्त रचना का कोई अन्त नहीं है ।

तिथै लोअ लोअ आकार । जिव जिव हुकमु तिवै तिवकार ॥

उस अवस्था में कितने हो लोकों के आकार दिखाई देते हैं जिनमें जैसी जैसी प्रभु की आज्ञा होती है वैसी क्रियाएं चलती रहती हैं ।

वेखै विगसै करि वीचारु । नानक कथना करड़ा सारु ॥

वह प्रभु अपनी रची सृष्टि को देखकर और उनके कर्मों का विचार कर प्रसन्न होता है । (श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) इस अवस्था का सारतत्व कथन कर पाना अत्यन्त कठिन है । (प्रभु से एकाकार हो जाने को अवस्था में साधक को चारों ओर प्रभु द्वारा रचे गये अनन्त लोक दिखाई देते हैं । और सर्वत्र उनमें प्रभु रमा हुआ दिखाई देता है । वह इसका अनुभव तो कर सकता है परन्तु शब्दों द्वारा नहीं कर सकता ।

अन्तिम पद में गुरुदेव जी बता रहें हैं कि साधक इस उच्च अवस्था की प्राप्ति कैसे कर सकता है :

जत पाहारा धीरजु सुनिआरु । अहरणि मति वेदु हथिआरु ।।

यदि इन्द्रिय संयम को सुनार को दुकान बना लिया जाय और धैर्य को सुनार बना लिया जाये बुद्धि को लौह पिण्ड और ज्ञान को हथौड़ा बना लिया जाये ।

भउ खला अगनि तप ताउ । भांडा भाउ अंमृत तितु ढालि ।।

प्रभु के भय की धौंकनी हो तप और साधना की अग्नि हो प्रभु प्रेम की कुठाली हो और उस कुठाली में प्रभु के नाम अमृत को ढाला (गलाया) जाये ।

घडीऐ सबदु सची टकसाल ।

(तब) सत्य पर आधारित ऐसी टकसाल में ही गुरु के शब्द उपदेश द्वारा जीव रूपी सिक्के को (ठोक पीट कर सुन्दर) बनाया जा सकता है ।

जिन कउ नदरि करमु तिन कार ।

नानक नदरी नदरि निहाल ।।३८।।

जिन जीवों पर प्रभु की कृपा दृष्टि होती है वे ही जीव ऐसे शुभ कार्यों में लगते हैं (श्री गुरुदेव) नानक जो (कथन करते हैं) वे ही जोव कृपा दृष्टि से देखे जाने पर कृतार्थ हो जाते हैं ।

□

जपुजी की ३८ पउड़ीआं यहां समाप्त होती हैं । अन्त में एक श्लोक दिया गया है । जिसमें जपुजी की सम्पूर्ण वाणी का निचोड़ रूप से व्यक्त किया गया है ।

सलोकु ।।

पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु ।।

वायु सम्पूर्ण संसार की गुरु है और जल सम्पूर्ण सृष्टि का पिता है और विशाल धरती सम्पूर्ण सृष्टि की माता है ।

दिवसु राति दुई दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ।।

दिन और रात्रि दोनों धाय और सेवक हैं जिनकी गोद में यह सम्पूर्ण जगत रूपी बालक खेलता रहता है ।

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ।।

इस जगत रुप बालक के शुभ कर्म और अशुभ कर्मों को चित्रगुप्त (चुपचाप देखता रहता है और) धर्मराज के सम्मुख पढ़ कर सुनाता है ।

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ।

अपने अपने कर्मों का (धर्मराज के सम्मुख) फैसला होता है भले ही कोई निकट योनि (उच्च कुल) का हो या दूर की योनि (निम्न कुल जाति) का ।

जिनी नाम धिआइआ गए मसकति घालि ।

(जीव किसी भी योनि व कुल जाति के क्यों न हों) जिन्होंने भी प्रेम से प्रभु का नाम स्मरण किया है और कठिन तप साधना कर आध्यात्मिक कमाई की है।

नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ।

(श्री गुरुदेव) नानक जो (कथन करते हैं) उनके ही मुख उज्जवल हैं (लोक परलोक में प्रतिष्ठित हुए हैं) वे स्वयं तो बन्धन मुक्त हुए ही हैं उनके साथ और भी कितने ही छूट गए हैं। (बन्धन मुक्त हो गये हैं)।

□

इससे आगे पृ० ७ से १३ तक की वाणी सोदरु सो पुरखु और सोहिला शीर्षक से संकलित की गई है। सोदरु में श्री गुरु नानक देव महला १ के आसा राग में रचित तीन पद (शब्द) गुरु रामदास जी महला ४ का गूजरी राग में रचित एक पद, गुरु अर्जुन देव जी महला ५ का इसी राग में रचित एक, कुल पांच पद हैं। सो पुरखु शीर्षक से गुरु रामदास जी द्वारा आसा राग में रचित दो पद, गुरु नानक देव जी द्वारा रचित एक पद और एक गुरु अर्जुन देव जी द्वारा रचित कुल चार पद हैं। यह नौ शब्द रहिरास नाम से प्रसिद्ध नित्य नियम की वाणी के क्रम में सायंकाल में गाए जाते हैं। सोहिला शीर्षक से संकलित पांच शब्द 'कीर्तन सोहिला' नाम से प्रसिद्ध शयन कालीन वाणी है। नित्य नियम से इसे सोने से पहले गाया जाता है। इसमें गुरु नानक देव जी द्वारा रचित एक शब्द गउड़ी दीपकी, एक आसा और एक धनासरी राग में है, एक एक शब्द गुरु राम दास जी और गुरु अर्जुन देव जी का गउड़ी पूरबी में कुल पाच शब्द संकलित हैं।

सौदरु राग आसा महला ॥१॥

१ ओं सतिगुरु प्रसादि ॥

सोदरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥

हे प्रभु तुम्हारा वह द्वार कैसा है वह घर कैसा है जहां बैठ कर आप संम्पूर्ण सृष्टि की संभाल करते हो।

वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावण हारे ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे द्वार पर अनेक प्रकार के नाद करने वाले असंख्य बाजे हैं और कितने ही तुम्हारे द्वार पर उन बाजों को बजाने वाले हैं।

केते तेरे राग परि सिउ कहि अहि केते तेरे गावण हारे ।

तुम्हारे द्वार पर कितनी ही राग रागनियों सहित कहे जाने वाले कितने ही (रागों में) तुम्हारे यश को गाने वाले हैं ।

गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसन्तरु गावै राजा धरमु दुआरे ।।

हे प्रभु ! वायु देवता जल देवता और अग्नि देवता आपका गायन कर रहे हैं और तुम्हारे द्वार पर धर्मराज भी आपके यश का गायन करता है ।

गावन तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ।।

चित्र गुप्त भो तुम्हारा गायन करता है जो लोगों के कर्मों के लेख जोखे को लिखकर जानता है और जिसके लिखे हुए लेखों पर धर्मराज न्याय के लिये विचार करता है ।

गावनि तुधनो ईसरु ब्रह्मा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ।।

तुम्हारा यश गायन तुम्हारे द्वारा संवारे गए शिव ब्रह्मा अपनी समस्त शोभनीय शक्तियों सहित करते हैं ।

गावनि तुधनो इन्द्र इन्द्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ।।

हे प्रभु ! सिंहासन पर बैठ कर इन्द्र अपने सभी देवताओं के दल सहित आपके यश का गायन करते हैं ।

गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बिचारे ।।

समाधि में स्थित सिद्ध आपके यश का गायन करते हैं और विचारवान साधु भी आपके यश का गायन करते हैं ।

गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ।।

यति, सत्यवादी और सन्तोषी आपका गायन करते हैं और उद्भट वीर योद्धा आपका गायन करते हैं ।

गावनि तुधनो पंडित पढ़नि रखीसर जुग जुग वेदा नाले ।।

ज्ञानी पंडित और अध्ययनशील ऋषिजन युग युगान्तर से वेद मन्त्रों द्वारा आपके द्वार पर गायन कर रहे हैं ।

गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछ पइआले ।।

स्वर्ग लोक, मर्त्य लोक और पाताल लोक में निवास करने वाली मन मोहक सुन्दरियां आपके यश का गायन करती हैं ।

गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ।।

तुम्हारे द्वारा उत्पन्न किये गये रत्न अड़सठ तीर्थों सहित तुम्हारा गायन कर रहे हैं ।

गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥

महाबलशाली शूरवीर योद्धा तुम्हारा गायन करते हैं और अण्डज, जरायुज, श्वेदज और उद्भुज चारों खानियों के जीव तुम्हारे यश का गायन करते हैं।

गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रह्मण्डा करि करि रखे तेरे धारे ॥

पृथ्वी के समस्त खंड मण्डल और ब्रह्माण्ड जिन्हें तुमने उत्पन्न किया है और उत्पन्न करके तुमने अपनी सत्ता में धारण कर रखा है तुम्हारे द्वार पर गायन करते हैं।

सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥

हे प्रभु जी! वही तुम्हारा गायन करते हैं जो तुम्हें अच्छे लगते हैं तुम्हारे प्रेमरंग में रंगे हुए रंगीले भक्त ही तुम्हारा गायन करते हैं।

होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥

(श्री गुरु देव) नानक जी कथन करते हैं) और भी कितने ही जीव जो मेरी स्मृति में नहीं हैं तुम्हारा यशोगान करते रहते हैं उन सबका कहां तक विचार किया जाये।

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥

वही केवल वही सत्य स्वरुप सच्ची महिमा वाला सच्चा प्रभु (सत्य है सनातन है) नित्य है।

है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥

जिस कर्त्ता प्रभ ने सृष्टि की रचना की है वह वर्तमान में भी है भविष्य में भी होगा। न वह विनष्ट होता है और न ही उसका नाश होगा।

रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइया जिनि उपाई ॥

रंग बिरंगी भांति भांति की वस्तुओं को घड़ घड़ कर जिस प्रभु ने इस माया रूपी सृष्टि को उत्पन्न किया है।

करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥

जैसी प्रभु की इच्छा होती है वह इस संसार की वस्तुओं की रचना करता है और रचना करने के बाद अपनी बनाई हुई वस्तुओं को देखता रहता है।

जो तिसु भावै सोई करसी फिर हुकमु न करणा जाई ॥

उस प्रभु को जो अच्छा लगता है वही कार्य करता है और करेगा किसी से भी उस पर हुकम नहीं किया जाता।

सो पातिसाहु साहापति साहिबु नानक रहणु रजाई ।।

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) वह बादशाह है राजा महाराजाओं की शान-शौकत प्रतिष्ठा का स्वामी है इसलिये उसकी आज्ञा में रहना उचित है ।।१।।

□

आसा महला १

श्री गुरु नानक देव जी महाराज से उनके पिता श्री कालू राम जी ने पूछा कि वे जिस प्रभु के ध्यान में मग्न रहते हैं वह कितना महान है ? क्या बता सकते हैं ? तब श्री गुरु देव जी ने गद् गद् भाव से उत्तर दिया :

सुणि वडा आखै सभु कोइ ।। केवडु वडा डीठा होइ ।।

सभी लोग सुनी सुनाई बात पर कह देते हैं कि प्रभु बहुत बड़ा है । परन्तु प्रभु कितना बड़ा है यह तो देखने पर बताया जा सकता है ।

कीमति पाइ न कहिआ जाइ ।। कहणै वाले तेरे रहे समाइ ।।

हे मेरे प्रभु ! न तो तुम्हारी महानता का मूल्य आँका जा सकता है और न ही महानता का वाणी द्वारा कथन किया जा सकता है । तुम्हारी महानता का कथन करने वाले (जिन्होंने तुम्हारा दर्शन प्राप्त किया है और वस्तुतः कह सकते हैं व तो तुम्हारे रूप स्वरूप का दर्शन गद् गद् भाव से तुममें ही समाहित हो कर रह जाते हैं (ऐसी अवस्था में कौन बताये कि प्रभु तुम कितने महान हो) ।

वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ।।

हे मेरे महान स्वामी तुम समुद्र की भांति गहरे और गंभीर हो और अनन्त गुणों का भण्डार हो ।

कोई न जाणै तेरा केता केवड चीरा ।।१।। रहाउ ।।

कोई भी जोव नहीं जानता कि तुम्हारा कितना बड़ा विस्तार है ।

।।१।। रहाउ ।। विश्राम अथवा टेक ।।

सभि सुरती मिली सुरति कमाई । सभी कीमति मिलि कीमति पाई ।।
गिआनी धिआनी गुर गुरहाई । कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ।।२।।

सभी ध्यान लगाने वाले महान ध्यानियों ने चित्तवृत्ति एकाग्र करके ध्यान लगाया । सभो बुद्धिमान विचारकों ने मिलकर तुम्हारा मूल्य पाने का प्रयास किया । बड़े बड़े ज्ञानी बड़े बड़े ध्यानी गुरुओं के भी गुरु महान विद्वानों ने यत्न किया परन्तु तिल मात्र भो तुम्हारी महानता का कथन उनके द्वारा नहीं किया जा सका ।।२।।

सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ । सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ । करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥

हे प्रभु सत्य के श्रेष्ठ गण सभी प्रकार की तपस्या के फल, सभी अच्छाईयां सिद्ध पुरुषों द्वारा प्राप्त किया जाने वाला यश (सब तुम्हारी कृपा से ही प्राप्त होता है) तुम्हारी कृपा के बिना किसी ने भी किसी क्षेत्र में सिद्धि प्राप्त नहीं की है। यदि तुम्हारी कृपा प्राप्त न हो तो सभी सिद्धियों पर रोक लग जाती है।

आखण वाला किआ वेचारा । सिफती भरे तेरे भंडारा ॥

आपकी महिमा को कहने वाला ये बेचारा जीव है ही क्या ? आपके गुणों के भंडार भरे पड़े हैं (आपके किस किस गुण का बखान जीव करें)।

जिसु तू देहि तिसै किआ चारा । नानक सचु सवारण हारा ॥२॥

जिसे आप गुणगान करने की शक्ति देते हो उस पर किसी का क्या जोर चल सकता है (उसे कोई नहीं रोक सकता) (श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) हे सत्य स्वरुप प्रभु आप स्वयं हो जीव को संवारने वाले हो ॥२॥

□

आसा महला ॥१॥

श्री गुरु नानक देव जी अपनी माता से परमात्मा के प्रति अपनी प्रेमानुभूति का वर्णन कर रहे हैं।

आखा जीवा बिसरै मरि जाउ । आखणि अउखा साचा नाउ ॥

हे माता ! जब तक मैं प्रभु का नाम स्मरण करता हूं तब तक मैं अपने आपको जीवित अनुभव करता हूं और प्रभु को विस्मृत करने से मैं मर जाता हूं (मृत वत हो जाता हूं)। यद्यपि प्रभु के सत्य नाम को कहना बहुत कठिन है।

साचे नाम की लागै भूख । उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥

परन्तु मुझे प्रभु के सत्य नाम को ही भूख (को निवृत्ति) हेतु जिस (हरि नाम के) भोजन को खाया जाता है उससे दुखों का नाश हो जाता है और लोक परलोक में स्थायी सुखों की प्राप्ति होती है ॥१॥

सो किउ विसरै मेरी माइ । साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥

हे मेरी माता ! वह सत्य स्वरुप स्वामी और उसका सच्चा नाम मुझे कभी भी विस्मृत न हो ॥१॥ रहाउ॥

साचे नाम की तिलु वडिआई ।। आखि थकै कीमति नही पाई ।।

सत्य स्वरुप प्रभु के सच्चे नाम की महिमा के तिल मात्र की भी कीमत कोई जीव आँक नहीं सका। यद्यपि समस्त जीव कहते कहते (प्रयास करते) थक गये।

जे सभि मिलि कै आखणि पाहि । वडा न होवै घाटि न जाइ ।।२।।

यदि सभी जीव मिल कर प्रभु की महिमा गान करने की शक्ति प्राप्त कर भी ले तब प्रभु स्तुति करने से बड़ा नहीं हो जाता और निन्दा करने से घट नहीं जाता है ।।२।।

न ओहु मरै न होवै सोगु । देदा रहै न चूकै भोगु ।।

सदा स्थिर होने के कारण वह प्रभु कभी भी मरता नहीं, नाश को प्राप्त नहीं होता इसलिए कोई उसके लिए शोक नहीं करता। वह निरन्तर लोगों को दान देता रहता है और उसके दिये हुए भोग्य पदार्थ कभी भी समाप्त नहीं होते।

गुणु एहो होरु नाही कोइ ।। ना को होआ ना को होइ ।।३।।

प्रभु का सबसे बड़ा गुण यही है कि उस जैसा दाता और कोई नहीं है उस जैसा देने वाला ना कोई हुआ है ना कोई होगा ।।३।।

जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ।। जिनि दिन करि कै कीती राति ।।

हे प्रभु ! जितने महान आप स्वयं है उतनी ही महान आपकी देन है आप इतने महान और दयालु हैं जिस तरह आप ने दिन बनाया है उसी तरह रात भी बनाई है (मेहनत करने को दिन बनाया है तो विश्राम के लिये रात्रि बनाई है मनुष्य के सुखों का ख्याल करते हुए)

खसमु विसारहि ते कमजाति ।। नानक नावै बाझु सनाति ।।४।।३।।

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) जो ऐसे दयालु कृपालु प्रभु को भुला देते हैं और उसके दिये हुये सुखों में ही लिप्त हो जाते हैं) वे जीव निश्चय ही नीच कर्मी हैं। प्रभु का नाम स्मरण किए बिना मानव प्रेत तुल्य हैं (मानव जीवन व्यर्थ है) ।।४।।३।।

□

राग गूजरी महला ४

श्री गुरु रामदास जी महाराज इस शब्द में गुरु देव के चरणों में नाम प्राप्ति के लिये विनम्र निवेदन कर रहे हैं। कुछ विद्वान आलोचकों का विचार है कि यह शब्द श्री गुरु रामदास जी ने अपने विवाह के अवसर पर गुरु अमरदास जी की उपस्थिति में उच्चारण किया है परन्तु ऐसा

उचित प्रतीत नहीं होता। यह शब्द गुरु गद्दी पर आसीन होने के बाद ही रचा गया है।

□

हरि के जन सतिगुर सतपुरखा विनउ करउ गुरपासि ॥

हे हरि प्रभु के दास, सत्यपुरुष सद्गुरु जी ! मैं आप के पास एक विनम्र प्रार्थना करता हूँ।

हम कीरे किरम सति गुर सरणाई कर दइआ नामु परगासु ॥१॥

हे सद्गुरु जी मैं एक अत्यन्त छोटा सा कृमि कीड़ा हूं परन्तु आपकी शरण में आया हूँ मुझ पर दया कीजिए और मुझे नाम का प्रकाश दीजिए।

मेरे मीतगुरुदेव मो कउ राम नाम परगासि ॥

हे मेरे मित्र गुरु देव जी ! कृपा करके मेरे अन्तः करण में राम के नाम का प्रकाश करें।

गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई। हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥रहाउ॥

सद्गुरु की शिक्षा पर चल कर प्राप्त किया गया हरि का नाम ही मेरे प्राणों का सहायक है और हरि प्रभु का यश गायन करना ही मेरे जीवन के साथ निभने वाली पूंजी है ॥२॥ रहाउ॥

हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥

प्रभु के उन सेवकों के भाग्य बड़े से भी बड़े हैं जिनके हृदय में दुखों का नाश करने वाले हरि के नाम की श्रद्धा है और हरि के नाम की प्यास है।

हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥

हरि का हरि नाम मिलने पर वे तृप्त हो जाते हैं और सत्संगति में जाकर उनके अन्तःकरण में श्रेष्ठ गुणों का प्रकाश होता है ॥२॥

जिन हरि हरि हरिरसु नामु न पाइआ ते भागहीण जमपासि ॥

जिन जीवों को हरि के कष्ट नाशक हरि नाम में रस की प्राप्ति नहीं होती वे भाग्यहीन हैं और वे यमदूत के बन्धनों में जकड़े जायेंगे।

जो सतिगुरु सरणि संगति नहीं आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥

जो जीव सदगुरु की शरण में नहीं आते और सत्संगति में नहीं आते उनके अब तक के जीवन को धिक्कार है और जितना और जियेंगे उसे भी धिक्कार है ॥३॥

जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥

प्रभु के जिन सेवकों ने सद्गुरु की शरण प्राप्त की है और जिन्हें सत्संगति को प्राप्ति हुई है उनके मस्तक पर आरम्भ से ही ऐसा उत्तम भाग्य लिखा हुआ है और शेष जीवन में भी लिखा रहेगा।

धंन धंन सत संगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नाम परगासि ॥४॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) धन्य-धन्य है सत्संगति जिससे मिलकर इस सेवक के हृदय में नाम का प्रकाश हुआ है और उसने हरि नाम के रस को प्राप्त किया है ॥४॥४॥

□

रागु गूजरी महला ५

काहे रे मन चितवहि ऊदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥

हे मेरे मन तू परिश्रम करने की चिन्ता क्यों करता है जब कि तुम्हारे आहार के लिये स्वयं हरि जी परिश्रम करने में लगे हुए हैं ।

सैल पथर महि जंत उपाए ताका रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥

चट्टानों और पत्थरों पर जीव उत्पन्न करके प्रभु ने उनके आहार को सामने लाकर रख दिया है ॥१॥

मेरे माधउ जी सत संगति मिले सु तरिआ ॥

हे मेरे माधव जी जो जीव सत्संगति में मिल जाता है वह तर जाता है ।

गुर परसादि परमपदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥रहाउ॥

सत्संगति में जाकर काठ के समान हृदय भी हरे हो जाते हैं (उनमें भी प्रभु प्रेम की उत्पत्ति हो जाती है) और तब गुरु की कृपा द्वारा वे परम पद (उच्च अवस्था) को प्राप्त कर लेते हैं ॥१॥रहाउ॥

जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किसकी धरिआ ॥

माता पिता, पुत्र, स्त्री तथा अन्य सम्बन्धी लोग कोई भी किसी का सहारा नहीं है ।

सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥

जीवों को उत्पन्न करने के साथ सब का स्वामी प्रभु प्रत्येक जीव को जो जहां भी है वहीं भोजन पहुंचाता है इसलिए भोज्य सामग्री पाने के लिए तू भय क्यों करता है (चिन्तित क्यों होता है) ॥२॥

ऊडे उड आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥

(हे मन ! विचार कर) पक्षी सैकड़ों कोस उड़ उड़ कर जाते हैं और अपने नन्हें बच्चों को निश्चिन्त होकर छोड़ आते हैं । (भला किसके सहारे ?)

तिनु कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥

उन नन्हें बच्चों को कौन है जो खिलाता है ? कौन है जो चोग चुगाता है ? सोचो जरा पक्षियों को प्रभु का ही सहारा है अवश्य वे मन ही

मन प्रभु का स्मरण करते रहते हैं (और उसी की शक्ति के सहारे उड़ते फिरते हैं।) ॥३॥

सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर करतल धरिआ ॥

सभी निधियां और अठारह सिद्धियां प्रभु ने अपनी ही हथेली पर रखी हुई हैं।

जन नानक बलि बलि सद बलि जाइऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥५॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) ऐसे कृपालु प्रभु पर बलिहार बलिहार सदैव बलिहार जाऊँ, हे कृपालु प्रभु! तुम्हारी कृपा का कोई अन्त नहीं है ॥४॥५॥

□

रागु आसा महला ४ सो पुरखु ॥ १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

'सो पुरखु' से प्रारंभ होने वाले इस शब्द में श्री गुरु रामदास जी परब्रह्म परमात्मा का स्वरूप निरूपण कर रहे हैं।

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजन हरि अगमा अगम अपारा ॥

वह सर्वव्यापी प्रभु माया के मल से रहित है दुःखहर्त्ता सर्वव्यापक माया की मैल से रहित वह हरि अगम्य से भी अगम्य है और अनन्त है।

सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥

हे जगत के सृजन कर्त्ता सत्यस्वरूप हरि जी; सभी जीव आपका ही ध्यान करते हैं आपका ही स्मरण करते हैं।

सभि जीअ तुमारे जी तू जीआ का दातारा ॥

हे प्रभु जी! सभी जीव आपके बनाए हुए हैं और प्रभु जी! आप ही उनको (सब कुछ) देने वाले दाता हो।

हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥

हे सन्तजनों उस हरि जी का ही ध्यान करो जो सभी दुखों को भुला देने वाला है।

हरि आपे ठाकुर हरि आपे सेवक जी किआ नानक जंत विचारा ॥

वह हरि प्रभु आप ही स्वामी है और हरि प्रभु आप ही सेवक है (श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) ये बेचारे जीव क्या हैं?

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥

हे प्रभु जी! तुम प्रत्येक जीव के अन्तःकरण में निरन्तर बसे हुए हो, हे हरि! आप की ही एकमात्र ऐसी सत्ता है जो प्रत्येक जीव के हृदय में समाई हुई है।

इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥

इस संसार में कोई दाता है और कोई भिखारी है प्रभुजी यह सब आपके ही आश्चर्य जनक कौतुक है।

तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ।।

हे प्रभु जी मुझे ऐसा लगता है कि आप स्वयं ही दाता हो और आप स्वयं ही भोक्ता हो मैं आपके बिना और किसी को नहीं जानता ।

तूं पारब्रह्म बेअंतु बेअंतु जी तेरे किया गुण आखि वखाणा ।।

हे परब्रह्म प्रभु जी तुम अनन्त हो तुम्हारे गुण भी अनन्त हैं तुम्हारे किस-किस गुण का मैं वाणी द्वारा वर्णन करूं ।

जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी ज नु नानकु तिन कुरवाणा ।।२।।

हे प्रभु जी जो तुम्हारी सेवा करते हैं जो तुम्हें स्मरण करते हैं तुम्हारा यह दास नानक उन पर से कुर्बान जाता है ।।२।।

हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ।।

हे हरि प्रभु जी ! जो जीव आपका स्मरण करते हैं आपका ध्यान करते हैं वे जीव युग युगान्तर में सुख पूर्वक निवास करते हैं ।

से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ।।

हरि प्रभु जी ! जो जीव आपका ध्यान करते हैं वे बन्धन मुक्त हो जाते हैं और मुक्त हुए उन जीवों की यमदूत की फांसी भी टूट जाती है ।

जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ।।

जिन्होंने निर्भय सदैव ही जिन्होंने निर्भय हरि प्रभु का ध्यान किया है हे प्रभु जी आप उन जीवों का सारा भय दूर कर देंगे ।

जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ।।

जिन्होंने सेवा की है जिन्होंने मेरे हरि प्रभु जी की सेवा की है वे दुख हर्त्ता हरि के स्वरूप में ही समा जाते हैं ।

से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ।।३।।

वे धन्य हैं जिन्होंने मेरे हरि प्रभु का ध्यान किया है । वे धन्य हैं दास नानक उन जीवों के सदैव बलिहार जाता है ।।३।।

तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ।।

हे अनन्त प्रभु जी तुम्हारी भक्ति, तुम्हारी अनन्त भक्ति के भंडार भरे पड़े हैं ।

तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ।।

हे अनन्त हरि जी तुम्हारे भक्त, अनेक भक्त अनेक विधि से तुम्हारी सराहना करते रहते हैं ।

तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बे अंता ।।

हे अनन्त हरि जी ! तुम्हारी अनेक प्रकार से तुम्हारे अनेक भक्त पूजा करते हैं कठिन तपस्या में तपते हैं और तुम्हारा जाप करते हैं ।

तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी ।
करि किरिआ खट करम करंता ।।

हे प्रभु जी ! तुम्हारे अनेक भक्त तुम्हें अनेक विधियों से पाने का यत्न करते हैं । कोई धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ता है बहुत से स्मृतियों को पढ़ते हैं । बहुत से शास्त्रों को पढ़ते हैं बहुत से यौगिक क्रियाओं को करते हैं और बहुत से वैदिक कर्मकाण्ड के अज्ञादि षटकर्मों को करते हैं ।

से भगत से भगत भले जननानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ।।४।।

दास नानक के अनुसार वे भक्त ही, केवल वही भक्त उत्तम हैं जो मेरे हरि भगवान जी को अच्छे लगते हैं ।।४।।

तू आदिपुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ।।

हे प्रभु जी तुम सृष्टि का मूल हो सर्व व्यापी हो अपार हो, सृष्टि के कर्त्ता हो तुम्हारे जितना महान और कोई नहीं है ।

तू जुगु जुगु एको सदा सदा तू एको जी तू निहचलु करता सोई ।।

हे प्रभु जी तुम युगों युगों से एक ही अद्वितीय हो सदैव नित्य रूप से तुम एक हो रहोगे और सृष्टि के अविकारी कर्त्ता भी वही (एक मात्र तुम हो) ।

तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तू आपे करहि सु होई ।।

हे प्रभु जी ! जो आपको अच्छा लगता है वही कुछ होता है और वही कुछ होता है जो आप करते हो ।

तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ।

हे प्रभु जी ! तुमने स्वयं ही सारी सृष्टि को उत्पन्न किया है और तुम स्वयं ही सृजन की गई संपूर्ण सृष्टि का नाश कर दते हो ।

जनु नानक गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ।।५।।१।।

दास नानक उस कर्ता प्रभु के गुण गान करता है जो समस्त जीवों के अन्तर को जानने वाला (सर्वज्ञ) है ।।५।।१।।

□

आसा महला ।।४।।

तू करता सचिआरु मैडा सांई ।

जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउपाई ।।१।।रहाउ।।

हे कर्त्ता प्रभु ! तुम ही मेरे सच्चे स्वामी हो जो तुम्हे अच्छा लगेगा वही होगा जो तुम दोगे हम वही प्राप्त करेंगे ।।१।।रहाउ।।

सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ।

जिसनो क्रिपा करहि तिनि नामु रतनु पाइआ ।।

सभी जीव तुम्हारे ही हैं और सभी तुम्हारा ही ध्यान करते हैं। जिस पर तुम कृपा करते हो वह तुम्हारे नाम रूपी रत्न को प्राप्त करता है।

गुरमुखि लाधा मन मुखि गवाइआ ।

तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ।।१।।

गुरु के सम्मुख रहने वाला इस नाम रत्न को प्राप्त कर लेता है और मन के पीछे लगने वाला मनमुख इस रत्न को गवाँ बैठता है (इसका लाभ उठाये बिना जीवन को व्यर्थ गवाँ लेता है) हे प्रभु ! आप स्वयं ही मनमुखी को अपने नाम से विछोड़ देते हो और गुरुमुखों को सत्य-संगति के माध्यम से अपने साथ मिला लेते हो ।।१।।

तूं दरिआउ सभ तुझ ही माहि । तुझ बिन दूजा कोई नाहि ।।

हे प्रभु ! तुम समुद्र की भाँति हो और सभी जीव समुद्र में समाई हुई लहरों के समान हैं तुम्हारे जैसा कोई दूसरा नहीं है।

जीअ जंत सभि तेरा खेलु । विजोगि मिलि बिछुड़िआ संजोगी मेलु ।।२।।

ये जीव जन्तु सभी तुम्हारी लीला है। हे प्रभु तुम स्वयं ही जीवों को अपने से बिछोड़ देते हो और स्वयं हो उनके भाग्य में मिलन का संयोग लिखकर पुनः बिछुड़े हुए जीवों को मिला लेते हो ।।२।।

जिसनो तूं जाणाइहि सोई जन जाणै । हरि गुण सदही आखि वखाणै ।।

जिस जीव को तुम सूझ देते हो वही जीव तुम्हें जान जाता है और हे हरि प्रभु ! उसकी वाणी सदैव तुम्हारे ही गुणों का बखान करती है।

जिनि हरि सेविआ तिनि सुख पाइआ । सहजे ही हरि नामि समाइआ ।।३।।

जिन जीवों ने हरि की सेवा की है उन्होंने आत्मिक स्थायी सुखों को प्राप्त किया है और स्थिर अवस्था को प्राप्त कर हरि के नाम में लीन हो गये हैं ।।३।।

तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ। तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ।

हे प्रभु ! तुम आप ही सृष्टि के कर्त्ता हो और सब कुछ तुम्हारे ही द्वारा किया हुआ घटित होता है। तुम्हारे बिना (सृष्टि का संचालक) और कोई दूसरा नहीं है।

तूं करि करि वेखहि जाणहि सोइ। जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥

हे प्रभु ! तुम स्वयं ही सृष्टि की रचना करते हो और करके स्वयं ही अपने कौतुक देखते रहते हो इस सृष्टि रचना के रहस्य को भी वही तुम्ही एकमात्र जानते हो। दास नानक (का यह अनुभव है कि) गुरु के सम्मुख रहने वाले जीव के हृदय में ही कर्त्ता प्रभु प्रकट होता है ॥४।२।

आसा महला ॥१॥

तितु सरवरड़ै भईले निवासा, पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥

हे जीव ! तुम्हारा निवास ऐसे (संसार रूपी) सरोवर में है जिसे उस प्रभु ने आप ही नाम भक्ति रूपी जल और तृष्णा रूपी अग्नि से बनाया है।

पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥

(इस सरोवर में मोह रूपी कीचड़ भी है) उस मोह रूपी कीचड़ में फंस कर जीव के पैर प्रभु भक्ति की ओर चलते ही नहीं है इसलिये इस मोह की दलदल में फंस कर मैंने बहुतों को उसमें डूबते देखा है ॥१॥

मन एकु न चेतसि मूढ़ मना। हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ ॥ रहाउ।

हे मेरे मूर्ख मन उस एकमात्र (सर्वशक्ति मान) प्रभु को याद क्यों नही करता ? (जो तुझे डूबने से बचा सकता है) हरि प्रभु को देने से ही तो श्रेष्ठ गुण नष्ट हो गये हैं (और सरोवर से उबरने की क्षमता समाप्त हो गई है) ॥१॥ रहाउ

न हउ जती सती नही पढ़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥

(ऐसी स्थिति में इस सरोवर से उबरने का एक ही तरीका है कि प्रभु के चरणों में विनम्र निवेदन किया जाये) हे प्रभु ! मैं न तो यति हूं न सत्यवादी हूं न धार्मिक ग्रन्थों का अध्येता विद्वान हूं माया से मुग्ध हो रहा हूं निपट मूर्खों वाला मेरा जीवन हो गया है।

प्रणवति नानक तिनकी सरणा जिन तूं नाही वीसरिआ ॥२॥३॥

प्रार्थना करता हूं नानक जी मुझे उनकी शरण दे दो जिन्हें तुम विस्मृत नहीं हुये हो ॥२॥३॥

आसा महला ॥५॥

भई परापति मानुख देहुरीआ । गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥

हे मनुष्य तुम्हें यह मानव शरीर प्राप्त हुआ है । प्रभु गोबिन्द से मिलने का यह तेरे लिये सुन्दर अवसर है ।

अवरि का तेरै कित न काम । मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥१॥

(प्रभु भक्ति से इतर संसार के) अन्य कार्य तेरे किसी काम के नहीं हैं (तेरे लिये लाभ प्रद नहीं हैं) साधु संगति में मिलकर केवल प्रभु का नाम स्मरण कर (यही तेरे लिये लाभप्रद है) ॥१॥

सरंजामि लागु भवजल तरन कै ।

जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ ॥ रहाउ

हे मनुष्य संसार सागर से तरने के उपायों में अपने मन को लगा । माया के रंग से मोहित होकर (उसमें आसक्त होकर) तुम्हारा सारा मानव जन्म व्यर्थ जा रहा है ॥१॥ रहाउ॥

जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ । सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ।

हे मनुष्य न तो तुमने जप किया है न तप किया है न इन्द्रिय संयम किया है और न ही धर्म के कर्मों की कमाई की है । न साधु जनों की सेवा की है और न ही हरिराय को जानने का यत्न किया है ।

कहु नानक हम नीच करंमा । सरणि परे की राखहु सरमा ॥३॥४

नानक जी कहते हैं कि मैं बहुत ही नीच कर्मा हूं । आपकी शरण में आन पड़ा हूं अब आप ही मेरी लाज रखो ॥३॥४॥

□

सोहिला राग गउड़ी दीपकी महला १॥

१ओं सतिगुरु प्रसादि ॥

'सोहिला' रात्रि शयन कालीन वाणी है । पाँच शब्दों का यह संग्रह 'कीर्तन सोहिला' के नाम से परम्परा में प्रसिद्ध है । मान्यता है कि शयन पूर्व इन पाँच शब्दों का पठन करने से रात्रि सुखपूर्ण व्यतीत होती है, कोई विघ्न बाधा उपस्थित नहीं होती । 'सोहिला' में प्रथम तीन शब्द श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित हैं चौथा श्री गुरु रामदास जी द्वारा और पाँचवा श्री गुरु अर्जुन देव जी द्वारा रचित है । प्रथम पद में 'सोहिला' शब्द होने से इस वाणी का शीर्षक सोहिला दिया गया है । 'सोहिला' का अर्थ सौभाग्य गीत है । प्रथम शब्द में कन्या के विवाह का रूपक बांधा गया है । जिस प्रकार कन्या के विवाह के लिये दिन, तिथि,

मास और वर्ष निश्चित किया जाता है तदनुसार सगे सम्बन्धियों को निमन्त्रित किया जाता है। सभी एकत्रित होकर कन्या को विवाह के पूर्व तेल चढ़ाते हैं और मंगल गीत गाते हैं जिसमें एक ओर कन्या से विछोह की दुःखद अनुभूति होती है दूसरी ओर प्रिय से मिलन की मंगल कामना। इसी क्रम से जीवात्मा को भी एक दिन प्रियतम प्रभु के पास जाना है। प्रियतम प्रभु से जीवात्मा रूपी कन्या का विवाह होना है इसके लिये दिन व तिथि निश्चित है। जीवात्मा के शुभ मिलन के लिए सभी को मंगलगीत गाने हैं और वैराग्य रूपी तेल चढ़ाना है।

जै घरि कीरति आखीए करते का होइ बीचारो।
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजण हारो ॥१॥

जिस सत्संगति रूपी घर में प्रभु का यश गायन किया जाता है और सृष्टि के कर्ता प्रभु का विचार किया जाता है, हे जीवात्मा रूपी कन्या तुम भी उसी घर में जाकर प्रभु प्रियतम से मिलन के मंगलगीत गाओ और अपने सृजन कर्त्ता प्रभु का स्मरण करो ॥१॥

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला।

हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥रहाउ॥

हे जीवात्मा! तुम मेरे निर्भय प्रियतम के यश से परिपूर्ण मंगल गीत गाओ। मैं उन यशपूर्ण सौभाग्य गीतों पर बलिहार जाता हूं जिनके गाने से नित्य सुखों की प्राप्ति होती है ॥१॥रहाउ॥

नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥
तेरै दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥

हे जीवात्मा! जब तू नित्य प्रति मन में प्रियतम प्रभु को याद करेगी तो (सारे संसार को सुख) देने वाला प्रियतम प्रभु तुम्हारी ओर भी (कृपा दृष्टि से) देखेगा। तब वह इतना देगा कि तुम से उसके द्वारा दिये गये (सुख) की कीमत नहीं आँकी जायेगी क्योंकि उस दाता प्रभु की देन का क्या अन्त है? (कोई अन्त नहीं) ॥२॥

संबति साहा लिखिआ मिलि कर पावहु तेलु ॥
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥

हे जीवकन्या! प्रभु प्रियतम से विवाह-मिलन का वर्ष और तिथि लग्न तो पहले से ही प्रभु द्वारा भाग्य में लिख दिया गया है अब अपने सत्संगियों से कहो कि सभी मिलकर तुम्हें वैराग्य भावना का तेल चढ़ाए (तुम्हारे हृदय में संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो)और अपने सभी सगे

सम्बन्धियों से कहो कि तुम्हें शुभ आशीर्वाद दें जिससे कि तुम्हारा प्रभु स्वामो से मिलन हो जाये (मिलन में कोई बाधा न पड़) ।।३।।

घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ।।
सदणहारा सिमरिए नानक से दिह् आवंनि ।।४।। ।।

घर घर में (मृत्यु का) यही निमन्त्रण पत्र पहुंच रहा है और नित्य प्रति (मृत्यु का) बुलावा (प्रत्येक घर में) आ रहा है ।

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं हे जोत्रकन्या) तुम्हारे भी बुलावे का दिन निकट ही आ रहा है इसलिए बुलावा भेजने वाले उस प्रभु पति को सदैव स्मरण रखना चाहिये ।।४।।१।।

□

राग आसा महला १।।

इस पद में सूर्य का रूपक बांध कर अनेक साधना विधियों को एक ही परब्रह्म की साधना का विधान माना गया है ।

छिअ घर छिअ गुर छिह् उपदेस । गुरु गुरु एको वेस अनेक ।।१।।

(साँख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमाँसा, योग और वेदान्त) छः घर हैं, (कपिल, गौतम, कुणाद, जैमिनी, पातंजलि और व्यास) छः गुरु हैं और छः ही प्रकार के (इन की विचारधारानुसार) उपदेश हैं। (परन्तु इन सब) गुरुओं का गुरु एक ही है (अर्थात सभी उस एक परमातमा का ही चिन्तन करते हैं और) उस एक प्रभु का ही अनेक वेशों में (अनेक रूपों में) वर्णन किया गया है ।।१।।

बाबा जै घरि करते कीरति होइ । सो घरु राखु वडाई तोइ ।।१।।रहाउ।।

हे भाई ! जिस सत्संगति रूपी घर में कर्त्ता प्रभु का यश गायन होता है। उस घर (के आश्रय में तूँ अपने मन) को रख इसमें ही तेरी बढ़ाई है (तेरी शोभा है) ।।१।।रहाउ।।

विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ।
सूरजु एको रुति अनेक । नानक करते के केते वेस ।।२।।२।।

जिस प्रकार (पन्द्रह बार पलक झपकाने से) बिसवा होता है, (पन्द्रह बिसवों का एक) चसा, (तीस चसों का पल और साठ पलों की एक) घड़ी, (साढ़े सात घड़ियों का एक) प्रहर (और आठ प्रहर का दिन और रात) पन्द्रह तिथियों (का एक पक्ष) सात वार का (एक सप्ताह) चार सप्ताह का (एक महीना) होता है (अर्थात जैसे एक माह के इतने सारे रूप है और) एक सूर्य से (बसन्त, ग्रीष्म, शीत, हेमन्त आदि) अनेक

ऋतुएं होती है उसी प्रकार (श्री गुरु देव) नानक जी कथन करते हैं) सृष्टि बनाने वाला कर्त्ता प्रभु तो एक ही है परन्तु उसके रूप अनेक हैं ।।२।।२।।

□

राग धनासरी महला १।।

इस शब्द में श्री गुरु नानक देव जी महाराज धूप दीप नैवेद्य आदि द्वारा प्रभु की उतारी जाने वाली आरती का खण्डन कर रहे हैं। यात्राओं के दौरान गुरु साहिब जब जगन्नाथ पुरी के मन्दिर में पहुंचे तो वहां प्रभु प्रतिमा की आरती होते देखी। गुरु देव जी ने प्रभु की सही विधि से आरती उतारने का उपदेश दिया :

गगन मैं थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ।

(समग्र सृष्टि के स्वामी की आरती प्रकृति का प्रत्येक तत्व उतार रहा है ऐसा प्रतीत होता है) आकाश मण्डल एक विशाल थाल है जिसमें सूर्य और चन्द्र दो सुन्दर दीपक बने हुए हैं और विशाल तारा मण्डल मानो उस थाल में रखे हुये मोती हैं ।

धूप मल आनलो पवणु चवरो करे सगल बन राइ फूलंत जोती ।।१।।

मलयाचल से आने वाली सुबास मानो अग्र है। वायु प्रेम से चंवर डुलाती है, और सम्पूर्ण वनस्पति की पुष्प राशि ज्योतिस्वरूप प्रभु को समर्पित है ।।१।।

कैसी आरती होइ भवखंडना तेरी आरती ।
अनहता सबद वाजंत भेरी ।।१।। रहाउ ।।

जीवों के जन्म मरण के भय का नाश करने वाले हे प्रभु ! (प्रकृति के तत्वों द्वारा) निरन्तर ही की जाने वाली तुम्हारी यह आरती कैसी विलक्षण आरती है । तुम्हारी आरती में अनाहत शब्दों की दुन्दुभियां बज रही हैं ।।१।। रहाउ।।

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ।

हे प्रभु ! सृष्टि के जीवों के नेत्रों के रूप में तुम्हारे हजारों नेत्र हैं और निराकार रूप में तुम्हारा एक भी नेत्र नहीं है, व्यापक रूप से तुम्हारी हजारों मूर्तियां हैं और निराकार रूप से एक भी नहीं है ।

सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ।।२।।

व्यापक रूप से तुम्हारे हजारों सुन्दर पैर हैं परन्तु निराकार रूप में एक भी पैर नहीं है, निराकार रूप में तुम बिना नासिका के हो परन्तु विराट

रूप में तुम्हारी हजारों नासिका हैं तुम्हारे इन कौतुकों को देख कर मैं मोहित हो रहा हूं ॥२॥

सभ महि जोति जोति है सोइ । तिसदै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥

हे ज्योतिमान प्रभु ! सभी जीवों में तुम्हारी ज्योति ही व्याप्त है उसके प्रकाश के कारण ही प्रकृति के समस्त तत्वों में प्रकाश है ।

गुर साखी जोति परगटु होइ । जो तिसुभावै सु आरती होइ ॥

गुरु की शिक्षा द्वारा ही इस ज्योति का ज्ञान अन्त:करण में प्रकट होता है । जो उस प्रभु को अच्छा लगता है वही (जीव का मान लेना ही) प्रभु की आरती होती है ।

हरि चरण कंवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ।

हे हरि ! तुम्हारे चरण रूपी कमलों का रस पान करने के लिये मेरा (भ्रमर रूपी) मन लोभायमान हो रहा है और दिन रात मेरी यह प्यास बढ़ती ही जा रही है ।

क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥

हे प्रभु ! इस नानक चातक को अपनी कृपा रूपी स्वाति नक्षत्र का जल दो जिससे तुम्हारे पवित्र नाम (स्वरूप) में इसका निवास (अभेदता) हो जाय ॥४॥३॥

□

राग गऊड़ी पूरबी महला ४॥

श्री गुरु राम दास जी महाराज इस शब्द में मायालिप्त जीव को अहंकार त्याग की प्रेरणा दे रहे हैं । जीव के हृदय में अहंकार का काँटा गढ़ा हुआ है । जीवन मार्ग पर चलते हुए वह कांटा बराबर चुभता रहता है और उसे दुखी करता रहता है । जीव तब तक सुखी नहीं हो सकता जब तक अहंकार का कांटा निकाल न दिया जाये ।

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ।

हे भाई ! यह शरीर रूपी नगर काम क्रोध आदि अनेक विकारों से भरा पड़ा है साधु जनों से मिलकर ही विकारों के इस व्यूह को तोड़ा जा सकता है ।

पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥

प्रारम्भ से ही प्रभु द्वारा लिख दिए गए भाग्य के लेख के अनुसार गुरु की प्राप्ति हो जाती है और मन हरि के प्रेम से मंडित (सुशोभित) हो जाता है ॥१॥

कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ।।

बड़े चाव से उसमें कस्तूरी केसर अग्र और चंदन का लेपन आ जाय (कर दिया जाय)।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ।।१।।

हे प्रभु ! कहीं ऐसा न हो (यह सब) देख मैं भटक कर (तुम्हारा नाम) भूल जाऊं और तुम्हारा नाम मेरे ध्यान में ही न आए ।।१।।

हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ।।

हरि प्रभु के नाम के बिना यह जीव जलता फुंकता रहता है।

मैं अपना गुरु पूछि देखिआ अवरु नाहीं थाउ ।।१।।रहाउ।।

मैंने अपने गुरु से पूछा है और देखा है प्रभु के नाम के बिना जीव के लिए और कोई आश्रय का स्थान नहीं है ।।१।।रहाउ।।

धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ।।

भूमि हीरे जवाहरात से जटित हो और उस पर बिछा हुआ पलंग भी रत्नों से जड़ा हुआ हो।

मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ।।

(निकट हो) मणि जैसे (देदोप्यमान) मुख वालो मोहिनी सुशोभित हो रही हो जो (अपने हाव भाव से) आनन्द का प्रसार करती हो।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ।।२।।

हे प्रभु ! कहीं ऐसे न हो कि (यह सब) देख मैं भटक कर (तुम्हारा नाम) भूल जाऊं और तुम्हारा नाम मेरे ध्यान में ही न आए ।।२।।

सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ।।

यदि मैं सिद्ध योगी हो जाऊं और सिद्धियों को (अपने पीछे) लगा लूँ और ऋद्धियों को (जब चाहूं) आने को कह दूं।

गुपतु परगटु होई बैसा लोकु राखै भाउ ।।

जब चाहूं गुप्त हो जाऊं और जब चाहूं प्रकट होकर बैठ जाऊं (मेरी इन करामातों को देखकर) संसार के लोग मुझसे प्रेम भाव रखें।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ।।३।।

हे प्रभु ! कहीं ऐसा न हो कि (यह सब) देख मैं भटक कर (तुम्हारा नाम) भूल जाऊं और तुम्हारा नाम मेरे ध्यान में ही न आए ।।३।।

सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ।।

मैं बादशाह बन जाऊं, भारी फौज इकट्ठी कर लूँ, राज्य सिंहासन पर (कसके) पंर रख लूँ।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु सिरीरागु महला पहिला १ घरु १

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥१॥
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥
मैं आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥१॥ रहाउ ॥
धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥२॥
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥३॥
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥४॥१॥

□

श्री राग में गुरु नानक देव जी (महला १) के ३३ शब्द संकलित हैं। इनमें यह पहला शब्द है। इस शब्द के माध्यम से माया लिप्त जीव को चेतावनी दी जा रही है और बताया जा रहा है कि जीव के जीवन का लक्ष्य परम सत्य परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त करना है सांसारिक पदार्थों के आकर्षण में पड़कर उसे अपने महत् लक्ष्य को भूलना नहीं है। श्वास प्रश्वास प्रभु को याद रखना है।

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥

मोतीयों के बने महल खड़े हो जाएं और उन सुन्दर महलों को रत्नों से जड़ दिया जाय।

इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रह्म गिआनी ॥

यह संसार विकारों से परिपूर्ण है और जीव माया के संशय में पड़े हुए हैं कोई कोई ब्रह्म ज्ञानी ही इस संसार सागर से तर जाता है ।

जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥

सदगुरु जिसे अज्ञान की निद्रा से जगाता है और हरि नाम के रस को पिलाता है वही प्रभु की अकथनीय कथा को जान जाता है ॥२॥

जाकउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ।

हे भाई ! इस संसार में जिस व्यापार के लिए आए हो उसी का सौदा करो और गुरु के माध्यम से हरि का मन में बसेरा बना लो ।

निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥

स्थिर अवस्था के द्वारा नित्य सुख और निज स्वरूप में ही प्रभु की प्राप्ति कर लो इससे पुन: जन्म मरण का चक्र नहीं रहेगा ॥३॥

अन्तरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥
नानक दासु इहै सुखु मांगै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥

हे अन्तर्यामी ! समस्त जीवों को रचने वाले कर्त्ता पुरुष मेरे मन की यह इच्छा पूरी करो । दास नानक यह सुख मांगता है कि मुझे संतजनों के चरणों की धूलि बना दो ॥४॥५॥

□

करि साधु अंजुली पुनु वडा हे । करि डंडउत पुनु वडा हे ।।१।।रहाउ।।

साधु जनों को हाथ जोड़ कर नमस्कार करो ऐसा करने से बड़ा पुण्य होता है । गुरु के समक्ष दण्डवत प्रणाम करो इससे भी बड़ा पुण्य होता है ।।१।।रहाउ।।

साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ।

हरि भक्ति से विमुख जीव हरि नाम के रस का स्वाद नहीं जानते उनके अन्तर में अहंकार का कांटा गढ़ा रहता है ।

जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जम कालु सहहि सिरि डंडा हे ।।२।।

जैसे-जैसे ये जीव कर्म मार्ग पर चलते हैं अहंकार का कांटा चुभता रहता है और अज्ञानी जीव दुख भोगते रहते हैं और अन्त में यमराज का डंडा सिर पर सहते हैं ।

हरिजन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भवखंडा हे ।

हरि के दास हरि के दुखहर्ता नाम में समा जाते हैं और जन्म मरण के दुख और भय से मुक्त हो जाते हैं ।

अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ।

जिन प्रभु भक्तों ने अविनाशी परमेश्वर कर्त्ता पुरुष को प्राप्त कर लिया है उनको पृथ्वी के खण्डों और ब्रह्मंडों में बहुत शोभा होती है ।

हम गरीब मसकीन प्रभु तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ।।

हे प्रभु ! हम तुम्हारे द्वार के गरीब अनाथ भिखारी हैं । हे हरि आप हमारी रक्षा करें, हे बड़ों से भी बड़े दाता आप हमारी रक्षा करें ।

जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामै ही सुखु मंडा हे ।।

हे प्रभु ! दास नानक तुम्हारे ही नाम के सहारे पर टिका हुआ है, क्यों कि हे हरि तुम्हारा नाम ही सच्चे सुख से मंडित है ।

□

राग गउड़ी पूरबी महला ।।५।।

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ।।

हे मेरे मित्र गण । सुनो यह समय संत जनों की सेवा करने का है ।

ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ।।१।।

संत जनों की सेवा द्वारा हरि नाम का लाभ यहां (इस लोक) में कमाओगे तो आगे (परलोक में) सुख पूर्वक निवास करोगे ।।१।।

अऊध घटै दिनसु रैणारे । मन गुर मिलि काज सवारे ।।१।।रहाउ।।

दिन रात बीतने के साथ साथ आयु घटती जाती है । हे मेरे मन गुरु को मिल कर मानव जन्म रूपी कार्य को संवार (सार्थक कर) लो ।।१।।रहाउ।।

हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभु वाउ ॥

हुकम करते हो मैं सभी वस्तुओं को प्राप्त कर के बैठ जाऊं परन्तु (श्री गुरु) नानक जी (कथन करते हैं) यह सब वस्तुएं व्यर्थ (और सारहीन) हैं।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥४॥१॥

(क्योंकि इनसे इस बात का अंदेशा है कि) हे प्रभु ! कहीं ऐसा न हो कि (यह सब) देख मैं भटक कर (तुम्हारा नाम) भूल जाऊं और तुम्हारा नाम मेरे ध्यान में ही न आए ॥४॥१॥

□

सिरीरागु महला १

॥ कोटि कोटी मेरी आरजा पवण पीअणु अपिआउ ॥
चंदु सूरजु दइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥१॥
साचा निरंकारु निज थाइ ॥
सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥१॥रहाउ॥
कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाऊ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥२॥
पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥
नदरी किसै न आवऊ ना किछ पीआ न खाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥३॥
नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥

□

पिछले शब्द में जिस परम पिता परमेश्वर के नाम का स्मरण करने की जीव को चेतावनी दी गई है उस प्रभु की महानता का यहां वर्णन किया जा रहा है। गुरुदेव बता रहे हैं कि उस प्रभु के नाम यश और गुणों की महानता का मूल्य आंका ही नहीं जा सकता, कितने ही प्रयास क्यों न कर लिए जायें।

कोटि कोटि मेरी आरजा पवण पीअणु अपिआउ ॥

चाहे मेरी आयु करोड़ों वर्ष की हो जाये और हवा मेरा खाना पानी बनी रहे।

चंदु सुरजु दुई गुफै न देखा सुपनैं सउण न थाउ ।।

मैं सारी आयु ऐसी गुफा में बैठकर तेरा ध्यान करूं जहां चन्द्रमा और सूर्य (रात और दिन) का पता ही न लगे और स्वप्न में भी मुझे सोने के लिए स्थान न मिले (स्वप्न में भी निद्रा के वश होकर तुम्हारे ध्यान में ठहराव न आए)।

भी तेरी कीमति न पवै हउ केवडु आखा नाउ ।।१।।

हे प्रभु ! फिर भी मैं तुम्हारी कीमत (महिमा का मूल्य) नहीं आंक सकता। तुम्हारे नाम की महिमा कितनी बड़ी है यह मैं कैसे कह सकता हूं।

साचा निरंकार निज थाइ ।।

हे प्रभु ! तुम सत्य स्वरूप हो, निराकार हो और तुम्हारा निवास निज स्थान (निजस्वरूप) में है।

सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ।।१।।रहाउ।।

एक दूसरे से सुन सुन कर ही लोग (तुम्हारे सम्बन्ध में) बातें कह देते हैं (लेकिन यह कोई नहीं कह सकता कि तुम कितने महान हो) यदि जीव तुम्हें भा जाए तब तुम उसे(अपनी भक्ति का) दान देते हो ।।१।।रहाउ।।

कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ।।

चाहे मैं बार बार अपने शरीर को निर्दयता से कत्ल करवा दूं और शरीर के कटे टुकड़ों को चक्की में अनाज के स्थान पर बार बार पीसने को डाल दूं।

अगी सेती जालीआ भसम सेति रलि जाउ ।।

शरीर के टुकड़ों को अग्नि में जलाकर राख के साथ मिल जाऊं।

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ।।२।।

हे प्रभु ! फिर भी मैं तुम्हारी कीमत (महिमा का मूल्य) नहीं आंक सकता, तुम्हारे नाम की महिमा कितनी बड़ी है यह मैं कैसे कह सकता हूं ।।२।।

पंखी होई कै जे भवा सै असमानी जाउ ।।

यदि मैं पक्षी हो कर घूमता फिरुँ और सैकड़ों आसमानों में (उड़ता) जाऊं।

नदरी किसै न आवउ ना किछ पीआ न खाउ ।

न मैं किसी को नजर आऊं ना कुछ पीऊं और न कुछ खाऊं।

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ।।३।।

हे प्रभु ! फिर भी मैं तुम्हारी कीमत (महिमा का मूल्य) नहीं आंक सकता तुम्हारे नाम की महिमा कितनी बड़ी है यह मैं कैसे कह सकता हूं ।।३।।

नानक कागद लख मणा पढ़ि पढ़ि कीचै भाउ ॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) यदि मेरे पास लाखों मन कागज हो और अच्छी तरह पढ़ पढ़ कर मैंने इस विषय पर विचार किया हो।

मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ।

मुझे स्याही का भी अभाव न हो और मैं लेखनी वायु (के वेग) सी चलाऊं।

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥

हे प्रभु ! मैं तब भी तुम्हारी कीमत (महिमा का मूल्य) नहीं आंक सकता, तुम्हारे नाम की महिमा कितनी बड़ी है यह मैं कैसे कह सकता हूं ॥४॥२॥

□

सिरीरागु महला ।१।

लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ।
लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ।
लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण जाउ ॥१॥
बाबा माइआ रचना धोहु ॥
अंधै नामु विसारिआ ना तिसु एह न ओहु ॥१॥ रहाउ॥
जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै कालि ॥
जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोई न चलिओ नालि ।
रोवणवाले जेतड़े सभि बंनहि पंड परालि ॥२॥
सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ ॥
कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ॥
साचा साहबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ ॥३॥
नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ।
नानकु तिन कै संगि साथि वडिया सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥

□

इस शब्द के माध्यम से श्री गुरु नानक देव जी बता रहे हैं कि समग्र सृष्टि का विधान एक निश्चित व्यवस्था में बंधा हुआ है। जीव उस व्यवस्था से परिचालित होकर ही बोलता है, उठता है, बैठता है, चलता है, फिरता है, जीवन को भोगता है मृत्यु को प्राप्त होता है। तब, जीव को चेतावनी है कि वह जाति, धर्म और गुण का मिथ्या अहंकार क्यों करता है।

लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ।

(निश्चित) हिसाब में बंधा हुआ ही मनुष्य बोल बोलता है और हिसाब में बंधा हुआ ही मनुष्य खाना खाता है ।

लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ।

(निश्चित) हिसाब में बंधा हुआ मनुष्य रास्ते पर चलता है और निश्चित हिसाब में बंधा हुआ ही मनुष्य सुनता है और देखता है ।

लेखै साह लवाईअहि पढ़ें कि पुछण जाउ ।।१।।

(निश्चित) हिसाब में ही श्वास लगे हुये हैं (एक एक सांस हिसाब से ही लेते हैं) पढ़े हुए को क्या पूछने जाना (विद्वानों से पूछने की क्या आवश्यकता है यह तो निश्चित ही है) ।।१।

बाबा माइआ रचना धोहु ।

हे भाई ! माया स्वरूप यह सृष्टि सब धोखा है ।

अंधै नामु विसारिआ ना तिस एह न ओहु ।।१।। रहाउ।।

अज्ञान से अन्धे जीव ने (इस माया के धोखे में पड़कर) प्रभु के नाम को भुला दिया है ना तो उसे इस लोक (के सुखों) की प्राप्ति होती है (क्यों कि माया के सुख नश्वर हैं) और न ही उस लोक (परलोक सुख) की प्राप्ति होती है (क्यों कि प्रभु के नाम को भुला दिया है) ।।१।। रहाउ ।।

जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै कालि ।

जीवन और मरण (इहलोक और परलोक) दोनों गंवा कर (व्यर्थ कर) यहीं (इसी दुनियां में) वह काल द्वारा खाया जाता है ।

जिथै बहि समझाईयै तिथै कोइ न चलिओ नालि ।

जहां बैठ कर (परलोक में) जीव को समझाया जाता है (उसके कर्मों का हिसाब लिया जाता है) वहां कोई भी उसके साथ नहीं चलता ।

रोवण वाले जेतड़े सभि बंनहि पंड परालि ।।२।।

उसे रोने वाले जितने भी सगे सम्बन्धी हैं सभी उसे फूस की भांति (असार वस्तु समझ श्मशान ले जाने को) गठड़ी की तरह बाँध लेते हैं ।।२।।

सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ ।

सभी लोग और अधिक और अधिक (संसारिक पदार्थों को) मांगते हैं कोई भी कम नहीं कहता ।

कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ।।

प्रभु की महानता की कीमत कोई भी नहीं आँक पाया है (क्या पता वह किस को क्या देता है) केवल कहने (माँगने) मात्र से ही कोई बड़ा नहीं हो सकता ।

साचा साहबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ ।।३।।

हे सत्यस्वरूप प्रभु ! तुम ही एकमात्र सृष्टि के मालिक हो (तुमने अपनी ज्योति से) और कितने ही जीवों को प्रकाशित किया है ।।३।।

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीच ।

(नानक किसी बड़प्पन की मांग नहीं करता) जो अपने आपको नीचों में नीचा जानते हैं और उन नीचों में भी और अधिक नीचा मानते हैं ।

नानकु तिन कै संगि साथ वडिआ सिउ किआ रीस ।

हे प्रभु ! नानक को उन साथियों का (जिनमें धन मान विद्या का अहंकार नहीं है) साथ दो (धन विद्या प्रतिष्ठा का अहंकार करने वाले) बड़े लोगों की बराबरी में क्या करना है ।

जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ।।४।।

जहाँ (अहंकार रहित) नीच लोगों की संभाल होती है वही तुम्हारी कृपा की दृष्टि होती है ।।४।।

□

सिरीरागु महला १

लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ।
पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ।।
रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ।।१।।
बाबा बोलीए पति होई ।
ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ।।१।। रहाउ ।
रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ।।
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ।
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ।।२।।
जितु बोलिए पति पाइऐ सो बोलिआ परवाणु ।
फिका बोलि बिगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ।।
जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण बखाण ।।३।।
तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ।
तिन का कीआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ।
नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ।।४।।४।।

□

अन्तः शुद्धि व आचरण की शुद्धता पर बल देते हुए श्री गुरु नानक देव जी महाराज इस शब्द में बता रहे हैं कि केवल वही व्यक्ति श्रेष्ठ है जिसके कर्म श्रेष्ठ है । लोभ, झूठ, क्रोध, मिथ्या, संभाषण आदि विकारी कर्मों से मानव नीच होता है जाति व वर्ण से नहीं ।

लबु कुत्ता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ।

मन के अन्दर धन पदार्थों का संचय करने का लोभ कुत्ता है (कुत्ते जैसा

कर्म है) धन संचय के लिए झूठ बोलना भंगी (जैसा कर्म) है। और दूसरों को ठग कर खाना मुर्दा खाने जैसा कर्म है।

पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ।

पराई निन्दा करना पराई विष्टा (मल) मुख पर लगाने जैसा कर्म है। क्रोध की अग्नि में जलकर बुद्धि भ्रष्ट हो जाना चंडाल जैसा कर्म है।

रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥१॥

हे मेरे कर्त्ता प्रभु ! ये कर्म हैं उस मनुष्य के जो विकारों के कसैले रसों में आसक्त हो रहा है और फिर भी अपनी प्रशंसा आप करता है ॥१॥

बाबा बोलीयै पति होइ ।

हे भाई ! ऐसो बोली बोलो जिससे तम्हारी इज्जत हो।

ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ॥१॥ रहाउ ॥

जो जीव प्रभु के दरबार में (श्रेष्ठ कर्मों के कारण) उत्तम कहे जाते हैं वे ही (वास्तव में) उत्तम हैं। नोच कर्म करने वाले तो (प्रभु दरबार में) बैठ कर रोते हैं ॥१॥ रहाउ॥

रस सुइना रस रुपा कामणि रसु परमल की वासु ।

जिस जीव को सोना इकट्ठा करने में रस (आनन्द) आता है, चांदी एकत्रित करने में रस, (आनन्द) आता है, सुन्दर स्त्री से भोग में रस (आनन्द) आता है, चंदन आदि सुगन्धित द्रव्यों की सुगन्धि में रस (आनन्द आता है)।

रस घोड़े रस सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ।

जिसे (सुन्दर) घोड़ों (की सवारी) में रस आता है (सुन्दर) शैय्या (पर सोने) में रस आता है, (सुन्दर) महलों में रस आता है, मिष्ठान खाने में रस आता है मांस भक्षण में रस (आनन्द) आता है।

ऐते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥२॥

जिसको शरीर के इतने सारे उपभोगों में रस आता है, उसके हृदय में प्रभु के नाम का निवास कैसे हो सकता है ? ॥२॥

जितु बोलियै पति पाईयै सो बोलिआ परवाणु ॥

जिन वचनों को बोलने से प्रभु के दरबार में इज्जत प्राप्त होतो है, वे ही बोल प्रभु को मंजूर होते हैं।

फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥

हे मूर्ख और अनजान मन सुन ! नाम रस से हीन फीके वचन बोलने से बाद में पश्चाताप होता है।

जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ।।३।।

जो जीव प्रभु को अच्छे लगते हैं वे ही भले हैं बाकी और जोवों के सम्बन्ध में कहने और बखान करने से क्या लाभ ?

तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ।।

उनके ही पास श्रेष्ठ बुद्धि है, उनकी ही इज्जत है और श्रेष्ठ धन उनकी ही बुद्धि में है जिनके हृदय में प्रभु समाया हुआ है।

तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ।।

ऐसे महापुरुषों को क्या प्रशंसा करें। (उनके किस किस गुण की प्रशंसा करें) उनके अतिरिक्त और कोई प्रशंसा के योग्य नहीं है। (वे ही एकमात्र प्रशंसा के योग्य हैं)।

नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ।।४।।४।।

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) जो मनमुख प्रभु की कृपा दृष्टि से बाहर हैं वे प्रभु द्वारा दी गई वस्तुओं में ही प्रफुल्लित रहते हैं प्रभु के नाम में नहीं रचते)।

□

सिरी रागु महला १

अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ।।
मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि ।।
सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरबारु ।।१।।
नानक साचे कउ सचु जाणु ।।
जितु सेवीऐ सुखु पाईऐ तेरी दरगह चलै माणु ।।१।।रहाउ।।
सचु सरा गुड़ बाहरा जिसु विचि सचा नाउ ।।
सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ।।
ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ।।२।।
नाउ नीरु चंगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ।।
ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ।।
दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पासि ।।३।।
सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ।।
तिसु विणु सभु अपवितु है जेता पहिनणु खाणु ।।
होरि गलां सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ।।४।।५।।

□

श्री गुरुदेव जी इस शब्द में बता रहे हैं कि मनुष्य झूठे सुखों के नशे में झूम रहा है। सच्चा नशा प्रभु के नाम स्मरण में है।

अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ।।

(संसार को सब कुछ) देने वाले प्रभु ने (मनमुख) जीवों को झूठ रूपी नशे का (अफीम का) गोला दिया है ।

मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि ।।

इस झूठे नशे में मस्त होकर मनमुख जीव ने मरना भुला दिया है और चार दिन की जिन्दगी में (झूठी) खुशियाँ मना रहा है ।

सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरबारु ।।१।।

जिन जीवों को प्रभु अपने निकट रखना चाहता है उन्हें अपने दरबार में रखने के लिए प्रभु ने झूठे नशे के परहेज़गारों को सत्य से मिला दिया है ।।१।।

नानक साचे कउ सचु जाणु ।।

(श्री गुरु) नानक जी (कथन करते हैं) सत्य स्वरूप प्रभु को सत्य (कर्मों) द्वारा ही जानो ।

जितु सेवीऐ सुख पाईऐ तेरी दरगह चलै माणु ।।१।।रहाउ।।

हे जीव ! जिस प्रभु की सेवा करने से आत्म-सुखों की प्राप्ति होती है और प्रभु के दरबार में जाने पर तु हारा सम्मान होता है ।।१।। रहाउ ।।

सचु सरा गुड़ बाहरा जिसु विचि सचा नाउ ।।

प्रभु की भक्ति हो सच्ची (पीने योग्य) शराब है जिसमें सत्यस्वरुप प्रभु नाम का बहुत सा गड़ मिला हुआ है ।

सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ।

जितने भी (प्रभु के भक्त प्रभु के नाम को) सुनने और बखान करने वाले हैं मैं उन सब पर बलिहार जाता हूँ ।

ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ।।२।।

भक्ति रूपी शराब में मन को पूरी तरह से डूबा हुआ तभी समझना चाहिए जब इसको पीने वाला निज स्वरूप में स्थान प्राप्त कर ले (स्थिर हो जाए अथवा मन नाम स्मरण में टिक जाय) ।।२।।

नाउ नीरु चंगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ।

भक्ति रु्पी शराब को पीने वाला सद्गुणों को अच्छाइयों रूपी जल में स्नान करता है और सच्चाई रूपी चन्दन की सुगन्ध शरीर में लगाता है ।

ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ।

लाखों वस्तुओं का दान देने वाला प्रभु यदि एक दान (नाम का दान) दे तब मुख उज्ज्वल होता है ।

दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पासि ॥३॥

जिस प्रभु के पास सुखों का खजाना है, अपना दुःख उसी के पास जा कर कहना चाहिए ॥३॥

सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ।

यह जीव और प्राण जिस प्रभु के (दिए हुए) हैं, उसे मन से क्यों भुलाया जाय ।

तिसु विणु सभु अपवितु है जेता पहिनणु खाणु ।

उस प्रभु के नाम स्मरण के बिना जितना भी पहनना और खाना है, सभी कुछ अपवित्र है ।

होरि गलां सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ॥४॥५॥

हे प्रभु ! और सभी बातें मिथ्या हैं जो बातें तुम्हें अच्छी लगें केवल वही सत्य प्रमाणित है ॥४॥५॥

□

सिरिरागु महला १

जालि मोहु घसिमसु करि मति कागदुकरि सारु ॥
भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥१॥
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥१॥रहाउ॥
जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥
तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥
करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥
इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥
इकि उपाए मंगते इकना वड़े दरबार ॥
अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥
भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥
नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥
नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥

□

कहा जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी को जब गोपाल पण्डित के पास हिसाब किताब लिखना सीखने के लिए भेजा गया तो उन्होंने पण्डित जी को इस शब्द के माध्यम से उपदेश दिया ।

जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥

हे भाई ! मोह भावना को जला दो और उस जले पदार्थ को रगड़ कर स्याही बना लो, बुद्धि को कागज बनाओ और सार तत्व (ज्ञान) को ग्रहण करो ।

भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥

प्रभु-प्रेम की कलम बनाओ और अपनी चित्तवृत्ति को लेखक बनाओ और गुरू से पूछ पूछ कर उत्तम विचारों को (उस बुद्धि रूपी कागज पर) लिखो ।

लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अन्त न पारावारु ॥१॥

सच्चे प्रभु का नाम लिखो, उसका यश लिखो और लिखो कि उस महान प्रभु के अन्त का कोई आर-पार नहीं है ॥१॥

बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥

भाई ! इस हिसाब को (प्रभु प्रशस्ति को) लिखना जानो ।

जिथें लेखा मंगीऐ तिथे होइ सचा नीसाणु ॥१॥रहाउ॥

(परलोक में) जहाँ तुम्हारे कर्मों का हिसाब मांगा जाना है वहां तुम्हारे द्वारा किए गए शुभ कर्मों का यही (लेख) सत्य चिह्न होगा ॥१॥रहाउ॥

जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥

(और उस निशान के कारण) जहां भी जाओगे प्रतिष्ठा मिलेगी, स्थायी खुशियां और स्थायी उल्लास मिलेगा ।

तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥

जिनके मन में सच्चे प्रभु का नाम बसा हुआ है, उनके मुख (मस्तक) पर प्रशंसा के तिलक लगते हैं ।

करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥

परन्तु यह सब जब प्रभु की कृपा प्राप्त हो तभी पाया जाता है अन्यथा केवल बातों से किसी को बददुआ (श्राप) अथवा दुआ (वरदान) देने से कुछ नहीं होता ॥२॥

इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥

इस संसार में अपना नाम सरदार रखने वाले बड़े बड़े (धन, पद, पदार्थ वाले लोग) कुछ आते हैं और कुछ उठकर चले जाते हैं ।

इकि उपाए मंगते इकना वड़े दरबार ॥

कुछ एक भिखारी ही पैदा होते हैं और कुछ एक बड़े बड़े राज दरबार वाले होते हैं ।

अगै गइआ ज.णीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥

लेकिन आगे प्रभु दरबार में जाने पर ही जाना जाता है कि प्रभु के नाम स्मरण के बिना सब (बड़े नाम पद प्रतिष्ठा पदार्थ) व्यर्थ हैं ॥३॥

भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥

(जिन जीवों ने प्रभु का नाम स्मरण नहीं किया है) हे प्रभु ! तुम्हारे भय से और आगे यमदूतों के भय से काँप काँप कर (उनका) शरीर क्षीण हो रहा है ।

नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥

(बिना नाम स्मरण किए) जिन्होंने अपना नाम बादशाह, नवाब रखवाया हुआ था उन्हें भी मिट्टी होते देखा है ।

नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) जब जीव इस संसार से उठ कर चलने लगता है तो सब मिथ्या प्रेम के बन्धन टूट जाते हैं ॥४॥६॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥

खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥

छतीह अंम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥१॥

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥

जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥रहाउ॥

रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥

नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥

कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥२॥

बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥

जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥रहाउ॥

घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥

तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ॥

वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥३॥

बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥

जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥रहाउ॥

घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥

हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥

नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥४॥

बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥

जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥रहाउ॥४॥७॥

□

सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥

(सांसारिक पदार्थों का रस मिथ्या रस है, वस्तुतः) प्रभु के सभी हुकुमों को मानना मीठा रस है और प्रभु के नाम को श्रवण करना नमकीन (रस) है।

खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥

मुख से प्रभु का नाम उच्चारण करना खट्टा और तीता रस है और प्रभु नाम का गायन करना मसालेदार रस है।

छतीह अंम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥

प्रभु के प्रति यदि एक प्रेम भाव उत्पन्न हो जाय तो छत्तीस प्रकार के भोजनों का अमृत रस प्राप्त होता है, परन्तु यह प्राप्ति उसे होती है जिस पर प्रभु कृपा दृष्टि करते हैं ॥१॥

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥

जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ

हे भाई ! (प्रभु नाम के अतिरिक्त) और भोग्य पदार्थों को खाने से जो खुशी प्राप्त होती है वह अन्त में जीव की दशा खराब करती है, क्योंकि इन भोग्य पदार्थों को खाने से शरीर रोगों से पीड़ित होता है और मन में विषय विकार चलते हैं ॥१॥रहाउ॥

रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥

प्रभु प्रेम में मन को रंगना लाल (वस्त्र) पहनने के समान है, सात्विक भाव से दान देना सफेद (वस्त्रों का पहनना) है।

नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥

मन की मैल (स्याही) को काट कर उसमें प्रभु के चरणों का ध्यान बसाना नीले वस्त्र पहनना है।

कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥२॥

संतोष (धारण करना) ही कमरबन्द (बांधना) है और हे प्रभु ! तुम्हारा नाम (स्मरण करना) ही यौवन रूपी धन (को प्राप्त करना) है ॥२॥

बाबा होरु पैनण खुसी खुआरु ॥

हे भाई इसके अतिरिक्त अन्य वस्त्रों को पहनकर जो (झूठी) खुशी प्राप्त होती है, वह अन्त में जीव की दुर्दशा करती है।

जितु पैधे तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥रहाउ॥

(क्योंकि) जिन वस्त्रों को पहनने से शरीर रोग से पीड़ित होता है और मन में विकार चलते हैं (वे निश्चय ही दुर्दशा करते हैं)।

घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥

हे प्रभु ! तुम्हारी भक्ति के माग को समझना सोने की जंजीर से बंधी दुम और सोने की काठो से सुसज्जित घोड़े की सवारी करना है।

तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे गुणों का वर्णन करना ही तरकश, तीर, कमान, बरछी, तलवार और ढाल धारण करना है।

वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥२॥

(तुम्हारे दरबार में) इज्जत से प्रकट होना बाजा और नेज़ा है और तुम्हारो कृपा दृष्टि ही मेरी ऊंची जाति है ॥२॥

बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥

हे भाई ; इसके अतिरिक्त और अन्य सवारियों पर चढ़ने में जो खुशी है वह दुर्दशा करती है।

जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥रहाउ॥

क्योकि जिन सवारियों पर चढ़ने से शरोर रोग से पोड़ित होता है और मन में विकार चलते हैं (वे निश्चय हो दुर्दशा करती हं)।

घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥

हे प्रभु तुम्हारे नाम में खुशो (प्राप्त करना) ही (सुन्दर) घर और महल (में रहना) है, तुम्हारी कृपा दृष्टि ही परिवार (का सुख) है।

हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥

उस हुकुम को मानना हो (उत्तम) ह जो तुम्हे अच्छा लगे और अन्तहीन बहुत सो बातों का करना व्यर्थ है।

नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥४॥

श्री गुरु नानक देव जा (कथन करते हैं) वह सत्यस्वरूप प्रभु बादशाह हे वह किसो से पूछ कर जाव के कर्मों का विचार नहीं करता (जो उसे अच्छा लगता है वहो करता हं) ॥४॥

बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥

हे भाई ! (अज्ञानता की नींद में) और सोना (और सो कर) खुशी (प्राप्त करनी) दुर्दशा को प्राप्त होना है।

जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥रहाउ॥४॥७॥

क्योंकि जिस अज्ञान सुख की निद्रा में सोने से शरीर रोग से पीड़ित होता है और मन में विकार चलते हैं (वह सुखनिद्रा व्यर्थ है) ॥४॥७॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥
अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥
ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥१॥
बाबा होर मति होर होर ॥
जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥१॥रहाउ॥
पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥
नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥
जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥२॥
जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥
ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ॥३॥
खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥
जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥
नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥४॥८॥

□

कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥

जिस साधक की काया केसर के समान पवित्र हो और जिसकी जिह्वा (प्रभु नाम का उच्चारण करने के कारण) रत्नों की (भांति अमूल्य) हो और उसके शरीर से निकलने वाली श्वाँस अग्र (चंदन) की भाँति सुबासित हो ।

अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥

अड़सठ तीर्थों पर स्नान करके माथे पर तिलक लगाने से चमकने वाले मुख से भी अधिक जिसका मुख चमकता हो उस साधक के हृदय में ही बुद्धि का प्रकाश होता है ।

ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥१॥

(इस प्रकार से प्रकाशित होने वाली) उस बुद्धि से गुणों के भंडार प्रभु के सत्य नाम की सराहना की जाती है ॥१॥

बाबा होर मति होर होर ।।

हे भाई ! ऐसी बुद्धि के अतिरिक्त अन्य बुद्धि (ज्ञान व शिक्षा) और (अन्यान्य सांसारिक विषयों में भटकाती) है ।

जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ।।१।।रहाउ।।

(ऐसी बुद्धि को) यदि सौ बार भी कमाया जाय (सैंकडों प्रकार से भी यदि सांसारिक ज्ञान की शिक्षाओं को अर्जित किया जाय) तब भी वे मिथ्या (सारहीन) होती है और उनमें झूठ (को ही बढ़ावा देने) की शक्ति होती है ।।१।। रहाउ ।।

पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ।।

(बेशक ऐसी विद्या के बल पर संसार में लोगों द्वारा) पूजा होने लग जाय और लोग पीर कहने लग जाएं और सारा संसार (दर्शन के लिए) आकर मिलने लग जाय ।

नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ।।

वह अपना नाम भी प्रसिद्ध करवा ले और अपनी गणना सिद्धि प्राप्त महान पुरुषों में करवा लें ।

जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ।।२।।

लेकिन यदि उसकी इज्जत प्रभु के हिसाब में नहीं है (परमेश्वर द्वारा स्वीकृत नहीं है) तो लोगों द्वारा की गई सारी पूजा उसकी दुर्दशा करती है ।।२।।

जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिनि मेटि न सकै कोइ ।।

जिनको सद्‌गुरु आप प्रतिष्ठित (स्वस्वरूप में स्थित करता है उन्हें कोई भी उस स्थिति से मिटा (हटा) नहीं सकता ।

ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ।।

उनके हृदय में (सदैव) हरि नाम का ही खजाना (विद्यमान) रहता है । हरिनाम के कारण ही संसार के सामने उनका यश प्रकट होता है ।

नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ।।३।।

जो प्रभु अखंड है और जो सर्वदा सत्य है उसके नाम की ही वे पूजा करते हैं और उसके नाम का ही मनन करते हैं ।

खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ।।

जो जीव मिथ्या प्रतिष्ठा के पीछे भागते हैं उनके शरीर की मिट्टी जब श्मशान की मिट्टी में मिल जाती है तब उनके जीव का क्या होता है अथवा तब उन्हें जी जी कौन कहता है ।

जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥

उसकी सारी चतुराई शरीर के साथ ही जल जाती है और (यमों के भय से) रोता हुआ वह यहां से चल उठता है ॥

नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥४॥८॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं कि) जिन्होंने प्रभु के नाम को विस्मृत कर दिया है, प्रभु के दरबार में जाने पर उनका क्या होगा ? ॥४॥८॥

□

सिरीरागु महला १

गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥

जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥

ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥१॥

मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥

गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥१॥रहाउ॥

प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥

मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥

बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥२॥

गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरिनाउ ॥

गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥

जे तिसु भावै ऊजली सतसरि नावणु जाउ ॥३॥

पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥

पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥

नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुणतास ॥४॥९॥

□

गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥

गुणवान जीवात्मा रूपी स्त्री अपने शुभ गुणों का विस्तार करती है और अवगुण वाली जीवात्मा रूपी स्त्री रोती रहती है ।

जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥

(हे जीवात्मा रूपी स्त्री !) यदि तुम परमात्मा रूपी श्रेष्ठ वर को पाने की इच्छा करती हो तो वह प्रियतम प्रभु झूठ (मिथ्याचरण) से नहीं मिलता ।

ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥१॥

तुम्हारे पास न तो (सत्कर्मों की) नौका है न रस्से बांधकर तैरने को बनाया गया तख्ता है इसलिए दूर स्थित प्रियतम प्रभु को तुम नहीं पा

सकती (प्रेम भक्ति श्रद्धा आदि साधनों के अभाव में प्रभु प्रियतम के दर्शन पाना नितान्त असंभव है) ।।१।।

मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ।।

मेरे ठाकुर प्रभु पूर्ण हैं और उनका आसन सर्वदा स्थिर है।

गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ।।१।।रहाउ।।

पूर्ण सद्गुरु यदि अपने मुख से जीव को ज्ञानोपदेश करे तब उस सत्य-स्वरूप अतुलनीय प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है ।।१।। रहाउ ।।

प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ।।

हे जीव तुम्हारा यह शरीर हरि प्रभु द्वारा (अपने रहने के लिए) बनाया गया सुन्दर मन्दिर है जिसमें (शुद्ध गुणों के बहुमूल्य) रत्न और माणिक्य हैं।

मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ।।

यह शरीर सोने से बने हुए एक सुन्दर किले के समान है और इसमें स्थित ज्ञान और बुद्धि पवित्र मोती और हीरे के समान हैं।

बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ।।२।।

प्रभु नाम स्मरण रूपी सीढ़ी के बिना इस स्वर्ण गढ़ पर चढ़ा नहीं जा सकता और परमात्मा के दर्शन नहीं हो सकते। परन्तु यदि गुरु द्वारा हरि के चरणों में ध्यान लग जाय तो परमात्मा के दर्शनों द्वारा साधक कृतार्थ हो जाता है।

गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरिनाउ ।।

शरीर रूपी किले पर चढ़ने के लिए गुरु ही सीढ़ी है, संसार सागर के पार जाने के लिए गुरु ही नौका है और हरि का नाम लेने वाला गुरु ही तैरने वाला तख्ता (तुलहा) है।

गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ।।

गुरु ही सरोवर है गुरु ही सागर है गुरु ही जहाज है गुरु ही तीर्थ है और गुरु ही दरिया है।

जे तिसु भावै ऊजली सतसरि नावणु जाउ ।।३।।

यदि गुरु को जीवात्मा रूपी स्त्री भा जाय तो वह सत्संगति रूपी सरोवर में नहाए जाने पर उज्जवल बुद्धि वाली हो जाती है ।।३।।

पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ।।

जिस प्रभु को सभी पूर्ण कहते हैं उसका निवास भी पूर्ण आसन पर है (उसमें कोई कमी नहीं)।

पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥

वह प्रभु पूर्ण स्थान पर शोभायमान है और निराश लोगों की सभी आशाएँ पूरी करता है।

नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुणतास ॥४॥६॥

जिनको पूर्ण गुरु मिल जाता है नानक उन जीवों के गुणों में घाटा कैसे हो सकता है (उनके गुणों में तो वृद्धि ही होती है) ॥४॥६॥

□

सिरी रागु महला १ ॥

आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥
मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ॥
साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥१॥
करता सभु को तेरै जोरि ॥
एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥१॥रहाउ॥
जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ॥
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥
केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥
केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥३॥
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥
सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥
नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥

□

आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥

हे जीवात्मा रूपी बहनों, आओ हम सब गले मिल जाएं क्योंकि हम (एक ही प्रभु) प्रियतम के अंक में समाहित होने वाली सहेलियाँ साथिनें हैं।

मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ॥

हम सब मिलकर उस समर्थ पति प्रभु की कथाएँ कहें।

साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥१॥

उस सच्चे साहब में सभी गुण हैं और सारे अवगुण हममें हैं ॥१॥

करता सभु को तेरै जोरि ॥

हे कर्त्ता प्रभु सभी को तुम्हारा ही सहारा है।

एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥१॥रहाउ॥

केवल सद्गुरु के शब्द उपदेश पर विचार करके हे प्रभु ! यदि तुम मिल जाओ तो और किसी की जरुरत ही क्या है ॥१॥ रहाउ ॥

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ॥

प्रभु को प्राप्त करने वाली जीवात्मा रूपी सुहागिन स्त्रियों से पूछो तुमने किन गुणों से पति परमात्मा को रीझाया है।

सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥

स्थिर बुद्धि होकर संतोष का श्रृंगार करने से और मधुर बचनों से (हमने प्रभु को रिझाया है)।

पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥२॥

स्थिर बुद्धि संतोष और मधुर बचनों को धारण करते हुए जब गुरु के शब्द उपदेश को सुना जाय, तब आनन्द का भण्डार प्रभु-पति मिलता है ॥२॥

केतीआ तेरीआ कुदरीत केवड तेरी दाति ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे कितने ही कौतुक हैं और कितनी बड़ी बड़ी तुम्हारी (मनुष्य को) देन है।

केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥

कितने ही प्रकार के जीव जन्तु तुमने बनाए हैं जो दिन रात तुम्हारी सराहना करते रहते हैं।

केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥३॥

तुम्हारे द्वारा बनाए गए कितने ही रूप हैं और कितने ही रंग है कई लोगों के (नाम रूप रंग) जाने गए हैं और कई लोगों के जाने ही नहीं गए ।

सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥

सत्य संगति में मिलने पर ही हृदय में सत्य के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है और मन में सत्य का निवास होने पर ही सत्य प्रभु में समा जाते हैं।

सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥

जिसकी चितवत्ति प्रभु में लग जाती है और जिसके हृदय में प्रभुपति के प्रति प्रेम उदित हो जाता है और जो गुरु के बचनों गुरु के शब्दों द्वारा यमों के भय को समाप्त कर (खा डालता) देता है ।

नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) सत्यस्वरूप प्रभु ऐसे जीवों को आप ही अपने साथ मिला लेता है ॥१०॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥
दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥
कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥१॥
मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥
भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥१॥रहाउ॥
केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥
मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥
जिसके जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥२॥
जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥
संजोगी मिलि एक से विजोगी उठि जाइ ॥
जो तिसु भाणा सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥३॥
गुरमुखि वसतु वेसाहीऐ सचु वखरु सचु रासि ॥
जिनी सचु वणंजिआ गुर पूरे साबासि ॥
नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥४॥११॥

□

भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥

अच्छा ही हुआ जो मैं हउमैं (अहं) से उबर गया और मेरे हृदय रूपी घर से हउमै मर गई ॥

दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥

सच्चे गुरु पर भरोसा होने से यम के दूत अब मेरी सेवा चाकरी में लग गए हैं ।

कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥१॥

किसी की परवाह न करने वाले सत्यस्वरूप प्रभु पर निश्चय लाते ही मेरे मन ने व्यर्थ का खपना (क्लेश करना) त्याग दिया है ॥१॥

मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥

हे मेरे मन ! सच्चे प्रभु के मिलने से यमों का भय चला जाता है ।

भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥१॥रहाउ॥

प्रभु के भय के बिना यह मन यमों के भय से हीन (निर्भय) कैसे हो सकता है और गुरु के सम्मुख होकर गुरु के शब्द उपदेश द्वारा ही जीव प्रभु में लीन हो सकता है ॥१॥रहाउ॥

केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥

चाहे कितना ही कथन करते रहो पर कहने से प्रभु के यश में कमी नहीं होती ।

मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥

प्रभु से माँगने वाले तो कितने ही हैं परन्तु देने वाला वह एक ही है ।

जिसके जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥२॥

यह जीवात्मा और प्राण जिस प्रभु के (द्वारा दिए गए) है उस प्रभु को मन में बसा कर ही सुख प्राप्त होता है ।

जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥

यह सारा संसार स्वप्नवत है और यह सारी सृष्टि प्रभु का खेल बना हुआ है और क्षण मात्र में ही प्रभु इस सृष्टि के खेल को खेल कर समाप्त (नष्ट) कर देता है ।

संजोगी मिलि एक से विजोगी उठि जाइ ॥

जीव कर्मों के अनुसार संयोग वश अन्य जीवों से मिलकर एक होता है और कर्मों के अनुसार वियोग को प्राप्त हो यहाँ से उठ जाता है ।

जो तिसु भाणा सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥३॥

जो उस प्रभु को अच्छा लगता है वही होता है और कुछ भी नहीं किया जा सकता ।

गुरमुखि वसतु वेसाहीऐ सचु वखरु सचु रासि ॥

प्रभु का नाम ही सदा स्थायी रहने वाला सौदा है और सदा स्थाई रहने वाली पूँजी है गुरु के सम्मुख होकर ही इसका व्यापार किया जा सकता है ।

जिनी सचु वणंजिआ गुर पूरे साबासि ॥

जिन्होंने पूर्ण सद्गुरु के द्वारा सदा स्थिर रहने वाले इस सौदे का व्यापार किया है उन्हें ही प्रभु द्वारा प्रशंसा मिली है ।

नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥४॥११॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) जिसके पास (नाम भक्ति सिमरन का) सच्चा सौदा है (ज्ञान आदि) सत्य वस्तुओं की पहचान भी उसी को है ॥४॥११॥

□

सिरीरागु महला १ ।।

धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफति समाइ ।।
लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ।।
सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ।।१।।
भाई रे संत जना की रेणु ।।
संत सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेणु ।।१।।रहाउ।।
ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ।।
सचु करणी दे पाईऐ दरु घरु महलु पिआरि ।।
गुरमुखि मनु समझाईऐ आतमरामु बीचारि ।।२।।
त्रिबिधि करम कमाईअहि आस अंदेसा होइ ।।
किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ।।
निजघरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ।।३।।
बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ।।
एको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ।।
नानक देख दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ।।४।।१२।।

□

धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफती समाइ ।।

(जिस प्रकार) धातु (का बना पदार्थ गलाने पर) पुन: धातु में मिल जाता है (उसी प्रकार) प्रभु की सराहना करने वाला जीव सराहनीय प्रभु में समाहित हो जाता है।

लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ।।

सत्यस्वरूप प्रभु के प्रेम रूपी गहरे लाल रंग को लगाओ।

सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ।।१।।

वह सत्य स्वरूप प्रभु उन सन्तोषी जीवों को ही मिलता है जो एक निष्ठ श्रद्धा के साथ प्रभु का नाम जपते हैं ।।२।।

भाई रे संत जना की रेणु ।।

हे भाई सन्त जनों के चरणों की धूलि बन जाओ।

संत सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेणु ।।१।। रहाउ ।।

सन्तों की सभा में गुरु की प्राप्ति होती है और गुरु ही वह कामधेनु है जिससे नाम पदार्थ को प्राप्त कर विकारों से मुक्त होते हैं ।।१।। रहाउ।।

ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ।।

प्रभु के निवास का स्थान अत्यन्त ऊँचा और सुहावना है मुरारी प्रभु का महल समस्त स्थानों के ऊपर (सर्वोच्च) है।

सचु करणी दे पाईऐ दरु घरु महलु पिआरि ॥

जब जीव सत्यकर्मों की कमाई प्रभु चरणों पर अर्पित करता है तभी उसे निज स्वरूप में प्रभु के प्रति प्रेम की प्राप्ति होती है।

गुरमुखि मनु समझाईए आतमरामु बीचारि ॥२॥

गुरु के सम्मुख होकर मन को समझाने से ही आत्मा में स्थित राम प्रभु की स्थिति का विचार (ज्ञान) प्राप्त होता है ॥२॥

त्रिबिधि करम कमाईअहि आस अंदेसा होइ ॥

त्रिगुणात्मक माया के अधीन होकर जिन कर्मों की कमाई की जाती है उनसे कभी तो फल पाने की आशा रहती है और कभी न पा सकने का सन्देह होता है।

किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ॥

गुरु के उपदेश बिना सत, रज और तमोगणी कर्मों से कैसे छूटा जा सकता है (अर्थात् नहीं छूटा जा सकता) और स्थिर अवस्था को प्राप्त कर आत्मिक सुख प्राप्त होता है।

निजघरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ॥३॥

जब सद्गुरु कृपा दृष्टि करता है तभी विकारों की मैल धुलती है और तभी निज स्वरूप में प्रभु की अवस्थिति की पहचान होती है ॥३॥

बिनु गुर मैल न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥

गुरु कृपा के बिना मन की मैल नहीं उतरनी और मन की मैल उतरे बिना निज स्वरुप में हरि प्रभु के निवास की पहचान कैसे हो सकती है।

एको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ॥

इसलिए अन्य समस्त आशाओं का त्याग कर एक मात्र प्रभु के शब्द का ही विचार करना चाहिए।

नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ॥४॥१२॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी कथन करते हैं मैं उन जिज्ञासुओं के सर्वदा बलिहार जाता हूँ जो प्रभु को स्वयं साक्षात देखते हैं और दसरों को (ज्ञान की दिव्य दृष्टि प्रदान कर) उसका साक्षात्कार करवाते हैं ॥४॥१२॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

धृगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥

कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥

बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥१॥

मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥

दरि घरि ढोई ना लहै दरगह झूठु खुआरु ।।१।।रहाउ।।

आपि सजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ।।

पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ।।

नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ।।२।।

गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ।।

अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ।।

आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ।।३।।

चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू मांग संधूरु ।।

चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ।।

जे धन कंति न भावई त सभि अडंबर कूड़ु ।।४।।

सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ।।

जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ।।

नानक धंनु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ।।५।।१३।।

□

ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ।।

पति परमात्मा द्वारा त्याग दी गई उस (व्यक्ता) स्त्री के जीवन को धिक्कार है जो अपने पति प्रभु के प्रेम का त्याग कर अन्य विषयों के प्रेम में ठगी जा रही है ।

कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ।।

जैसे कलर की बनी हुई दीवार दिन रात धीरे धीरे जर्जर होती हुई अन्त में सम्पूर्ण गिर जाती है उसी प्रकार प्रभु के प्रेम मे हीन व्यक्ति धीरे धीरे विषय वासनाओं में जर्जर होकर अन्त में नाश को प्राप्त होता है ।

बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ।।१।।

गुरु के शब्द उपदेश के बिना सुख नहीं होता और प्रियतम प्रभु नहीं मिलता और प्रियतम प्रभु को प्राप्त किए बिना जन्म मरण का दुःख नहीं जाता ।।१।।

मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ।।

हे मूर्ख (मुग्धा) जीव स्त्री प्रियतम प्रभु के बिना श्रृंगार कैसा ?

दरि घरि ढोई ना लहै दरगह झूठु खुआरु ।।१।।रहाउ।।

जिस प्रकार पति द्वारा त्याग दी गई स्त्री को घर में सहारा नहीं मिलता उसी प्रकार प्रभु प्रेम से हीन जीव को निज स्वरूप की पहचान नहीं होती और इसलिए उसे प्रभ के दरबार में सहारा नहीं मिलता वह झूठा होकर दुर्दशा को पहुँचता है ।।१।। रहाउ ।।

आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ।।

सत्यस्वरूप प्रभु आप चतुर हैं और सबसे बड़ा किसान है और वह यह नहीं भूलता (कि) ।

पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ।।

सबसे पहले हृदय रूपी धरती को साफ करके बाद में उसमें प्रभु के सत्य नाम के दाने दिए (बीज डाले) जाते हैं ।

नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ।।२।।

और तब एक प्रभु की कृपा रूपी मोहर के लगते ही नौ प्रकार के खजानों से भरपूर प्रभु का नाम हृदय में उत्पन्न होता है ।।२।।

गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ।।

जो जीव गुरु द्वारा दिये गये ज्ञान को नहीं जानता न तो उसे जीवन ढंग आता है और नहीं उसका आचरण बनता है ।

अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंधु गुबारु ।।

वह अज्ञानान्ध प्रभु के नाम को विस्मृत कर देता है और मन के पीछे लगकर गहरे अ धकार में (भटक) जाता है ।

आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ।।३।।

उसका आना और जाना (आवागमन का चक्र) समाप्त नहीं होता वह (बार बार) मरता है और जन्म लेता है और (इसी तरह उसकी) दुर्दशा होती रहती है ।।३।।

चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू मांग संधूरु ।।

चन्दन खरीद लो केसर मंगा लो और मांग को सिन्दूर से सजा लो ।

चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ।।

अनेक प्रकार के इत्र और बहुत सा चन्दन और पान के साथ साथ कपूर भी रख लो ।

जे धन कंति न भावई त सभि अडंबर कूड़ु ।।४।।

लेकिन यदि जीवस्त्री पति परमात्मा को अच्छी नहीं लगती तो (श्रृंगार के लिए किए गए) ये सारे आडम्बर मिथ्या है ।।४।।

सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ।।

प्रभु प्रेम के बिना सभी रसों का भोगना व्यर्थ है और श्रृंगार बाह्याडम्बर) दुखदायी है ।

जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुर दुआरि ।।

जब तक गुरु के शब्द उपदेश से मन बिंधता नहीं है तब तक गुरु के द्वार पर कैसे शोभायमान हो सकते हैं ।

नानक धंनु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ।।५।।१३।।

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) वही जीव स्त्री धन्य है और सौभाग्यवती है जिसे अपने पति प्रभु से सच्चा प्रेम है ।।५।।१३।।

□

सिरीरागु महला १ ।।

सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइ ।।
भाहि बलंदी विझवी धूउ न निकसिओ काइ ।।
पंचे रुंने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइ ।।१।।
मूड़े रामु जपहु गुण सारि ।।
हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहंकारि ।।१।।रहाउ।।
जिनी नामु विसारिआ दूजी कारै लगि ।।
दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि तृसना अगि ।।
गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धंधै ठगि ।।२।।
मुई परीति पिआरु गइआ मुआ वैरु विरोधु ।।
धंधा थका हउ मुई ममता माइआ क्रोधु ।।
करमि मिलै सचु पाईऐ गुरमुखि सदा निरोधु ।।३।।
सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइ ।।
सो नरु जंमै ना मरै ना आवै न जाइ ।।
नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइ ।।४।।१४।।

□

सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइ ।।

जब शरीर में से जीव निकल जाता है तो शरीर सूना होकर डरावना लगता है ।

भाहि बलंदी विझवी धूउ न निकसिओ काइ ।।

इस देह के अन्दर जो चेतना रूपी अग्नि जल रही होती है जब वह बुझ जाती है तो किसी प्रकार का भी (वाणी व शब्द रूपी) धुंआ बाहर नहीं निकलता ।

पंचे रुंने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइ ।।

तब पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ दुख से भरकर रोने लगती है कि द्वैत भाव में (व्यस्त रहने के कारण आज हमारा) नाश हो रहा है ।।१।।

मूड़े रामु जपहु गुण सारि ।।

हे मूर्ख राम का नाम जपो और प्रभु के गुणों की संभाल करो ।

हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहंकारि ।।१।।रहाउ।।

माया की ममता से उत्पन्न हउमै और अहंकार ने सारे संसार को ठग लिया है ।।१।। रहाउ ।।

जिनी नामु विसारिआ दूजी कारै लगि ।।

जिन्होंने दूसरे (माया) कर्म में लगकर प्रभु का नाम भुला दिया है।

दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि तृसना अगि ।।

दुविधा के कारण उनके अन्तःकरण में तृष्णा की अग्नि जलती रहती है और वे उसी अग्नि में जलकर मर जाते हैं।

गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धंधै ठगि ।।२।।

जिनकी रक्षा गुरु ने की उनका उद्धार हो गया शेष अन्य को सांसारिक धन्धों के ठगों ने ठग लिया ।।२।।

मुई परीति पिआरु गइआ मुआ वैरु विरोधु ।।

(जिन जीवों पर प्रभु की कृपा हो जाती है) उनकी मिथ्या सांसारिक प्रीति मर (समाप्त हो) जाती है सांसारिक पदार्थों के प्रति प्रेम चला (समाप्त हो) जाता है और लोगों से वैर विरोध की भावना भी नष्ट हो जाती है।

धंधा थका हउ मुई ममता माइआ क्रोधु ।।

दुनिया के धन्धे समाप्त हो जाते हैं अहं भावना नष्ट हो जाती है माया की ममता और क्रोध विकार मर जाता है।

करमि मिलै सचु पाईऐ गुरमुखि सदा निरोधु ।।३।।

प्रभु की कृपा मिलने पर जब गुरु के सम्मुख होकर सदैव इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखा जाता है तभी सत्य स्वरूप प्रभु को प्राप्त किया जाता है ।।३।।

सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइ ।।

गुरु द्वारा दी गई शिक्षा को पल्ले में डाल (बाँध) कर जो जीव सत्य कर्मों की कमाई में लग जाता है उसे ही सत्यस्वरूप प्रभु मिलते हैं।

सो नरु जंमै ना मरै ना आवै ना जाइ ।।

ऐसा मनुष्य न जन्म लेता है न मरता है न आता है न जाता है।

नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइ ।।४।।१४।।

नानक जी वही मनुष्य प्रभु के दरबार में श्रेष्ठ माना जाता है और प्रभु के दरबार में यश रूपी वस्त्रों को पहन कर जाता है ।।४।।१४।।

□

सिरीरागु महला १ ।।

तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ।।
अउगण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूरु ।।

बिनु सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूरु ।।१।।
मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ।।

जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ।।१।।रहाउ।।
तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ।।
भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ।।
सची नदरि निहालीऐ बहुड़ि न पावै ताउ ।।२।।
साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ।।
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ।।
निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ।।३।।
इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ।।
पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ।।
नानक अउगण वीसरै गुरि राखे पति ताहि ।।४।।१५।।

□

तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ।।
(जो जीव प्रभु का नाम स्मरण नहीं करता उसका) शरीर (विकारों में) जल फूंक कर मिट्टी हो जाता है और (उसका) मन माया के मोह में फँस कर जले हुए लोहे (मण्डूर) की तरह हो जाता है ।

अउगण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूरु ।।
फिर सभी दुर्गुण उस पर लागू हो जाते हैं और झूठ (मिथ्या आचरण) उसके मन में बैठकर विजय की दुँदुभि (बाजा) बजाता है ।

बिनु सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूरु ।।१।।
गुरु के शब्द उपदेश को धारण किये बिना यह मन भटकता रहता है और दुविधा (द्वैत) भावना इसे पूरा ही सांसारिक मोह के सागर में डुबो देती है ।।१।।

मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ।।
हे मेरे मन! गुरु के शब्दों में चित्त लगाओ और संसार सागर से तर जाओ ।

जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ।।१।। रहाउ ।।
जिसने गुरु के मुख से प्रभु के नाम को नहीं समझा है (ज्ञान प्राप्त नहीं किया है वह मरता है और जन्मता है (आवागमन के चक्र म) आता है और जाता है ।।१।। रहाउ ।।

तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ।।
वही शरीर पवित्र कहा जाना चाहिए जिसमें सच्चे प्रभु का नाम है ।

भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ।
जिसका शरीर सच्चे के भय में रंगा हुआ है और जिसकी जीभ को सच्चे प्रभु के नाम का स्वाद पड़ गया है ।

सची नदरि निहालीऐ बहुड़ि न पावै ताउ ।।२।।

(वह जीव) प्रभु द्वारा सच्ची कृपा दृष्टि से देखा जाता है (और इस प्रकार कृपा दृष्टि द्वारा कृतार्थ किया गया) वह पुनः सांसारिक ताप को प्राप्त नहीं होता ।।२।।

साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ।

उस सत्यस्वरूप प्रभु से ही पवन उत्पन्न हुई है और पवन से जल उत्पन्न होता है ।

जल ते त्रिभवण साजिआ घटि घटि जोति समोइ ।।

जल से तोनों लोक सजाये गए हैं घट घट में उसी प्रभु की ज्योति समाई हुई है ।

निरमलु मैला न थीऐ सबदि रते पति होइ ।।३।।

जो गुरु के शब्द उपदेश में अनुरक्त हो गया है उसका मन निर्मल हो जाता है और वह पुनः मैला नहीं होता और सर्वत्र उसकी इज्जत होती है ।।३।।

इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ।।

जो मन सत्य प्रभु में लगकर सन्तोष को प्राप्त होता है उस पर प्रभु की कृपा दृष्टि हो जाती है ।

पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ।।

उसके पाँच तत्व सत्य प्रभु के भय में रंगे जाते हैं और उसके मन में सत्य प्रभु की ज्योति (प्रकट होती है) ।

नानक अउगण वीसरै गुरि राखै पति ताहि ।।४।।१५।।

नानक ऐसा जोव सभी अवगुणों को भूल जाता है और सत्य गुरु (स्वयं) उसकी इज्जत रखता है ।।४।।१५।।

□

सिरीरागु महला १ ।।

नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ।।
इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ।।
मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखि सचु सु तारि ।।१।।
गुर बिनु किउ तरीऐ सुखु होइ ।।
जिउ भावै तिउ राखु तू मै अवरु न दूजा कोइ ।।१।।रहाउ।।
आगै देखउ डउ जलै पाछै हरिओ अंगूरु ।।
जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घटि घटि सचु भरपूरि ।।
आपे मेलि मिलावही साचै महलि हदूरि ।।२।।

साहि साहि तुझु संमला कदे न विसारेउ ।।
जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखि अंमृतु पेउ ।।
मनु तनु तेरा तू धणी गरबु निवारि समेउ ।।३।।
जिनि एहु जगतु उपाइआ त्रिभवणु करि आकारु ।।
गुरमुखि चानणु जाणीऐ मनमुखि मुगधु गुबारु ।।
घटि घटि जोति निरंतरी बूझै गुरमति सारु ।।४।।
गुरमुखि जिन्ही जाणिआ तिन कीचै साबासि ।।
सचे सेती रलि मिले सचे गुण परगासि ।।
नानक नामि संतोखीआ जीउ पिंडु प्रभु पासि ।।५।।१६।।

□

नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुरु वीचारि ।।

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं कि) यदि गुरु द्वारा दी गई शिक्षा पर विचार करें और सत्य को नौका बना लें तो इस संसार सागर को तैर कर पार उतर सकते हैं।

इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ।।

पूरी तरह अहंकार से भरे हुए जीव एक बार आते (जन्मते) हैं और एक बार जाते (मरते) हैं।

मन हठि मती बूडिऐ गुरमुखि सचु सु तारि ।।१।।

मन द्वारा दी गई हठपूर्ण बुद्धि से जीव संसार सागर में डूब जाता है और (गुरु द्वारा दी गई शिक्षा पर चलने वाले) गुरु मुख को सचचा प्रभु आप पार कर देता है।

गुरु बिनु किउ तरीऐ सुख होइ ।

सद्गुरु के बिना कैसे तरा जा सकता है और कैसे आत्मिक रूप से सुखी हो सकता है।

जिउ भावै तिउ राखु तू मैं अवरु न दूजा कोई ।।१।। रहाउ ।।

हे प्रभु! तुम्हें जंसे अच्छा लगे वैसे ही मेरी रक्षा करो मेरा तुम्हारे बिना और कोई भी दूसरा (सहारा) नहीं है ।।१।। रहाउ।।

आगै देखउ डउ जलै पाछै हरिओ अंगूरु ।

आगे देखता हूँ तो दावाग्नि जल रही है पीछे देखता हूँ तो हरे अंकुर निकल रहे हैं।

जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घटि घटि सचु भरपूरि ।

जिससे यह सृष्टि उत्पन्न हुई है उसी से ही विनष्ट होती है घट घट में सत्य प्रभु ही परिपूर्ण है।

आपे मेलि मिलावही साचै महलि हदूरि ॥२॥

जिसका प्रभु आप गुरु से मिलन करा देता है वही उस सच्चे प्रभु के महल में उसके रुबरु (सामने होकर बैठता है) होता है ॥२॥

साहि साहि तुझु संमला कदे न बिसारेउ ॥

हे प्रभु ! कृपा करो कि श्वास प्रश्वास तुम्हें संभालता रहूँ (याद करता रहूँ) और कभी भी न बिसारू ।

जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखि अंमृतु पेउ ।

ज्यों ज्यों साहिब प्रभु मन में बसता है त्यों त्यों गुरु द्वारा दिए गए अमृत रस को जीव पीता है ।

मनु तनु तेरा तू धणी गरबु निवारि समेउ ॥३॥

हे मेरे प्रभु प्रियतम यह मेरा मन और तन तुम्हारा है तुम ही मेरे पति हो हे प्रभु ! मेरा अहंकार दूर कर मुझे अपने में समाहित कर लो ॥३॥

जिनि एहु जगतु उपाइआ त्रिभवणु करि आकारु ॥

जिसने यह जगत उत्पन्न किया है और तीनों लोकों को आकार दिया है ।

गुरमुखि चानणु जाणीऐ मनमुखि मुगधु गुबारु ॥

उसके प्रकाश को गुरु के सम्मुख होकर ही जानते हैं मन के पीछे लगने वाले मूर्ख (बनकर) अज्ञान के अन्धेरे में (ही भटकते) हैं ।

घटि घटि जोति निरंतरी बूझै गुरमति सारु ॥४॥

जो गुरु की शिक्षा के सार को समझ लेता है वही जानता है कि प्रत्येक जीव में अविभेद ज्योति व्याप्त है ॥४॥

गुरमुखि जिन्ही जाणिआ तिन कीचै साबासि ॥

जिन्होंने गुरु के सम्मुख होकर प्रभु को जान लिया है उन्हें शाबासी देनी चाहिए ।

सचे सेती रलि मिले सचे गुण परगासि ॥

वे सत्यस्वरूप प्रभु के गुणों का प्रकाश प्राप्त कर सत्य प्रभु में ही मिल जाते हैं ।

नानक नामि संतोखीआ जीउ पिंडु प्रभु पासि ॥५॥१६॥

नानक सत्य प्रभु का नाम जप कर सन्तुष्ट हो गया है और जीव और शरीर प्रभु के पास समर्पित करता है ॥५॥१६॥

सिरीरागु महला १ ।।

सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ।।
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ।।
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ।।१।।
मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ।।
गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ।।१।।रहाउ।।
सुणि सुणि गंढणु गंढीऐ लिखि पड़ि बुझहि भारु ।।
त्रिसना अहिनिसि अगली हउमै रोगु विकारु ।।
ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु ।।२।।
लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ।।
बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ।।
हरि जपि जीअरे छूटीऐ गुरमुखि चीनै आपु ।।३।।
तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ।।
त्रिभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ।।
सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ।।४।।१७।।

□

सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ।।

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! सुनो, प्रभु से मिलने का यही समय है ।

जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ।।

जब तक यौवन है, (जब तक) सांस (चल रही) है तब तक यह शरीर प्रभु नाम को दे दे (प्रभु नाम को समर्पित कर दें) ।

बिनु गुण काम न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ।।१।।

यह शरीर गुणहीन (व्यर्थ और सारहीन) है यह किसी काम नहीं आता (इसका कोई उपयोग नहीं) यह शरीर गिरने पर (जर्जर होने पर) राख की ढेरी हो जाता है ।।१।।

मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ।।

हे मेरे मन ! इस शरीर का लाभ उठाओ, और नामस्मरण रूपी लाभ लेकर अपने घर (परलोक) जाओ ।

गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ।।१।।रहाउ।।

(हे मेरे मन !) गुरु के सम्मुख होकर प्रभु के नाम की सराहना करो (केवल नाम जपने से ही) हउमै की जलन से निवृत्ति होगी ।।१।।रहाउ।।

सुणि सुणि गंढणु गंढीऐ लिखि पड़ि बुझहि भारु ॥

ज्ञान की बातें सुन सुन कर उनके सन्दर्भों की गाँठे जोड़ते जाना (क्रम से लगाते जाना) फिर उन्हें लिखना और (फिर सभाओं में पढ़ाना) पढ़ना भार समझो (क्योंकि इससे अहंकार का बोझ मन पर पड़ता है) ।

त्रिसना अहिनिसि अगली हउमै रोगु विकारु ॥

(केवल पठन पाठन से) दिन रात तृष्णा बढ़ती है और हउमै के रोग से ग्रस्त होकर विकार उत्पन्न होते हैं ।

ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु ॥२॥

वह किसी की भी परवाह न करने वाला प्रभु अतुलनीय है (किसी भी मापदण्ड से उसे तोला नहीं जा सकता) सद्गुरु की शिक्षा द्वारा सद्बुद्धि प्राप्त कर प्रभु की संभाल (नाम स्मरण) कर ॥२॥

लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥

लाख चतुराइयां करलो, लाखों से प्रेम मिलन कर लो ।

बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ॥

(परन्तु) साधुओं की संगति के बिना तृप्ति नहीं होती और बिना नाम के दुख क्लेश दूर नहीं होते ।

हरि जपि जीअरे छूटीऐ गुरमुखि चीनै आपु ॥३॥

हे जीव ! हरि का नाम जपने से ही (दुखों क्लेशों से) छुटकारा होता है और गुरू के सम्मुख होने से ही अपने स्वरूप को पहचाना जाता है ॥३॥

तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ॥

जिस जिज्ञासु ने अपना तन मन गुरू के पास बेच दिया है और गुरू को मन सौंपते समय शीश भी साथ में देता है ।

त्रिभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ॥

(वही जिज्ञासु) तीनों लोकों में प्रभु को खोजते हुए अन्त में गुरू के सम्मुख होकर प्रभु को खोज लेता है और प्रभु के दर्शन प्राप्त कर कृतार्थ हो जाता है ।

सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ॥४॥१७॥

जब सद्गुरू ने ऐसा मेल मिला दिया तब (श्री गुरुदेव) नानक जी ने जान लिया कि वह (त्रिलोकी) प्रभु मेरे साथ है (मेरी अन्तरात्मा में स्थित है) ॥४॥१७॥

सिरीरागु महला १ ॥

मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥
तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥
अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥१॥
जीअरे राम जपत मनु मानु ॥
अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु ॥१॥रहाउ॥
अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ॥
मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि ॥
अनहद सबदि सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ॥२॥
अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ॥
सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु ॥
खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरिनाम निवासु ॥३॥
जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ॥
त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥
विजोगी दुखि विछुड़े मनमुखि लहहि न मेलु ॥४॥
मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ॥
गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥
नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥५॥१८॥

□

मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥

जो जीव प्रभु के नाम स्मरण से मन जोड़ते हैं उन्हें न तो मरने की चिन्ता होती है और न ही जीने की आशाएं ।

तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥

क्योंकि ऐसे जीव जानते हैं कि सभी जीवों का पालन करने वाले हे प्रभु ! तुम ही हो और जीव द्वारा भोगा गया एक एक सांस और उसके द्वारा खाए गए भोजन के एक एक ग्रास का हिसाब तुम्हारे पास है ।

अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥१॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीव के अन्त:करण में हे प्रभु ! तुम ही बसते हो और वह जानता है कि तुम्हें जंसे अच्छा लगता है प्रत्येक जीव के जीवन का निर्णय तुम उसी प्रकार लेते हो ॥१॥

जीअरे राम जपत मनु मानु ।।

हे जीव ! राम नाम का जाप कर और प्रभु नाम का जाप करते हुए उसके नाम का ही मनन कर।

अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु ।।१।।रहाउ।।

गुरू के सम्मुख होकर ज्ञान प्राप्त करके मन के अंतर में लगी तृष्णा की अग्नि बुझ गई ।।१।।रहाउ।।

अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ।।

जब निःशंक हो कर गुरू से मिला जाता है तभी अन्तर्मन की अवस्था को जाना जाता है ।

मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि ।।

देह से मुक्त होकर जिस घर (प्रभु के स्वरूप) में जाना है उस स्वरूप को मन को मार कर जीते जी प्राप्त कर लो।

अनहद सबदि सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ।।२।।

शब्द ब्रह्म का सुहावना अनहद शब्द गुरू द्वारा दी गई विचार से ही प्राप्त होता है ।।२।।

अनहद वाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ।।

अनहद शब्द को प्राप्त करो क्योंकि उसी से अहंकार का नाश होता है।

सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु ।।

जो जीव अपने सद्गुरु की सेवा करता है मैं उसके सदैव कुर्बान जाता हूँ।

खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरिनाम निवासु ।।३।।

जिसके मुख में हरि के नाम का निवास है उसे प्रभु के दरबार में ले जाकर (यश रूपी वस्त्र) पहनाए जाते हैं ।।३।।

जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ।।

जहाँ भी देखता हूँ वही ज्ञान और अज्ञान का गठबंधन व्याप्त हो रहा है।

त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ।।

इस देह को त्रिगुणात्मक माया ने बांध लिया है जो भी जग में आता है वह माया से खेलता है ।

बिजोगी दुखि विछुड़े मनमुखि लहहि न मेलु ।।४।।

प्रभु के वियोगी प्रभु से बिछुड़कर दुख प्राप्त करते हैं और मन के पीछे लगने वाले कभी भी प्रभु से मिलन प्राप्त नहीं करते ।।४।।

मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ॥

जिनके मन में बैराग्य है वे सच्चे प्रभु के भय से अनुरक्त होते हैं और उनका निवास निज स्वरूप में होता है।

गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥

वे ज्ञान के महान रस का भोग करते हैं और उन्हें पुन: किसी वस्तु की भूख नही होती।

नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होई ॥५॥१८॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) इस मन को मार कर प्रभु से मिलन कर फिर तुझे जन्म मरण के चक्र में घूमने का दुख नहीं होगा ॥५॥१८॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

एहु मनो मूरखु लोभिआ लोभे लगा लोभानु ॥
सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥
साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥
मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥
हरिगुर सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥१॥रहाउ॥
रामनामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ॥
सभि सुख हरि रस भोगणे संतसभा मिलि गिआनु ॥
निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतगुरि दीआ नामु ॥२॥
कूकर कूड़ कमाईऐ गुरनिंदा पचै पचानु ॥
भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥
मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ॥३॥
ऐथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखतु परवानु ॥
हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ॥
नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥४॥१९॥

□

एहु मनो मूरखु लोभीआ लोभे लगा लोभानु ॥

यह मन मूर्ख और लोभी है और लुभाने वाले द्रव्यों के लोभ में ही लगा हुआ है।

सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥

यह माया सिक्त मन गुरु के शब्द में तो भीगता ही नहीं दुर्बुद्धि वश हो कर जन्म मरण के चक्र में आता और जाता है।

साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईयै गुणी निधानु ।।१।।

यदि जिज्ञासु को परोपकारी सद्गुरु मिल जाय तो गुणों के भंडार प्रभु की प्राप्ति हो जाती है ।।१।।

मन रे हउमै छोडि गुमानु ।।

हे मेरे मन ! अहंभाव और अहंकार को छोड़ दो ।

हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ।।१।। रहाउ ।।

गुरु (के चरण) रूपी सरोवर का सेवन कर इससे तू हरि प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करेगा ।।१।। रहाउ ।।

राम नामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ।।

गुरु के सम्मुख होकर हरि नाम के धन को जानो और दिन रात राम के नाम का जाप कर ।

सभि सुख हरि रस भोगणे संत सभा मिलि गिआनु ।।

हरि नाम के रस में ही सभी प्रकार के सुख भोगने को मिलते हैं संतों की सभा में मिलने से ही ऐसा ज्ञान प्राप्त होता है ।

निति अहि निसि हरि प्रभु सेविआ सत गुरु दीआ नामु ।।२।।

जिन्हें सद्गुरु ने ही हरि प्रभु का नाम दिया है वे नित्य प्रति दिन रात हरि प्रभु के नाम की सेवा (अराधना) करते हैं ।।२।।

कूकर कूड़ कमाईऐ गुरु निंदा पचै पचानु ।।

अज्ञानी जीव कुत्ते जैसे (लोभी) हैं, झूठ की कमाई करते हैं और गुरु की निन्दा रूपी अग्नि में स्वयं जलते हैं और दूसरों को जलाते हैं ।

भरमे भूला दुख घणो जमु मारि करै खुलहानु ।।

भ्रम में भटका हुआ ऐसा मनुष्य बहुत दुख भोगता है और यमदूत उसे मार मार कर भूसा बना देता है ।

मन मुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ।।३।।

मन के पीछे लगने वाले मनमुख कभी भी सुख नहीं पाते और गुरु के सम्मुख होने वाले गुरु मुख आध्यात्मिक प्रकाश का सुख प्राप्त करते हैं ।।३।।

ऐथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखतु परवानु ।।

(मनमुख) इस लोक में धंधा ही पीटते रहते हैं परन्तु प्रभु के दरबार में (धंधे का मिथ्या हिसाब नहीं नाम स्मरण का) सत्य लेखन ही कबूल होता है ।

हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ।

(गुरुमुख) गुरु की करनी को ही श्रेष्ठ मानता है और गुरु और हरि साजन की सेवा करता है ।

नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥४॥१९॥

(श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) हरि प्रभु का नाम उन्हें ही नहीं भूलता जिनके मस्तक पर सत्यस्वरूप प्रभु ने कृपा का निशान लगा दिया है ॥४॥१९॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मन माहि ॥

किउ दरगह पति पाईऐ जा हरि न वसै मन माहि ॥

गुरि मिलीऐ सुखु पाईऐ अगनि मरै गुण माहि ॥१॥

मन रे अहिनिसि हरिगुण सारि ॥

जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ॥१॥रहाउ॥

जोती जोति मिलाईऐ सुरती सुरति संजोगु ॥

हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ॥

गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ॥२॥

काइआ कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥

तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै चलणहारु ॥

गुरमुखि रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज भतारु ॥३॥

चारे अगनि निवारि मरु गुरसुखि हरि जलु पाइ ॥

अंतरि कमलु प्रगासिआ अंमृतु भरिआ अघाइ ॥

नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ ॥४॥२०॥

□

इकु तिलु पिआरा बीसरै रोगु बड़ा मन माहि ।

(प्रभु के प्यारे भक्तों को) यदि एक पल के लिए भी प्यारा प्रियतम प्रभु भूल जाय तो वे अपने मन को किसी बड़े रोग से ग्रस्त अनुभव करते हैं ।

किउ दरगह पति पाईऐ जा हरि न वसै मन माहि ।

जिनके मन में प्रभु हरि का निवास नहीं वे प्रभु के दरबार में कैसे इज्जत पा सकते हैं ।

गुरि मिलिऐ सुखु पाईऐ अगनि मरै गुणमाहि ॥१॥

गुरु से मिलकर ही सुख प्राप्त होता है और प्रभु के गुणों का चिन्तन करने से तृष्णा की अग्नि मर (शान्त हो) जाती है ॥१॥

मन रे अहिनिसि हरि गुण सारि ।।

हे मेरे मन ! दिन रात हरि के गुणों की संभाल कर ।

जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ।।१।। रहाउ ।।

जिन्हें एक क्षण और पल मात्र के लिए भो प्रभु का नाम नहीं भूलता प्रभु के वे दास इस संसार में बिरले ही हैं ।।१।। रहाउ ।।

जोती जोति मिलाईऐ सुरती सुरति संजागु ।।

जिन जिज्ञासुओं की चित्तवृत्ति प्रभु की स्मृति में जुड़ी रहती है उनकी ज्योति को प्रभु अपनी ज्योति में मिला लेता है ।

हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ।।

ऐसे जिज्ञासुओं में हिंसा की भावना नहीं होती और वे अहंकार (हउमै) से दूर होते हैं, इनके मन में न शंका होती है और न शोक ।

गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ।।२।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले जिस जिज्ञासु के मन में हरि बसता है हरि प्रभु स्वयं उसका गुरु से मिलन करता है और फिर उसे अपने से मिलाता है ।।२।।

काइआ कामणि जे करी भोगे भोगण हारु ।।

यदि काया (बुद्धि) को (शुद्ध पवित्र) जीव स्त्रो बना लिया जाय तो सभी सुखों को भोगने वाले प्रभु को (मिलकर वह भी सुख) भोग सकती है ।

तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै चलण हारु ।।

जो वस्तु चलो जाने वाली (नाशवान) दिखाई देती है उससे प्रेम नहीं करना चाहिए ।

गुरमुखि रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज भतारु ।।३।।

गुरु के सम्मुख रहने वाली सुहागिन जीव स्त्री सदैव अपने हृदय रूपी शैय्या पर प्रभु पति के साथ आनन्द लाभ करती है ।।३।।

चारे अगनि निवारि मरु गुरमुखि हरि जल पाइ ।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले (गुरुमुख) हरि नाम रूपी जल को प्राप्त करके चारों प्रकार की अग्नि (ईर्ष्याग्नि, अहंकार अग्नि, क्रोधाग्नि और तृष्णाग्नि) को मार कर उससे निवृत्त हो जाते हैं ।

अंतरि कमलु प्रगासिआ अंमृतु भरिआ अघाइ ।।

गुरुमुख का अन्त:करण ब्रह्मानन्द अमृत से भर जाता है जिसे पीकर वे पूर्ण तृप्त हो जाते और उनका हृदय रूपी कमल पूर्णत: बिकसित हो जाता है ।

नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ ।।४।।२०।।

(श्री गुरु देव) नानक जी (कहते हैं) (हे मेरे भाई) तुम भी सद्‌गुरु को मित्र बना लो जिससे प्रभु के दरबार में जाकर तू परम सत्य की प्राप्ति कर सकेगा ।।४।।२०।।

□

सिरी रागु महला १।।

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ।।
मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ।।
कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ।।१।।
भाई रे हरि हीरा गुर माहि ।।
सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ।।१।।रहाउ।।
सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ।।
जिउ अगनि मरै जलि पाईऐ तिउ त्रिसना दासनिदासि ।।
जम जंदारु न लगई हउ भउजलु तरै तरासि ।।२।।
गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ।।
साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ।।
सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ।।३।।
मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु ।।
सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर गंभीरु ।।
नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ।।४।।२१।।

□

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ।।

हे प्यारे प्रभु के दुखहर्ता हरि के नाम का जाप करो गुरू की शिक्षा लेकर हरि नाम को बोलो।

मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ।।

मन को सत्यकर्मों (जप, तप, भक्ति, सेवा आदि) की कसौटी पर लगाने से ही जीवन को पूरे तोल से तोला जाता है (जीवन सार्थक होता है)।

कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ।।१।।

उस (प्रभु भक्त) की कीमत कोई नहीं पा सकता जिसके हृदय ने (प्रभु नाम रूपी) अमूल्य माणिक्य का मूल्य पा लिया है ।।१।।

भाई रे हरि हीरा गुर माहि ।।

हे भाई ! हरि नाम का हीरा गुरु के पास है।

सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥१॥रहाउ॥

सद्गुरू की प्राप्ति सत्संगति में होती है और सद्गुरू से शब्द उपदेश प्राप्त करके दिन रात प्रभु नाम की सराहना की जाती है ॥१॥रहाउ॥

सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥

(श्रद्धा प्रेम और प्रभु भक्ति की) सारी पूँजी लेकर गुरू को पाया जाता है और गुरू से प्रभु नाम रूपी सच्चा सौदा मिलता है जिसे प्राप्त कर हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है ।

जिउ अगनि मरै जलि पाईऐ तिउ त्रिसना दासनिदासि ॥

जैसे जल को प्राप्त करते ही अग्नि मर जाती है (बुझ जाती है) वैसे ही प्रभु के दासों का दास बनने से तृष्णा रूपी अग्नि शान्त हो जाती है ।

जम जंदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥२॥

यमराज के जल्लाद उसे नहीं लगते (छूते भी नहीं) और इस प्रकार वह त्रास दायक (भय युक्त) भव जल (संसार सागर) से तर जाता है ॥२॥

गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥

गुरू के सम्मुख रहने वालों को झूठ नहीं भाता (सुहाता) सच्चे प्रभु में अनुरक्त होने से सच ही अच्छा लगता है ।

साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥

मायालिप्त जीव को सत्य (प्रभु की बातें) अच्छी नहीं लगतीं, झूठों की पहुंच झूठ तक ही होती है ।

सचि रते गुरि मेलीऐ सचे सचि समाइ ॥३॥

सद्गुरू से मिलकर जो सत्य प्रभु के नाम में अनुरक्त होते हैं वे स्वयं सत्यरूप होकर फिर सत्य प्रभु में समा जाते हैं ।

मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु ॥

प्रभु का नाम, जो माणिक्य है, लाल है, जवाहर है, रत्न और हीरे तुल्य अमूल्य पदार्थ है, जीव के मन में ही होता है ।

सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर गंभीरु ॥

घट घट (प्रत्येक जीव) में व्याप्त रहने वाला प्रभु अति गहरा है अति गंभीर है, उसका नाम ही सच्चा सौदा है ।

नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥४॥२१॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं कि) जिस गुरुमुख पर वह (प्रभु) कृपा करता है वही हीरे के समान अमूल्य हरि नाम को प्राप्त करता है ॥४॥२१॥

□

सिरीरागु महला १॥

भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥
अंतरि मैलु न उतरै धृगु जीवणु धृगु वेसु ॥
होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥१॥
मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥
गुर का कहिआ मनि वसै हउमै त्रिसना मारि ॥१॥रहाउ॥
मनु माणकु निरमोलु है रामनामि पति पाइ ॥
मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥
आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥२॥
जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥
जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥
इहु माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥३॥
जिंना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥
गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥
नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥४॥२२॥

□

भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥

चाहे कितने ही देश देशान्तरों में घूमते रहो (तीर्थाटन करते रहो) तृष्णा और भ्रम की आग बुझती नहीं है ।

अंतरि मैलु न उतरै धृगु जीवणु धृगु वेसु ॥

(इससे) अन्त: करण की मैल उतरती नहीं है (ऐसे व्यक्ति के जीवन को) धिक्कार है और धिक्कार है उसके (तीर्थों पर जाकर धारण किए गए) वेश को ।

होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥१॥

सद्गुरु के उपदेश के बिना और कहीं भी (अन्य किसी साधन से भी) भक्ति नहीं होती ।

मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥

हे मेरे मन ! गुरु के सम्मुख हो और तृष्णा की अग्नि से निवृत्त होओ (छुटकारा पाओ) ।

गुर का कहिआ मनि वसै हउमै त्रिसना मारि ॥१॥रहाउ॥

जब गुरु का कहा हुआ उपदेश मन में बस जायगा तभी अहंकार और तृष्णा को मारा जायगा ॥१॥ रहाउ ॥

मनु माणकु निरमोलु है रामनामि पति पाइ ॥

प्रभु नाम को जपने वाला मन अमूल्य माणिक्य के समान है क्योंकि राम के नाम को जपने से ही जीव सर्वत्र प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥

सत्संगति में मिलकर (बैठने से) और गुरु के सम्मुख होकर रहने से और हरि प्रभु में अपनी चित्तवृत्ति लगाने से हरि प्रभु की प्राप्ति होती है।

आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥२॥

अपनापन (अहंभाव) मिटाकर ही आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है और अन्त में जीव उसी प्रकार प्रभु के स्वरूप में विलीन हो जाता है जैसे जल जल में समाकर एक रूप हो जाता है ॥२॥

जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥

जिन जीवों ने प्रभु के हरि नाम का स्मरण नहीं किया है वे अपने अवगुणों के कारण (आवागमन के चक्र में) आते हैं और जाते हैं।

जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥

जिस पुरुष का सद्गुरु से मिलन नहीं होता वह संसार सागर में स्वयं जलता है और दूसरों को भी जलाता है।

इहु माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥३॥

यह मनुष्य जीवन माणिक्य की भांति अमूल्य है इस प्रकार (बिना सद्गुरु के शब्द उपदेश के) कौड़ी के बदले में चला जाता है ॥३॥

जिंना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥

जिन्हें सद्गुरु के शब्द उपदेश में रस मिलता है वे ही संपूर्ण विश्व में चतुर पुरुष है।

गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥

सद्गुरु से मिलकर ही जिज्ञासु संसार सागर से पार हो जाता है और इस लोक में प्रतिष्ठा होती है और प्रभु के दरबार में कबूल किया जाता है।

नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥४॥२२॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) उनके ही मुख उज्जवल होते हैं जिनके हृदय में गुरु शब्द के बाजे बजते हैं और प्रभु नाम की ध्वनि लहरियाँ उत्पन्न होती है ॥४॥२२॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥
भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥
हरिजसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥रहाउ॥
जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥
खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥
फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥२॥
खोटे पोतै ना पवहि तिन हरिगुर दरसु न होइ ॥
खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥
खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥३॥
नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥
रामनाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥
हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥४॥२३॥

□

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥

हे सांसारिक पदार्थों के व्यापार में लगे हुए व्यापारियो ! प्रभु नाम का व्यापार करो और (अपने असली) नाम के सौदे को संभालो ।

तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥

ऐसी वस्तु का व्यापार करना चाहिए जो अन्त तक साथ निभे ।

अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥

आगे (परलोक में बैठा हुआ) साहूकार बहुत ही चतुर है और वह अपनी दी हुई वस्तु की संभाल करेगा ।

भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥

हे भाई ! एकाग्रचित्त होकर राम का नाम कहो (राम नाम का जाप करो) ।

हरिजसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥रहाउ॥

प्रभु के यश गायन का सौदा लेकर यहाँ से चलो जिससे प्रभु साहूकार तुम्हारी ओर प्यार से देखे और तुम्हें विश्वास में ले ले ॥१॥रहाउ॥

जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥

जिनके पास सच्चे प्रभु के नाम की राशि पूँजी नहीं है उन्हें आत्मिक सुख कैसे हो सकता है ।

खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ।।

खोटी वस्तुओं का व्यापार करने से मन और तन खोटा हो जाता है ।

फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ।।२।।

फंदे में फंसे हुए हिरण की भांति अनेकों दुखों को भोगना पड़ता है और नित्य प्रति रोना पड़ता है ।।१।।

खोटे पोतै ना पवहि तिन हरिगुर दरसु न होइ ।।

जिस प्रकार खोटे सिक्के खजाने में नहीं डाले जाते उसी प्रकार उन (खोटे व्यापार करने वाले) लोगों को हरि प्रभु और गुरु के दर्शन नहीं होते ।

खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ।।

खोटे (बुरे कर्म करने वाले) लोगों को न तो ज्ञान होता है न ही उनकी इज्जत होती है और न ही खोटे मनुष्य के साथ किसी का हृदय भीगता है (सामंजस्य होता है) ।

खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ।।३।।

खोटे मनुष्य सदा खोटे कर्मों की ही कमाई करते हैं और आने जाने में (जन्म मरण के चक्र में) अपनी प्रतिष्ठा खो बैठते हैं ।।३।।

नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ।।

श्री गुरुदेव नानक जी कहते हैं, हे भाई ! अपने मन को समझाओ कि गुरु के शब्द उपदेश को ग्रहण कर प्रभु की सराहना करे ।

रामनाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ।।

प्रभु के राम नाम के रंग में रंगे जाने वाले जीवों पर (जन्म मरण का) बोझ नहीं होता और उन्हें किसी प्रकार का भ्रम (संशय) नहीं होता ।

हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ।।४।।२३।।

हरि नाम को जपने का सर्वाधिक लाभ यह होता है कि प्रभु मन में आकर बस जाता है जिससे जीव निर्भय हो जाता है, यमों के भय से मुक्त हो जाता है ।।४।।२३।।

□

सिरीरागु महला १ घरु २ ।।

धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ।।

पवणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुंमणहार ।।१।।

रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउहुला ।।

दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ।।१।।रहाउ।।

सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥
हंभी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥२॥
की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ ॥
लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥३॥
नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥
गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥४॥२४॥

□

धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥

हे भाई ! यह धन और यौवन (जिसे देख तुम फूले नहीं समाते हो) फूल की भांति शीघ्र ही मुरझा (नष्ट हो) जाने वाला है और यह (न टिकने वाले) चार दिन के मेहमान की भाँति है।

पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुंमणहार ॥१॥

जिस प्रकार चौपत्ती (अथवा कमल) के पत्ते जल के अभाव में सूख कर ढलकने लगते हैं (नष्ट हो जाते हैं) उसी प्रकार धन और यौवन भी शीघ्र नष्ट हो जाता है ॥१॥

रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउहुला ॥

हे प्यारे ! जब तक यौवन का नव उल्लास है तब तक प्रभु प्रेम के रस का आस्वादन कर ले।

दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥१॥रहाउ॥

ये जवानी के दिन थोड़े ही हैं फिर तो वृद्धावस्था की थकान हो जायेगी और फिर यह शरीर रूपी चोला भी पुराना पड़ जायेगा (पता नहीं कब जर्जरावस्था में नाश को प्राप्त हो जाय) ॥१॥ रहाउ ॥

सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥

मेरे वे प्यारे मित्र जिन्होंने खूब रंगरलियां मनाई अब अन्त में श्मशान में जाकर सो गये हैं।

हंभी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥

(अब तक) दुबिधा में रहने वाली मैं भी वही श्मशान में जा रही हूँ और दुखपूर्ण धीमे स्वर में रो रही हूँ ॥२॥

की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ ॥

हे सुन्दर कन्या ! क्या तू अपने कानों से यह समाचार नहीं सुनती ? ॥

लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥३॥

कि सभी जीव स्त्रियों को अन्ततः ससुराल (परलोक) जाना ही है और यह पीहर (इह लोक) सदा के लिए नहीं होता ॥३॥

नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ।।

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं कि जो कन्या) पीहर घर में सोई रहती है (प्रभु पति से मिलन का उपक्रम नहीं करती) समझो कि उसकी प्रवृत्तियों में सेंध लग गई है।

गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ।।४।।२४।।

(और ऐसी जीव स्त्री) शुभ गुणों की गठरी को खोकर अवगुणों की गठरी बाँध कर प्रियतम प्रभु के घर परलोक में चली जा रही है ।।४।।२४।।

□

सिरीरागु महला १ घरु दूजा २ ।।

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ।।
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ।।१।।
रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ।।१।।रहाउ।।
आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ।।
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ।।२।।
आपे बहुबिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ।।
नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ।।३।।
प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ।।
कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ।।४।।२५।।

□

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ।।

प्रभु स्वयं ही रसिक है स्वयं ही रस है और स्वयं ही रस भोगी भी है।

आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ।।१।।

प्रभु आप ही स्त्री है और आप ही शैय्या है तथा आप ही शैय्या पर रमण करने वाला पति है।

रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ।।१।।रहाउ।।

प्यार के रंग में रंगा हुआ मेरा स्वामी परिपूर्ण होकर सर्वत्र रमण कर रहा है ।।१।।रहाउ।।

आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ।।

प्रभु आप ही मछुआरा है आप ही मछली है आप ही जल है तथा आप ही जाल है।

आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ।।२।।

प्रभु आप ही जाल को भारी करने वाला लोहे का मणका (मोती) है तथा आप ही मछलो के पेट में छिपा हुआ लाल (मणि) है ।।२।।

आपे बहुबिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ।।३।।

हे सखि ! वह मेरा प्यारा लाल स्वयं ही अनेक विधियों सहित यह सारा कौतुक कर रहा है।

नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ।।३।।

हे प्रभु ! सौभाग्यवान जिज्ञासु जीवात्माएँ नित्य प्रति आपके साथ रमण करती हैं (कृपा करके) हमारा हाल भी देख लो (तुम्हारे विछोह से कितने दुखी हो रहे हैं)।

प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ।।

नानक दण्डवत प्रणाम सहित प्रार्थना करता है, हे प्रभु ! तुम ही सरोवर हो तुम ही हंस हो।

कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ।।४।।२५।।

हे प्रभु ! तुम आप ही कमल पुष्प। हो आप ही कुमुदिनी हो और जिसे देखकर (कमल) खिलता है वह (सूर्य भी आप ही हो और जिसे देखकर कुमुदिनी प्रसन्न हो जाती है वह चन्द्रमा भी) आप ही हो ।।४।।२५।।

□

सिरीरागु महला १ घरु ३ ।।

इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ।।

मनु किरसाणु हरि रिदै जंमाइ लै इउ पावसि पद निरबाणी ।।१।।

काहे गरबसि मूड़े माइआ ।।

पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइआ ।।रहाउ।।

बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ धिआई ।।

जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ।।२।।

बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ।।

दस अठार मै अपरंपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ।।३।।२६।।

□

पूर्वाभास : श्री गुरुदेव इस शब्द में खेती के रूपक से नाम भक्ति का उपदेश दे रहे हैं।

इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ।।

इस शरीर को धरती और कर्मों को बीज बनाओ और सारंगपाणि प्रभु के नाम के जल से सिंचन करो।

मनु किरसाणु हरि रिदै जंमाइ लै इउ पावसि पद निरबाणी ॥१॥

मन रूपी किसान यदि अपने हृदय में हरि के नाम को उगा ले तब इस प्रकार से वह निर्वाण पद (दुख सुख के विकारों से मुक्ति की अवस्था) को प्राप्त कर सकता है ॥१॥

काहे गरबसि मूड़े माइआ ॥

हे मूर्ख माया के कारण तू अहंकार क्यों करता है ?

पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइआ ॥रहाउ॥

पिता, पुत्र, स्त्री, माता सभी (सम्बन्धी) अन्त के समय तेरे साथी नहीं होंगे ॥रहाउ॥

बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ धिआई ॥

विषय विकार की दुष्ट भावना की अपने मन में से खेती में उग आए फालतू घास की तरह गुड़ाई कर दो (निकाल दो) और इन (कामादि विकारों) का त्याग कर आत्मस्वरूप (अन्तर्मुखी) होकर प्रभु का ध्यान करो ।

जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्त्रमाई ॥२॥

जप तप और संयम जब प्रभु नाम की खेती के रखवाले होंगे तो हृदय रूपी कमल खिलेगा और उसमें से (आत्मिक आनन्द का) मधु स्राव होगा (शहद टपकेगा) ॥२॥

बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ॥

यदि मनुष्य बीस और सात (सत्ताईस) नक्षत्रों में प्रतिपल प्रभु के नाम का संग्रह करे और जीवन की तीनों अवस्थाओं (बचपन, यौवन और वृद्धावस्था) नित्य प्रति काल (मृत्यु) को याद रखे ।

दस अठार मै अपरंपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥४॥२६॥

(चार वेदों, छः शास्त्रों) दस और अठारह (पुराणों) में उसी अपरंपर प्रभु को पहचाने तो इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि वह एक प्रभु उसे संसार सागर से पार उतार देता है ॥३॥२६॥

□

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥
होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥१॥

मतु जाण सहि गली पाइआ ॥
माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥१॥रहाउ॥

ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नहीं मूलि पाई ॥
भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥२॥
आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥
खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥३॥
तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥
नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कितकू संजिआही ॥४॥२७॥

पूर्वाभास : पिछले शब्द में खेती के बांधे गए रूपक को ही विस्तार से दिया जा रहा है।

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥

निर्मल कर्मों द्वारा हृदय रूपी धरती को शुद्ध करो, गुरू के शब्द उपदेश का उसमें बीज डालो, सत्य स्वरूप प्रभु के नाम का जल लेकर नित्य प्रति उसे पानी दो (सींचो)।

होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥३॥

ऐसा किसान होकर धर्म को उगाओ और केवल इसी प्रकार हे मूर्ख ! जान सकोगे कि बहिश्त और दोज़ख (स्वर्ग और नरक) क्या है ॥१॥

मतु जाण सहि गली पाइआ ॥

यह मत समझो कि प्रभु को केवल बातों से पाया जाता है।

माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥२॥रहाउ॥

धन दौलत के गर्व में और रूप की प्रशंसा करके तुमने इस प्रकार जन्म गँवा लिया है ॥१॥रहाउ॥

ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥

तुम्हारा शरीर ऐब के कीचड़ में (सना हुआ) है और यह मन मेंढ़क के समान (मूर्ख) है जिसने (अन्तःकरण रूपी सरोवर में खिलने वाले ज्ञान के) कमल की किंचित मात्र भी संभाल नहीं की है।

भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥२॥

भ्रमर रूपी गुरू प्रतिदिन (मीठी) बोली में उपदेश देता है लेकिन यह (मेंढ़क रूपी मन) क्यों समझें (कैसे समझे) ? जब इसे सूझ ही नहीं है (समझ ही नहीं है) ॥२॥

आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥

माया के रंग में रंगे हुए इस मन के लिए कुछ भी कहना और सुनना हवा के शोर के समान व्यर्थ है।

खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥३॥

जिन्होंने मनवाणी को एकाग्र करके प्रभु का ध्यान किया है, पति परमात्मा की कृपा दृष्टि उनपर ही होती है और प्रभु के दिल को वे लोग ही पसन्द होते हैं ॥३॥

तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥

(पूरे) तीस (गिन) करके (तुमने रोजे) रखे हैं और पूरी पांच बार नमाज़ पढ़ी है परन्तु कहीं ऐसा न हो कि (तुम्हारे साथ रहने वाला शैतान नाम का साथी (तुम्हारे सारे परिश्रम को) काट जाए (निष्फल कर जाए)।

नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कितकू संजिआही ॥४॥२७॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी कहते हैं कि हे भाई! तुम्हें कठिन राह पर चलना है, राह खर्च के लिए प्रभु नाम रूपी कितना माल धन संचय किया है? ॥४॥२७॥

□

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥
आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारो ॥१॥

मरणा मुला मरणा ॥
भी करतारहु डरणा ॥१॥रहाउ॥

ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥
जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥२॥

सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥
है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥

पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥
नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥४॥२८॥

□

पूर्वाभास : काज़ी मुल्ला सब वह प्रभु ही है उसी की शक्ति सर्वोपरि है। मौलवी के प्रति गुरुदेव उपदेश कर रहे हैं।

सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥

वह प्रभु ही है जिसने सारे जगत को प्रफुल्लित किया है और सारे संसार को हरा भरा किया है।

आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारो ॥१॥

वह सृजनकर्त्ता धन्य है जिसने पानी और मिट्टी को बांध कर रख दिया है ।।१।।

मरणा मुला मरणा ।। भी करतारहु डरणा ।।२।।रहाउ।।

मरना है मुल्लाजी सबको मरना है तभी (इसीलिए सबको) कर्त्ता प्रभु से डरना चाहिए ।।१।।रहाउ।।

ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ।।

तुम तभी मुल्ला हो और तुम तभी काज़ी हो यदि तुम्हें खुदा के नाम की पूरी जानकारी हो ।

जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ।।२।।

यदि कोई बहुत पढ़ा हुआ (विद्वान) हो, क्या यहां कोई रहता है ? (यहां स्थायी रूप से कोई नहीं रहता) तली में छेद वाले बर्तन को जल से भरा नहीं जा सकता ।।२।।

सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ।।

वही काजी है जिसने अपनापन (अहं) त्याग दिया है और एक प्रभु के नाम को ही अपना जीवन आधार बनाया है ।

है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ।।३।।

वह सृजनकर्त्ता प्रभु ही सनातन सत्य है उसी का अस्तित्व वर्तमान में है, अतीत में था और भविष्य में होगा, जिसका न कभी विनाश होता है और जिसका न कभी विनाश होगा ।।३।।

पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ।।

भले ही कोई पाँच समय नमाज़ अदा करता है धर्मग्रन्थ और कुरान को पढ़ता है ।

नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ।।४।।२८।।

लेकिन (श्री गुरुदेव) नानक जी कहते हैं जब कब्र का बुलावा आएगा तो खाना-पीना (पढ़ना-लिखना) सब यहीं रह जाएगा ।।४।।२८।।

□

सिरीरागु महला १ घरु ४ ।।

एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ।।
भलके भउकहि सदा बइआलि ।।
कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ।।
धाणक रूपि रहा करतार ।।१।।
मै पति की पंदि न करणी की कार ।।

हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥
तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥
मै एहा आस एहो आधारु ॥१॥रहाउ॥
मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥
परघरु जोही नीच सनाति ॥
कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥
धाणक रूपि रहा करतार ॥२॥
फाही सुरति मलूकी वेसु ॥
हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥
खरा सिआणा बहुता भारु ॥
धाणक रूपि रहा करतार ॥३॥
मै कीता न जाता हरामखोरु ॥
हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥
नानकु नीचु कहै बीचारु ॥
धाणक रूपि रहा करतार ॥४॥२९॥

□

पूर्वाभास : श्री गुरू नानक देव जी महाराज संसार के लोगों की अवस्था धनुक के रूपक द्वारा स्पष्ट कर रहे हैं।

एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ भलके भउकहि सदा बइआलि ॥

हे प्रभु ! (जरा इस जीव की दशा तो देखो) एक (लोभ का) कुत्ता और दो (आशा और तृष्णा की) कुत्तियां सदैव साथ रहती हैं। प्रातःकाल (जन्म काल) से लेकर संध्या काल (मृत्यु) तक यह सदैव भौंकते (रोते बिलखते) ही रहते हैं ।

कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु । धाणक रूपि रहा करतार ॥१॥

इसके पास झूठ का छुरा है जिससे लोगों को ठग कर यह मुर्दा खाता (पराया हक मारता) है । हे मेरे कर्त्ता प्रभु ! यह जीव धनुक (जंगली) के रूप में रहता है ॥१॥

मै पति की पंदि न करणी की कार ॥

मैं न तो सम्मानित होने योग्य मार्ग पर चला हूं और न ही करने योग्य (श्रेष्ठ) कार्य किए हैं ।

हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥

अहंकार ने मेरा रूप ही बिगाड़ दिया और (यह रूप) अत्यन्त भयंकर हो रहा है ।

तेरा एकु नामु तारे संसारु । मै एहा आस एहो आधारु ॥१॥रहाउ॥

हे प्रभु ! एक मात्र तुम्हारा नाम ही संसार को तारने वाला है तुम्हारा नाम ही मेरी आशा है और तुम्हारा नाम ही मेरे जीवन का सहारा है ॥१॥रहाउ॥

मुखि निंदा आखा दिनु राति । परघरु जोही नीच सनाति ॥

मैं मुख से दिन-रात निंदा करता हूं । मैं नीच और छोटे विचारों का हूं और पराए घरों में झांकता रहता हूं ।

कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल । धाणक रूपि रहा करतार ॥२॥

काम, वासना और प्रचंड क्रोध मेरे शरीर में बसते हैं, हे मेरे कर्त्ता प्रभु मेरा धनुकों (जंगली) जैसा रूप हो रहा है ॥२॥

फाही सुरति मलूकी वेसु । हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥

मेरा वेश बाहर से अति सुन्दर है परन्तु ध्यान इस बात में रहता है कि कैसे दूसरों को फंदे में फंसाऊं । मैं ठगने वाला हूं और मैंने कई देशों के लोगों को ठगा है ।

खरा सिआणा बहुता भारु । धाणक रूपि रहा करतार ॥३॥

स्वयं को अच्छा चतुर समझता हूं परन्तु पापों का बोझ बढ़ता जाता है। हे मेरे कर्त्ता प्रभु ! मेरा रूप धनुकों (जंगलो) जैसा हो रहा है ॥३॥

मैं कीता न जाता हरामखोरु । हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥

मैंने कोई उत्तम कार्य नहीं किया है और न ही तुम्हारे उपकारों को जाना है, मैं बहुत हरामखोर हूं । मैं दुष्ट हूं और मैं चोर हूं अहंकार से ग्रसित मैं तुम्हें कौन सा मुंह दिखाऊंगा ।

नानकु नीचु कहै बीचारु । धाणक रूपि रहा करतार ॥४॥२९॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी कथन करते हैं कि यह निकृष्ट जीव अब चिन्तातुर हो रहा है (और सोचता है कि उसका क्या होगा क्योंकि) हे कर्त्ता प्रभु (उसका) रूप तो धनुकों जैसा हो रहा है ॥४॥२९॥

□

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

एका सुरति जेते है जीअ ॥
सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥
जेही सुरति तेहा तिन राहु ॥
लेखा इको आवहु जाहु ॥१॥
काहे जीअ करहि चतुराई ॥
लेवै देवै ढिल न पाई ॥१॥रहाउ॥

तेरे जीअ जीआ का तोहि ॥
कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥
जे तू साहिब आवहि रोहि ॥
तू ओना का तेरे ओहि ॥२॥
असी बोल विगाड़ विगाड़ह बोल ॥
तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥
जह करणी तह पूरी मति ॥
करणी बाझहु घटे घटि ॥३॥
प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ ॥
आपु पछाणै बूझै सोइ ॥
गुर परसादि करे बीचारु ॥
सो गिआनी दरगह परवाणु ॥४॥३०॥

□

पूर्वाभास : समस्त जीवों के कर्त्ता प्रभु ने ही जीवों में ज्ञान बुद्धि एवं सूझ-बूझ को भरा है असल ज्ञानी वही है जो इस तथ्य को समझता है ।

एका सुरति जेते है जीअ ॥

जितने भी जीव हैं सब के अन्दर एक ही प्रभु द्वारा दी गई चेतना है ।

सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥

चेतना के बिना कोई भी जीव नहीं बनाया गया है ।

जेही सुरति तेहा तिन राहु ॥

जैसी किसी की चेतना है वैसा ही उसका जीवन मार्ग है ।

लेखा इको आवहु जाहु ॥१॥

उस एक प्रभु की दी हुई चेतना के हिसाब के अनुसार ही जीव आता (जन्मता) है और जाता (मरता) है ॥१॥

काहे जीअ करहि चतुराई । लेवै देवै ढिल न पाई ॥१॥रहाउ॥

हे जीव ! तू चालाकी क्यों करता है । प्रभु लेने और देने में जरा भी देर नहीं करता ॥१॥रहाउ॥

तेरे जीअ जीआ का तोहि । कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥

हे प्रभु ! यह समस्त जीव तुम्हारे हैं और तुम सभी जीवों के (स्वामी) हो । हे स्वामी आप किसलिए जीवों पर क्रोधित हो रहे हैं ।

जे तू साहिब आवहि रोहि । त् ओना का तेरे ओहि ॥२॥

हे साहिब प्रभु ! यदि तुम गुस्से में आते भी हो तब भी तुम उनके स्वामी हो और वे जीव तुम्हारे (दास) हैं ॥२॥

असी बोल विगाड़ विगाड़ह बोल ॥

हे प्रभु ! हम जीव बड़बोले हैं और बिगड़े हुए बोल बोल कर काम को बिगाड़ लेते हैं ।

तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥

परन्तु तुम हमारे बोलों को दया दृष्टि की तुला पर तोलते हो ।

जह करणी तह पूरी मति । करणी बाझहु घटे घटि ॥३॥

जिस जीव की करनी (उत्तम) हो जाती है उसकी बुद्धि में पर्णता (यथार्थ ज्ञान) हो जाती है । शुभ कर्म (करनी) के बिना बुद्धि में घाटा ही घाटा है ॥३॥

प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ ॥

नानक जी की विनम्र प्रार्थना है कि असली ज्ञानवान मनुष्य कैसा होता है ? (वह होता है जो—

आपु पछाणै बूझै सोइ ॥

अपने आपको (स्वस्वरूप को) पहचानता है और प्रभु को अपने आप से अनन्य समझता है ।

गुर परसादि करे बीचारु । सो गिआनी दरगह परवाणु ॥४॥३०॥

सद्‌गुरु की कृपा से जो प्रभु के गुणों का विचार करता है वही ज्ञानवान जीव प्रभु के दरबार में कबूल किया जाता है ॥४॥३०॥

□

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥
जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥१॥
न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥
जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥१॥रहाउ॥
तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥
जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥
तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥
तेरै कंमि न तेरै नाइ ॥२॥
जेता देहि तेता हउ खाउ ॥
बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥
नानकु एक कहै अरदासि ॥
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥

आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनो ॥
आपे वेखै सुणै आपे ही कुदरति करे जहानो ॥
जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानो ॥४॥३१॥

□

तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥

हे मेरे साहिब ! तू सागर के समान है सब कुछ जानने वाला है और देखने वाला है, मैं मछली के समान अल्पज्ञ हूं, तुम्हारा अन्त कैसे प्राप्त कर सकती हूँ ।

जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥१॥

मेरी दृष्टि जहाँ-जहाँ जाती है वहीं-वहीं मुझे तुम ही तुम दिखाई देते हो तुम से निकल कर (बिछुड़ कर) मैं तड़प तड़प कर मर जाती हूं ॥१॥

न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥ जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥१॥रहाउ॥

न मैं मछुआरे को जानती हूं और न जाल को ही (न मैं यमको जानती हूं न यमदूत के मृत्यु जाल को) परन्तु जब भी मुझे इनके द्वारा दुख प्राप्त होता है तो सहायता के लिए मैं तुम्हें ही स्मरण करती हूं ॥१॥ रहाउ ॥

तू भरपूरि जानिआ मैं दूरि ॥ जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥

हे प्रभु! आप सर्वत्र व्यापक हो मैंने ही आपको दूर समझा है मैं जो कुछ भी करती हूं वह तुम्हारे से छिपा नहीं है तुम्हारे हुजूर में ही होता है ।

तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥ तेरै कंमि न तेरै नाइ ॥२॥

हे स्वामी तुम मेरे सभी (बुरे कर्मों) को देखते हो पर मैं अपनी बुराइयों से इन्कार कर जाती हूं । न मैं तुम्हारे किसी काम आ रही हूं और न ही तुम्हारा नाम स्मरण करती हूं ॥२॥

जेता देहि तेता हउ खाउ ॥ बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ।

जितना भोग्य पदार्थ आप मुझे देते हो मैं उतना ही खा लेती हूँ । आप के द्वार के बिना मेरे पास अन्य कोई आश्रय स्थल नहीं, है मैं सहारे के लिए और किसके द्वार पर जाऊँ ।

नानकु एक कहै अरदासि । जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥

हे स्वामी ! नानक तो बस एक ही बात कहते हुए प्रार्थना करता है कि यह जीव और यह शरीर सब आपका ही है और इसे आपके (चरणों पर) समर्पित करता हूँ (स्वीकार कर कृतार्थ करो) ॥३॥

आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनो ।

हे प्रभु ! आप ही निकट हैं, आप ही दूर हैं और आप ही दोनों के मध्य में है ।

आपे वेखै सुणै आपे ही क़ुदरति करे जहानो ।

आप ही सब कुछ देखते हैं और आप ही सब कुछ सुनते हैं और आप ही अपनी शक्ति से सारी सृष्टि की रचना करते हैं ।

जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानो ॥४॥३१॥

उस प्रभु को जो कुछ अच्छा लगता (वह वही करता है) वही उसका हुकम है नानक को (उसका वही हुकम) कबूल है ॥४॥३१॥

□

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

कीता कहा करे मनि मानु । देवणहारे कै हथि दानु ॥
भावै देइ न देई सोइ । कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥१॥
आपे सचु भावै तिसु सचु ।
अंधा कचा कचु निकचु ॥१॥ रहाउ ॥
जा के रुख बिरख आराउ । जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥
फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ।
आपि बीजि आपे ही खाइ ॥२॥
कची कंध कचा विचि राजु ।
मति अलूणी फिका सादु ॥
नानक आणे आवै रासि ।
विणु नावै नाही साबासि ॥३॥३२॥

□

कीता कहा करे मनि मानु । देवणहारे कै हथि दानु ।

प्रभु द्वारा उत्पन्न किया गया जीव अपने मन में अहंकार किसलिए करता है ? देने का सामर्थ्य उस एक मात्र देने वाले के हाथ में है ।

भावै देइ न देई सोइ ॥ कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥१॥

वही प्रभु चाहे दें या न दें । उत्पन्न किये गए जीव के कहने से क्या होगा ? ॥१॥

आपे सचु भावै तिसु सचु । अंधा कचा कचु निकचु ॥१॥ रहाउ॥

वह प्रभु सत्यस्वरूप है और उसे सत्य कर्म ही आते हैं । अज्ञान के कारण

अन्धा जीव अक्ल का कच्चा है और ओछे से और ओछा होता चला जाता है ॥१॥ रहाउ ॥

जा के रुख बिरख आराउ ॥ जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥

जिसके द्वारा बनाए गए ये (बिना फलों के) वृक्ष और (फलदार) पेड़ है उसी ने इन्हें सजावट भी दी है। उसके द्वारा बनाई गई जैसी जैसी धातु है वैसा ही वैसा उस वस्तु का नाम भी दिया गया है।

फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खाइ ॥२॥

इसी तरह जीव जैसे जैसे (प्रेम भक्ति और श्रद्धा के) फूल प्रभु को अर्पित करता है वैसा ही फल उसके कर्मों में लिखा जाता है और वह उसे प्राप्त कर लेता है। जीव आप ही बीजता है और आप ही उसका फल खाता है ॥२॥

कची कंध कचा विचि राजु ॥ मति अलूणी फिका सादु ॥

मनुष्य के जीवन की दीवारें कच्ची हैं और अपनी कल्पना के अनुसार सुखों का जो राज्य उसने उसमें बसा रखा है वह भी कच्चा है। उसकी बुद्धि (प्रभु प्रेम रूपी) नमक से हीन है और फीके (सारहीन पदार्थों के सुख भोग का) उसे स्वाद पड़ गया है।

नानक आणे आवै रासि ॥ विणु नावै नाही साबासि ॥३॥३२॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु यदि उसकी बुद्धि को ठिकाने ले आए तभी वह अपनी असली पूंजी (नाम स्मरण) के पास आ सकता है। बिना नाम आराधना के प्रभु द्वारा जीव को शाबासी नहीं दी जाती ॥३॥३२॥

□

सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥

अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ।
जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टलपलै ॥१॥
बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥१॥रहाउ॥
पोथी पुराण कमाईऐ ।
भउ वटी इतु तनि पाईऐ । सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥२॥
इहु तेलु दीवा इउ जलै । करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥१॥ रहाउ॥
इतु तनि लागै बाणीआ । सुखु होवै सेव कमाणीआ ।
सभ दुनिआ आवण जाणीआ ॥३॥
विचि दुनीआ सेव कमाईऐ । ता दरगह बैसणु पाईऐ ।

कहु नानक बाहु लुडाईऐ ॥४॥३३॥

□

पूर्वाभास: श्री गुरुदेव जी माया का स्वरूप निरूपण कर रहे हैं।

अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ।

माया अछल है, छलने से छली नहीं जाती (माया दूसरों को छलती है लेकिन स्वयं उसे छला नहीं जा सकता) न ही कटार आदि शस्त्रों द्वारा उसे घायल किया जा सकता है।

जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टलपलै ॥१॥

माया को जिस प्रकार प्रभु स्वामी रखता है वैसे ही वह रहती है (प्रभु की इच्छानुसार चलती है, उसमें अपनी कोई शक्ति नहीं है) परन्तु यह जीव उसके प्रति लोभित हो जाता है और प्रभु के प्रति उसका मन पलट जाता है (माया का आकर्षण जीव को प्रभु से उदासीन कर देता है) ॥१॥

बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥१॥ रहाउ ॥

प्रभु नाम स्मरण का तेल डाले बिना आध्यात्मिक ज्ञान का दीपक कैसे जल सकता है ॥१॥रहाउ॥

पोथी पुराण कमाईऐ ॥

(दीपक इस प्रकार जल सकता है) धार्मिक ग्रन्थों और पुराणों की कमाई (अध्ययन) रूपी तेल डाला जाए।

भउ वटी इतु तनि पाईऐ । सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥२॥

इस शरीर (रूपी दीपक) में प्रभु के भय की बत्ती रखो। सत्यस्वरूप प्रभु को जानने की जिज्ञासा रूपी अग्नि लाकर इस बत्ती को जलाओ ॥२॥

इहु तेलु दीवा इउ जलै । करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥

जब इस प्रकार (अध्ययन का) तेल दीपक में डाला जाएगा तब ऐसे आध्यात्मिक ज्ञान का दीपक जलेगा। दीपक को प्रकाशित करें तभी साहिब प्रभु से मिलन होगा ॥१॥रहाउ॥

इतु तनि लागै बाणिआ । सुखु होवै सेव कमाणीआ ।

जब जिज्ञासु के (सूक्ष्म) शरीर पर गुरू के शब्द (रूपी बाण) लगते हैं, तभी उसे प्रभु और गुरू की सेवा करते हुए आत्मिक सुख होता है।

सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥३॥

सारा ही संसार आने जाने वाला है ॥३॥

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ । ता दरगह बैसणु पाईऐ ।

संसार में रहकर प्रभु और प्रभु द्वारा बनाए गए जीवों की सेवा करने

से ही प्रभु के दरबार में बैठने को स्थान प्राप्त होता है ।

कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥४॥३३॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कहते हैं कि) (सेवारत जीव ही इस संसार में शान से) बाहें फैलाकर चलता है ॥४॥३३॥

□

श्री गुरू नानक देव जी द्वारा श्री राग में रचित ३३ शब्द यहां तक है । आगे के ३१ शब्द श्री गुरु अमरदास जी (महला ३) द्वारा रचित है ।

□

१ओं सतिगुर प्रसादि

सिरीरागु महला ३ घरु १

हउ सतिगुरु सेवी आपणा इकमनि इकचिति भाइ ॥
सतिगुरु मनकामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥
मनचिंदिआ वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥
नाउ धिआईऐ नाउ मंगीऐ नामे सहजि समाइ ॥१॥
मन मेरे हरिरसु चाखु तिख जाइ ॥
जिनी गुरमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ॥१॥रहाउ॥
जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥
अंतरि हरिरसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥
हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥
मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि मानु ॥२॥
सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ॥
हउमै ममता मारि कै हरि राखिआ उरधारि ॥
हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ॥
सेई सुखीए चहु जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥३॥
गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ॥
हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥
जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ॥
नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु ॥४॥१॥३४॥

□

पूर्वाभास—श्रीराग में रचित श्रीगुरु अमरदास जी का यह पहला शब्द है । इस वाणी के माध्यम से श्री गुरुदेव गुरुभक्ति का महत्व प्रतिपादित कर रहे हैं ।

हउ सतिगुरु सेवी आपणा इकमनि इकचिति भाइ ॥

मैं अपने सद्गुरु की एकाग्र मन से सेवा करता हूं और चित्त से एकनिष्ठ प्रेम करता हूं।

सतिगुरु मन कामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥

सद्गुरु मन की कामनाओं को पूर्ण करने वाला तीर्थ है परन्तु यह समझ उसे ही आती है जिसे गुरु आप (कृपा करके) सूझ देता है।

मन चिंदिआ वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥

सद्गुरु की सेवा करने से मनोवांछित वरदानों की प्राप्ति होती है और जीव जो इच्छा करता है वही फल प्राप्त करता है।

नाउ धिआईऐ नाउ मंगीऐ नामे सहजि समाइ ॥१॥

प्रभु नाम का ही ध्यान करना चाहिए प्रभु से नाम प्राप्ति का ही (दान) मांगना चाहिए क्योंकि नाम आराधना करने से ही स्थिर अवस्था में समाया जाता है ॥१॥

मन मेरे हरिरसु चाखु तिख जाइ ॥

हे मेरे मन हरि प्रभु के नाम रस को चखो इस रस को चखने से सारी तृष्णा समाप्त हो जायेगी ॥

जिनी गुरमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ॥१॥रहाउ॥

जिन जिज्ञासुओं ने गुरु के सम्मुख होकर नामरस को चखा है वे स्थिर अवस्था को प्राप्त कर प्रभु में समा रहे हैं ॥१॥ रहाउ ॥

जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥

जिन्होंने सद्गुरु की सेवा की है उन्होंने नाम का खजाना प्राप्त कर लिया है।

अंतरि हरि रसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥

उनके अन्तःकरण में हरि नाम का रस व्याप्त हो रहा है जिससे उनके मन से अहंकार का नाश हो गया है ॥

हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥

उनका हृदय रूपी कमल प्रफुल्लित हो गया है और स्थिर अवस्था को प्राप्त करने से उनका पूरा ध्यान प्रभु के चरणों में लग गया है ॥

मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि मानु ॥२॥

उनका मन पवित्र हो रहा है और उसमें हरि प्रभु व्यापत हो रहा है और उन्हें प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त हो रहा है ॥२॥

सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ॥

ऐसे लोग इस संसार में बिरले हैं जो अपने सद्गुरु की सेवा करते हैं।

हउमै ममता मारि कै हरि राखिआ उरधारि ॥

जिन जीवों ने अहंकार (हउमै) और सांसारिक पदार्थों की लालसा को मार कर हृदय में हरि प्रभु को धारण कर लिया है।

हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ॥

(और) जिन्हें हरि नाम से ही प्यार (लगा हुआ) है मैं उन जीवों के बलिहार जाता हूं।

सेई सुखीए चहु जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥३॥

चारों युगों में वे ही सुखी हैं जिनके पास प्रभु नाम का कभी भी समाप्त न होने वाला अपार खजाना है ॥३॥

गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ॥

सद्गुरु से मिलन होने पर (माया का) मोह और (तृष्णा की) प्यास समाप्त हो जाती है और प्रभु नाम की प्राप्ति होती है।

हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥

हरि प्रभु के साथ मन रच जाने से गृहस्थी में रहते हुए भी (गृहस्थी से) उदासीन (निरासक्त) रहते हैं।

जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ॥

जिन्हें हरि नाम का स्वाद आता है मैं उन पर बलिहार जाता हूं।

नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु ॥४॥१॥३४॥

(श्रीगुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुणों के भंडार सत्य-स्वरूप प्रभु का नाम गुरु की कृपा दृष्टि होने पर ही प्राप्त किया जाता है ॥४॥१॥३४॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥

हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥१॥

मन रे गृह ही माहि उदासु ॥

सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥१॥रहाउ॥

गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ॥

हरि का नामु धिआईऐ सतिसंगति मेलि मिलाइ ॥२॥

जे लख इसतरीआ भोग करहि नवखंड राजु कमाहि ॥

बिनु सतगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ॥३॥

हरि हारु कंठि जिनी पहिरिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥

तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना तिलु न तमाइ ॥४॥

जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ।।

जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ ।।५।।२।।३५।।

□

बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ।

जो व्यक्ति दूसरों के मन को भ्रम में डालने के लिए अनेक प्रकार के (आडम्बरपूर्ण) वेष धारण करते हैं परन्तु हृदय से कपट की कमाई करता है (कपटी होते हैं) ।

हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ।

(वह व्यक्ति) हरि प्रभु के महल (निकटता) प्राप्त नहीं कर सकता और मरने पर मल का कीड़ा बनकर नरक में निवास करता है ।

मन रे गृह ही माहि उदासु ।

हे मन ! घर में ही उदासीन रहो (निरासक्त रहो) ।

सचु संजमु करणी जो करे गुरमुखि होइ परगासु ।।१।।रहाउ।।

गुरु के सम्मुख होकर जिसे ज्ञान का प्रकाश हो जाता है वह सत्य और संयम का आचरण करता है ।।१।। रहाउ।।

गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ।

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा जिसने अपने मन को जीत लिया है वह घर में रहते हुए भी विकारों से मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर लेता है ।

हरि का नामु धिआईऐ सतिसंगति मेलि मिलाइ ।।२।।

सत्संगति के मिलन में स्वयं को मिलाकर हरि नाम का ध्यान करना चाहिए ।।२।।

जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राजु कमाहि ।

यदि लाखों स्त्रियों से संभोग कर लो और पृथ्वी के नवखंडों का भी राज्य सुख भोग लें ।

बिनु सतगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ।।३।।

परन्तु बिना सद्‌गुरु की कृपा के सुख नहीं पाया जाता और बार बार योनियों को प्राप्त होना पड़ता है ।।३।।

हरि हारु कंठि जिनी पहिरिआ गुर चरणी चितु लाइ ।

गुरु के चरणों में मन को लगा कर जिन्होंने हरि प्रभु के नाम का हार कंठ में पहना है ।

तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना तिलु न तमाइ ।।४।।

उनके पीछे ऋद्धियां और सिद्धियां फिरती हैं परन्तु उन्हें तिल मात्र भी सांसारिक पदार्थों की इच्छा नहीं होती ।।४।।

जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ।

जो प्रभु को अच्छा लगता है वही होता है अन्य किसी से कुछ भी नहीं किया जाता ।

जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ ॥५॥२॥३५॥

हे प्रभु ! दास नानक तुम्हारे नाम को लेकर ही जीवित है । हे हरि ! उसके स्वभाव को स्थिरता प्रदान करो ॥५॥२॥३५॥

□

सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥

जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ ॥

गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ॥

अंतरि जिस कै सचु बसै सचे सची सोइ ॥

सचि मिले से न विछुड़हि तिन निजघरि वासा होइ ॥१॥

मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥

सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥१॥रहाउ॥

सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ॥

दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥

सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ॥

जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥२॥

पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि बीचारु ॥

मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥

लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ॥

पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥

सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥

पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ ॥

जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥४॥

मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ॥

लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥

निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा सार ॥

नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोखदुआरु ॥५॥३॥३६॥

□

जिस ही की सरकार है तिस ही का सभु कोइ ।

जिस प्रभु को यह हुकूमत (सृष्टि) है सब कुछ उस प्रभु का ही है ।

गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ।

गुरु के सम्मुख होकर (उसके उपदेशानुसार) कार्य करने से घट (हृदय) में ही सत्य स्वरूप प्रभु प्रकट हो जाता है, प्रभु का साक्षात्कार हो जाता है ।

अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ।

जिसके अन्तःकरण में सत्य प्रभु का निवास हो जाता है उस सत्पुरुष की सच्ची शोभा होती है ।

सचि मिले से न बिछुड़हि तिन निज घरि वासा होइ ॥१॥

सत्य प्रभु से मिलकर वह कभी भी बिछुड़ता नहीं है और उसका निवास निज स्वरूप में होता है ।

मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ।

हे मेरे राम ! हरि प्रभु के बिना मेरा और कोई (सहारा) नहीं है ।

सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥१॥रहाउ॥

सत्यस्वरूप प्रभु से, सद्गुरु के निर्मल पवित्र शब्द उपदेश द्वारा ही मिलन होता है ॥१॥ रहाउ॥

सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ।

गुरु के शब्द उपदेश से जिस जीव का मिलन हो जाता है वह प्रभु से मिला रहता है परन्तु गुरु के शब्द उपदेश से उसी का मिलन होता है जिसे प्रभु आप (कृपाकर) गुरु से मिलाता है ।

दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ।

द्वैत भाव रखने से कोई भी गुरु से मिल नहीं सकता वह बार-बार योनियों में आता (जन्मता) है और जाता (मरता) है ।

सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ।

सभी जीवों में एक ही प्रभु व्याप्त है और एक प्रभु ही सबमें समाया हुआ है ।

जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥२॥

जिस पर प्रभु आप दयालु होता है वह गुरु के सम्मुख होकर नाम प्राप्त करता है और फिर प्रभु में समा जाता है ॥२॥

पड़ि पड़ि पंडित जोत की वाद करहि बीचारु ॥

पण्डित और ज्योतिषी (ग्रन्थ) पढ़ पढ़ कर विचार करते हैं और आपस में विवाद करते हैं ।

मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ।।

मन में लोभ आदि विकार होने के कारण बुद्धि और अक्ल भटकती रहती है और कुछ भी नहीं समझती (प्रभु के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती)।

लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ।।

चौरासी लाख योनियों में भटकते रहते हैं और भटक भटक कर खराब होते रहते हैं।

पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ।।३।।

पहले से ही जैसा भाग्य लिखा गया है उसी के अनुसार ही (हम) कर्म करते हैं उस भाग्य लेख को कोई भी नहीं मिटा सकता ।।३।।

सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ।

सत्गुरु की सेवा अति कठिन है इसके लिए सिर देना पड़ता है और आपा (अहंभाव) गँवाना होता है ।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ।

गुरु का शब्द उपदेश मिले तब हरि की प्राप्ति होती है और की गई सेवा सार्थकता को प्राप्त होती है ।

पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ ।

जैसे कि पारस मणि से छुआने पर दूसरे धातु भी पारस हो जाते हैं (उसी प्रकार जीव गुरू उपदेश रूपी पारस मणि का स्पर्श कर स्वयं पारस के तुल्य शुद्ध आत्मा हो जाता है और (इस शुद्ध आत्मा की) ज्योति परम ज्योति में समाहित हो जाती है ।

जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ।।४।।

जिन के मस्तक पर प्रभु द्वारा पहले से ही भाग्य का लेख लिख दिया गया है वे ही जीव गुरू से आकर मिलते हैं ।।४।।

मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ।।

हे मेरे मन ! मैं (हर समय) भूखा हूं, मैं भूखा हूं (मेरी तृष्णा शान्त नहीं हुई) ऐसा मत कहो और न ही दूसरों के आगे फरियाद करो ।

लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ।।

जिस प्रभु ने चौरासी लाख योनियों के जीवों की सर्जना की है वही सब को (जीविका का) सहारा देता है ।

निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा सार ।

वह निर्भय प्रभु सदैव दयालु है और वही सब की संभाल करता है ।

नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोख दुआरु ।।५।।३।।३६।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं कि) गुरु की शरण में

आकर ही प्रभु को जाना जाता है और मोक्ष का द्वार (विकारादि से मुक्ति) प्राप्त होती है ।।५।।३।।३६।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निजघरि वासु ।।
गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ।।
सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ।।
हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ।।१।।
मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ ।।
धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ।।१।।रहाउ।।
हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ।।
गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ।।
जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ।।
मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ।।२।।
जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ।।
अनदिनु भगती रतिआ मनु तनु निरमलु होइ ।।
कूड़ा रंगु कसुंभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ।।
जिसु अंदरि नामु प्रगासु है ओहु सदा सदा थिरु होइ ।।३।।
इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरिनामु न चेतै लिव लाइ ।।
पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउरु न पाइ ।।
ओहु वेला हथि न आवई अंति गइआ पछुताइ ।।
जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ।।४।।
देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ।।
जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ।।
हरिगुण गावहि हरि नित पड़हि हरिगुण गाइ समाइ ।।
नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ।।५।।४।।३७।।

□

जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निज घरि वासु ।

जिन जीवों ने गुरु के उपदेश को सुन कर मान लिया है उन्हें अपनी अन्तरात्मा में निवास (टिकाव, स्थिरता) प्राप्त होता है ।

गुरमती सालाहि सचु हरि पाइया गुणतासु ।

गुरु से सद्बुद्धि प्राप्त कर जब वे सत्यस्वरूप प्रभु की सराहना करते हैं

तो वे गुणों के खजाने हरि प्रभु को प्राप्त करते हैं।

सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु।

गुरु के शब्द उपदेश में अनुरक्त होकर वे निर्मल पवित्र हो जाते हैं मैं उन (महान जीवों) के सदैव कुर्बान जाता हूं।

हिरदै जिन कै हरि बसै तिनु घटि है परगासु ॥१॥

जिनके हृदय में हरि प्रभु का निवास होता है उस आत्मा में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है ॥१॥

मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ।

हे मेरे मन ! हरि प्रभु के दुख हर्त्ता पवित्र नाम का ध्यान कर।

धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ॥१॥रहाउ॥

प्रभु के द्वारा जिनके माथे पर भाग्य लिखा गया है वे ही गुरु के सम्मुख (शरण में) आते हैं और हरि नाम से उनकी प्रीति लगती है ॥१॥रहाउ॥

हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि।

हे हरि के प्यारे सन्तो ! (मुझे भी) अपनी कृपा दृष्टि से देखो जिससे परिपूर्ण प्रभु को निकट बसता हुआ देख सकूं।

गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥

जिन्होंने गुरु से सद्बुद्धि लेकर प्रभु को पहचान लिया है वे सदैव प्रभु को अपने निकट (हुजूर) देखते हैं।

जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥

जिन लोगों में शुभ गुण है प्रभु सदा उनके ही मन में बसता है अवगुणों भरे हुए व्यक्ति को तो प्रभु दूर ही लगता है।

मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥२॥

मन के सम्मुख रह कर (मनके पीछे लगकर) जीव गुणों से बाहर होता है और प्रभु का नाम स्मरण किये बिना घुल घुल कर मर जाता है ॥२॥

जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥

जिन्होंने गुरु के शब्द उपदेश को सुनकर मान लिया है वे मन से उसी हरि प्रभु के नाम का ध्यान करते हैं।

अनदिनु भगती रतिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥

दिन रात भक्ति में अनुरक्त रहने से उस जीव का मन और तन पवित्र हो जाता है।

कूड़ा रंगु कसभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥

(सांसारिक पदार्थों का आकर्षण) टेसू के फूल के रंग की तरह झठा

(और नाशवान) है जब यह विनष्ट हो जाता है तो मनुष्य दुखी होकर रोता है।

जिसु अंदरि नामु प्रगासु है ओहु सदा सदा थिरु होइ ॥३॥

जिस जीव के मन में प्रभु नाम का प्रकाश है वह सदा सदा के लिए स्थित चित्त हो जाता है।

इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरिनामु न चेतै लिव लाइ ॥

यह जीव मनुष्य जन्म रूपी अमूल्य पदार्थ को प्राप्त करके भी हरि प्रभु के नाम को मन लगा कर स्मरण नहीं करता।

पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउरु न पाइ ॥

पैर फिसलने (शरीर के नष्ट होने) पर यहां रहना नहीं होगा और आगे प्रभु के दरबार में भी स्थान प्राप्त नहीं होगा।

ओहु वेला हथि न आवई अंति गइआ पछुताइ ॥

वह समय (जो गँवा दिया जाता है) हाथ में नहीं आता अन्त आने पर (जीवन की अन्तिम बेला में) जीव पछताता है।

जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ॥४॥

जिस जीव पर प्रभु आप कृपा दृष्टि करता है उसका उद्धार हो जाता है और वही हरि प्रभु से प्रीति लगाता है ॥४॥

देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ॥

मन के पीछे लगने वाला मनमुख (गुरुमुखो को) देखा देखी करता तो सब कुछ है परन्तु वह मनमुख कुछ समझ नहीं पाता है।

जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जिन जीवों का हृदय शुद्ध है उनके द्वारा की गई सेवा कबूल की जीती है (सार्थक है)।

हरिगुण गावहि हरि नित पड़हि हरिगुण गाइ समाइ ॥

ऐसे जीव हर पल हरि के ही गुण गाते हैं नित्य हरि के शब्दों को ही पढ़ते हैं और हरि के गुणों को गाते हुए हरि में समा जाते हैं।

नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ॥५॥४॥३७॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) जो मनुष्य हरि प्रभु के नाम में ही प्रीति लगाए रखते हैं उनके मुख पर सदा सत्य प्रभु की ही वाणी होती है ॥५॥४॥३७॥

□

सिरीरागु महला ३ ।।

जिनी इकमनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ।।
तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ।।
ओइ अंम्रितु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ।।१।।
भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ ।।
हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइ ।।१।।रहाउ।।
मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइ ।।
सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ ।।
विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ ।।२।।
तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ ।।
कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ ।।
हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ।।
जिनी गुरमुखि नामु धिआईआ विचहु आपु गवाइ ।।
ओई अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ।।
नानक आए से परवाणु हहि जिन गुरमती हरि धिआइ ।।४।।५।।३८।।

□

जिनी इक मनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ।।

जिन्होंने गुरू द्वारा दी गई शिक्षा पर विचार किया है और एकाग्र चित्त होकर प्रभु के नाम का ध्यान धारण किया है ।

तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ।।

उनके मुख उस सत्य स्वरूप प्रभु के दरबार में सदैव उज्जवल होते हैं ।

ओई अंम्रितु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ।।१।।

उनका सदैव सच्चे प्रभु के नाम से प्यार होता है और वे नाम रूपी अमृत को ही सदैव पीते हैं ।।१।।

भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ ।।

हे भाई ! गुरू के सम्मुख रहने (गुरू की आज्ञा मानने) वाले की सदैव इज्जत होती है ।

हरि हरि सदा धिआइऐ मलु हउमै कढै धोइ ।।१।।रहाउ।।

दुखहर्ता हरि प्रभु का नाम सदा ही स्मरण करते रहना चाहिए हरि का नाम हउमै (अहंकार) की मैल को निकाल कर (हृदय को) धो देता है ।।१।।रहाउ।।

मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइ ।।

मन के पीछे लगने वाला हरि के नाम को नहीं जानता और विना नाम

जपे उसकी प्रतिष्ठा जाती रहती है।

सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ ॥

उसे गुरू के शब्द उपदेश में स्वाद नहीं आता और वह अन्य सांसारिक पदार्थों से प्रेम करता है।

विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ ॥२॥

वह मल (गन्दगी) का कीड़ा होता है मल के अन्दर ही पड़ा रहता है और अन्त में नष्ट होकर मल में ही समाहित हो जाता है ॥२॥

तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ ॥

जो पुरुष सद्गुरू द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हैं उनका जन्म सार्थक होता है।

कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ ॥

ऐसे पुरुषों को जन्म देने वाली माता धन्य होती है क्योंकि वे (अपने शुभ गुणों से) सम्पूर्ण कुल का उद्धार कर देते हैं।

हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ॥३॥

जिस पर प्रभु अपनी कृपा दृष्टि करता है और जिसे अपनी स्वीकृति देता है वही दुखहर्त्ता प्रभु का नाम स्मरण करता है ॥३॥

जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ ।

जिन्होंने गुरु के सम्मुख होकर हरि का नाम स्मरण किया है और अन्त:करण से अहंकार को गँवा दिया (आपा मिटा दिया है)।

ओइ अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ।

वे पुरुष अन्दर (अन्त:करण से) और बाहर (शरीर से) पवित्र होकर और सत्पुरुष बनकर सत्य स्वरूप प्रभु में समा जाते हैं।

नानक आए से परवाणु हहि जिन गुरमती हरि धिआइ ॥४॥५॥३॥८

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) उन जीवों का ही आना (संसार में जन्म लेना) कबूला जाता है जो गुरु से सद्बुद्धि प्राप्त कर हरि प्रभु के नाम को जपते हैं ॥४॥५॥३८॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

हरि भगता हरिधनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥

हरिनामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरिनामु अधारु ॥

गुरि पूरै हरिनामु द्रिड़ाइआ हरि भगता अतुटु भंडारु ॥१॥

भाई रे इसु मनु कउ समझाइ ॥

ए मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ ॥१॥रहाउ॥
हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥
पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥
सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥२॥
सो सेवकु हरि आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ॥
मनु तनु सउपे आगै धरे हउमै बिचहु मारि ॥
धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न आवै हारि ॥३॥
करमि मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाईआ न जाइ ॥
लख चउरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आई ॥
नानक गुरमुखि हरि पाईआ सदा हरिनामि समाई ॥४॥६॥३९॥

□

हरि भगता हरि धनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥

हरि के भक्तों के लिए हरि का नाम ही उनकी (बहुमूल्य) धन राशि है, वे अपने गुरू से पूछ कर हरि नाम का ही व्यापार करते हैं।

हरिनामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरिनामु अधारु ॥

हरि के नाम की ही सराहना वे सदैव करते रहते हैं और सदैव हरि नाम का हो सौदा करते हैं क्योंकि हरि का नाम हो उनके जीवन का आधार होता है।

गुरि पूरै हरिनामु द्रिड़ाईआ हरि भगता अतुटु भंडारु ॥१॥

पूर्ण सद्गुरु ने (उनके हृदय में) हरि के नाम को दृढ़ कर दिया है, इसलिए हरि के भक्तों के पास हरि नाम के धन का अटूट भंडार है ॥१॥

भाई रे इसु मन कउ समझाइ ॥

हे भाई ! इस मन को समझाओ ।

ए मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ ॥१॥रहाउ॥

(कि) यह मन (हरि नाम का स्मरण करने में) आलस क्यों करता है। इसे गुरू की शरण में आकर प्रभु के नाम का स्मरण करना चाहिए ॥१॥रहाउ॥

हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥

जो गुरू के मुख से सुने उपदेशों पर विचार करते हैं और हरि प्रभु की भक्ति करते हैं उनसे ही हरि प्रभु का विशेष प्यार होता है।

पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥

पाखण्ड करने से प्रभु की भक्ति नहीं होती, दुविधा में फंसे हुए व्यक्ति के बोल उसे ख्वार करते हैं।

सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ।।२।।

जिन पुरुषों का अन्तःकरण विवेकशील (ज्ञानवान) है और जिनमें विचार है, सोचने समझने की शक्ति है प्रभु के वे दास ऐसे (द्वैत भावना पूर्ण) लोगों के साथ मिलाने से भी नहीं मिलते ।।२।।

सो सेवकु हरि आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ।।

उसे ही हरि का सेवक कहना चाहिए जो हरि प्रभु के नाम को अपने हृदय में धारण करके रखता है ।

मनु तनु सउपै आगै धरै हउमै विचहु मारि ।।

जो अपने मन और तन को गुरू को समर्पित करके उसके सामने (चरणों पर) रख देता है और मन में से हउमै (अहंकार) को मार कर नष्ट कर देता है ।

धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न आवै हारि ।।३।।

गुरू के सम्मुख रहने वाला वह व्यक्ति धन्य है और हरि प्रभु को कबूल भी वही होता है जो कभी भी विकारों से हारता नहीं है (विकारों को जीत लेता है) ।।३।।

करमि मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ।।

प्रभु की कृपा प्राप्त हो तभी (विकारों पर जीत) प्राप्त की जा सकती है । बिना प्रभु की कृपा के (यह जीत) प्राप्त नहीं की जा सकती ।

लख चउरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आइ ।।

चौरासी लाख योनियों के सभी जीव प्रभु के दर्शनों के लिए तरसते हैं परन्तु जिसे प्रभु आप मिलाता है वही हरि प्रभु से आकर मिलता है ।

नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरिनामि समाइ ।।४।।६।।३९।।

(श्री गुरू अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरू के सम्मुख रहने वाले हरि को प्राप्त कर लेते हैं और सदैव हरि के नाम में लीन रहते हैं ।।४।।६।।३९।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

सुख सागरु हरिनामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ।।१।।

अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ।।

अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरिगुण गाइ ।।

भाई रे जगु दुखीआ दूजै भाइ ।।

गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ।।१।।रहाउ।।

साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ।।
गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अंम्रित नामि समाइ ।।
गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ।।२।।
मनमुख मैले मलु भरे हउमै त्रिसना विकारु ।।
बिनु सवदे मैलु न उतरै मरि जंमहि होइ खुआरु ।।
धातुरबाजी पलचि रहे ना उरबारु न पारु ।।३।।
गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ।
गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ।।
नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ।।४।।७।।४०।।

□

सुख सागरु हरिनामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ।।

हरि का नाम सुखों का सागर है इसे गुरु के सम्मुख (शरण में) आकर प्राप्त किया जाता है ।

अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ।।

दिन रात प्रभु का नाम स्मरण करने से भक्त स्वाभाविक ही नामी में समाहित हो जाता है ।

अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरिगुण गाइ ।।

अन्तःकरण सत्यस्वरूप हरि में अनुरक्त हो जाता है और जिह्वा हर पल हरि के गुणों का गायन करतो है ।

भाई रे जग दुखीआ दूजै भाइ ।।
गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ।।१।।रहाउ।।

हे भाई ! द्वैत भाव में फंस कर यह सारा जगत दुखी है । गुरु की शरण में आकर दिन रात नाम जपने से सुख की प्राप्ति होती है ।।१।।रहाउ।।

साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ।।

सत्य प्रभु का नाम जपने वाले को (पापकर्म की) मैल नहीं लगती । हरि का नाम स्मरण करने से वह पवित्र हो जाता है ।

गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अंम्रित नामि समाइ ।।

गुरु के सम्मुख होकर जो गुरु के शब्द उपदेश को पहचानता है, वह प्रभु के नाम रूपी अमृत को पीकर हरि प्रभु में समा जाता है ।

गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ।।२।।

सत्यगुरु जब ज्ञान के प्रचंड (तीव्र) प्रकाशमय (दीपक) को जलाते हैं तो उससे अज्ञान रूपी अन्धकार नष्ट हो जाता है ।।२।।

मनमुख मैले मलु भरे हउमै त्रिसना विकारु ।।

मनमुख का मन मैला होता है और वह अहंकार तृष्णा और विकारों (की गन्दगी) से भरा होता है।

बिनु सबदै मैलु न उतरे मरि जंमहि होइ खुआरु ।।

गुरु के शब्द उपदेश के बिना यह मैल उतरती नहीं है इसलिए (मनमुख) मरता है और जन्म लेता है और (इसी प्रकार जन्म मरण के चक्र में) खराब होता रहता है।

धातुरबाजी पलचि रहे ना उरवारु न पारु ।।३।।

वे लोगों को धूर्तबाजी (ठगबाजी) से ठगने के खेलों में उलझे रहते हैं। ना इस पार (इहलोक) के रहते हैं न उस पार (परलोक) के (न इस जीवन का कुछ संवारते हैं न पारलौकिक जीवन का) ।।३।।

गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले गुरुमुख जपी तपी और संयमी होते हैं और उन्हें हरि नाम से प्यार होता है।

गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ।।

गुरुमुख सदा एक कर्त्ता प्रभु के नाम का ही ध्यान करते हैं।

नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ।।४।।७।।४०।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) उस प्रभु का नाम स्मरण करना चाहिए जो समस्त जीवों का आधार (आश्रय) है ।।४।।७।।४०।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

मनमुखु मोहि विआपिआ बैरागु उदासी न होइ ।।
सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगह पति खोइ ।।
हउमै गुरमुखि खोईऐ नामि रते सुखु होइ ।।१।।
मेरे मन अहिनिसि पूरि रही नित आसा ।।
सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ।।१।।रहाउ।।
गुरमुखि करम कमावै बिगसै हरि बैरागु अनंदु ।।
अहिनिसि भगत करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु ।।
वडै भागि सतिसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अनंदु ।।२।।
सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए ।।
अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाए ।।
नामु निधानु सतगुरू दिखालिआ हरिरसु पीआ अघाए ।।३।।

जिनि किनै पाइआ साधसंगती पूरै भागि बैरागि ।।
मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ।।
नानक सबदि रते हरिनामि रंगाए बिनु भै केही लागि ।।४।।८।।४१।।

□

मनमुखु मोहि विआपिआ वैरागु उदासी न होइ ।।
मन के पीछे लगने वाले मनमुख के मन में मोह व्याप्त होता है उसके मन में वैराग्य उत्पन्न नहीं होता और न ही वह सांसारिक सुखों के प्रति) उदासीन होता है ।
सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगहि पति खोइ ।।
गुरु के शब्द उपदेश को वह पहचानता नही है और सदैव दुखी रहता है और हरि के दरबार में वह अपनी प्रतिष्ठा खो बैठता है ।
हउमै गुरमुखि खोईऐ नामि रते सुखु होइ ।।१।।
गुरु के सम्मुख होने पर अहंकार का नाश हो जाता है और हरि के नाम में अनुरक्त होने से सुख प्राप्त होता है ।।१।।
मेरे मन अहिनिसि पूरि रही नित आसा ।।
हे मेरे मन दिन रात (तुम सांसारिक सुखों की) पूर्ति में ही लगे रहते हो और नित्य प्रति (सांसारिक सुखों की ही) आशा लगाए रखते हो ।
सतगुरु सेवि मोहु पर जलै घर ही माहि उदासा ।।१।।रहाउ।।
सत्य गुरु की सेवा करो इससे पूरी तरह मोह जल जायेगा और घर में रहकर (सांसारिक सुखों के प्रति निरासक्त रहोगे ।।१।। रहाउ।।
गुरमुखि करम कमावै बिगसै हरि वैरागु अनंदु ।।
गुरु के सम्मुख रहकर शुभ कर्मों की कमाई करते हुए (मन) प्रफुल्लित रहता है और हरि नाम से प्रेम और संसार के प्रति वैराग्य होने से सदैव आनन्दित रहते हैं ।
अहिनिसि भगति करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु ।।
दिन रात प्रभु की भक्ति करने से हउमैं (अहंकार) को मार कर (गुरुमुख) निश्चिन्त रहता है ।
वडै भागि सति संगति पाई हरि पाईआ सहजि अनंदु ।।२।।
बड़े भाग्य से ही सत्संगति की प्राप्ति होती है और सत्संगति से ही प्रभु की प्राप्ति होती है और स्थिर अवस्था को प्राप्त कर स्थाई आनन्द की प्राप्ति होती है ।।२।।
सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए ।।
वही साधु है और वही वैरागी है जो हृदय में प्रभु नाम को बसा लेता है ।

अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाए ।।

ऐसे साधु के अन्तःकरण को तामसिक भावनाओं और अज्ञान का स्पर्श) लेश मात्र भी नहीं लगता और वह अपने अर्न्तमन से अहं बुद्धि को नष्ट कर देता है ।

नामु निधानु सतगुरू दिखालिया हरि रसु पीआ अघाए ।।३।।

सद्गुरु साधु को नामका खजाना दिखाता है और हरिनाम के रस को पीकर वह तृप्त हो जाता है ।।३।।

जिनि किनै पाइआ साध संगती पूरै भागि वैरागि ।।

जिस किसी ने भी हरि को प्राप्त किया है तीन बातें होने पर प्राप्त किया है पूर्ण भाग्यशाली होने पर, वैराग्य उदित होने पर और साधु पुरुषों की संगति करने पर ।

मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ।।

मन के पीछे लगने वाले जीव व्यर्थ इधर उधर फिरते हैं वे सद्गुरु को नहीं जानते और उनके अन्तःकरण में हउमैं (की कालिमा) लगी होती है।

नानक सबदि रते हरि नाम रंगाए बिनु भै केही लागि ।।४।।८।।४१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी कथन करते हैं कि जो जीव गुरु के शब्द उपदेश में अनुरक्त हो जाते हैं वे हरि प्रभु के नाम रंग में रंगे जाते हैं वे यमों के भय से हीन हो जाते हैं फिर उनके अन्तःकरण पर विकारों की मैल कैसे लग सकती है ।।४।।८।।४१।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ।।
खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ।।
नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ ।।१।।
मेरे मनि तजि निंदा हउमै अहंकारु ।।
हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि एकंकारु ।।१।।रहाउ।।
गुरमुखा के मुख उजले गुरसबदी बीचारि ।।
हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ।।
घर ही विचि महलु पाइआ गुरसबदी बीचारि ।।२।।
सतिगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ।।
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जमजाले ।।
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ।।३।।
सभना का दाता एकु है आपे बखस करेइ ।।

कहणा किछू न जावई जिसु भावै तिसु देइ ॥
नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ ॥४॥६॥४२॥

□

घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ॥

प्रभु के नाम का सौदा अन्तरात्मा में ही प्राप्त होता है क्यों कि अन्तःकरण में ही सभी (शुभ गुणों की) वस्तुएँ विद्यमान होती हैं। (उन्हें प्राप्त करने का केवल पुरुषार्थ मात्र करना होता है)।

खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥

क्षण-क्षण (प्रत्येक क्षण) प्रभु के नाम की संभाल करनी चाहिए परन्तु इस प्रभु नाम को गुरु के सम्मुख होकर कोई कोई ही प्राप्त करता है।

नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ ॥१॥

सद्‌गुरु के पास नाम का अटूट खजाना होता है जो किसी भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है ॥१॥

मेरे मनि तजि निंदा हउमै अहंकारु ॥

हे मेरे मन पर निन्दा अहंभाव (हउमै) और अहंकार का त्याग कर।

हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि एकंकारु ॥१॥रहाउ॥

हे मेरे जीव तू गुरु के सम्मुख होकर उस एक मात्र अद्वितीय हरि प्रभु के नाम का सदैव ध्यान कर ॥१॥ रहाउ ॥

गुरमुखा के मुख उजले गुरसबदी बीचारि ॥

गुरु की ओर मुख रखने वालों (गुरु की शरण में आने वालों) के मुख सदैव उज्जवल रहते हैं क्योंकि वे गुरु द्वारा दिए गए शब्द उपदेश पर विचार करते हैं।

हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ॥

वे अपने हृदय में सदैव मुरारी प्रभु का नाम जपते रहते हैं इसलिए इस लोक और परलोक दोनों के सुखों को प्राप्त करते हैं।

घर ही विचि महलु पाइआ गुरसबदी वीचारि ॥२॥

गुरु द्वारा दिए गए शब्द उपदेश पर विचार करने से वे घर (अन्तरात्मा) में ही प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं ॥२॥

सतिगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥

जो पुरुष अपने सद्‌गुरु से मुंह फेर लेते हैं उनके माथे पर कालिख पुत जाती है।

अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जमजाले ॥

वे दिन रात ऐसे कर्म करते हैं जिनका फल दुख होता है और यमदूत

नित्य प्रति अपना जाल लेकर उनकी ओर ही देखता रहता है।

सुपनै सुखु न देखनी बहु चिता परजाले ॥३॥

सुख उन्हें स्वप्न में भी दिखाई नहीं देता और अनेक प्रकार की चिन्ता की प्रचंड अग्नि उन्हें जलाती रहती है ॥३॥

सभना का दाता एकु है आपे बखस करेइ ॥

सभी जीवों को (मन इच्छित वस्तुएँ) देने वाला दाता एक प्रभु ही है वही आप अगर बख्श दें तो (ऐसे जीव) छूट सकते हैं।

कहणा किछू न जावई जिसु भावै तिसु देइ ॥

इस सम्बन्ध में जीव के द्वारा कुछ भी नहीं कहा जा सकता प्रभु जिसे चाहता है उसे ही सबकुछ देता है।

नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ ॥४॥९॥४२॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरु के सम्मुख होकर यदि प्रभु के नाम की प्राप्ति करे तो वह प्रभु अपने आप ही जान लेता है (और जीव को कृपा का दान देता है) ॥४॥९॥४२॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

सच साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ ॥
गुरपरसादी मनि वसै हउमै दूरि करेइ ॥
इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ ॥१॥
भाई रे गुरमुखि हरिनामु धिआइ ॥
नामु निधानु सदा मनि वसै महली पावै थाउ ॥१॥रहाउ॥
मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठउ ॥
बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञै घरि काउ ॥
गुरमती घटि चानणा सबदि मिलै हरिनाउ ॥२॥
त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ॥
लोभी अन कउ सेवदे पड़ि वेदा करहि पुकार ॥
बिखिआ अंदरि पचि मुए ना उरवारु न पारु ॥३॥
माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता प्रतिपालि ॥
बाझहु गुरू अचेतु है सभ बधी जमकालि ॥
नानक गुरमति उबरे सचा नामु समालि ॥४॥१०॥४३॥

□

सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ ॥

सत्य स्वरूप उस प्रभु मालिक की सेवा करें क्योंकि वह प्रभु सदा स्थिर रहने वाले बड़प्पन को देने वाला है।

गुरपरसादी मनि वसै हउमै दूरि करेइ ॥

गुरु की कृपा से जब (जिज्ञासु) अहंकार भावना को दूर करता है तभी मालिक का नाम हृदय में बसता है।

इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ ॥१॥

यदि प्रभु आप दया दृष्टि करें तभी यह मन जो (सांसारिक सुखों के पीछे) दौड़ता है स्थिर हो कर टिक सकता है ॥१॥

भाई रे गुरमुखि हरिनामु धिआइ ॥

हे भाई गुरु के सम्मुख होकर (उसकी शरण में आकर) हरि नाम का ध्यान कर।

नामु निधानु सदा मनि वसै महली पावै थाउ ॥१॥रहाउ॥

(गुरु की शरण में आने से) हरि का नाम जो सब (सुखों का) खजाना है मन में बसता है और प्रभु के चरणों (महलों) में (टिकने को स्थान प्राप्त होता है ॥१॥ रहाउ॥

मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठउ ॥

मन के पीछे लगने वाला मन और तन से अंधा होता है (न वह मन से प्रभु का नाम जपता है और न तन से शुभ कर्म करता है) इसलिए उसे प्रभु के चरणों में ठहरने को स्थान नहीं मिलता।

बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञै घरि काउ ॥

वह अनेक योनियों में भटकता फिरता है जैसे सूने घर में काग घूमता फिरता है (परन्तु प्राप्ति कुछ नहीं होती)।

गुरमती घटि चानणा सबदि मिलै हरिनाउ ॥२॥

गुरु की शिक्षा लेकर हरि प्रभु का नाम जपने से अन्तरात्मा में प्रकाश होता है और शब्द ब्रह्म से मिलन होता है ॥२॥

त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ॥

यह त्रिगुणात्मक सारा ही संसार विषय वासनाओं में अंधा हो रहा है और माया मोह के गहन अंधेरे में (डूबा हुआ) है।

लोभी अन कउ सेवदे पड़ि वेदा करहि पुकार ॥

लोभी मनुष्य प्रभु के अतिरिक्त अन्य विषयों का सेवन करते हैं और वेद (पुराणों) को पढ़ कर (केवल सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए देवताओं का) आहवान करते हैं।

बिखिआ अंदरि पचि मुए ना उरवारु न पारु ॥३॥

वे विषय वासनाओं की अग्नि के अन्दर जल-जल कर मर जाते हैं। न इस पार (इहलोक) के सुख भोग सकते हैं और न उस पार (परलोक) के सुख प्राप्त करते हैं ॥३॥

माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता प्रतिपालि ॥

माया और मोह में फँस कर वे समस्त जीवों का पालन करने वाले जगत के पिता परमात्मा को भुला बैठे हैं।

बाझहु गुरू अचेतु है सभ बधी जमकालि ॥

गुरु उपदेश के बिना (सभी) जीवात्माएँ अज्ञानी हैं और सभी यम की रस्सी में बंधी काल के पास पहुंच रही है।

नानक गुरमति उबरे सचा नामु समालि ॥४॥१०॥४३॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जो (कथन करते हैं) गुरु की शिक्षा से जिन्होंने सत्य प्रभु के नाम की संभाल (स्मरण) की है उनका यम राज के बंधन से उद्धार हो गया है ॥४॥१०॥४३॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चहुथा पदु पाइ ॥
करि किरपा मेलाइअनु हरिनामु वसिआ मनि आइ ॥
पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ ॥१॥
भाई रे गुरमति साचि रहाउ ॥
साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ॥१॥रहाउ॥
जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥
आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ॥
लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ॥२॥
बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥
ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ ॥
असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ ॥३॥
जेहा सतिगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥
एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ ॥
नानक एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा होइ ॥४॥११॥४४॥

□

त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चहुथा पदु पाइ ॥

(यह सारा जगत) त्रिगुणात्मक माया के मोह में फँसा हुआ है परन्तु जो

गुरु के सम्मुख होकर रहता है उसे चौथे पद परम पद की प्राप्ति होती है।

करि किरपा मेलाइअनु हरिनामु वसिआ मनि आइ ।।

परन्तु जिस जीव को प्रभु ने कृपा करके गुरु से मिला दिया है उसके मन में (इस त्रिगुणात्मक जगत में) आकर (भी) हरि का नाम बस जाता है।

पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ ।।१।।

जिनके खजाने में पुण्य कर्म है उन्हें ही प्रभु सत्संगति से मिला देता है।

भाई रे गुरमति साचि रहाउ ।।

हे भाई ! गुरु द्वारा दी गई बुद्धि से सत्य स्वरूप प्रभु में मन को स्थिर कर के रखो।

साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ।।१।।रहाउ।।

सत्य प्रभु को मन में टिका कर सत्य कर्म करो और सत्यस्वरूप शब्द ब्रह्म में मिल जाओ ।।१।। रहाउ ।।

जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ।।

जिन्होंने प्रभु नाम को पहचान लिया है मैं उन पर से बलिहार जाता हूं।

आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ।।

मैं अपनापन (अहंभाव) छोड़कर उनके चरणों से लग जाऊँ और जैसा उन्हें अच्छा लगे उसी तरह चलूं।

लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ।।२।।

हरि के दुखहर्त्ता नाम जपने का लाभ मुझे मिल जाय और मैं स्थिर बुद्धि से नाम जपते हुए प्रभु में समा जाऊँ ।।२।।

बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु परापति होइ ।।

बिना गुरु के हरि नाम की प्राप्ति नहीं होती और (बिना नाम के) निज स्वरूप की प्राप्ति नहीं होती।

ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ ।।

ऐसे सद्गुरु को खोज लो जिससे सदा स्थिर रहने वाले उस प्रभु को प्राप्त किया जा सके।

असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ ।।३।।

विकारों के दैत्यों को मार कर जब यह निश्चय हो जाता है कि प्रभु जो कुछ चाहता है वही होता है तो जीव का निवास स्थायी सुखों में हो जाता है ।।३।।

जेहा सतिगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ।।

जीव जिस प्रकार से सद्‌गुरु को जानता है उस प्रकार का ही उसे सुख होता है।

एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ ॥

इसमें किंचित मात्र भी शंका नहीं है कोई भी प्रभु का दास गुरु से प्रेम करके देख लें।

नानक एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा होइ ॥४॥११॥४४॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरु और प्रभु एक ही ज्योति की दो मूर्त्तियां हैं और गुरु के शब्द उपदेश द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है ॥४॥११॥४४॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

अंम्रितु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥
आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी ॥
मनमुख अंधु न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी ॥१॥
मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ॥
गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥१॥रहाउ॥
इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥
आवणु जाणा जंमणु मरणा मनमुखि पति गवाई ॥
सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥२॥
सतगुर की सेवा अति सुखाली जो इछे सो फलु पाइ ॥
जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाए ॥
सदा अनंदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥३॥
जो सतगुर की सरणागति हउ तिन कै बलि जाउ ॥
दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥
नानक नदरी पाईऐ गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥४॥१२॥४५॥

□

अंम्रितु छोड़ि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी।

मनमुख जीव नामरूपी अमृत को छोड़ कर विषय वासनाओं के प्रति लोभित होते हैं और आडम्बरों की सेवा करते हैं।

आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी।

सांसारिक पदार्थों के लालच में पड़कर अपना धर्म गँवा देते हैं (कर्तव्य-हीन हो जाते हैं) पर इस बात को नहीं समझते कि वे क्या कर रहे हैं और फलस्वरूप दिन रात दुख में ही व्यतीत करते हैं।

मनमुख अंधु न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी ॥१॥

मन के पीछे लगने वाले मनमुख अंधे होते हैं वे मन में विचार नहीं करते कि क्या कर रहे हैं और (अतृप्त वासनाओं में भटक कर मर जाते हैं मानों) बिना जल की सूखी नदी में डूब कर मरते हैं ॥१॥

मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ।

हे मेरे मन गुरु की शरण में आकर सदैव हरि नाम का भजन कर ।

गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥१॥रहाउ॥

गुरु का नाम शब्द उपदेश यदि अन्तरात्मा में बसता हो तो हरि प्रभु कभी भी विस्मृत नहीं किया जाता ॥१॥ रहाउ ॥

ईहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ।

यह शरीर माया का पुतला है इसमें हउमै (अहंकार) की दुष्टता भरी पड़ी है ।

आवणु जाणा जंमणु मरणा मनमुखि पति गवाई ।

आने जाने व जन्म लेने व मरने में ही मनमुख अपनी प्रतिष्ठा गँवा लेते हैं ।

सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥२॥

सद्गुरु की सेवा करने से स्थायी सुखों की प्राप्ति होती है और जीवात्मा की ज्योति प्रभु की परम ज्योति में मिल जाती है ॥ २॥

सतगुर की सेवा अति सुखाली जो इछे सो फलु पाइ ॥

सद्गुरु की सेवा अत्यन्त सुखदायक है, सेवा करने से जैसी इच्छा हो वैसा ही फल प्राप्त होता है ।

जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाए ॥

संयम सत्य आचरण और तपसाधना से शरीर पवित्र होता है और दुख हर्त्ता हरि का नाम मन में बस जाता है ।

सदा अनंदि रहै दिनु राति मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥३॥

(और तब) सदैव आनन्दित रहते हैं और दिन रात (चित्तवृत्ति) प्रियतम प्रभु से मिली रहने के कारण नित्य सुख की प्राप्ति होती है ॥३॥

जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥

जो जीव सद्गुरु की शरण में आए हैं मैं उनके बलिहार जाता हूं ।

दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥

वे सत्य स्वरूप प्रभु के दरबार में जाकर सच्ची प्रतिष्ठा को प्राप्त करते हैं और सहज स्वाभाविक रूप से ही सत्य स्वरूप प्रभु में समा जाते हैं ।

नानक नदरी पाईऐ गुरमुखि मेलि मिलाउ ।।४।।१२।।४५।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु की दया दृष्टि प्राप्त होने पर ही गुरु के सम्मुख होकर सत्संगति से मिलन होता है ।।४।।१२।।४५।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

मनमुख करम कमावणे जिउ दोहागणि तनि सीगारु ।।
सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ।।
पिर का महलु न पावई ना दीसै घरु बारु ।।१।।
भाई रे इकमनि नामु धिआइ ।।
संता संगति मिलि रहै जपि रामनान सुखु पाइ ।।१।।रहाउ।।
गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उरधारि ।।
मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ।।
सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ।।२।।
पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ।।
अंतरहु दुखु भ्रमु कटीऐ सुखु परापति होइ ।।
गुर कै भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइ ।।३।।
गुर के भाणे विचि अंम्रितु है सहजे पावै कोइ ।।
जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ।।
नानक गुरमुखि नाम धिआईऐ सचि मिलावा होइ ।।४।।१३।।४६।।

□

मनमुख करम कमावणे जिउ दोहागणि तनि सीगारु ।।

मन के पीछे लगने वाले (मनमुख) पुरुष द्वारा किए गए सभी कार्य उसी प्रकार व्यर्थ होते हैं जैसे पति द्वारा त्याग दी गई (सुहागिन) स्त्री के तन पर किए गए श्रृंगार व्यर्थ होते हैं ।

सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ।।

परमात्मा पति उसकी शैय्या पर आता ही नहीं और वह नित्य प्रति ख्वार होती है ।

पिर का महलु न पावई ना दीसै घरु बारु ।।१।।

वह परमात्मा पति को निकटता कभी नहीं पा सकती और न ही उसे प्रियतम का घर द्वार दिखाई देता है ।

भाई रे इकमनि नामु धिआई ।।

हे भाई ! एकाग्र मन होकर प्रभु के नाम का ध्यान धारण कर ।

संता संगति मिलि रहै जपि रामनामु सुखु पाइ ।।१।।रहाउ।।

सन्तों की संगति में मिलकर रहो और राम के नाम को जप कर सुख की प्राप्ति करो ।।१।। रहाउ ।।

गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उरधारि ।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले पुरुष सुहागिन स्त्री की भांति होते हैं और सदैव अपने हृदय में प्रियतम प्रभु को धारण करके रखते हैं।

मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ।।

वे मीठा बोलते हैं विनम्र होकर चलते हैं और (हृदय रूपी) शैय्या पर प्रभु पति के साथ रमण करते हैं (आनन्द भोगते हैं)।

सोभावंति सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ।।२।।

जिन जीवात्मा रूपी स्त्रियों को गुरु के प्रति अपार प्रेम है वे शोभावाली सुहागिन स्त्रियां हैं ।।२।।

पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ।।

जब किसी का भाग्योदय होता है तभी पूर्णभाग्यशाली बनकर उसे सद्गुरु कीं प्राप्त होती है।

अंतरहु दुखु भ्रमु कटीऐ सुखु परापति होइ ।।

अन्त करण से दुख देने वाला भ्रम कट जाता है और सुख की प्राप्ति होती है।

गुर कै भाणै जो चलै दुखु ना पावै कोइ ।।३।।

गुरु के हुकुम के अनुसार जो चलता है वह किसो प्रकार का दुख नहीं पाता ।।३।।

गुर के भाणे विचि अंम्रितु है सहजे पावै कोइ ।।

जीव के अन्तःकरण में ही अमृत (आनन्द का भंडार) है जिसे गुरु के हुकुम में चलकर स्थिर अवस्था द्वारा कोई कोई ही प्राप्त कर सकता है।

जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ।।

अन्तःकरण में से अहंकार को दूर कर देने पर जिन्हें इस नामरूपी अमृत की प्राप्ति होती है वे ही इसे पान करते हैं।

नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सचि मिलावा होइ ।।४।।१३।।४६।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं कि) गुरु के सम्मुख होकर प्रभु का नाम जपने से सत्य स्वरूप प्रभु से मिलन होता है।

।।४।।१३।।४६।।

सिरीरागु महला ३ ।।

जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइ ।।
सोहागणी करम कमावदीआ सेई करम करेइ ।।
सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइ ।। १।।
भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ।।
बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ।।१।। रहाउ ।।
लख चउरासीह फेरु पइआ कामणि दूजै भाइ ।।
बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ ।।
बिनु सबदै पिरु न पाईऐ बिरथा जनमु गवाइ ।।२।।
हउ हउ करती जगु फिरी ना धनु संपै नालि ।।
अंधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ।।
सतिगुरि मिलिऐ धनु पाइआ हरिनामा रिदै समालि ।।३।।
नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ ।।
मनु तनु राता रंग सिउ रसना रसन रसाइ ।।
नानक रंगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ ।।४।।१४।।४७।।

□

जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइ ।।

हे जीवात्मा यदि तुम्हें अपने प्रियतम प्रभु को जानना है तो अपना तन मन गुरु के आगे धर दो ।

सोहागणी करम कमावदीआ सेई करम करेइ ।।

जो कर्म सुहागिन स्त्री करती है वही कर्म करो ।

सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइ ।।१।।

तब तुम्हारा स्वाभाविक ही सत्यस्वरूप प्रियतम प्रभु से मिलन हो जायेगा और प्रभु तुम्हें सदा स्थिर रहने वाला बड़प्पन प्रदान करेगा ।।१।

भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ।।

हे भाई ! गुरु के बिना भक्ति नहीं होती ।

बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभु कोई ।।१।। रहाउ ।।

सब कोई चाहे कितनी ही इच्छा क्यों न करें बिना गुरु के प्रभु भक्ति की प्राप्ति नहीं होती ।।१।।रहाउ।।

लख चउरासीह फेरु पइआ कामणि दूजै भाइ ।।

जो जीवात्मा रूपी स्त्री द्वैत भाव में ही (अपने पति को त्याग कर अन्य पदार्थों से प्रेम करती है) वह चौरासी लाख योनियों के फेर में पड़ी रहती है ।

बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ ।।

गुरु प्राप्ति के बिना उस (कामिनी) को (सुख रूपी) निद्रा प्राप्त नहीं होती और वह (जीवन रूपी) रात्रि व्याकुलता से व्यतीत करती है।

बिनु सबदै पिरु न पाईऐ बिरथा जनमु गवाइ ।।२।।

बिना गुरु के शब्द उपदेश के प्रभु प्रियतम को नहीं पाया जाता और प्रभु प्रियतम को प्राप्त किए बिना जीवात्मा अपना जन्म व्यर्थ ही गँवा बैठती है ।।२।।

हउ हउ करती जगु फिरी ना धनु संपै नालि ।।

मैं मैं करती हुई जीवस्त्री सारे संसार में घूमती फिरती है परन्तु जिस धन के कारण वह भटकती रहती है वह धन सम्पदा (अन्त समय) उसके साथ नहीं जाती।

अंधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ।।

यह सारी दुनिया धन पदार्थों के संचय में उलझी अज्ञानान्ध हो रही है और प्रभु का नाम स्मरण नहीं करती और सारी की सारी दुनिया यमराज के बंधन में बंधी हुई है।

सतिगुरि मिलिऐ धनु पाइआ हरिनामा रिदै समालि ।।३।।

सद्गुरु से मिलकर जिसने हरि नाम को अपने हृदय में संभाल कर रख लिया है उसने मानो सबसे बड़ा धन प्राप्त किया है ।।३।।

नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ ।।

गुरु की शरण में आकर जिसने स्थिर स्वभाव को प्राप्त किया है वही निर्मल पवित्र होकर प्रभु के नाम में रंग जाता है।

मनु तनु राता रंग सिउ रसना रसन रसाइ ।।

उसका मन और तन प्रभु नाम के रंग में रंगा जाता है और उसकी जिह्वा प्रभु नाम के रस से रसीली हो जाती है।

नानक रंगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ ।।४।।१४।।४७।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) हरि प्रभु ने आरम्भ से ही जिन्हें नाम का रंग लगा छोड़ा है उनका वह रंग कभी भी उतरता नहीं है ।।४।।१४।।४७

□

सिरीरागु महला ३ ।।

गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ।।
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै सोई ।।

हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई ।।१।।
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ।।
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ।।१।।रहाउ।।
आपे जगजीवनु सुख दाता आपे बखसि मिलाए ।।
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ।।
गुरमुखि आपे देइ वडाई आपे सेव कराए ।।२।।
देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ।।
सतगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस दी कीम न पाई ।।
हरिप्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइ सखाई ।।३।।
आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ।।
हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मंनि वसाई ।।
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ।।
।।४।।१५।।४८।।

□

गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ।

महान सद्गुरु जब कृपा करते हैं तभी प्रभु की भक्ति की जाती है गुरु की कृपा के बिना भक्ति नहीं होती ।

आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै सोई ।

सद्गुरु आप अपने साथ मिला लें तभी जीव प्रभु को समझ सकता है और तभी वह पवित्र (आत्मा) भी होता है ।

हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई ।।१।।

हरि प्रभु जी आप सत्य स्वरूप हैं, गुरु का शब्द उपदेश हरि प्रभु की ही सत्यवाणी है उसी सत्य वाणी के द्वारा ही हरि से मिलन होता है ।।१।।

भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ।

हे भाई भक्तिहीन होकर तू जग में क्यों आया है ।

पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ।।१।। रहाउ।।

(हे भाई तुमने) पूर्ण सद्गुरु की सेवा नहीं की और जन्म व्यर्थ ही गँवा दिया है ।।१।।रहाउ।।

आपे जगजीवनु सुख दाता आपे बखसि मिलाए ।

सम्पूर्ण संसार को जीवन दान देने वाला प्रभु आप ही सुखों का दाता है और आप ही जीव को बख्श कर अपने साथ मिला लेता है ।

जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ।

ये बेचारे जीव जन्तु क्या हैं (क्या सामर्थ्य है इनकी) ? तुम्हारे सम्बन्ध

में कोई क्या कह कर सुना सकता है।

गुरमुखि आपे देइ वडाई आपे सेव कराए ॥२॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीवों को प्रभु आप ही बड़प्पन देता है और आप ही उनसे अपनो सेवा कराता है ॥२॥

देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ।

जिस कुटुम्ब को देखकर उसके प्रति लोभित (आकृष्ट होकर) उससे मोह करता है वह चलते वक्त (अन्त समय) साथ नहीं जाता।

सतगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस दी कीम न पाई ।

जिसने सद्गुरु की सेवा करके गुणों का भंडार प्राप्त कर लिया है उसकी कीमत आंकी नहीं जा सकती।

हरिप्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥

हरि प्रभु मेरा बंधु है मेरा मित्र है और प्रभु ही अन्त समय में मेरा सहायक होगा ॥३॥

आपणै मनि चिति कहै कहाए बिन गुर आपु न जाई ।

अपने मन और चित में चाहे कोई कितना ही कहता रहे और कितना ही (दूसरों से) कहलवाता रहे परन्तु बिना गुरु के अपनापन (अहंकार) जाता नहीं।

हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मंनि वसाई ।

हरि प्रभु जी दाता है, भक्त वत्सल है और कृपा करके आप ही भक्तो के मन में (भक्ति की भावना) बसाता है।

नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥४॥१५॥४८॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जो (कथन करते हैं कि) प्रभु आप ही अपनी शोभा और गुण गायन की चेतना देता है और गुरु के सम्मुख होकर रहने वालों को बड़प्पन (प्रतिष्ठा) देता है ॥४॥१५॥४८॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु ॥

सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु ॥

दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु ॥१॥

मेरे मन गुरमुखि धिआइ हरि सोइ ॥

गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइ ॥१॥रहाउ॥

करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ॥

गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइ ॥

सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइ ।।२।।
जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइ ।।
चिरी विछुंने मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ ।।
आपे कार कराइसी अवरु न करणा जाइ ।।३।।
मनु तनु रता रंग सिउ हउमै तजि विकार ।।
अहिनिसि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरंकार ।।
नानक आपि मिलाइअनु पूरै सबदि अपार ।।४।।१६।।४९।।

□

धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु ।

धन्य है वह माता जिसने सर्वश्रेष्ठ प्रधान गुरु को जन्म दिया है, वह पिता भी धन्य है।

सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु ।

सद्गुरु की सेवा करने से सुख प्राप्त हुआ है और अन्तःकरण से गर्व चला गया है।

दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु ।।१।।

प्रभु के दास संत गुरु के द्वार पर खड़े होकर गुरु की सेवा करते हैं और तब गुणों के भंडार प्रभु को प्राप्त करते हैं ।।१।।

मेरे मन गुरमुखि धिआइ हरि सोइ ।

हे मेरे मन ! प्रभु के सम्मुख होकर हरि प्रभु का ध्यान कर।

गुर का सबदु मनि वसै मन तनु निरमलु होइ ।।१।।रहाउ।।

गुरु के उपदेश मन में बसने से मन और तन पवित्र हो जाता है ।।१।।रहाउ।।

करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ।

(गुरु की शरण में आने से) प्रभु की कृपा द्वारा भक्त अपने घर में आता है। (स्वस्वरूप) को पहचानता है और स्वस्वरूप में स्थित होने पर वही निजस्वरूप में) प्रभु आप उससे आकर मिलता है।

गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइ ।

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा स्थिर स्वभाव को प्राप्त होता है और (प्रभु के प्रेम रंग में) रंगा जाता है और (प्रतिपल प्रभु के गुणों को) सराहना करता है।

सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइ ।।२।।

वह सत्य स्वरूप होकर परम सत्य प्रभु में समा जाता है और इस तरह से मिल कर रहता है कि कभी भी बिछुड़ता नहीं है ।।३।।

जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइ ।

परमात्मा को जो कुछ करना है वह कर रहा है अन्य किसी से कुछ नहीं किया जाता ।

चिरी विछुने मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ ।

चिरकाल (जन्मजन्मान्तर) से बिछड़े हुए जीवों को सद्गुरु कृपा करके मिला देता है और वे प्रभु के पन्नों (लिखित सूची) पर अपना स्थान प्राप्त कर लेते हैं ।

आपे कार कराइसी अवरु न करणा जाइ ॥३॥

प्रभु आप ही जीव से कार्य करवा लेगा (जो उसे स्वीकार होगा) अन्य कोई कार्य जीव से किया नहीं जा सकता ॥३॥

मनु तनु रता रंग सिउ हउमै तजि विकार ।

जिनका मन और तन प्रभु प्रेम के रंग में रंगा गया है और जिन्होंने अहंकार एवं काम क्रोधादि विकारों का त्याग कर दिया है ।

अहिनिसि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरंकार ।

दिन रात जिनके हृदयों में निर्भयता प्रदान करने वाले निराकार प्रभु का नाम व्याप्त हो रहा है ।

नानक आपि मिलाइअनु पूरै सबदि अपार ॥४॥१६॥४९॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) ऐसे जीवों को परिपूर्ण अपरंपर शब्द ब्रह्म आप ही कृपा करके अपने से मिला लेता है । ॥४॥१६॥४९॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

गोविंदु गुणी निधानु है अंतु न पाइआ जाइ ॥
कथनी बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥
सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥१॥
भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥
बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥१॥रहाउ॥
जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ॥
अंम्रितु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥
पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥२॥
आपे देइ त पाईऐ होरु करणा किछू न जाइ ॥
देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥
जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥३॥

जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥

पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥

नानक सहजे ही रंगि वरतदा हरिगुण पावै सोइ ॥४॥१७॥५०॥

□

गोविंदु गुणी निधानु है अंतु न पाइआ जाइ ॥

गोबिन्द प्रभु गुणों का भण्डार है उसका अन्त नहीं पाया जा सकता।

कथनी बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥

केवल मुख से कथन मात्र करने से उस प्रभु को प्राप्त नहीं किया जा सकता। अन्तःकरण से हउमै (अहंकार) को नष्ट करने से वह प्रभु मिलता है।

सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥१॥

सद्गुरु को मिलने से और सदैव प्रभु परमात्मा के भय में रचे जाने से वह आप ही मन में आकर निवास करता है ॥१॥

भाई रे गरमुखि बूझै कोइ ॥

हे भाई ! गुरु के सम्मुख होकर रहने वाला कोई ही पुरुष प्रभु को समझता है।

बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥१॥रहाउ॥

बिना प्रभु को समझे अन्य जितने भी कर्म मनुष्य कमाता (करता) है, उनसे तो वह अपने मानव जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को गँवा बैठता है ॥१॥ रहाउ॥

जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ॥

जिन्होंने प्रभु नाम के रस को चखा है उन्होंने ही स्वाद प्राप्त किया है बिना इस स्वाद को चखे लोग भ्रमों में (व्यर्थ ही) भटकते रहते हैं।

अंम्रितु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥

प्रभु का सत्य नाम अमृत है, इस (अमृतरस के आनन्द अनुभव) का कथन (शब्दों द्वारा) कुछ भी (किंचित मात्र भी) नहीं किया जा सकता।

पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥२॥

जो जीव इस नाम अमृत रस को पी लेता है वह पीते ही प्रभु को कबूल हो जाता है और परिपूर्ण शब्द ब्रह्म में समा जाता है ॥२॥

आपे देइ त पाईऐ होरु करणा किछू न जाइ ॥

परन्तु यह नाम अमृत प्रभु आप जीव को दे तभी वह इसे प्राप्त कर सकता है, और कोई उपाय इसे प्राप्त करने के लिए नहीं किया जा सकता।

देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥

उस देने वाले प्रभु के अपने हाथ में ही यह दान की वस्तु है और इस वस्तु को गुरु के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥३॥

प्रभु ने जैसा जोव को (किया) बनाया है वेसा ही बन गया है और वैसे हो कर्म कराता है जैसे वह करता है ॥३॥

जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥

प्रभु का नाम ही मोक्ष साधना हेतु किए गए इन्द्रिय दमन के यत्न हैं, नाम ही सत्य साधना है और नाम ही संयम है, बिना नाम के जीव पवित्र नहीं होता।

पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥

पूर्ण भाग्यवान जीव के मन में ही प्रभु का नाम बसता है और सद्गुरु के शब्द उपदेश द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है।

नानक सहजे ही रंगि वरतदा हरिगुण पावै सोइ ॥४॥१७॥५०॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं कि) जो जीव सहज अवस्था में रहकर नानक के प्रभ के रंग में जोवन को व्यतीत करता है वही हरि के गुणों को प्राप्त कर लेता है॥४॥१७॥५०॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥
अधिआतम करम जे करे नामु न कबही पाइ ॥
गुर कै सबदि जीवतु मरै हरिनामु वसै मनि आइ ॥१॥
सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा ॥
गुरपरसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥१॥रहाउ॥
त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु ॥
पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥
सतगुरि मिलिऐ त्रिकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु ॥२॥
गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥
सबदि मरै ता उधरै पाए मोखदुआरु ॥
गुरपरसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु ॥३॥
इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥
दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥
नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥४॥१८॥५१॥

कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥

चाहे शरीर को कितना ही (हठयोग की कठिन क्रिआओं द्वारा कष्ट देकर) साधता (साधना करता) रहे और ऊर्ध्वगामी बनकर (ऊपर बांहें फैलाकर अथवा सिर नीचे और टांगें ऊपर फैला कर) तप करता रहे मन के अन्दर से अहंकार (हउमै) नहीं जाता।

अधिआतम करम जे करे नामु न कबही पाइ ॥

(ऐसा साधक) जितने भी आध्यात्मिक कर्म करता है उनसे नाम को कभी भी नहीं पा सकता।

गुर कै सबदि जीवतु मरै हरिनामु वसै मनि आइ ॥१॥

गुरु के शब्द उपदेश को सुनकर जब वह जीते जी मरता है (हउमै को मारता है) तब हरि प्रभु का नाम मन में आकर बसता है ॥१॥

सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा ॥

हे मेरे मन सुन सद्गुरु की शरण में आकर हरिनाम का भजन कर।

गुरपरसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥१॥रहाउ॥

गुरु की कृपा से ही विषय विकारों से छुटकारा मिलता है और संसार सागर को गुरु के शब्द उपदेश रूपी बेड़े द्वारा पार किया जा सकता है ॥१॥रहाउ॥

त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु ॥

सभी जीव त्रिगुणात्मक माया के पीछे दौड़ रहे हैं और द्वैत भाव और विकारों में फंसे हैं।

पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥

पंडित भी (ग्रन्थों को) पढ़ पढ़ कर (विद्वत्ता के मोह के) बंधन में बंधा हुआ है और वह भी विषय विकारों से प्रेम करता है और परमात्मा को समझता नहीं है।

सतगुरि मिलिऐ त्रिकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु ॥२॥

सदगुरु को मिलने से ही माया के तीन गुणों के प्रभाव से छुटकारा मिल सकता है और मनुष्य चौथे पद (परम पद) को प्राप्त कर विकारों से मुक्त होने का साधन प्राप्त कर लेता है ॥२॥

गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥

सद्गुरु से भक्ति के मार्ग की प्राप्ति हो जाती है और अज्ञान का अंधकार और (माया) का मोह नष्ट हो जाता है।

सबदि मरै ता उधरै पाए मोखदुआरु ॥

जब गुरु के शब्द उपदेश से (विकारादि का मोह) मार लेता है, तब ही

जीव का उद्धार होता है और वह विकारों से मुक्त होने का द्वार (साधन) प्राप्त कर लेता है।

गुरपरसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु ॥३॥

गुरु की कृपा से ही जीव कर्त्ता प्रभु के सत्य नाम से मिला रहता है ॥३॥

इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥

यह मन अत्यन्त बलशाली है यह किसी भी उपाय से जीव को छोड़ता नहीं।

दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥

द्वैत भाव वालों को यह बहुत से दुख (लगा) देता है और (यमदूत भी) उन्हें अत्यधिक सजा देता है।

नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥४॥१८॥५१॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) जिन जीवों ने गुरु के शब्द द्वारा हउमै (अहंभाव) को गँवा दिया है और प्रभु के नाम से लग गए हैं (प्रेम करते हैं) उनका ही इस (संसार सागर से) उद्धार होता है ॥४॥१८॥५१॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

किरपा करे गुरु पाईऐ हरिनामो देइ दृड़ाइ ॥
बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ॥
मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥१॥
मन रे दूजा भाउ चुकाइ ॥
अंतरि तेरे हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥१॥ रहाउ॥
सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥
हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥
मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोखदुआरु ॥२॥
हउमै विचि जगु बिनसदा मरि जंमै आवै जाइ ॥
मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥
गुर सेवा नाउ पाईऐ सचै रहै समाइ ॥३॥
सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥
अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥
नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥४॥१९॥५२॥

किरपा करे गुरु पाईऐ हरिनामो देइ दृड़ाइ ॥

जब प्रभु कृपा करता है तभी गुरु की प्राप्ति होती है और गुरु हरि के नाम को हृदय में दृढ़ कर देता है (हरि नाम की दृढ़ता प्रदान करता है)।

बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ॥

गुरु के बिना किसी ने भी प्रभु को प्राप्त नहीं किया है और गुरु को प्राप्त किए बिना जीव अपना जन्म व्यर्थ गँवा देता है।

मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥१॥

मन के पीछे लगने वाला (मनमुख) जितने भी विकारादि के कर्म करता उन (अशुभ कर्मों) के कारण उसे प्रभु की दरगाह में सज़ा मिलती है ॥१॥

मन रे दूजा भाउ चुकाइ ॥

हे मन द्वैत भाव को दूर कर (नष्ट कर)।

अंतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥१॥ रहाउ॥

हरि प्रभु तुम्हारे मन के अन्दर ही बसता है (उसे प्राप्त करने के लिए) गुरु की सेवा करो और (स्थायी) सुखों को प्राप्त करो ॥१॥रहाउ॥

सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥

जब जीव सत्यस्वरूप प्रभु का प्रेम हृदय में धारण करता है तभी उसे गुरु की वाणी सत्य और गुरु का शब्द सत्य प्रतीत होता है।

हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥

जब हरि का नाम मन में बस जाता है तो हउमै (अहंकार) और क्रोध की निवृत्ति हो जाती है।

मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोखदुआरु ॥२॥

पवित्र मन से जब प्रभु के नाम का ध्यान किया जाता है तो विकारों से मुक्त होने का साधन (उपाय) प्राप्त हो जाता है ॥२॥

हउमै विचि जगु बिनसदा मरि जंमै आवै जाइ ॥

सारा संसार अहंकार (हउमै) में ही विनष्ट हो रहा है मरता है फिर जन्म लेता है। आता है (आवागमन के चक्र में) और फिर जाता है।

मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥

मन की ओर उनमुख (मन की मानने वाला) गुरु के शब्द को नहीं जानता और वह (संसार से) अपनी इज्जत गँवा कर जायेगा।

गुर सेवा नाउ पाईऐ सचे रहै समाइ ॥३॥

गुरु की सेवा से ही प्रभु नाम की प्राप्ति होती है और परम सत्य में समा कर रहते हैं ॥३॥

सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥

गुरु के शब्द उपदेश को मानने से और मन में से आपा (अहंभाव) गँवाने से ही प्रभु को प्राप्त करते हैं।

अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥

जब जीव सत्यस्वरूप प्रभु से पूर्ण चित्तवृत्ति लगाकर सदैव दिन रात प्रभु की भक्ति करता है

नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥४॥१९॥५२॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी कथन करते हैं कि) तब ही हरि नाम का अमूल्य पदार्थ उस जीव के मन में बसता है और वह स्थिर अवस्था प्राप्त कर सत्य में समाहित हो जाता है ॥४॥१९॥५२॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ॥
घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ॥
सतगुर किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥
सचा सबदु न सेविआ सभि काज सवारणहारु ॥१॥
मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥
जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥रहाउ॥
सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥
सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥
सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥
मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥२॥
हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ॥
माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥
सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उरधारि ॥
किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि ॥३॥
सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥
आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥
धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥
सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥४॥
सतगुरु पुरखु न मनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥
इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥

हरि जीउ आपणी क्रिपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥
नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥५॥२०॥५३॥

□

जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ॥

जिन पुरुषों ने सद्‌गुरु की सेवा नहीं की है वे चारों युगों में दुखी रहते हैं।

घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ॥

अहंकार के कारण अभिमानी पुरुष ठगे जाते हैं और अपने अन्तःकरण में ही स्थित परम पुरुष परमात्मा को पहचानते नहीं हैं।

सतगुरु किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥

सद्‌गुरु के द्वारा फटकारे गए पुरुष मांग मांग कर थक जाते हैं परन्तु उन्हें (नाम सुख की) संसार में प्राप्ति नहीं होती।

सचा सबदु न सेविआ सभि काज सवारणहारु ॥१॥

सभी कार्यों को सफल कर देने वाले सत्यस्वरूप शब्द ब्रह्म की उन्होंने सेवा नहीं की है ॥१॥

मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥

हे मेरे मन ! तू सदा ही हरि प्रभु को अपने हुज़ूर (निकट) देख।

जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥रहाउ॥

शब्द ब्रह्म को सर्वत्र संसार में परिपूर्ण अनुभव करने से जन्म और मरण (आवागमन) के दुख मे निवृत्ति हो जाती है ॥१॥रहाउ॥

सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥

जो सत्यस्वरूप प्रभु के नाम का सहारा लेकर उस सत्यस्वरूप परमात्मा की ही सराहना करते रहते हैं वे जीव स्वयं भी सत्यस्वरूप हो जाते हैं।

सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥

ऐसे पुरुषों का सत्यस्वरूप प्रभु से प्यार होता है और वे सत्यकर्मों की ही कमाई करते हैं।

सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥

उस सच्चे शहंशाह का ही हुकुम इस संसार में चलता है और उसके हुकुम की उपेक्षा करने वाला कोई नहीं है।

मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥२॥

मन के पीछे लगने वाले मनमुख झूठ द्वारा ठगे गए (स्वयं भी) झूठे होते हैं और प्रभु के महल (स्वरूप) को प्राप्त नहीं करते ॥२॥

हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ॥

अहंकार करते हुए यह सारा ही संसार मृत्यु को प्राप्त हो रहा है क्योंकि गुरु के बिना (चारों ओर) अज्ञान का घना अन्धकार छाया हुआ है।

माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥

माया के मोह में बंधा हुआ संसार सुखों के दाता दानी प्रभु को भुला बैठा है।

सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उरधारि ॥

(परन्तु यदि जीव) सद्गुरु की सेवा करे और सत्यस्वरूप प्रभु को हृदय में धारण करके रखें तब उसका उद्धार हो सकता है।

किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि ॥३॥

प्रभु की कृपा से ही जीव गुरु के सत्य उपदेश पर विचार करता है और हरि प्रभु की प्राप्ति करता है ॥३॥

सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥

हउमै (अहंकार) और विकारों का त्याग कर सद्गुरु की सेवा करने से मन पवित्र होता है।

आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥

गुरु के शब्द उपदेश पर जो पुरुष विचार करता है वह अपनेपन (अहंभाव) का त्याग कर देता है और जीते जी मर जाता है।

धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥

(ऐसे पुरुषों का) सांसारिक धन्धों के पीछे भागना समाप्त हो जाता है और उन्हें सत्यस्वरूप प्रभु के नाम से प्यार (लग) हो जाता है।

सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥४॥

सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में रंगे हुए ऐसे पुरुषों के ही उस सत्यस्वरूप प्रभु के दरबार में मुख उज्जवल होते हैं।

सतगुरु पुरखु न मंनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥

जिन पुरुषों ने परमपुरुष परमात्मा स्वरूप गुरू के बचनों का मनन नहीं किया है और जिन्हें गुरू के शब्द उपदेश से प्यार नहीं (लगा) उत्पन्न हुआ है।

इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥

वे चाहे जितना भी तीर्थों का स्नान कर लें, दान-पुण्य कर लें, द्वैत भाव में फंसे वे पुरुष दुर्दशा को ही प्राप्त होते हैं।

हरि जीउ आपणी कृपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥

हरि प्रभु जी जब अपनी कृपा दृष्टि करते हैं तभी जीव का प्रभु के नाम

से प्यार लगता है।

नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ।।५।।२०।।५३।।

(ततीय गुरू) नानक जी (कहते हैं कि) हे जीव ! तू अपने गुरू से अपार प्रेम कर और प्रभु के नाम को संभाल कर ।।५।।२०।।५३।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

किसु हउ सेवी किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ।।
सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ।।

एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ।।
नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ ।।१।।

मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ।।
आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ।।१।।रहाउ।।

मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ।।
भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ।।

सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ।।
निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ।।२।।

जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ।।
सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाइ ।।

सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाइ ।।
मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ।।३।।

सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु न जाइ ।।
गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ ।।

सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ।।
नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ।।४।।२१।।५४।।

□

किसु हउ सेवी किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ।।

मैं किसकी सेवा करूं, क्या जाप करूं यह अपने सद्‌गुरु से जाकर पूछो।

सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ।।

अपने अन्तःकरण से आपा (अहंकार) गँवा कर सद्‌गुरू का हुकुम मान लो।

एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ॥

यही सेवा और चाकरी है और इससे ही प्रभु का नाम मन में आकर बसता है।

नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ ॥१॥

नाम ही से सुख की प्राप्ति होती है और परम सत्य शब्द ब्रह्म के निकट जीव शोभा पाता है ॥१॥

मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ॥

हे मेरे मन ! दिन रात जागकर (अज्ञान की निद्रा त्यागकर) हरिप्रभु का चिन्तन (स्मरण) कर ।

आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ॥१॥रहाउ॥

हे जीव ! तू अपनी (आयु रूपी) खेती की रखवाली (सार्थक उपयोग) कर ले नहीं तो (मृत्यु रूपी) टिड्डी दल तुम्हारी (आयु रूपी) खेती पर (टूट) पड़ेगा ॥१॥रहाउ॥

मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ॥

जिनके हृदय गुरू के शब्द उपदेश से परिपूर्ण है, उनके मन की सभी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।

भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ॥

जो प्रभु के भय को मानता है और दिन-रात प्रेम से प्रभु की भक्ति करता है और हरि प्रभु जी को सदैव अपने हुजूर (निकट) देखता है।

सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ॥

उसका सारा भ्रम चला जाता है (दूर हो जाता है) और वह अपने शरीर से दूर (आत्मस्वरूप) हो जाता है (शरीर की उपस्थिति का उसे एहसास नहीं होता वह केवल अपनी आत्मा का ही चिन्तन करता है)।

निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥२॥

ऐसी पवित्र आत्माएँ सत्य गुणों के भंडार मालिक प्रभु को प्राप्त कर लेती हैं ॥२॥

जो जागे सो उबरे सूते गए मुहाइ ॥

(अज्ञान की निद्रा को त्याग कर) जो जाग जाते हैं वे उबर जाते हैं (उनका उद्धार हो जाता है) और जो (अज्ञान की निद्रा में) सोए रहते हैं उनका मानव जन्म रूपी धन विकारादि द्वारा लूट लिया जाता है।

सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाइ ॥

वे सत्य शब्द को पहचानते नहीं हैं और उनका जीवत स्वप्न की भांति व्यतीत हो जाता है।

सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाइ ॥

वे सूने घर में आये हुए मेहमान की तरह होते हैं जैसे आते हैं वैसे ही चले जाते हैं।

मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ॥३॥

मन के पीछे लगने वाले मनमुख का जीवन व्यर्थ चला जाता है प्रभु के दरबार में वह कौन सा मुंह जाकर देगा (दिखायेगा) ॥३॥

सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु न जाइ ॥

सब कुछ वह प्रभु परमात्मा आप ही हैं जिनके मन में हउमै (अहंभाव) है उनसे यह कहा नहीं जाता।

गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ ॥

गुरु के शब्दों से ही उस प्रभु को पहचाना जाता है और पहचान लेने से फिर मन में से सारे हउमै (अहंकारादि से उत्पन्न) दुख दूर हो जाते हैं।

सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ॥

जो अपने सद्गुरु की सेवा करते हैं मैं उनके चरणों से लगता हूँ (चरण स्पर्श करता हूँ)।

नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ॥४॥२१॥५४॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) सत्य प्रभु के दरबार में जो जीव सत्य (मान लिए जाते) हैं मैं उन जीवों पर बलिहार जाता हूँ ॥४॥२१॥५४॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ॥
अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ॥
इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥
मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥१॥
मेरे मन हरि का नामु धिआइ ॥
साची भगति ता थीऐ जा हरि वसै मनि आइ ॥१॥रहाउ॥
सहजे खेती राहीऐ सचु नामु बीजु पाइ ॥
खेती जंमी अगली मनूआ रजा सहजि सुभाइ ॥
गुर का सबदु अंम्रितु है जितु पीतै तिख जाइ ॥
इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥२॥
आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ॥
बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥

हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥

तिन कउ महलु हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥३॥

नदरी नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥

पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ॥

अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ॥

नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥४॥२२॥५५॥

□

जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ।

यदि प्रभु की भक्ति करने के लिए किसी खास घड़ी या समय का विचार किया जाए तो किस विशेष समय में भक्ति हो सकती है ?

अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ।

दिन रात सत्य स्वरूप प्रभु के नाम रंग में रंगे रहने से सदा स्थिर रहने वाली सच्ची शोभा (प्राप्त) होती है ।

इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ।

एक पल के लिए भी प्यारा प्रभु भूल जाय तो फिर भक्ति कैसे हो सकती है ।

मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥१॥

सत्य स्वरूप प्रभु की भक्ति से मन और तन शान्त रहता है और (आयु का) एक भी श्वास व्यर्थ नहीं जाता ॥१॥

मेरे मन हरि का नामु धिआइ ।

हे मेरे मन ! तू हरि प्रभु के नाम का ध्यान धारण कर ।

साची भगति ता थीऐ जा हरि वसै मनि आइ ॥१॥रहाउ॥

सच्ची भक्ति तभी होती है जब हरि प्रभु मन में आकर बसे ॥१॥रहाउ॥

सहजे खेती राहीऐ सचु नामु बीजु पाइ ।

भक्ति रूपी खेती करने के लिए पहले स्थिर बुद्धि रूपी धरती को शुद्ध (साफ) करो फिर उसमें सत्यस्वरूप प्रभु के नाम का बीज डालो ।

खेती जंमी अगलो मनूआ रजा सहजि सुभाइ ।

भक्ति की फसल इतनी ज्यादा होती है कि मन उस फसल को देखकर पूर्ण तृप्त हो जाता है और स्थिर स्वभाव को प्राप्त होता है ।

गुर का सबदु अंम्रितु है जितु पीतै तिख जाइ ।

गुरु का शब्द उपदेश अमृत है जिसे पीकर तृष्णा समाप्त हो जाती है ।

इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥२॥

(और तब) मन में सत्य का प्रकाश होता है और मन सत्य (प्रभु के प्रेम) रंग में रंगा जा कर (अन्त में) परम सत्य में ही समा जाता है ॥२॥

आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ।

ऐसे जीव का कहना देखना और बोलना सभी शब्द ब्रह्म में समाए रहते हैं ।

बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ।

वह जीव सदा स्थिर रहने वाले उस सत्य प्रभु के ही गुण सुनाता है जिस सत्यस्वरूप प्रभु की वाणी (यशगान) चारों युगों में निनादित होती (बजती) है ।

हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ।

उस जीव का अहंकार और आपा (मेरापन) समाप्त हो जाता है और सत्यस्वरूप प्रभु उसे अपने से मिला लेता है ।

तिन कउ महलु हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥३॥

जो जीव सत्य स्वरूप प्रभु से प्रेम करते रहते हैं प्रभु का स्वरूप उनके हुजूर (निकट) होता है ।

नदरी नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ।

प्रभु को दया दृष्टि से ही प्रभु नाम का ध्यान धारण होता है, प्रभु की कृपा दृष्टि के बिना प्रभु को प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ।

पूर्ण भाग्यशाली वही पुरुष होता है जो सत्संगति में आकर उसका पूरा लाभ ग्रहण करता है और (सत्संगति में आकर) जिसका सद्गुरु से मिलन होता है ।

अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ।

दिन रात प्रभु के नाम में रंगे हुए जीव के मन में से विषय विकारों से उत्पन्न दुख नष्ट हो जाता है ।

नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥४॥२२॥५५॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरु का शब्द उपदेश ही प्रभु से मिलाने वाला है और गुरु के शब्द उपदेश से ही नाम लेने वाला जीव प्रभु के नाम में समाहित हो जाता है ॥४॥२२॥५५॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥

सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ॥
दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उरधारि ॥
सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥१॥
मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ॥
हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥१॥रहाउ॥
सचै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ॥
अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ॥
जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतुगुर बूझ न पाइ ॥
जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥२॥
विणु नावै सभ डुमणी दूजै भाइ खुआइ ॥
तिसु बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ॥
भरमि भुलाणा अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ॥
नदरि करे प्रभु आपणी आपे लए मिलाइ ॥
सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ॥
पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ॥
सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइ ॥
जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइ ॥४॥२३॥५६॥

□

आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ।

प्रभु अपना भय उन लोगों के हृदयों में उत्पन्न करता है जो पुरुष सद्गुरु के शब्द उपदेश पर विचार करते हैं ।

सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ।

(ऐसे पुरुष) सदैव सत्संगति में मिलकर रहते हैं और सत्यस्वरूप प्रभु के गुणों की संभाल करते हैं ।

दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उरधारि ।

उनके हृदयों में से द्वैत भाव की मैल समाप्त हो जाती है और वे हरि प्रभु को अपने हृदयों में धारण करके रखते हैं ।

सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥१॥

वे सत्य प्रभु की सदा स्थिर सत्य वाणी ही बोलते हैं और सदा स्थिर सत्य प्रभु ही उनके मन में बसता है और सत्य प्रभु से ही उनका प्यार होता है ॥१॥

मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ।

हे मेरे मन ! यह जीव हउमै (अहं) की मैल से भरा हुआ है ।

हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥१॥रहाउ॥

केवल हरि ही (मैल से रहित शुद्ध) पवित्र है और शाश्वत सौन्दर्यवान है। जीव को (केवल) गुरु का शब्द उपदेश ही सजा सँवार (कर पवित्र कर) सकता है ॥१॥ रहाउ॥

सचै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ।

जिन जीवों का मन उस सत्य उपदेश से मोहित हो जाता है उन्हें प्रभु स्वयं अपने से मिला लेता है।

अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ।

दिन रात प्रभु के नाम में रंग जाने से उनकी ज्योति परम ज्योति में समा जाती है।

जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतगुर बूझ न पाइ ।

आत्म ज्ञान (के प्रकाश, द्वारा ही प्रभु को जाना जाता है। परन्तु आत्म ज्ञान को सूझ बूझ सद्गुरु की शरण में आए बिना प्राप्त नहीं होती।

जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥२॥

जिनके मस्तक पर पहले से ही प्रभु द्वारा भाग्य लिखा गया है उन्हें ही सद्गुरु आकर मिलता है ॥२॥

विणु नावै सभ डुमणी दूजै भाइ खुआइ ।

प्रभु के नाम के बिना सारा संसार दु:चता हो रहा है और द्वैत भाव के कारण खोया (भटका) हुआ है ॥३॥

तिसु बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ।

प्रभु के नाम के बिना एक घड़ी भी यह संसार सुख का जीवन नहीं जी सकता और (विकारादि में फँसा) दुखी होकर जीवन रूपी रात्रि को व्यतीत करता है।

भरमि भुलाणा अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ।

भ्रम में आत्मस्वरूप को भूला हुआ अज्ञानान्ध जीव बार बार आवागमन के चक्र में आता है और जाता है।

नदरि करे प्रभु आपणी आपे लए मिलाइ ॥३॥

यदि प्रभु अपनी दया दृष्टि कर दे तो आप ही उस जीव को अपने साथ मिला लेता है ॥३॥

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ।

प्रभु आप ही सब कुछ सुनता है और देखता है उसके सामने (किए गए पाप कर्मों से) इन्कार कैसे किया जा सकता है।

पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ।

(पूर्व जन्म की) पापी जीवात्मा (इस जन्म में भी) पापों की कमाई करती है और पाप में ही जलती है और दूसरों को भी जलाती है ।

सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइ ।

मन के पीछे लगने वाले अज्ञानी जीव को वह प्रभु नज़र नहीं आता और इसलिए वह प्रभु को समझ ही नहीं पाता ।

जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइ ।।४।।२३।।५६।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु आप जिस जीव को (अपना स्वरूप) दिखाते हैं वही उसे देखता है गरु के सम्मुख रहने वाले जीव ही प्रभु को प्राप्त कर सकते हैं ।।४।।२३।।५६।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ।।
गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ।।
गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ ।।१।।
मन रे निजघरि वासा होइ ।।
रामनामु सालाहि तू फिरि आवणजाणु न होइ ।।१।।
हरि इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइ ।।
सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ।।
सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै देइ ।।२।।
हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ।।
बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ।।
बिनु नावै ठउरु न पाइनी जमपुरि दूख सहाहि ।।३।।
जीउ पिंडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ।।
गुर परसादी बूझीऐ ता पाए मोखदुआरु ।।
नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु ।।४।।२४।।५७।।

□

बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ।

सद्गुरु के बिना अज्ञान का रोग टूटता नहीं है और (अज्ञान से उत्पन्न) हउमै की पीड़ा दूर नहीं जाती ।

गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ।

गुरू की कृपा से ही प्रभु का नाम मन में बसता है और जीव प्रभु के नाम में समा जाता है ।

गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ ।

गुरू के शब्द उपदेश द्वारा ही हरि प्रभु की प्राप्ति होती है, बिना शब्द उपदेश के (मन) भ्रम में भटकता रहता है ।

मन रे निजघरि वासा होइ ।

हे मेरे मन ! तुम्हारा निजस्वरूप में निवास हो जाए ।

रामनामु सालाहि तू फिरि आवणजाणु न होइ ॥१॥रहाउ॥

(इसके लिए) तुम राम के नाम की सराहना करो (स्मरण करो) ऐसा करने से तुम्हारा फिर आवागमन के चक्र में आना (जन्म लेना) और जाना (मरना) नहीं होगा ॥१॥रहाउ॥

हरि इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइ ।

एकमात्र हरि प्रभु ही सारे संसार को देने वाला है, सर्वत्र वही व्याप्त हो रहा है और इसके अतिरिक्त कोई भी नहीं है ।

सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ।

गुरू के शब्द उपदेशानुसार प्रभु की सराहना करने से वह मन में आकर बसता है और तब जोव स्थिर अवस्था को प्राप्त कर आत्मिक रूप से सुखी हो जाता है ।

सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै देइ ॥२॥

सभी जीव उसकी दृष्टि में है, वह सबको देखता है उसे जिसको देना अच्छा लगता है, उसे ही वह (नाम भक्ति का) दान देता है ॥२॥

हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ।

गिनती (गणना) में आने वाली सभी वस्तुएें हउमै (अहंकार को बढ़ावा देती) हैं, द्रव्य पदार्थों की गणना करने वाले को सुख नहीं होता ।

बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ।

विषय विकारों के लिए ही कर्मों की कमाई (कर्म) करने वाला विषय विकारों (की आग) में ही समा जाता है ।

बिनु नावै ठउरु न पाइनी जमपुरि दूख सहाहि ॥३॥

प्रभु नाम स्मरण के बिना सुखशान्ति के लिए कहीं भी ठिकाना प्राप्त नहीं होता और जीव यम की नगरी में जाकर (भारी) दुख सहता है ॥३॥

जीउ पिंडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ।

यह प्राण और शरीर सब उस प्रभु का ही है उसी का सभी जीवों को सहारा है ।

गुर परसादी बूझीऐ ता पाए मोखदुआरु ।।

गुरू की कृपा से यदि ऐसा समझ में आ जाए तो विकारों से मुक्ति का साधन प्राप्त कर लिया जाता है।

नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु ।।४।।२४।।५७।।

(श्री गुरू अमरदास) नानक जी (कहते हैं) हे जीव ! तू उस प्रभु के नाम की सराहना कर, जिस प्रभु का आरपार व अन्त जाना नहीं जा सकता ।।४।।२४।।५७।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ।।
गुरसबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ।।
सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ।।
किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ।।१।।
मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ।।
सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ।।१।।रहाउ।।
सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ ।।
गुरसबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइ ।।
जिहवा रती सबदि सचै अंम्रितु पीवै रसि गुण गाइ ।।
गुरमुखि एहु रंगु पाईऐ जिसनो किरपा करे रजाइ ।।२।।
संसा इहु संसारु है सुतिआ रैणि विहाइ ।।
इकि आपणै भाणै कढि लइअनु आपे लइओनु मिलाइ ।।
आपे ही आपि मनि वसिआ माइआ मोहु चुकाइ ।।
आपि वडाई दितीअनु गुरमुखि देइ बुझाइ ।।३।।
सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ।।
इकि आपे आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ ।।
गुरमती हरि पाईए जोती जोति मिलाइ ।।
अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ ।।४।।२५।।५८।।

□

तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ।

उन्हीं जीवात्माओं को आत्मिक आनन्द प्राप्त है और वे ही सदैव सुखी है जिन्हें प्रभु के सत्य नाम का सहारा है।

गुरसबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ।

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा ही उन्होंने दुखों को दूर करने वाले सत्य

स्वरूप प्रभु की प्राप्ति की है।

सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु।

(ऐसे जीव) सदैव सर्वदा सत्यस्वरूप प्रभु के गुणों का गायन करते हैं और उन्हें सत्यस्वरूप प्रभु के नाम से ही प्यार होता है।

किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु।

ऐसे जीवों को प्रभु ने अपनी कृपा दृष्टि करके भक्ति का भंडार दान दिया है ॥१॥

मन रे सदा अनंदु गुण गाइ।

हे मेरे मन तू सदैव आनन्ददायक प्रभु के गुणों का गान कर।

सची वाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥रहाउ॥

सत्य वाणी का गायन करने से ही हरि प्रभु को पाया जाता है और हरि प्रभु मे समाए रहते हैं ॥१॥ रहाउ॥

सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ।

सत्य स्वरूप प्रभु की भक्ति में जिसका मन अनुरक्त हो गया है वह भक्ति रंग में रंगा हुआ जिज्ञासु स्वाभाविक ही आत्मस्थिरता म रहता है।

गुरसबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइ।

गुरु के शब्द उपदेश से उसका मन इतना मोहित हो जाता है कि उसकी मस्त अवस्था के सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता।

जिहवा रती सबदि सचै अंम्रितु पीवै रसि गुण गाई।

उसकी जिह्वा गुरु के शब्द उपदेश में रंगी जाती है (गुरु उपदेश का ही उच्चारण करती है) वह सत्य प्रभु के नाम रूपी अमृत को पीती है और प्रेम (रस में) मग्न होकर प्रभु के गुणों का गायन करती है।

गुरमुखि एहु रंगु पाईऐ जिसनो किरपा करे रजाइ ॥२॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले पुरुष ही इस (भक्ति) रंग को प्राप्त करते हैं और (वे पुरुष प्राप्त करते हैं) जिन पर प्रभु अपनी इच्छानुसार कृपा करता है ॥२॥

संसा इहु संसारु है सुतिआ रैणि विहाइ।

यह संसार शंका में है और अज्ञान रूपी निद्रा में सोकर जीवन रूपी रात्रि को व्यतीत करता है।

इकि आपणै भाणै कढि लइअनु आपे लइओनु मिलाइ।

कई जीवों को प्रभु ने अपनी इच्छानुसार सन्देह (शंका) से बाहर निकाल लिया है और अपने साथ मिला लिया है।

आपें ही आप मनि वसिआ माइआ मोहु चुकाइ ।

प्रभु ने अपने आप ही उनके मन में आकर निवास किया है और उनका माया के साथ मोह दूर कर दिया है ।

आपि बडाई दितीअनु गुरमुखि देई बुझाइ ।।३।।

गुरु के सम्मुख आए हुए जिन जीवों को गुरु समझा देता है उन्हें प्रभु आप ही लोक परलोक में बड़प्पन प्रदान करता है ।।३।।

सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ।

सभी जीवों को देने वाला दाता एक है और वही भूले (भटके) हुए जीवों को समझा देता है ।

इकि आपे आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ ।।

कई जीवों को प्रभु ने आप ही अपने से विच्छिन्न किया है और कई दूसरे जीवों को अपने साथ लगा छोड़ा है ।

गुरमती हरि पाईऐ जोती जोति मिलाइ ।।

गुरु द्वारा दी गई शिक्षा से ही हरि प्रभु को पाया जाता है और प्रभु की परम ज्योति में जीव को ज्योति मिलती है ।

अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ ।।४।।२५।।५८।।

दिन रात प्रभु के नाम में रंगे हुए जीव नानक नाम में ही समा जाते हैं ।।४।।२५।।५८।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

गुणवंती सचु पाइआ त्रिसना तजि विकार ।।
गुरसबदी मनु रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ।।
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु मनि वीचारि ।।
मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुरसबदि न करे पिआरु ।।१।।
मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ।।
निजघरि वसहि अंमृतु पीवहि ता सुख लहहि महलु ।।१।।रहाउ।।
अउगुणवंती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ।।
मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ।।
जिनी सचु पछाणिआ सचि रते भरपूरि ।।
गुरसबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ।।२।।
आपे रंगणि रंगिओनु सबदे लईओनु मिलाइ ।।
सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ।।
चारे कुंडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइ ।।

जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइ ॥३॥
मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोई ॥
मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥
सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइ ॥
सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइ ॥४॥२६॥५९॥

□

गुणवंती सचु पाइआ त्रिसना तजि विकार ॥

गुणवती (महान जीवात्मा) तृष्णा आदि विकारों को त्याग कर सच्चे परमात्मा पति को प्राप्त करती है ।

गुरसबदी मनु रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ॥

गुरू के शब्द उपदेश में उसका मन रंगा रहता है और उसकी जिह्वा उसी प्यारे प्रभु से प्रेम करती है ।

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु मनि वीचारि ॥

मन में भली भांति विचार करके देख लो सद्गुरु की (शरण में आए) बिना किसी ने भी प्रभु को प्राप्त नहीं किया है ।

मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुरसबदि न करे पिआरु ॥१॥

मन के पीछे लगने वाले मनुष्य (के मन पर लगो विकारों) की मैल तब तक नहीं उतरती जब तक वह सद्गुरु के शब्द से प्यार नहीं करता ॥१॥

मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ॥

हे मेरे मन ! तू सद्गुरू के हुकुम के अनुसार चल ।

निजघरि वसहि अंमृतु पीवहि ता सुख लहहि महलु ॥१॥रहाउ॥

अपने घर में बस कर (निज स्वरूप को पहचान कर) नाम रूपी अमृत को पीएगा तभो प्रभु के स्वरूप (मिलन) का सुख लेगा ॥१॥रहाउ॥

अउगुणवंती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ॥

अवगुणों से परिपूर्ण जिन जीवात्मा रूपी स्त्रियों में कोई गुण नहीं है (शुभ कर्मों का अभाव है) उन्हें परमात्मा पति के हुजूर (निकट) बैठने को नहीं मिलता ।

मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ॥

मनमुख (मन की मानने वाला) गुरू के शब्द उपदेश को नहीं जानता अपने अवगुणों के कारण वह प्रभु से दूर है ।

जिनी सचु पछाणिआ सचि रते भरपूरि ॥

जिन्होंने सदा स्थिर प्रभु को पहचान लिया है वे सदा स्थिर रहने वाले

परिपूर्ण प्रभु में ही अनुरक्त है ।

गुरसबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ॥२॥

गुरू के शब्द उपदेश से जिन का मन बिंध गया है उन्हें प्रभु परमात्मा अपने हुजूर (निकट) में ही मिल जाता है ॥२॥

आपे रंगणि रंगिओनु सबदे लइओनु मिलाइ ॥

जो प्रभु भक्ति के रंग में रंगे होते हैं उन्हें शब्द ब्रह्म आप ही अपने से मिला लेता है ।

सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ॥

जिन्हें सत्य स्वरूप प्रभु से गहरा प्रेम है और जो उस सत्य प्रभु के प्रेम के रंग में रंगे हुए हैं उनका सच्चे प्रेम का रंग कभी उतरता नहीं है ।

चारे कुंडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइ ॥

मन के पीछे लगने वाले मनमुख चारों दिशाओं में घूमते घूमते थक गए हैं लेकिन वे प्रभु को समझ नहीं पाते हैं ।

जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइ ॥३॥

जिसे सद्गुरू मिलाता है वही मिलता है और वही सत्य शब्द ब्रह्म में समाता है ॥२॥

मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥

मैं अनेकों सांसारिक मित्र बना बना कर थक गई हूँ कि कोई मेरा दुख काटेगा (दूर करेगा) ।

मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥

(परन्तु) दुख प्रियतम प्रभु से मिलकर ही कटता है (दूर होता है) और प्रियतम प्रभु से मिलन गुरू के शब्द उपदेश द्वारा ही होता है ।

सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइ ॥

जिसने सत्य की राशि पूंजी लेकर सत्य (नाम) की कमाई की है उन सत्कर्मी मनुष्यों की ही स्थाई शोभा होती है ।

सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइ ॥४॥२६॥५९॥

(श्री गुरू अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) जो जीव गुरू के सम्मुख होकर स्थिर प्रभु से मिल जाता है वह कभी भी नहीं बिछुड़ता ॥४॥२६॥५९॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

आपे कारणु करता करे स्रिसटि देखै आपि उपाइ ॥

सभ एको इकु वरतदा अलखु न लखिआ जाइ ॥

आपे प्रभू दइआलु है आपे देइ बुझाइ ॥
गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाइ ॥१॥
मन मेरे गुर की मंनि लै रजाइ ॥
मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आइ ॥१॥रहाउ॥
जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ॥
गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥
से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥
गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले करतारि ॥२॥
गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अंतु न पारावारु ॥
घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥
गुरसबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ ॥
साधन नावै बाहरी अवगणवंती रोइ ॥३॥
सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ त्रिपति होइ ॥
गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइ ॥
आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा न होइ ॥
नानक गुरु सालाही आपणा जिदू पाई प्रभु सोइ ॥४॥२७॥६०॥

□

आपे कारणु करता करे स्रसटि देखै आपि उपाइ ॥

प्रभु आप ही सृष्टि का कारण है आप ही कर्त्ता है (तत्वों को बनाने वाला है) आप ही प्रभु सृष्टि (की रचना) करता है और रचना करके आप ही उसकी देखभाल (संभाल) करता है।

सभ एको इकु वरतदा अलखु न लखिआ जाई ॥

सभी जीवों में वही एक अकेला प्रभु ही व्याप्त है वह अदृश्य है और जीवों को दिखाई नहीं देता।

आपे प्रभू दइआलु है आपे देइ बुझाइ ॥

जिस जीव पर प्रभु आप दयालु हो जाता है उसे वह आप ही (ऐसा) सुझा देता है।

गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाई ॥१॥

गुरु की शिक्षा पर चलने वाले जीवों के हृदय में प्रभु सदैव निवास करता है और (ऐसे जीव) अपनी चित्तवृत्ति को सत्य स्वरूप प्रभु में लिप्त करके रखते हैं ॥१॥

मंन मेरे गुर की मंनि लै रजाइ ॥

हे मेरे मन ! तू गुरु का हुकुम मान ले ।

मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आई ॥१॥रहाउ॥

(इससे) तेरा मन तन सब शान्त हो जायेगा और तेरे मन में प्रभु का नाम आकर बस जायेगा ॥१॥ रहाउ॥

जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ॥

जिसने स्वयं कारण करके (बनकर) इस सारी सृष्टि को धारण किया है (रचना की है) वही प्रभु इस सृष्टि की संभाल भी करता है ।

गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥

जब प्रभु आप दया दृष्टि करता है तभी गुरु के शब्द उपदेश को पहचाना जाता है ।

से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा ही प्रभु के वे दास सदा स्थिर प्रभु के दरबार में शोभा को प्राप्त करते हैं ।

गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले करतारि ॥२॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीव सदा स्थिर प्रभु के शब्द (गुणगान) में रचे रहते हैं और उन्हें कर्त्ता प्रभु अपने से मिला लेता है ॥२॥

गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अंतु न पारावारु ॥

गुरू की शिक्षा लेकर सत्य प्रभु की सराहना करते हैं जिस प्रभु के आर पार का अन्त नहीं है ।

घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥

घट घट (प्रत्येक जीव) में वह हुकुमदाता प्रभु स्वयं बस रहा है और अपने हुकुम के अनुसार ही वह जीवों के कर्मों पर विचार करता है ।

गुरसबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ ॥

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा उसकी सराहना की जाने से अन्तःकरण से हउमै (अहंकार) खोया जाता है (दूर हो जाता है) ।

साधन नावै बाहरी अवगणवंती रोइ ॥३॥

वह स्त्री जो प्रभु के नाम से बाहर है (प्रभु का नाम स्मरण नहीं करती वह अवगुणवती स्त्री सदैव रोती रहती है (दुखी रहती है) ॥३॥

सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ त्रिपति होइ ॥

सत्य प्रभु की सराहना करने से सत्यस्वरूप प्रभु को (सेवा में) लगने से और सत्यस्वरूप प्रभु के नाम को (जपने से) तृप्ति होती है।

गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइ ।।

प्रभु के गुणों पर विचार करने से और अवगुणों को निकाल कर मन की मैल को धोकर उसमें शुभ गुणों का संग्रह (संचय) करने से —

आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा न होइ ।।

प्रभु आप ही मेल मिला देता है (प्रभु चरणों से मिलन हो जाता है) और फिर कभी भी विछोह नहीं होता।

नानक गुरु सालाही आपणा जिदू पाई प्रभु सोइ ।।४।।२७।।६०।।

नानक अपने उस गुरु की सराहना करता है जिसके द्वारा (जिसकी शरण में आकर) उस प्रभु परमात्मा को प्राप्त कर लिया है ।। ४।।२७।।६०।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

सुणि सुणि काम गहेलीए किआ चलहि बाह लुडाइ ।।
आपणा पिरु न पछाणही किआ मुह देसहि जाई ।।
जिनी सखीं कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाइ ।।
तिन ही जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाई ।।१।।
मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ।।
पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईऐ गुर वीचारि ।।१।।रहाउ।।
मनमुखि कंतु न पछाणई तिन कउ रैणि विहाई ।।
गरबि अटीआ त्रिसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाई ।।
सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाई ।।
सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखि विहाई ।।२।।
गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाईआ जाई ।।
अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाई ।।
आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाई ।।
पूरै भागि सतगुरु मिलै पिरु पाईआ सचि समाई ।।३।।
से सहीआ सोहागणी जिन कउ नदरि करेई ।।
खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देई ।।
घरि वरु पाईआ आपणा हउमै दूरि करेइ ।।
नानक सोभावंतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेइ ।।४।।२८।।६१

□

सुणि सुणि काम गहेलीए किआ चलहि बाह लुडाइ ॥

हे कामवासना से ग्रसित (जीवात्मा) सुन ! (अच्छी तरह कानों से) सुन ! क्या बाहें डुला डुला कर चलती है।

आपणा पिरु न पछाणही किआ मुखु देसहि जाई ॥

अपने प्रियतम प्रभु को तो तू पहचानती नहीं है कौन सा मुँह (परलोक में) जाकर देगी (दिखाओगी)।

जिनी सखीं कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाई ॥

जिन जीवात्मा रूपी सखियों ने अपने प्रियतम प्रभु को पहचाना है मैं उनके पैर लगती (चरण स्पर्श करती) हूँ।

तिन ही जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाई ॥१॥

सत्संगति के मिलन में अपने आपको मिलाकर मैं भी उनके जैसी ही होकर रहूं।

मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥

हे मुग्धे ! तू झूठी है और झूठ द्वारा ठगी जा रही है।

पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईऐ गुर बीचारि ॥१॥रहाउ॥

प्रियतम प्रभु जो सत्यस्वरूप है उसे गुरु द्वारा दी गई विचार से ही पाया जाता है ॥१॥ रहाउ ॥

मनमुखि कंतु न पछाणई तिन कउ रैणि विहाई ॥

मन के पीछे चलने वाली मनमुख जीव स्त्री अपने पति परमेश्वर को नहीं पहचानती तो उसकी आयु रूपी रात्रि कैसे (सुख से) व्यतीत हो सकती है।

गरबि अटीआ त्रिसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाई ॥

गर्व के भार मे दबी तृष्णा में जलती हुई द्वैत भाव के कारण वह दुख प्राप्त करती है।

सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाई ॥

गुरू के शब्द उपदेश में रंगी हुई (वे जीव स्त्रियां) सौभाग्यवती है जिनके अन्तःकरण से हउमै (अहंकार) चला गया (नष्ट हो गया है)।

सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखी विहाई ॥२॥

वे सदैव अपने प्रियतम प्रभु से रमण करती है और उनके जीवन में सुख ही सुख व्याप्त हो जाता है ॥२॥

गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाईआ जाई ॥

ज्ञान से विहीन पति परमात्मा द्वारा त्यागी गई जीव स्त्रियों के द्वारा पति का प्रेम नहीं पाया जाता (पति का प्रम प्राप्त नहीं कर सकती)।

अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखें भुख न जाई ॥

उनकी बुद्धि में अज्ञान का अंधेरा है बिना प्रियतम प्रभु को देखे आत्मिक सुख की भूख जाती (मिटती) नहीं है।

आवह मिलह सहेलीहो मैं पिरु देह मिलाई ॥

आओ (मेरी सत्संगी) सखियो (मुझसे) मिलो और (मुझे मेरे) प्रियतम प्रभु से मिला दो।

पूरें भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाईआ सचि समाई ॥३॥

पूर्ण भाग्यशाली होने से ही सद्गुरु मिलते हैं (सदगुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से ही) प्रभु प्रियतम को प्राप्त किया जाता है और सत्य स्वरूप प्रभु में अभेद हुआ जाता है ॥३॥

सें सहीआ सोहागणी जिन कउ नदरि करेंई ॥

वे ही जीवात्मा रूपी सखियां सुहागिन हैं जिन पर प्रभु परमात्मा कृपा दृष्टि करता है।

खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगैं देई ॥

(ये जीव स्त्रियां ही) अपने स्वामी प्रभु को पहचान लेती हैं और अपना तन मन उसके आगे समर्पित कर देती हैं।

घरि वरु पाईआ आपणा हउमै दूरि करेंई ॥

(ये जीवस्त्रियां) अन्तःकरण से हउमै (अहंकार) को दूर कर अपने घर (हृदय) में ही प्रभु प्रियतम पति को प्राप्त कर लेती है।

नानक सोभावंतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेंई ॥४॥२८॥६१॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) वे जीव स्त्रियां ही शोभायुक्त हैं सौभाग्यवती हैं (जो जीवस्त्रियां) दिन रात प्रभु की भक्ति है ॥४॥२८॥६१॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

ईकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाई ॥
सतिगुरु सेवी भाउ करि मैं पिरु देह मिलाई ॥

सभु उपाए आपें वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥
जिनि पिरु संगें जाणिआ पिरु रावे सदा हदूरि ॥

मुंधे तू चलु गुर कै भाई ॥
अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाई ॥१॥रहाउ॥

सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥
हरिवरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥
सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥
सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥२॥
पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥
मनु तनु अरपी सिरु देई तिनकै लागा पाइ ॥
जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥
गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ ॥३॥२६॥६२॥

□

इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ।

कई ऐसी भी जीव स्त्रियां हैं जो अपने प्रभु प्रियतम के साथ रमण करती हैं, मैं (अपने पति प्रभु को प्राप्त करने की विधि) पूछने के लिए किसके द्वार पर जाऊँ ।

सतिगुरु सेवी भाउ करि मैं पिरु देहु मिलाइ ।

मैं प्रेम से सद्गुरु की सेवा करूँगी और वही मुझे मेरे प्रियतम प्रभु से मिला देगा।

सभु उपाए आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ।

प्रभु ने आप ही सभी जीवों को पैदा किया है और आप ही उनकी देख रेख (संभाल) करता है परन्तु किसी को वह निकट और किसी को दूर दिखाई देता है ।

जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे सदा हदूरि ॥१॥

जो जीव स्त्री प्रियतम प्रभु को अपने साथ मानती है वह सदैव उसके हुजूर (निकट) होकर रमण करती है ॥१॥

मुंधे तू चलु गुर कै भाई ।

हे (सांसारिक सुखों के प्रति) मुग्ध हुई जीवस्त्री तू सद्गुरु से प्रम कर और उसके बताए हुए मार्ग पर चल ।

अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥१॥रहाउ॥

दिन रात अपने प्रियतम प्रभु के साथ आनन्द रमण करती हुई स्थिर अवस्था को प्राप्त कर और परम सत्य में समा ॥१॥ रहाउ॥

सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ।

जो जीवात्मा गुरु के शब्द उपदेश में रंग जाती है वह सौभाग्यवती होती है और सत्यस्वरूप प्रभु के हुकुम (शब्द) से अपने को सजा संवार लेती है ।

हरिवरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥

गुरु के निमित्त स्वयं को समर्पित करके और गुरु से प्रेम करके वह हरि प्रभु पति को अपने घर (हृदय) में ही प्राप्त कर लेती है।

सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥

उसकी हृदय रूपी शैय्या शोभायमान हो जाती है (क्योंकि उस पर) हरि प्रभु प्रेम से रमण करता है और उस जीवस्त्री के हृदय में प्रभु की भक्ति के भंडार भर जाते हैं।

सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥२॥

वह प्रभु प्रियतम जो सब को सहारा देने वाला है उसके मन में आकर बस जाता है ॥२॥

पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ।

जो जीवस्त्री अपने प्रियतम प्रभु की सराहना में ही लगी रहती है मैं उसके सदैव बलिहार जाता हूँ।

मनु तनु अरपी सिरु देई तिनकै लागा पाइ ।

मैं उसे अपना मन और तन अर्पित करता हूँ। और मैं अपना सिर भी काट कर उसे देता हूँ। एवं उसके चरणों का स्पर्श करता हूं।

जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ।

जिन जीवात्माओं ने द्वैत भाव को समाप्त कर उस एक परम सत्य को पहचान लिया है।

गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ ॥३॥२६॥६२॥

(और) जिन जीवात्माओं ने गुरु के सम्मुख होकर प्रभु के नाम को पहचान लिया है, नानक जी (कथन करते हैं) वे ही जीव सत्यस्वरूप प्रभु में समाहित होते हैं ॥३॥२६॥६२॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

हरि जी सचा सचु तु सभु किछु तेरै चीरै ॥
लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटें पीरै ॥
हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ॥
गुर परसादी सेव करी सचु गहिर गंभीरै ॥१॥
मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥
गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा अवरु न कोइ ॥१॥रहाउ॥
धरमराइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु वीचारि ॥
दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥

अधिआतमी हरि गुणतासु मनि जपहि एकु मुरारि ।।
तिनकी सेवा धरमराइ करै धंनु सवारणहारु ।।२।।
मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ।।
आतमरामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ।।
बिनु सतिगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु ।।
सबदु न चीनै कथनी वदनी करे बिखिआ माहि समानु ।।३।।
सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइ ।।
जिउ बोलाए तिउ बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ।।
गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ।।
नानक नामु समालि तू जितु सेविऐ सुखु होइ ।।४।।३०।।६३।।

□

हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ।

हे हरि प्रभु जी ! तुम ही (एक मात्र) सदा स्थिर रहने वाले सत्य हो सब कुछ आपके ही वश में है ।

लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ।।

चौरासी लाख योनियों के जीव तरसते फिरते हैं परन्तु बिना गुरु पीर की शरण में आए हरि प्रभु से भेंट (मिलन) नहीं होता ।

हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ।।

जिस को गुरु बख्श लेता है हरि प्रभु जो भी उसे बख्श देते हैं और उसका शरीर सदैव सुखी रहता है ।

गुर परसादी सेव करी सचु गहिर गंभीरै ।।१।।

गहन गंभीर सत्य प्रभु की सेवा गुरु की कृपा से ही की जाती है ।।१।।

मन मेरे नामि रते सुखु होइ ।।

हे मेरे मन ! प्रभु नाम में रंगे जाने से ही आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है ।।१।।

गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा अवरु न कोइ ।।१।।रहाउ।।

गुरु की शिक्षा द्वारा ही प्रभु के नाम की सराहना की जाती है और कोई दूसरा (नाम का दाता) नहीं है ।।१।। रहाउ ।।

धरमराइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ।।

धर्मराज को भी प्रभु का हुकम है कि बैठ कर धर्म की सच्चाई पर विचार करे ।

दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ।।

(धर्मराज को यह भी आदेश है कि) वही व्यक्ति तुम्हारी सरकार में हैं

तुम्हारी रैय्यत है) जो द्वैत भाव में फंसी दुष्ट आत्मा है।

अधिआतमी हरि गुणतासु मनि जपहि एकु मुरारि ॥

(जो व्यक्ति) गुणों के भंडार उस हरि प्रभु का आत्मा में चिन्तन करते हैं और एकमात्र मुरारी प्रभु का नाम जपते हैं।

तिनकी सेवा धरमराइ करै धंनु सवारणहारु ॥२॥

उन व्यक्तियों की धर्मराज भी सेवा करता है (अपने दासों को) संवारने वाला वह प्रभु धन्य है ॥२॥

मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ॥

जो व्यक्ति मन से मन के विकारों का त्याग कर देता है और जिसके अन्तःकरण से मोह और अभिमान नष्ट हो जाता है।

आतमरामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ॥

वह अपनी आत्मा में बसे हुए राम प्रभु को पहचान लेता है और स्थिर अवस्था को प्राप्त कर नाम में समा जाता है।

बिनु सतिगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु ॥

बिना सद्‌गुरु के (विकारों से) मुक्ति नहीं होती, मन के पीछे लगने वाला मनमुख पागलों की तरह घूमता (भटकता) फिरता रहता है।

सबदु न चीनै कथनी वदनी करे बिखिआ माहि समानु ॥

(मनमुख) गुरू के शब्द उपदेश को पहचानता नहीं है मुख से व्यर्थ बातें करता है और विषय वासनाओं में लिपटा (समाया) रहता है ॥३॥

सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइ ॥

सब कुछ प्रभु अपने आप ही है दूसरा अन्य कोई नहीं है।

जिउ बोलाए तिउ बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ॥

जैसा वह प्रभु बुलवाता है वैसा ही सभी बोलते हैं और जब वह आप बुलवाता है (तभी सभी जीव बोलते हैं)।

गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥

गुरू के मुख से निकली हुई वाणी ब्रह्म वाक्य है, उससे (उसे धारण कर) शब्द ब्रह्म से मिलन हो जाता है।

नानक नामु समालि तू जितु सेविऐ सुखु होइ ॥४॥३०॥६३॥

(श्री गुरू अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं), हे जीव ! तू प्रभु के नाम की संभाल कर जिसका (नाम) सेवन करने से सुख होता है ॥४॥३०॥६३॥

□

सिरीरागु महला ३ ।।

जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ।
मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ।।
बहुबिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइ ।।
पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ।।१।।
मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ।।
मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ।।१।।रहाउ।।
मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ।।
मनमुखु मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ।।
गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ समाइ ।।
जिउ अंधेरै दीपकु बालीऐ तिउ गुरगिआनि अगिआनु तजाइ ।।२।।
हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ।।
करणैवाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ।।
माइआ जेवडु दुखु नही सभि भवि थके संसारु ।।
गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु उरधारि ।।३।।
जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ।।
ए मन भगती रतिआ सचु बाणी निजथाउ ।।
मनि रते जिहवा रती हरिगुण सचे गाउ ।।
नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ।।४।।३१।।६४।।

□

जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ।

सारा संसार हउमै (अहं) की मैल के कारण दुख प्राप्त कर रहा है यह मैल द्वैत भावना के कारण लगी है ।

मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ।

यदि सौ तीर्थों में भी स्नान करते रहें और हउमै की मैल को धोते रहें तो भी यह मैल किसी प्रकार से उतरती नहीं है।

बहुबिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइ ।

अनेक प्रकार के वैधानिक कर्म (कर्मकाण्डी विधान) करते हैं (परन्तु इससे तो) और दुगुनी मैल आकर लग जाती है ।

पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ।।१।।

(धर्म ग्रन्थों के) पढ़ने से मैल नहीं उतरती ऐसा ज्ञानियों से जाकर पूछ लो ।।१।।

मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ।।

हे मेरे मन ! गुरु की शरण में आए तभी (मन) मैलहीन होता है ।

मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ।।१।।रहाउ।।

मन के पीछे लगने वाले मौखिक रूप से हरि हरि (का जाप) करते थक गए हैं लेकिन मन की मैल को धो नहीं सके ।।१।। रहाउ।।

मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ।।

(मनमुख मैले होते हैं और) मन से मैले होने के कारण उनसे प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती और न ही (मैले मन से) नाम को प्राप्त किया जा सकता है ।

मनमुखु मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ।।

(मन के पीछे लगने वाले) मनमुख मैले होते हैं और मैले रहकर ही मरते हैं और इज्जत गँवा कर (प्रभु के पास परलोक) जाते हैं ।

गुर पसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ समाइ ।।

गुरु की कृपा से हउमै की मैल चली (समाप्त हो) जाती है, मन में प्रभु का नाम बसता है और जीव प्रभु में समा जाता है ।

जिउ अंधेरै दीपकु बालीऐ तिउ गुरगिआनि अगिआनु तजाइ ।।२।।

जैसे अंधेरे में दीपक जलाने से (अंधेरा दूर हो जाता है) वैसे ही गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से अज्ञान छूट जाता है ।।२।।

हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ।

हमने किया है हम करेंगे (ऐसा कहने वाले) हम सभी जीव मूर्ख और गँवार है ।

करणैवाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ।।

(सब कुछ) करने वाले (कर्त्ता) प्रभु को हमने भुला दिया है और द्वैत भाव (दूसरे सांसारिक पदार्थों) से प्रेम करने लगे हैं ।

माइआ जेवडु दुखु नही सभि भवि थके संसारु ।

जितना बड़ा दुख माया का है इतना बड़ा दुख और कोई नहीं है यह जीव को अपने पीछे लगाकर सारे संसार में घुमा (भटका) कर थकाती है ।

गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु उरधारि ।।३।।

गुरु की शिक्षा से सत्यस्वरूप प्रभु के नाम को हृदय में धारण करने से सुख की प्राप्ति होती है ।।३।।

जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ।

जिसको प्रभु गुरु से मिला देता है वही प्रभु से मिलता है, मैं ऐसे जीवों

पर कुर्बान जाता हूँ (जो गुरु के माध्यम से प्रभु से मिल जाते हैं)।

ए मन भगती रतिआ सचु बाणी निजथाउ ।

हे मन ! प्रभु की भक्ति के रंग में रंग जा प्रभु की सच्ची वाणी (का गायन कर) और निज स्वरूप को प्राप्त कर ।

मनि रते जिहवा रती हरिगुण सचे गाउ ।

मन को प्रभु के प्रेम के रंग में रंग दो। जिह्वा को भी सच्चे हरिप्रभु के गुणगान में रचा दो।

नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ।।४।।३१।।६४।।

नानक (एक पल के लिए भी) प्रभु नाम को विस्मृत न करते हुए सत्य प्रभु के स्वरूप में समा जाओ ।।४।।३१।।६४।।

□

सिरीरागु महला ४ घरु १।।

मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइ ।।
जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिऐ दुखु जाइ ।।
जाइ पुछा तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइ ।।१।।
मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ।।
हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइ ।।१।।रहाउ।।
सतिगुरु दाता हरिनाम का प्रभु आपि मिलावै सोइ ।।
सतिगुरि हरिप्रभु बुझिआ गुर जेवडु अवरु न कोइ ।।
हउ गुरसरणाई ढहि पवा करि दइआ मेले प्रभु सोइ ।।२।।
मनहठि किनै न पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ।
सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंगु न होइ ।।
कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ।।३।।
सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ।।
प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ।।
बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ।।४।।१।।६५।।

□

मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइ ।।

मेरा मन और तन अत्यन्त बिरह में है मेरा प्रियतम प्रभु मुझे कैसे हृदय रूपी घर में आकर मिले ।

जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिऐ दुखु जाइ ।।

यदि मैं अपने प्रभु को देख लूँ तो प्रभु को देखते ही मेरे सारे दुख चले जायेंगे ।

जाइ पुछा तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइ ॥१॥

मैं उस सज्जन गुरू से जाकर पूछती हूं कि वह प्रियतम प्रभु किस प्रकार मिल सकता है मुझे उससे मिला दो ॥१॥

मेरे सतिगुरा मैं तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥

हे मेरे सद्गुरु जी मेरा तुम्हारे बिना और अन्य कोई भी नहीं है।

हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइ ॥१॥रहाउ॥

मैं मर्ख हूं (सांसारिक लोगों के प्रति) मुग्ध (मोहित) हूं अब आपकी शरण में आया हूं, हे मेरे सद्गुरु जी कृपा करो मुझे उस हरि प्रभु से मिला दो ॥१॥रहाउ॥

सतिगुरु दाता हरिनाम का प्रभु आपि मिलावै सोइ ॥

सद्गुरु हरि प्रभु के नाम को देने वाला है, प्रभु आप ही गुरु से मिलाता है।

सतिगुरि हरिप्रभु बुझिआ गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥

सद्गुरु ने हरि प्रभु को जान लिया है गुरू के समान महान अन्य कोई दूसरा नहीं है।

हउ गुरसरणाई ढहि पवा करि दइआ मेले प्रभु सोइ ॥२॥

मैं गुरू की शरण में आकर गिर पड़ूं तो वह प्रभु दया करके मुझे अपने में मिला लेगा ॥२॥

मनहठि किनै न पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ॥

मन को (कठिन) हठयोग क्रियाओं में लगाकर किसी ने प्रभु को नहीं पाया है, सब कोई (सभी) उपाय कर करके थक गए हैं।

सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंगु न होइ ॥

हजारों चतुरता (पूर्ण कार्य) करते रहने पर भी (यदि मन कोरा रह जाता है तो उस) कोरे (प्रभु प्रेम से विहीन) मन पर नाम रंग (का चढ़ना) नहीं हो सकता।

कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥३॥

झूठ और कपट से किसी ने भी प्रभु को नहीं प्राप्त किया। जो बीज हम बोते हैं उसी का (फल) खाते हैं।

सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥

हे प्रभु ! सभी जीव तुमसे ही आशा रखते हैं, सभी जीव तुम्हारे हैं तुम्हीं सभी जीवों की (आत्मिक सुखों की) पूंजी हो।

प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥

हे प्रभु ! तुमसे खाली (अलग) कोई नहीं है, गुरू के सम्मुख रहने वाले जीवों को तुम्हारे दरबार में शाबासी मिलती है।

बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥४॥१॥६५॥

हे प्रभु ! विषम संसार सागर में डूबते हुए अपने इस दास नानक को निकाल (उबार) लो ॥४॥१॥६५॥

□

सिरीरागु महला ४ ॥

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ॥
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥
हउ तिसु विटहु चउखंनीऐ मै नाम करे परगासु ॥१॥
मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥
बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु द्रिड़ाइ ॥१॥रहाउ॥
नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥
सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥
धंनु वडभागी वडभागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥२॥
जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥
ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥
ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥३॥
सतिगुरु पुरखु अंम्रितसरु वडभागी नावहि आइ ॥
उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्रिड़ाइ ॥
जन नानक उतमपदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥४॥२॥६६॥

□

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ॥

हे मेरे प्रभु ! तुम्हारा नाम मिले तभी मन को तृप्ति होती है, बिना तुम्हारे नाम के लम्बे जीवन को आशा करने को धिक्कार है।

कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥

कोई गुरु के सम्मुख रहने वाला सज्जन मुझे मिल जाय और गुणों के भंडार प्रभु के बारे में मुझे बता दें।

हउ तिसु विटहु चउखंनीऐ मै नाम करे परगासु ॥१॥

मैं उस (सज्जन) पर से शरीर के चार टुकड़े कटवा कर कुर्बान हो जाऊं जो (सज्जन) मेरे हृदय में प्रभु के नाम का प्रकाश कर दे ॥१॥

मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥

हे मेरे प्रभु प्रियतम ! मैं तुम्हारा नाम स्मरण करके ही जीवित रह सकता हूं।

बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु द्रिड़ाइ ॥१॥रहाउ॥

हे मेरे सद्गुरु ! मेरे हृदय में परमात्मा प्रियतम के नाम को दृढ़ता प्रदान करो क्योंकि प्रभु नाम के बिना (आत्मा) जीवित नहीं रह सकती ॥१॥ रहाउ॥

नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥

प्रभु का नाम अमूल्य रत्न है और यह रत्न पूर्ण सद्गुरु के पास होता है।

सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥

सद्गुरु की सेवा में लग जाने से वह उस रत्न को निकाल कर (सेवक को) दे देता है और अन्तःकरण में (ज्ञान का) प्रकाश कर देता है।

धंनु वडभागी वडभागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥२॥

(वे सेवक) धन्य हैं, बड़े भाग्यवानों में (सबसे) बड़े भाग्यवान है जो गुरु से मिलते हैं और निकट होते हैं ॥२॥

जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥

(महान) पुरुष सद्गुरु से जिनका मिलन नहीं होता वे भाग्यहीन काल के वशीभूत होते हैं।

ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥

वे बारम्बार योनियों में भटकते रहते हैं और (विषय विकारों) की मल में रहकर भयानक रूप धारण करते हैं।

ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥३॥

जिन (मनुष्यों) के अन्तःकरण में प्रचण्ड क्रोध का निवास है उनके आस-पास भी नहीं फटकना चाहिए और उनका स्पर्श भी नहीं करना चाहिए ॥३॥

सतिगुरु पुरखु अंम्रितसरु वडभागी नावहि आइ ॥

परमपुरुष प्रभु (का साक्षात स्वरूप) सद्गुरु अमृत का सरोवर है, परन्तु बड़े भाग्यशाली (ही उस सरोवर में) आकर स्नान करते हैं।

उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्रिड़ाइ ॥

(जो भाग्यशाली स्नान करते हैं) उनकी जन्म जन्मान्तर की मैल उतर जाती है और प्रभु का पवित्र नाम उनके हृदय में दृढ़ हो जाता है।

जन नानक उतमपदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥४॥२॥६६॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु के जिन दासों ने सद्‌गुरु के उपदेश से प्रभु में चित्तवृत्ति को लगाया है उन्हें उत्तम पद की प्राप्ति हुई है ॥४॥२॥६६॥

□

सिरीरागु महला ४ ॥

गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥
गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥
हीरै हीरु मिलि वेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥१॥
मेरे गोविंदा गुण गावा त्रिपति मनि होइ ॥
अंतरि पिआस हरिनामु की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥१॥रहाउ॥
मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥
गुरु नामु द्रिड़ाइ रंग सिउ हउ सतिगुर के बलि जाउ ॥
बिनु सतिगुर हरिनामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥२॥
बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥
अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥
बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥३॥
सतिगुरु बोहिथु हरिनाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥
सतिगुर कै भाणै जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥
धंनु धंनु वड भागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥४॥३॥६७॥

□

गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥

हे मेरी मां, (मेरा जी चाहता है कि) मैं प्रभु के गुणों का गायन करता रहूं, प्रभु के गुणों का ही विस्तृत वर्णन करता रहूं और प्रभु के गुणगान से पूर्ण बोली ही बोलता रहूं ।

गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले किसी सज्जन से ही यह गुण प्राप्त किया जा सकता है और ऐसे संतजन से मिलकर ही हरि प्रभु के गुणों का गायन किया जा सकता है ।

हीरै हीरु मिलि बेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥

हीरे को हीरे से मिलाकर वेंधा (काटा) जाता है (उसी प्रकार) प्रभु के नाम का रंग (नाम जपने वाले से मिलकर और) गहरा होता है ॥१॥

मेरे गोविंदा गुण गावा त्रिपति मनि होइ ॥

हे मेरे गोविन्द प्रभु ! (कृपा करो कि) मैं तुम्हारा गुण गाता रहूं; गुण गायन करने से ही मन को तृप्ति होती है ।

अंतरि पिआस हरिनाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥१॥रहाउ॥

मेरे मन में हरि के नाम की प्यास है (मुझे गुरु से मिला दो क्योंकि) गुरु ही प्रसन्न होकर उस प्रभु के नाम से मिलाता है ॥१॥रहाउ॥

मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥

हे बड़े भाग्यशालियो ! मन को प्रभु के नाम के रंग में रंग लो, गुरु प्रसन्न होकर नाम का प्रसार कर रहा है ।

गुरु नामु द्रिड़ाइ रंग सिउ हउ सतिगुर के बलि जाउ ॥

गुरु प्रेम से प्रभु के नाम को दृढ़ता प्रदान करता है, (इसीलिए) मैं (अपने) सद्गुरु के बलिहार जाता हूं ।

बिनु सतिगुर हरिनामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥२॥

भले ही लाखों करोड़ों प्रकार के वैधानिक कर्म करते रहो परन्तु सद्गुरु की शरण में आए बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती ॥२॥

बिनु भागा सतिगुर ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥

विना भाग्य के सद्गुरु नहीं मिलता और बिना सद्गुरु के उस प्रभु की प्राप्ति नहीं होती जो हमारे हृदय रूपी घर में बैठा हुआ है, हमारे अत्यन्त निकट है और नित्य प्रति हमारे पास है ।

अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥

जीव की अन्तरात्मा में अज्ञान है । अज्ञान के कारण वह दुखी रहता है प्रभु की सत्ता और उसके मध्य भ्रम का पर्दा पड़ा हुआ है, जिस कारण निकट होते हुए भी प्रभु की सत्ता उसे दूर प्रतीत होती है ।

बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥३॥

(मन के पीछे लगने वाला) मनमुख जीव रूपी लोहा सद्गुरु रूप (पारस) से मिले बिना सोना (शुद्ध आत्मा) नहीं हो सकता और सद्गुरु रूप बेड़ा निकट होते हुए भी (भवसागर में) डूब जाता है ।

सतिगुरु बोहिथु हरिनाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥

सद्गुरु हरि नाम का जहाज है परन्तु उस जहाज पर किस उपाय से चढ़ा जाय ।

सतिगुर कै भाणै जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥

जो जीव सद्गुरु के हुकुम में चलता है वह उस जहाज में आकर बैठ जाता है ।

धंनु धंनु वड भागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥४॥३॥६७॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं कि) वे बड़े भाग्यवान जीव धन्य-धन्य हैं जिन्हें सद्गुरु ने अपने (चरणों से) मिला लिया है। ॥४॥३॥६७॥

□

सिरीरागु महला ४ ॥

हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥
जिनी मेरा पिआरा राविआ तिन पीछै लागि फिराउ ॥
करि मिंनति करि जोदड़दी मैं प्रभु मिलणै का चाउ ॥१॥
मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥
हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥१॥रहाउ॥
होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥
निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥
हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥२॥
सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥
बिनु भागा दरसनु ना थीऐ भागहीण बहि रोइ ॥
जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि लिखिआ न मेटै कोइ ॥३॥
आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥
आपि दइआ करि मेलसी गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥
सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ
॥४॥४॥६८॥

□

हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥

मैं नित्य प्रति खड़ी होकर रास्ता पूछती हूँ, कोई मुझे प्रभु के घर का मार्ग बता दें जिससे मैं उस प्रभु तक जा सकूं।

जिनी मेरा पिआरा राविआ तिन पीछै लागि फिराउ ॥

जिन्होंने मेरे प्यारे प्रभु के साथ मिलन का आनन्द प्राप्त किया है मैं उनके पीछे लगी फिरती हूँ।

करि मिंनति करि जोदड़दी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥१॥

मैं उनकी मिन्नत करती हूँ उनको सेवा करती हूं क्योंकि मुझे प्रभु (प्रियतम) से मिलने का चाव है ॥१॥

मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥

हे प्रभु के दास मेरे भाईयो ! कोई तो मेरा जोड़ हरि प्रभु से मिला दो।

हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनी हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥१॥रहाउ॥

मैं सद्‌गुरु के कुर्बान जाती हूं जिन्होंने मुझे हरि प्रभु दिखा दिया है। ॥१॥रहाउ॥

होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥

मैं अति विनम्र होकर पूर्ण सद्‌गुरु के (चरणों के) निकट गिर पड़ूंगी।

निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥

अति विनम्र जीवों को गुरु सम्मान देता है और सद्‌गुरु उन्हें (पीठ थपथपाकर) उत्साहित करता है।

हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥२॥

मैं गुरु की सराहना करते-करते अघाती नहीं हूं, गुरु ही निकट बसने वाले हरि प्रभु से मुझे मिलाता है ॥२॥

सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥

सद्‌गुरु से मिलने के लिए सभी लालायित रहते हैं, जितने भी जगत के जीव हैं सब कोई (यही चाहते हैं)।

बिनु भागा दरसनु ना थीऐ भागहीण बहि रोइ ॥

(परन्तु) बिना भाग्य के सद्‌गुरु का दर्शन नहीं होता और भाग्यहीन जीव बैठ कर रोते हैं।

जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि लिखिआ न मेटै कोई ॥३॥

जो हरि प्रभु को अच्छा लगता है वही होता है। आरम्भ से ही (मस्तक पर) लिखे गए (भाग्य) को कोई नहीं मिटा सकता ॥३॥

आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥

हरि प्रभु आप हो सद्‌गुरु से मिलाता है और आप ही अपने से जोड़ मिलाता है।

आपि दइआ करि मेलसी गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥

हरि प्रभु आप ही दया करके गुरु के द्वारा अपने साथ मिलाता है और आप ही सद्‌गुरु के पीछे लगाता है।

सभु जग जीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥४॥४॥६८॥

(श्रीगुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु सारे जगत में आप ही (व्याप्त) है और सारे जगत का जीवन (वह आप ही) हैं। वह सम्पूर्ण जगत में इस प्रकार अभेद है जैसे जल जल में समाया है ॥४॥४॥६८॥

□

सिरीरागु महला ४ ।।

रसु अंम्रितु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ।।
जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउकरि मिलिआ प्रभु आइ ।।
ओइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ।।१।।
भाई रे मिलि सजण हरिगुण सारि ।।
सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि ।।१।।रहाउ।।
गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ।।
सतिगुर वचनु रतंनु है जो मंने सु हरिरसु खाइ ।।
से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरिरसु खाधा गुरभाइ ।।२।।
इहु हरिरसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ।।
बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ।।
ओइ सतिगुर आगै ना निवहि ओना अंतरि क्रोधु बलाइ ।।३।।
हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरिरसु होइ ।।
आपि दइआ करि देवसी गुरमुखि अंम्रितु चोइ ।।
सभु तनु मनु हरिआ होइआ नानक हरि वसिआ मनि सोइ ।।४।।५।।६९।।

□

रसु अंम्रितु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ।।

विषय वासना आदि के सभी रसों में प्रभु नाम का रस अमृत के समान है और यह रस अति उत्तम है परन्तु यह रस मुझे खाने को किस प्रकार मिल सकता है।

जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउकरि मिलिआ प्रभु आइ ।।

(प्रभु पति को प्राप्त कर लेने वाली) सौभाग्यवती जीवस्त्रियों से जाकर पूछती हूं तुम कैसे प्रभु प्रियतम से आकर मिली हो।

ओइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ।।१।।

वे मेरी परवाह ही नहीं करती और ना ही बोलती है, मैं उनके पैर मल-मल कर धोती हूं ।।१।।

भाई रे मिलि सजण हरिगुण सारि ।।

हे भाई ! सज्जन (गुरु) से मिलकर हरि प्रभु के गुणों को संभाल करो।

सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि ।।१।।रहाउ।।

सज्जन सद्गुरु परम पुरुष है वह हउमै (अहंकार) को मार कर अन्तःकरण से निकाल देता है और दुख दूर कर देता है ।।१।। रहाउ।।

गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ।।

गुरु के सम्मुख रहने वाली जीवात्माएं ही सौभाग्यशाली हैं उनके ही मन में (मेरे प्रति) आकर दया उत्पन्न हुई है।

सतिगुर वचनु रतंनु है जो मंने सु हरिरसु खाइ ॥

(और वे बताती हैं कि) सद्‌गुरु के बचन अमूल्य रत्न हैं जो इन्हें मानता है वही हरि प्रभु के नाम रस को (खाता) पान करता है।

से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरिरसु खाधा गुरभाइ ॥२॥

उन जीवों को बड़े सौभाग्यशालियों में भी बड़ा भाग्यशाली जानना चाहिए जो गुरु की इच्छानुसार (उसके बचन मानकर) हरि प्रभु के नाम रस को खाते (चखते) हैं ॥२॥

इहु हरिरसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ॥

यह हरि नाम का रस बन तृण सर्वत्र (व्याप्त) है परन्तु भाग्य हीन इसे पान नहीं कर सकते।

बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥

बिना सद्‌गुरु (की शरण में आए यह नाम अमृत रस) पल्ले नहीं पड़ता (प्रभु द्वारा दान में प्राप्त नहीं होता), (इसीलिए गुरु से विमुख) मन के पीछे लगने वाले मनमुख बिलखते रहते हैं (उन्हें नाम रस की प्राप्ति नहीं होती)।

ओइ सतिगुर आगै ना निवहि ओना अंतरि क्रोधु बलाइ ॥३॥

वे सद्‌गुरु के सम्मुख नतमस्तक नहीं होते उनके अन्दर (मन में) क्रोध की बला (पिशाच) रहती है ॥३॥

हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरिरसु होइ ॥

वह हरि प्रभु जो हर एक को हरियाली (आनन्द) प्रदान करने वाला है आप ही नाम रस है और आप ही हरि नाम के रस को पान करने वाला (जिज्ञासु) है।

आपि दइआ करि देवसी गुरमुखि अंम्रितु चोइ ॥

हरि प्रभु आप ही दया दृष्टि करके गुरु के सम्मुख रहने वाले जिज्ञासु के मुख में नाम-अमृत रस को चुआता है।

सभु तनु मनु हरिआ होइआ नानक हरि वसिआ मनि सोइ ॥४॥५॥६९॥

नानक का संपूर्ण तन और मन प्रफुल्लित हो उठा है, क्योंकि दुखों का हरण करने वाला हरि आप मन में आकर बस गया है ॥४॥५॥६९॥

□

सिरीरागु महला ४ ॥

दिनसु चड़ै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥

पुत्र और स्त्री का मोह विष (पान करने) के समान है। (इनमें से) कोई भी अन्त समय में मित्र नहीं होता ॥१॥ रहाउ॥

गुरमति हरि लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥

जो जीव गुरु की शरण में आकर गुरु से शिक्षा लेकर संसार में निर्लिप्त भाव से रहते हैं और अपनी चित्तवृत्ति हरि प्रभु में लगाए रखते हैं वे (संसार सागर से) उबर जाते हैं।

ओनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥

उनकी दृष्टि सदा संसार से चलने (मृत्यु) पर रहती है और वे हरि (नाम रूपी धन) को (जीवन रूपी पथ के) खर्च के लिए ले लेते हैं और (प्रभु के दरबार में जाकर) प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

गुरमुखि दरगह मंनिअहि हरि आपि लए गलि लाइ ॥२॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले वे जीव ही प्रभु की दरगाह में सम्मानित किए जाते हैं और हरि प्रभु आप उन्हें गले से लगाता है ॥२॥

गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले पुरुषों के लिए प्रभु के द्वार तक जाने वाला मार्ग प्रकट (साफ सुथरा) हो जाता है और उन्हें कोई भी (शक्ति) बाधा नहीं पहुंचा सकता।

हरिनामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥

ऐसे जीव हरि प्रभु के नाम की ही सराहना करते हैं, प्रभु का नाम ही उनके मन में बसा रहता है वे प्रभु नाम में ही अपनी चित्तवृत्ति को लगाए रखते हैं।

अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥३॥

उनके दशमद्वार में (प्रतिपल) अनाहत ध्वनि बजती रहती है प्रभु के सच्चे दरबार में वे शोभा प्राप्त करते हैं ॥३॥

जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥

जिन पुरुषों ने गुरु के सम्मुख होकर प्रभु के नाम की सराहना की है उन्हें सभी शाबास कहते हैं (उनकी प्रशस्ति करते हैं)।

तिन की संगति देहि प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥

हे प्रभु ! मुझ भिखारी की तुम्हारे समक्ष प्रार्थना है कि मुझे उन (नाम स्मरण करने वाले गुरुमुखों) की संगति प्रदान करो।

नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥४॥६॥७०॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरु के सम्मुख रहने

आंव घटै नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥
गुड़ मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥१॥
भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥
पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥१॥रहाउ॥
गुरमति हरि लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥
ओनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥
गुरमुखि दरगह मंनीअहि हरि आपि लए गलि लाइ ॥२॥
गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥
हरिनामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥
अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥३॥
जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥
तिन की संगति देहि प्रभु मै जाचिक की अरदासि ॥
नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥४॥६॥७०॥

□

श्री गुरुदेव इस शब्द के द्वारा मनुष्य को चेतावनी दे रहे हैं कि उसकी आयु दिन और रात्रि के क्रम में समाप्त हो रही है। उसे नाम स्मरण और प्रभु चिन्तन द्वारा इसे सार्थक करना चाहिए।

□

दिनसु चढ़ै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥

दिन चढ़ता है और फिर अस्त हो जाता है रात (होती है और) सारी व्यतीत हो जाती है।

आंव घटै नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥

(मनुष्य की) आयु घटती जाती है लेकिन मनुष्य समझता ही नहीं है कि नित्यप्रति (दिन रात में बीतता हुआ समय रूपी) चूहा उसकी (आयु रूपी) रस्सी को कुतरता जा रहा है।

गुड़ मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥१॥

(मन के पीछे लगने वाला अज्ञानी) मनमुख सांसारिक माया के प्रसार में लग कर इस प्रकार (जलकर) नष्ट हो रहा है जैसे मीठे गुड़ से चिपक कर मक्खियां मर जाती हैं ॥१॥

भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥

हे भाई! वह प्रभु ही मेरा मित्र और साथी है।

पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥१॥रहाउ॥

वाले उन जीवों के बड़े भाग्य हैं जिनके अन्तःकरण में प्रभु नाम का प्रकाश (फैला हुआ) है ।।४।।६।।७०।।

□

नोटः— श्री राग में रचित गुरु रामदास जी के छः शब्द यहां समाप्त होते हैं और गुरु अर्जुनदेव जी के इस राग में रचित शब्दों का आरम्भ होता है ।

□

सिरीरागु महला ५ घरु १ ।।

किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ।।
रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ।।
बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ।।
करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ।।१।।
मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ।।
गुरपरसादी पाईऐ करमि परापति होइ ।।१।।रहाउ।।
कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रूपा खाकु ।।
हैवर गैवर बहुरंगे कीए रथ अथाक ।।
किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ।।
सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ।।२।।
लैदा बददुआइ तूं माइआ करहि इकत ।।
जिसनो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ।।
अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की मति ।।
तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ।।३।।
सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ।।
हरिजन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ।।
जो हरिजन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ।।
नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ।।४।।१।।७१।।

□

किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ।।

हे जीव ! तुम पुत्र और स्त्री के रूप श्रृंगार को देखकर (उसमें ही) अनुरक्त क्यों हो रहे हो ?

रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ।।

तुम अनेक प्रकार के रस भोग करते हो, अनेक प्रकार को खुशियां मनाते हो, अनन्त रंगरलियों में आनन्दित होते हो ।

बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ।

तुम बहुत फरमायशें करते हो और घमण्ड पूर्ण व्यवहार करते हो ।

करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥१॥

हे मन के पीछे लगने वाले अन्धे गँवार कर्त्ता प्रभु जरा भी तुम्हारे चित्त में नहीं आता (तुम्हें कर्त्ता प्रभु को जरा भी याद नहीं आती) ॥१॥

मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ॥

हे मेरे मन ! वह हरि ही सुखों का दाता है ।

गुरपरसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥१॥रहाउ॥

प्रभु को सद्गुरु की कृपा द्वारा प्राप्त किया जाता है और सद्गुरु अच्छे भाग्य से प्राप्त होता है ॥१॥ रहाउ॥

कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रूपा खाकु ॥

तुम सुन्दर वस्त्र सोना चांदी जमोन (जायदाद) के सुखों को भोगता हुआ (इनसे) हो लिपटा हुआ है।

हैवर गैवर बहुरंगे कीए रथ अथाक ॥

तुमने अनेक प्रकार के हाथी घोड़े और अबाध गति से चलने वाले रथ एकत्रित कर लिए है।

किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥

तू किसी को अपने चित्त के (बराबर) पाता ही नहीं (किसी को अपने बराबर समझता ही नहीं) और घमण्ड के कारण सभी सगे सम्बन्धियों को भूल गया है ।

सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ॥२॥

तुमने रचना करने वाले प्रभ् को भी भुला दिया है और उसके नाम आराधना के बिना अपवित्र हो रहे हो ॥२॥

लैदा बददुआइ तूं माइआ करहि इकत ॥

तुम (गलत तरीके से) धन एकत्रित करते हो और लोगों की बददुआएँ ले रहे हो ।

जिसनो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥

जिन (वस्तुओं) का तुम विश्वास करते हो वे तुम्हारे सहित अनित्य (नाशवान) है ।

अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की मति ॥

हे घमण्डी ! तुम मन की शिक्षा के पीछे लगकर घमण्ड करते हो ।

तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥३॥

जिन जीवात्माओं को प्रभु ने आप भुला दिया है उन्हें न तो समाज में जाना जाता है और न हो उनकी प्रतिष्ठा होती है ।।३।।

सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ।।

सद्गुरु उस परम पुरुष से मिला देता है जो एक मात्र सज्जन है ।

हरिजन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ।।

हरि के दासों का रखवाला वही एक प्रभु है। अहंकार से (ग्रस्त) दुखी होकर रोने वाला यह मनुष्य भला क्या (महत्व रखता) है ।

जो हरिजन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ।।

हरि के दास जो चाहते हैं प्रभ वही करता है। हरि प्रभु के दरबार में भक्तों द्वारा कही गई बात को कोई फेर (बदल) नहीं सकता ।

नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ।।४।।१।।७१।।

हरि प्रभु के नाम रंग में रंगा हुआ भक्त नानक सारे संसार में प्रकाशित होता है ।।४।।१।।७१।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

मनि बिलासु बहु रंगु घणा दृसटिभूलि खुसीआ ।।
छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ।।१।।

भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ।।
लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ।।१।।रहाउ।।

जेते थान थनंतरा तेते भवि आइआ ।।
धनपाती वडभूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ।।२।।

हुकमु चलाए निसंग होइ वरतै अफरिआ ।।
सभु को वसगति करि लइओनु बिनु नावै खाकु रलिआ ।।३।।

कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ।।
गिरंबारी वडसाहबी सभु नानक सुपनु थीआ ।।४।।२।।७२।।

□

मनि बिलासु बहु रंगु घणा दृसटिभूलि खुसीआ ।।

मन अनेक प्रकार से बिलास करता रहे अत्यधिक आनन्द में मग्न रहे दृष्टि को भ्रमित कर देने वाली खुशियां प्राप्त हों ।

छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ।।१।।

छत्रधारी सम्राट हो जाय परन्तु फिर भी (मन) संशय में ही पड़ा रहता है ।।१।।

भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ।।

हे भाई ! सुख तो केवल साधु संगति में पाया जाता है ।

लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ।।१।।रहाउ।।

उस परम पुरुष विधाता ने जिसके भाग्य में लिखा है उसका दुख और संशय मिट जाना है ।।१।। रहाउ।।

जेते थान थनंतरा तेते भवि आइआ ।।

(पृथ्वी पर) जितने भी देश देशान्तर हैं उतने ही घूम आया ।

धनपाती वडभूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ।।२।।

(परन्तु देखा कि) जितने भी धनवान और बड़े-बड़े भूमिपति हैं सब मेरी मेरी (करते हुए हउमै) के कारण दुख में पड़े हुए हैं ।।२।।

हुकमु चलाए निसंग होइ वरतै अफरिआ ।।

जो निशंक (निरंकुश) होकर लोगों पर हुकुम चलाते रहे हैं और घमण्ड पूर्ण व्यवहार करते रहे हैं ।

सभु को वसगति करि लइओनु बिनु नावै खाकु रलिआ ।।३।।

(अपनी ताकत से) जो सबको वश में करके अपनी गति के अनुकूल करते रहे हैं वे प्रभु का नाम जपे बिना अन्त में खाक में मिल गए हैं ।

कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ।।

तेंतोस करोड़ (देवता) जिनके सेवक बने रहे हैं और सिद्ध साधक जिनके द्वार पर खड़े रहते रहे हैं ।

गिरंबारी वडसाहबी सभु नानक सुपनु थीआ ।।४।।२।।७२।।

पर्वतों और समुद्रों पर जिनकी भारी हुकुमत चलती रही है (श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) वे सबके सब आज स्वप्न की भांति मिट गए हैं ।।४।।२।।७२।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ।।
सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ।।
सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ।।१।।
प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ।।
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ।।१।।रहाउ।।
कुदमु करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ।।
ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ।।
मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ।।२।।

जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥

जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥

फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥

कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥

चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ॥

नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥४॥३॥७३॥

□

भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥

यह मूर्ख और अनजान मनुष्य बिना सोचे समझे प्रतिदिन सवेरे उठकर अपने शरीर को पालने (सजाने और सँवारने) में लग जाता है।

सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥

वह प्रभु (जिसने यह शरीर दिया है) मनुष्य को याद ही नहीं है और (यह देह जिसे यत्न से पाल पोस रहा है) अन्त में सूने जंगल (श्मशान भूमि) में अकेली छोड़ दी जायेगी।

सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥१॥

(इसलिए) सद्गुरु में मन लगाओ और सदैव आनन्द लाभ करो ॥१॥

प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥

हे जीव ! तू तो (देह) से प्रभु नाम का लाभ उठाने के लिए इस संसार में आया था।

लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥१॥रहाउ॥

(लेकिन) तू किन नीच कर्मों में लग गया है, तुम्हारी जीवन रूपी रात्रि सारी ही व्यतीत हो चली है ॥१॥ रहाउ॥

कुदमु करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥

(जिस प्रकार शिकारी के जाल में फंसे हुए) पशु पक्षियों को (शिकारी रूपी) काल दिखाई नहीं देता और वे (जाल के अन्दर फंसे हुए) कल्लोल करते रहते हैं।

ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥

(उसी प्रकार) इनका यह साथी मनुष्य भी है जो माया के जाल में फंसा (सांसारिक पदार्थों का सुख उपभोग कर रहा है परन्तु मौत को नहीं देखता) है।

मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥२॥

(इस जाल से) मुक्त वही दिखाई देते हैं जो सत्यस्वरूप प्रभु के नाम की संभाल करते हैं। ॥२॥

जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥

जिस घर (शरीर) को (अन्त में) गँवा बैठना है और छोड़ देना है वह (शरीर) ही तेरे मन को लगा हुआ (भाया हुआ) है।

जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥

लेकिन जहां और जिसके साथ जाकर तुम्हें व्यवहार करना है उसकी तुम्हें जरा भी चिन्ता नहीं है।

फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥

(माया जाल में) फंसे वे ही निकल सकेंगे जो गुरु के चरणों में पड़ जायेंगे (गुरु चरणों से लग जायेंगे) ॥३॥

कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥

(गुरु के बिना) और कोई रक्षा नहीं कर सकता और न ही कोई दूसरा है जो (मुक्ति का मार्ग) दिखा सके।

चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥

चारों दिशाओं में भली प्रकार देखने भालने के पश्चात् मैं आपकी शरण में आ पड़ा हूं।

नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥४॥३॥७३॥

सच्चे पातशाह गुरु ने हो संसार सागर में डूबते हुए नानक को निकाल लिया है ॥४॥३॥७३॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥
माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥
उठि चलिआ पछुताइआ परिआब सि जंदार ॥१॥
अंधे तूं बैठा कंधी पाहि ॥
जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ॥१॥रहाउ॥
हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥
लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥
जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ॥२॥
पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ ॥
तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥
कद ही चिति न आइओ जिनि जीउ पिंडु दीआ ॥३॥
साध संगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥

जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ।।
नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ।।४।।४।।७४।।

□

घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ।।
यह जीव घड़ी दो घड़ी का मेहमान है परन्तु अपने को स्थायी मान कर सांसारिक कार्यों को सँवारने वाला बन बैठा है ।

माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ।।
माया और काम वासना से व्याप्त यह गँवार समझता ही नहीं (कि वह चन्द दिनों का मेहमान है) ।

उठि चलिआ पछुताइआ परिआ बसि जंदार ।।१।।
जब (संसार से) उठ कर चलता है (विदा होता है) और यमों के वश में पड़ता है तब पछताता है ।। १।।

अंधे तूं बैठा कंधी पाहि ।।
अंधे जीव ! तू कालरूपी नदी के किनारे पर बैठा है ।

जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ।।१।।रहाउ।।
यदि (तुम्हारे माथे पर) पूर्व जन्म के (पुण्य कर्मों का शुभ फल) लिखा हुआ है तो तू गुरु के बचनों के अनुसार कमाई (कर्म) कर ।।१।। रहाउ।।

हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ।।
पक्की तैयार खेती को काटने वाले परमात्मा रूपी किसान को यदि इच्छा हो तो वह न तो हरी खेती को छोड़ता है और न ही अधपकी दानेदार खेती को ।

लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ।।
(परमात्मा रूपी किसान यमदूत रूपी) खेती काटने वाले मजदूर तैयार कर लेता है जो दरांतियां ले कर (मनुष्य के आयुरूपी खेत में) पहुंच जाते हैं ।

जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ।।२।।
जब प्रभु रूपी किसान का हुक्म होता है तो यमदूत रूपी मजदूर मनुष्य की आयु रूपी खेत को माप करके इसे काट लेते हैं ।।२।।

पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ ।।
(आयु रूपी रात्रि का) पहला प्रहर (बचपन) खाने पीने के धंधे करने में चला गया दूसरे प्रहर (जवानी) मे जी भर कर (गहरी) नींद सोता रहा ।

तीजै झाख झंखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥

तीसरा प्रहर (प्रौढ़ावस्था) विषय वासनाओं में लिप्त व्यर्थ झख मारने में चला गया और चौथा प्रहर (वृद्धावस्था) आते न आते आयुरूपी रात्रि व्यतीत हो गई और कालरूपी सवेरा आ गया ।

कद ही चिति न आइओ जिनि जीउ पिंडु दीआ ॥३॥

जिस प्रभु ने यह जीव और शरीर दिया है वह प्रभु कभी भी चित्त में नहीं आया (उस प्रभु का कभी भी स्मरण नहीं किया) ॥३॥

साध संगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥

मैं साधु संगति पर से बलिहार जाता हूं अपने जीव को साधु संगति पर कुर्बान करता हूं ।

जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ॥

जिस (साधु संगति) के कारण मेरे मन को यह सूझ प्राप्त हुई है और मुझे ज्ञानवान पुरुष (सद्गुरु) मिले हैं ।

नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥४॥४॥७४॥

(जिसकी कृपा से) नानक अन्तर्यामी सर्वज्ञाता हरि प्रभु को सदैव अपने साथ देखता है ॥४॥४॥७४॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

सभे गला विसरनु इको विसरि न जाउ ॥
धंधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥
आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥
जिनी सतिगुरु सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥१॥
मन मेरे करते नो सालाहि ॥
सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥१॥रहाउ॥
दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होइ ॥
कित ही कंमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोइ ॥
जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥
सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥
सेवा मंगै सेवको लाईआं अपुनी सेव ॥
साधू संगु मसकते तूठै पावा देव ॥
सभ किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ॥
सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभु पूरेव ॥३॥

इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥
इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ॥
इकस सिउ मनु मानिआ ता होआ निहचलु चीतु ॥
सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥४॥५॥७५॥

□

सभे गला विसरनु इको विसरि न जाउ ॥

शेष सभी बातें मैं भूल जाऊँ परन्तु एक सर्वव्यापी प्रभु को न भुलाऊँ।

धंधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥

(दुनिया के) सभी धन्धे त्यागने पर (मेरे) गुरु ने मुझे प्रभु का नाम दिया है जो (जीवन का) सच्चा सौदा है।

आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥

अन्य सभी आशाएँ त्याग कर केवल एक ही आशा (पूर्ति के निमित्त) कर्म करूँ।

जिनी सतिगुरु सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥१॥

जिन्होंने सद्गुरु की सेवा की है उन्हें आगे (प्रभु के दरबार में) उत्तम स्थान प्राप्त होता है ॥१॥

मन मेरे करते नो सालाहि ॥

हे मेरे मन तू कर्त्ता प्रभु की सराहना कर।

सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥१॥रहाउ॥

सभी चतुराइयों को छोड़ कर गुरु के चरणों में गिर जा ॥१॥ रहाउ॥

दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होइ ॥

यदि सुखों को देने वाला दाता मन में बसा हो तो न विकारों का दुख और न सांसारिक वस्तुओं को भूख सताती है।

कित ही कंमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोइ ॥

यदि हृदय में वह सत्यस्वरूप प्रभु (निवास करता) हो तो किसी काम में घाटा नहीं होता (किसी वस्तु का अभाव नहीं होता)।

जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥

हे प्रभु ! जिसे तुम हाथ देकर रखते हो (स्वयं जिसकी रक्षा करते हो) उसे कोई नहीं मार सकता।

सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥२॥

सुखों के दाता सद्गुरु की सेवा करने से वह सभी अवगुणों (की मैल) को (नाम जल से) धोकर (हृदय से) निकाल देता है ॥२॥

सेवा मंगै सेवको लाईआं अपुनी सेव ।।

हे सेवको, गुरु से सेवा की मांग करो और (प्रार्थना करो) हे गुरुदेव ! मुझे अपनी सेवा में लगा लो ।

साधू संगु मसकते तूठै पावा देव ।।

हे गुरुदेव ! आपकी प्रसन्नता होने पर ही मैं साधुओं की संगति और जप तप आदि की कठिन साधना प्राप्त कर सकता हूं ।

सभु किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ।।

सब कुछ स्वामी प्रभु के ही वश में है और वह आप ही कार्यों का कारण है और आप ही करने वाला है ।

सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ।।३।।

मैं सद्‌गुरु के बलिहार जाता हूँ जो सभी कामनाओं को पूरा करने वाला है ।।३।।

इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ।।

मुझे तो एक ही सज्जन दिखाई देता है और वह एक परमेश्वर ही मेरा भाई है और मेरा मित्र है ।

इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ।।

उस एक की ही यह सारी सामग्री (सृष्टि रचना) है और (समस्त) रीति मर्यादाएँ उस एक प्रभु ने (स्थापित) की हैं ।

इकस सिउ मनु मानिआ ता होआ निहचलु चीतु ।।

(जब मन) उस एक प्रभु को ही मान लेता है तब चित्त (चंचलता को छोड़ कर) स्थिर हो जाता है ।

सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ।।४।।५।।७५।।

(श्री गुरु अर्जुनदेव) नानक जी (कथन करते हैं) जिन्होंने सत्यस्वरूप प्रभु का सहारा कर (ले) लिया है उनका खाना सच (सफल) होता है और पहनना भी सच (सफल) होता है ।।४।।५।।७५।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ।।

जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ।।

गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ।।१।।

मेरे मन एकस सिउ चितु लाइ ।।

एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइ ।।१।।रहाउ।।

लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइ ।।

निमख एक हरिनामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥
जिस कउ पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥२॥
सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥
दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥
बाह पकड़ि गुरि काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥३॥
थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥
ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥
नानक बधा घरु तहां जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥४॥६॥७६॥

□

सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ॥

यदि एक परमेश्वर का नाम (मनरूपी) हाथ में आ जाय तो (धर्म, अर्थ, काम, मोक्षादि) सभी पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं ।

जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥

जीवन रूपी अनमोल पदार्थ तभी सार्थक है जब इसके द्वारा गुरु के सत्य उपदेश का कथन किया जाय ।

गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥१॥

गुरु के माध्यम से उसे ही प्रभु के स्वरूप की प्राप्ति होती है जिसके मस्तक पर भाग्य लिखा होता है ॥१॥

मेरे मन एकस सिउ चितु लाइ ॥

हे मेरे मन ! उस एक प्रभु से ही मन वृत्ति को लगाओ ।

एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइ ॥१॥रहाउ॥

उस एक प्रभु के नाम के बिना अन्य सभी (कर्म व्यर्थ के) धंधे हैं और माया के प्रति मोह उत्पन्न करने वाले मिथ्या (कर्म) हैं ॥१॥ रहाउ॥

लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुर नदरि करेइ ॥

यदि सद्गुरु कृपा दृष्टि करें तो लाखों राज्यों के राजसी सुखों से प्राप्त खुशियों के बराबर आनन्द की प्राप्ति होती है ।

निमख एक हरिनामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥

यदि (गुरु दया करके) एक पल मात्र के लिए भी हरि प्रभु का नाम दान में दे दें तो मन और तन शीतल हो जाते हैं ।

जिस कउ पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥२॥

जिसके मस्तक पर पूर्व जन्म के पुण्यों का फल लिखा हुआ हो वे ही सद्गुरु के चरणों को पकड़ सकते हैं ॥२॥

सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥

वही मुहूर्त्त सफल है वही घड़ी सफल है (जिस घड़ी व मुहूर्त्त में) उस सच्चे प्रभु के साथ प्यार उत्पन्न होता है ।

दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥

जिस जीव को हरि प्रभु के नाम का सहारा है उसे कोई दुख और संताप नहीं लगता ।

बाह पकड़ि गुरि काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥३॥

जिसे सद्गुरु आप बांह से पकड़ कर संसार सागर में से बाहर निकाल लेते हैं वही (संसार सागर से) पार उतरता है ॥३॥

थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥

जिस स्थान पर संत जनों की सभा एकत्रित होती है वहीं स्थान शोभायमान होता है और पवित्र होता है ।

ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥

(संतों की सभा में) उसे ही सम्मानपूर्ण सहारा मिलता है जिसने पूर्ण गुरु को प्राप्त कर लिया होता है ।

नानक बधा घरु तहां जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥४॥६॥७६॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) ऐसे जीव का हृदय रूपी घर उस अवस्था में जाकर बंधता है (उस अवस्था को प्राप्त होता है) जहां न मृत्यु होती है न जन्म होता है और न वृद्धावस्था होती है । ॥४॥६॥७६॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

सोई धिआईऐ जीअड़े सिरि साहां पातिसाहु ॥
तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ॥
सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ॥१॥
मन मेरे सुख सहज सेती जपि नाउ ॥
आठ पहर प्रभु धिआइ तूं गुण गोइंद नित गाउ ॥१॥रहाउ॥
तिस की सरनी परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ॥
सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइ ॥२॥
साध संगति होइ निरमला कटीऐ जम की फास ॥
सुखदाता भै भंजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥

मिहर करे जिसु मिहरवानु तां कारजु आवै रासि ।।३।।
बहुतो बहुतु वखाणीऐ ऊचो ऊचा थाउ ।।
वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ।।
नानक कउ प्रभ मइआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ।।४।।७।।७७।।

□

सोई धिआईऐ जीअड़े सिरि साहां पातिसाहु ।।
हे मेरे जीव उस प्रभु का ध्यान धारण कर जो सभी बादशाहों का सिरमौर बादशाह है ।
तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ।।
हे मन ! तू उसी प्रभु से (इच्छापूर्ति) की आशा कर जिस प्रभु पर सब जीवों का भरोसा है ।
सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ।।१।।
सभी चतुराइयों को छोड़ कर तू गुरु के चरणों पर पड़ जा ।।१।।
मन मेरे सुख सहज सेती जपि नाउ ।।
हे मेरे मन ! आत्मस्थिर होकर आनन्द सहित प्रभु के नाम का जाप कर ।
आठ पहर प्रभु धिआइ तूं गुण गोइंद नित गाउ ।।१।।रहाउ।।
आठों प्रहर तू प्रभु का ध्यान कर और नित्य प्रति गोबिन्द प्रभु के गुण गाता रह ।।१।। रहाउ।।
तिस की सरनी परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइ ।।
हे मेरे मन ! तू उस प्रभु की शरण में जाकर पड़ जा जिसके जैसा महान और कोई भी नहीं है ।
जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ।।
जिस प्रभु को स्मरण करते ही अनेक सुख प्राप्त होते हैं और दुख एवं क्लेश जड़ से ही नहीं होते (जड़ से ही समाप्त हो जाते हैं ।
सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइ ।।२।।
सदा स्थिर रहने वाला वह प्रभु हो सब का मालिक है तू सदैव उसी सत्यस्वरूप प्रभु की सेवा कर ।।२।।
साध संगति होइ निरमला कटीऐ जम की फास ।।
साधुओं की संगति में मिलकर पवित्र हो जाते हैं और यमराज का (मृत्यु का) फंदा भी कट जाता है ।
सुखदाता भैभंजनो तिसु आगै करि अरदासि ।।
तू उसी प्रभु के सामने प्रार्थना कर जो प्रभु सुखों को देने वाला है और

(यम के डर) को दूर करने वाला है ।

मिहर करे जिसु मिहरवानु तां कारजु आवै रासि ।।३।।

वह दयालु प्रभु जिस पर दया दृष्टि करता है उसके ही समस्त कार्य सफल होते हैं ।।३।।

बहुतो बहुतु वखाणीऐ ऊचो ऊचा थाउ ।।

महान से भी महान कष्ट कर उसका बखान किया जाता है और प्रभु का निवास स्थान ऊँचे से भी ऊंचा बताया जाता है ।

वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ।।

वह वर्ण और चिन्ह से बाहर है (उस प्रभु का न कोई वर्ण है और न कोई चिन्ह है) उसकी कीमत कही नहीं जा सकती ।

नानक कउ प्रभ मइआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ।।४।।७।।७७।।

हे (दयालु) प्रभु ! इस नानक पर भी दया करो और उसे सदैव स्थिर रहने वाला अपना सत्य नाम दान में दे दो ।।४।।७।।७७।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

नामु धिआइ सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होइ ।।
पूरे गुर ते पाईऐ परगटु सभनी लोइ ।।
साध संगति कै घरि वसै एको सचा सोइ ।।१।।
मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ।।
नामु सहाई सदा संगि आगै लए छडाइ ।।१।।रहाउ।।
दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ।।
माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ।।
जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ।।२।।
साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ।।
उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ।।
तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मसतकि होवै भागु ।।३।।
तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ।।
सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ।।
नानक कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ।।४।।८।।७८।।

□

नामु धिआइ सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होइ ।।

जो जीव प्रभु का नाम आराधना करता है वह सदैव सुखी रहता है और उसका मुख (लोक परलोक) उज्ज्वल रहता है ।

पूरे गुर ते पाईऐ परगटु सभनी लोइ ॥

प्रभु के नाम को पूर्ण सद्‌गुरु से प्राप्त किया जाता है और जो जीव उसके नाम को प्राप्त कर लेता है उसका (यश) सभी लोको में प्रत्यक्ष हो जाता है।

साध संगति कै घरि वसै एको सचा सोइ ॥१॥

साधुओं की संगति करने से वह एक मात्र सत्य स्वरूप प्रभु (हृदय रूपी) घर में आकर बसता है ॥१॥

मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥

हे मेरे मन! तू दुखों का हरण करने वाले हरि प्रभु के नाम का ध्यान धारण कर।

नामु सहाई सदा संगि आगै लए छडाइ ॥१॥रहाउ॥

हरि प्रभु का नाम सदा जीव के साथ रहकर उसकी सहायता करता है और आगे परलोक में (यमों द्वारा मिलने वाले दण्ड से) उसे छुड़ाता है ॥१॥ रहाउ॥

दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥

सांसारिक बड़प्पन किसी काम नहीं आता।

माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥

माया से प्राप्त आनन्द फीका (सारहीन) होता है और अन्त में सारे का सारा नष्ट हो जाता है।

जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥२॥

जिस जीव के हृदय में हरि प्रभु का निवास है वही जीव पूर्ण (गुणवान) और श्रेष्ठ (पद का अधिकारी) है ॥२॥

साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ॥

हे जीव ! अपनापन और आपा (अहंभाव) त्याग कर साधुओं के (चरण की) धूल बन जा।

उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥

अन्य सभी उपाय और चतुराइयों को त्याग कर गुरु के चरणों से लग जा।

तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मसतकि होवै भागु ॥३॥

प्रभु नाम का अनमोल रत्न उसे ही प्राप्त होता है जिसके मस्तक पर सौभाग्य को (रेखा) होती है ॥३॥

तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥

हे भाइयों ! (प्रभु नाम का अनमोल रत्न) उसे ही प्राप्त होता है जिसे

प्रभु आप (दया करके) देता है।

सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥

सद्गुरु की सेवा भी वही कर सकता है जिसका अहंकार (हउमै से उत्पन्न अग्नि) का ताप विनष्ट हो जाता है।

नानक कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ॥४॥८॥७८॥

नानक का (परम पुरुष) गुरु से मिलन होते ही सारा दुख क्लेश नष्ट हो गया है ॥४॥८॥७८॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥
इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥
तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥१॥
मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥
गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥१॥रहाउ॥
इको भाई मितु इकु इको मात पिता ॥
इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥
सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु बसि कीता ॥२॥
घरि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि ॥
जीअ जंत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ॥
इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥३॥
पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ॥
जीउ पिंडु सभि तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥
गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ॥४॥९॥७९॥

□

इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥

एक प्रभु ही जीव का परिचित है और वही एक प्रभु ही जीव की रक्षा करने वाला है।

इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥

उस एक प्रभु का ही मन को आश्रय है और वही एक प्रभु प्राणों का सहारा है।

तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥१॥

उसकी शरण में आने से स्थायी सुखों की प्राप्ति होती है वह प्रभु ही (निराकार) पारब्रह्म है और वह प्रभु ही (साकार) सृष्टि का कर्त्ता है ॥१॥

मन मेरे सगल उपाव तिआगु।।
गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ।।१।।रहाउ।।

हे मेरे मन तू सभी उपाय त्याग कर पूर्ण गुरु की अराधना कर और नित्य प्रति एक प्रभु के प्रेम में ही लग जा (चित्तवृत्ति को एक प्रभु के प्रेम में लगा दे) ।।१।। रहाउ।।

इको भाई मितु इकु इको मात पिता ।।

वह एक प्रभु ही मेरा भाई है वही एक प्रभु ही मेरा मित्र है और वह एक प्रभ ही मेरो माता है और वही पिता है ।

इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ।।

जिस प्रभ ने यह जीव और शरीर दिया है उस एक प्रभु का ही मेरे मन को सहारा है ।

सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु बसि कीता ।।२।।

जिस प्रभु ने सब कुछ अपने वश में कर रखा है वह प्रभु मेरे मन से कभी भी विस्मृत न हो ।।२।।

घरि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि ।।

वही एक प्रभ घर (अन्तरात्मा) में हैं वही (सर्वव्यापी प्रभु) बाहर (सृष्टि में व्याप्त) है और वही एक प्रभु आप हो देश देशान्तरों में (परिपूर्ण) है।

जीअ जंत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ।।

जिस प्रभु ने सभी (सूक्ष्म व स्थूल) जीव जन्तु पैदा किए हैं आठ प्रहर उसी प्रभु का जाप करो ।

इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ।।३।।

उस एक प्रभु से प्रीति करने से कोई शोक संताप नहीं होता ।

पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ।।

परब्रह्म प्रभु परमेश्वर एक ही है उस जैसा (सर्व शक्तिमान) और दूसरा नहीं है ।

जीउ पिंडु सभि तिस का जो तिसु भावै सु होइ ।।

यह जीव और पिंड सब उसका दिया हुआ है जो उसे अच्छा लगता है वही होता है ।

गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ।।४।।६।।७६।।

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) जो जीव पूर्ण गुरु के माध्यम से सदा स्थिर सत्य प्रभु का जाप करते हैं वे (परिपूर्ण प्रभु से मिलकर) पूर्ण हो जाते हैं ।।४।।६।।७६।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ।।
जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ।।
जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरिनामु ।।१।।
मन मेरे एको नामु धिआइ ।।
सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ ।।१।।रहाउ।।
जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ।।
साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ।।
जनम मरण की मलु कटीऐ गुरदरसनु देखि निहाल ।।२।।
थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइ ।।
सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ।।
तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइ ।।३।।
जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ।।
तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ।।
जिनी मेरा प्रभु धिआइआ नानक तिन कुरबान ।।४।।१०।।८०।।

□

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ।।

जिन जीवों ने सद्‌गुरु के शब्द उपदेश में चित्तवृत्ति लगाई है वही जीव पूर्ण और श्रेष्ठ पुरुष है ।

जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ।।

जिन जीवों पर प्रभु आप दयालु होता है उनके मन में ही ज्ञान उत्पन्न होता है ।

जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरिनामु ।।१।।

जिनके माथे पर (शुभ कर्मों का भाग्य फल) लिखा हुआ है वे ही हरि प्रभु के नाम को प्राप्त करते हैं ।।१।।

मन मेरे एको नामु धिआइ ।।

हे मेरे मन एकमात्र प्रभु के नाम का ही ध्यान कर ।

सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ ।।१।।रहाउ।।

सभी सुखों को देने वाले प्रभु का नाम स्मरण करने से आध्यात्मिक सुख उत्पन्न होगा और प्रभु की दरगाह में (यश रूपी) सुन्दर वस्त्रों से सुशोभित हो कर जायेगा ।।१।। रहाउ।।

जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ।।

पृथ्वी का पालन करने वाले प्रभु की प्रेम पूर्वक भक्ति करने से जन्म और मरण का भय समाप्त हो जाता है।

साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥

साधुओं की संगति में (रहने से अन्तःकरण) पवित्र हो जाता है और (ऐसे शुद्ध अन्तःकरण वाले जीव का प्रभु) आप पालन (रक्षा) करता है।

जनम मरण की मलु कटीऐ गुरदरसनु देखि निहाल ॥२॥

जन्म और मरण के चक्र में डालने वाली अविधा को मेल कट जाती है और सद्‌गुरु के स्वरूप को देख कर मन निहाल हो जाता है।

थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहम् प्रभु सोइ ॥

वह पारब्रह्म प्रभु ही देश देशान्तरों में व्याप्त हो रहा है।

सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥

सभी जीवों को दान देने वाला वह प्रभु एक ही है (उसके अतिरिक्त) और कोई दूसरा नहीं हैं।

तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइ ॥३॥

उसकी शरण में आने से ही माया के बन्धनों से छूट सकते हैं और जिस कार्य की कामना करते हैं वह पूरा होता है ॥३॥

जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ॥

जिन जीवों के मन में पारब्रह्म प्रभु का निवास होता है वे ही पूर्ण और श्रेष्ठ जीव हैं।

तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ॥

उन पुरुषों का ही पवित्र यश सारे संसार में प्रत्यक्ष (होकर फैलता) है।

जिनी मेरा प्रभु धिआइआ नानक तिन कुरबान ॥४॥१०॥८०॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) मैं उन जीवों पर कुर्बान जाता हूं जिन्हों ने मेरे प्यारे प्रभु के नाम की आराधना की है।

॥४॥१०॥८०॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

मिलि सतिगुर सभु दुखु गइआ हरिसुखु वसिआ मनि आइ ॥
अंतरि जोति प्रगासीआ एकसु सिउ लिव लाइ ॥
मिलि साधूमुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥
गुण गोविंद नित गावणे निरमल साचै नाइ ॥१॥
मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥

गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥१॥रहाउ॥
मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥
अंतरजामी सदा संगि करणैहारु पछानु ॥
गुरपरसादी मुखु ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥
कामु क्रोधु लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥२॥
पाइआ लाहा लाभु नामु पूरन होए काम ॥
करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥
आवण जाणा रहि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥
सचु महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥३॥
भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥
हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥
आठ पहर गुण सारदे रते रंगि अपार ॥
पारब्रहमु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥४॥११॥८१॥

□

मिलि सतिगुर दुखु गइआ हरिसुखु वसिआ मनि आइ ॥

सद्‌गुरु से मिलकर सारा दुख समाप्त हो जाता है और सुख स्वरूप हरि मन में आकर बस जाता है।

अंतरि जोति प्रगासीआ एकसु सिउ लिव लाइ ॥

उस एक प्रभु से चित्तवृत्ति लगाने से अन्तरात्मा में प्रभु की ज्योति प्रकाशित हो जाती है।

मिलि साधूमुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥

साधु (संगति) में मिलकर मुख उज्जवल होता है और पूर्व जन्म के (पुण्य कर्मों का) लिखा हुआ फल प्राप्त हो जाता है।

गुण गोविंद नित गावणे निरमल साचै नाइ ॥१॥

नित्य प्रति गोबिन्द प्रभु के गुण गाने और सच्चे प्रभु का नाम स्मरण करने से मन पवित्र हो जाता है। १॥

मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥

हे मेरे मन! गुरु के शब्द उपदेश को मानने से सुख की प्राप्ति होती है।

गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥१॥रहाउ॥

पूर्ण गुरु की सेवा करने वाला कोई भी जीव (इस संसार से बिना फल प्राप्त किए) व्यर्थ नहीं जाता ॥१॥ रहाउ॥

मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥

गुरु की सेवा करने वाले को प्रभु नाम के खजाने की प्राप्ति होती है और उसके मन की सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

अंतरजामी सदा संगि करणैहारु पछानु ॥

वह पहचान जाता है कि सृष्टि का कर्त्ता अन्तर्यामी प्रभु सदैव साथ है।

गुरपरसादी मुखु ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥

गुरु की कृपा से वह प्रभु नाम का जाप करता है, दान करता है और अन्तःकरण की शुद्धता में स्नान करने से उसका मुख उज्ज्वल होता है।

कामु क्रोधु लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥२॥

काम, क्रोध, लोभ आदि विकार नष्ट हो जाते हैं और वह सम्पूर्ण अभिमान का त्याग कर देता है ॥२॥

पाइआ लाहा लाभु नामु पूरन होए काम ॥

वह संसार के सभी लाभों में से प्रभु नाम के लाभ को प्राप्त करता है जिससे उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥

प्रभु कृपा करके अपने नाम का दान देता है और अपने में मिला लेता है।

आवण जाणा रहि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥

प्रभु आप मेहरबान हो जाता है जिससे आने जाने (आवागमन) का चक्र समाप्त हो जाता है।

सचु महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥३॥

गुरु के उपदेश द्वारा अपने (आत्मस्वरूप) को पहचान कर सदा स्थिर प्रभु के स्वरूप को अपने हृदय रूपी घर में ही प्राप्त कर लेता है ॥३॥

भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥

अपनी कृपा का सहारा देकर वह अपने भक्त जनों की स्वयं ही रक्षा करता है।

हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥

सत्यस्वरूप परमेश्वर के गुणों की संभाल करते रहने से उसका लोक और परलोक में मुख उजला होता है।

आठ पहर गुण सारदे रते रंगि अपार ॥

उस अपरंपार प्रभु के नाम रंग में रंगे रहने के कारण वह आठों प्रहर प्रभु के गुणों की ही संभाल करता रहता है।

पारब्रहमु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥४॥११॥८१॥

नानक सुखों के सागर पारब्रह्म प्रभु पर सदैव बलिहार जाता है।
॥४॥११॥८१॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥
करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नामु ॥
जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥१॥
मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥
हरि बिनु दूजा को नही एको नामु धिआइ ॥१॥रहाउ॥
कीमति कहणु न जाईऐ सागरु गुणी अथाहु ॥
वडभागी मिलु संगती सचा सबदु विसाहु ॥
करि सेवा सुखसागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥२॥
चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥
मै धर तेरी पारब्रहम तेरै ताणि रहाउ ॥
निमाणिआ प्रभु माणु तूं तेरै संगि समाउ ॥३॥
हरि जपीऐ आराधीऐ आठ पहर गोविंदु ॥
जीअ प्राण तनु धनु रखे करि किरपा राखी जिंदु ॥
नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रहम बखसिंदु
॥४॥१२॥८२॥

□

पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥

यदि पूर्ण सद्गुरु से मिलन हो जाय तो ज्ञान उपदेश का भंडार प्राप्त हो जाता है।

करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नामु ॥

हे प्रभु ! अपनी कृपा दृष्टि करो जिससे आध्यात्मिक जीवन देने वाले तुम्हारे नाम का जाप कर सकें।

जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥१॥

जन्म और मरण (आवागमन) का दुख कट जाय (दूर हो जाय) और स्थिर अवस्था प्राप्त करके सुरति को तुम्हारे ध्यान में लगा सकें ॥१॥

मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥

हे मेरे मन प्रभु की शरण प्राप्त कर।

हरि बिनु दूजा को नही एको नामु धिआइ ॥१॥रहाउ॥

हरि प्रभु के बिना और कोई दूसरा (तुम्हारा रखवाला) नहीं है इसलिए उस एक प्रभु का ही नाम स्मरण कर ॥१॥ रहाउ॥

कीमति कहणु न जाईऐ सागरु गुणी अथाहु ॥

प्रभु की कीमत (महानता) कही नहीं जा सकती वह गुणों का अथाह सागर है।

वडभागी मिलु संगती सचा सबदु विसाहु ॥

(हे मेरे) बड़े भाग्यशाली (मन)! सत्संगति में मिलकर सदा स्थिर रहने वाले प्रभु के शब्द उपदेश का सौदा कर।

करि सेवा सुखसागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥२॥

(हे मेरे मन!) तू सुख के सागर उस प्रभु की सेवा कर जो सभी बादशाहों में सिरमौर बादशाह है ॥२॥

चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥

(प्रभु से प्रार्थना कर कि हे पारब्रह्म प्रभु!) मुझे तुम्हारे ही चरण कमल का सहारा है और दूसरा कोई भी स्थान नहीं है।

मै धर तेरी पारब्रहम तेरै ताणि रहाउ ॥

मुझे तुम्हारा ही आश्रय है मैं तुम्हारे बल पर ही (जीवित) रहता हूँ।

निमाणिआ प्रभु माणु तूं तेरै संगि समाउ ॥३॥

आदरहीनों को तुम्हीं आदर देने वाले हो (हे प्रभु! कृपा करो) मैं तुम्हारे (स्वरूप के) साथ ही समा जाऊँ।

हरि जपीऐ आराधीऐ आठ पहर गोविंदु ॥

हे मन! आठों प्रहर हरि प्रभु के गोबिन्द नाम का ही जाप करना चाहिए और (इसी नाम की ही) अराधना करनी चाहिए।

जीअ प्राण तनु धनु रखे करि किरपा राखी जिंदु ॥

प्रभु ने ही यह (सुन्दर) तन दिया है और उसमें जीव एवं प्राण धन का खजाना प्रतिष्ठित किया है और प्रभु ने ही कृपा करके हमें जीवन (आयु दान) दिया है।

नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रहम बखसिंदु ॥४॥१२॥८२॥

नानक का वह पारब्रह्म प्रभु सदा बख्शने वाला (क्षमा करने वाला) है और वह शरण में आए जीव के सभी दोषों को उतार देता है (जीव को दोष मुक्त कर देता है) ॥४॥१२॥८२॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥
ना वेछोड़िआ विछुड़ै सभ महि रहिआ समाइ ॥
दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सतभाइ ॥
अचरज रूपु निरंजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥१॥
भाई रे मीतु करहु प्रभु सोइ ॥
माइआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइ ॥१॥रहाउ॥
दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥
सखा सहाई अति वडा ऊंचा वडा अपारु ॥
बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥
जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥२॥
जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै सांति ॥
इकमनि एकु धिआईऐ मन की लाहि भरांति ॥
गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥
सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥३॥
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन का सखा गोविंदु ॥
तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इह जिंदु ॥
देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि ब्रहमु रविंदु ॥
अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥४॥१३॥८३॥

□

प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥

उस सत्यस्वरूप प्रभु से प्रीति लग गई है जो प्रभु (अयोनि है) न मरता है न (आवागमन के चक्र मे) आता है न जाता है।

ना वेछोड़िआ विछुड़ै सभ महि रहिआ समाइ ॥

वह प्रभु सभी जीवों में समा रहा है इसलिए अलग करने (की चेष्टा करने) पर भी वह (जीवों से) बिछुड़ता नहीं है।

दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सतभाइ ॥

प्रभु दीनों का दर्द और दुख दूर करने वाला है और अपने सेवकों को सच्चा प्यार करता है।

अचरज रूपु निरंजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥१॥

माया की मल से रहित प्रभु का स्वरूप आश्चर्य चकित कर देने वाला

है। हे मेरी मां ! मुझे मेरे गुरु ने ऐसे ही प्रभु से मिलवाया है।

भाई रे मीतु करहु प्रभु सोइ ॥

(तुम भी) हे मेरे भाई ! ऐसे प्रभु को अपना मित्र कर लो (बना लो)।

माइआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइ ॥१॥रहाउ॥

माया से मोह और प्रीति को धिक्कार है क्यों कि इस माया के फंदे में फंसा हुआ कोई भी मनुष्य सुखी दिखाई नहीं देता ॥१॥ रहाउ॥

दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥

प्रभु सर्वज्ञ है, सबको देने वाला है शीलवान है परम पवित्र है और अपार रूपवान है।

सखा सहाई अति वडा ऊंचा वडा अपारु ॥

प्रभु सबसे बड़ा मित्र है सहायक है अत्यन्त महान् है, सर्वोच्च है और अत्यन्त व्यापक है।

बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरबारु ॥

उस प्रभु का दरबार सदैव अटल स्थिति में रहता है क्यों कि वह प्रभु न तो बालक जाना जाता है और न वृद्ध (वह समान निश्चल अवस्था में रहता है)।

जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥२॥

प्रभु आधारहीनों का आधार है उससे जो मांगा जाता है वही प्राप्त होता है ॥२॥

जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै सांति ॥

जिसे देखते ही सभी पाप दूर हो जाते हैं और मन तन शान्त हो जाता है।

इकमनि एकु धिआईऐ मन की लाहि भरांति ॥

उस प्रभु का एकाग्र चित्त होकर ध्यान करना चाहिए और मन की सभी भ्रान्तियों को त्याग देना चाहिए।

गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥

गुणों का भंडार वह प्रभु सदैव नूतन है और उसको दी हुई प्रत्येक वस्तु पूर्ण है।

सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥३॥

उस सनातन (शाश्वत) प्रभु की सदैव आराधना करनी चाहिए और (ऐसा उपक्रम करना चाहिए) जिससे वह प्रभु न दिन में विस्मृत हो न रात में (दिन रात उसकी याद बनी रहे)।

जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन का सखा गोविंदु ॥

जिनके मस्तक पर पूर्व जन्म के (शुभ कर्मों का फल) लिखा है उनका ही गोबिन्द प्रभु मित्र बनता है।

तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इह जिंदु ॥

अपना तन मन धन सभी उस प्रभु को अर्पित कर देना चाहिए। और अपना यह सारा जीवन प्रभु पर कुर्बान कर देना चाहिए।

देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि ब्रहमु रविंदु ॥

प्रभु सब कुछ देखता है सब कुछ सुनता है वह सदैव सबके हुजूर (निकट) है और पारब्रह्म प्रभु ही कण-कण में रम रहा है।

अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥४॥१३॥८३॥

नानक का वह सदैव क्षमाशील प्रभु (इतना उदार है कि) कृतघ्न जीवों का भी (समान प्यार से) पालन करता है ॥४॥१३॥८३॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

मनु तनु धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥
सरब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥
सदा सदा प्रभु सिमरीऐ अंतरि रखु उरधारि ॥१॥
मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइ ॥१॥रहाउ॥
रतन पदारथ माणका सुइना रूपा खाकु ॥
मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥
जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥२॥
अंतरि बाहरि रवि रहिआ तिस नो जाणै दूरि ॥
त्रिसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥
भगती नाम विहूणीआ आवहि वंञहि पूर ॥३॥
राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइआ ॥
बिनु प्रभ कोइ न रखनहारु महा बिकट जम भइआ ॥
नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइआ ॥४॥१४॥८४॥

□

मनु तनु धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥

जिस प्रभु ने यह मन यह तन और धन दिया है और जिस प्रभु ने इस शरीर को सुन्दर सजा संवार कर रखा है।

सरब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥

जिस प्रभु ने सभी प्रकार की कलाएँ (क्षमता) देकर (शरीर में) अपनी महान् ज्योति को स्थापित किया है।

सदा सदा प्रभु सिमरीऐ अंतरि रखु उरधारि ॥१॥

उस प्रभु को सदैव सदैव स्मरण करते रहना चाहिए और हृदय के अन्दर उसे धारण करके रखना चाहिए ॥१॥

मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइ ॥

हे मेरे मन ! हरि प्रभु के बिना और कोई भी (जीवों का सहारा) नहीं है।

प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइ ॥१॥रहाउ॥

सदैव प्रभु की ही शरण में आकर रहो तुम्हें कोई भी दुख व्याप्त नहीं होगा।

रतन पदारथ माणका सुइना रूपा खाकु ॥

रत्न और मणियों जैसे अनमोल पदार्थ सोना और चांदी सब मिट्टी में मिल जाते हैं।

मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥

माता पिता पुत्र बन्धु सभी सम्बन्ध मिथ्या हैं।

जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥२॥

मन के पीछे लगने वाला मनमुख जीव पशु है अपवित्र है क्योंकि जिस प्रभु ने इतना कुछ किया है उस प्रभु को जानता ही नहीं ॥२॥

अंतरि बाहरि रवि रहिआ तिस नो जाणै दूरि ॥

जो प्रभु अन्तरात्मा में और बाहर (सम्पूर्ण जगत में) रम रहा है उसे दूर करके जानता है।

त्रिसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥

तृष्णा के पीछे लगकर माया में रत (अनुरक्त) है और अन्तःकरण मिथ्या अभिमान से पूर्ण है।

भगती नाम विहूणीआ आवहि वंञहि पूर ॥३॥

प्रभु की भक्ति और प्रभु के नाम से वंचित (रहकर) पूरी तरह से (आवागमन के चक्र में फंसा) आता (जन्म लेता) और जाता (मरता) है ॥३॥

राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइआ ॥

हे कर्त्ता प्रभु ! समस्त जीव जन्तुओं पर दया दृष्टि करके उनकी (आवागमन के चक्र से) रक्षा करो।

बिनु प्रभ कोइ न रखनहारु महा विकट जम भइआ ॥

प्रभु के बिना कोई भी रक्षा करने वाला नहीं है यमदूत जीवों के लिए अति भयानक हो रहा है।

नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइआ ॥४॥१४॥८४॥

हे दुखहर्त्ता प्रभु ! अपनी दया दृष्टि करो जिससे यह (दास) नानक कभी भी तुम्हारे नाम को विस्मृत न करें ॥४॥१४॥८४॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥
सुत दारा बनिता अनेक रंग अरु वेस ॥
हरिनामु रिदै न वसई कारजि कितै न लेखि ॥१॥
मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥
करि संगति नित साध की गुरचरणी चितु लाइ ॥१॥रहाउ॥
नामु निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥
कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥
हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ न आवै ना जागु ॥२॥
करि संगति तू साध की अठसठि तीरथ नाउ ॥
जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा एहु सुआउ ॥
ऐथे मिलहि वडाईआ दरगहि पावहि थाउ ॥३॥
करे कराए आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥
मारि आपे जीवालदा अंतरि बाहरि साथि ॥
नानक प्रभ सरणागती सरब घटा के नाथ ॥४॥१५॥८५॥

□

मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥

भले ही मनुष्य कहता रहे यह तन मेरा है, यह धन भी मेरा है यह राज्य मेरा है मैं रूपवान हूँ और मैं देशों का स्वामी हूं।

सुत दारा बनिता अनेक बहतु रंग अरु वेस ॥

विविध रंगों के विविध वेषों को धारण करने वाली मेरी अनेक स्त्रियां पुत्र और पुत्रवधूएं हैं।

हरिनामु रिदै न वसई कारजि कितै न लेखि ॥१॥

यदि हरि प्रभु का नाम हृदय में नहीं बसता तो ये सभी कार्य किसी हिसाब में नहीं है (अर्थात सभी कार्य निरर्थक है) ॥१॥

मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥

हे मेरे मन ! तू हरि प्रभु के हरि नाम का ध्यान कर !

करि संगति नित साध की गुरचरणी चितु लाइ ॥१॥रहाउ॥

तू नित्य प्रति साधुओं की संगति कर और गुरु के चरणों में चित्त को लगा ॥१॥ रहाउ॥

नामु निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥

मस्तक पर उत्तम भाग्य (लिखें) हों तब प्रभु नाम के खजाने का ध्यान धारण किया जाता है ।

कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥

हे जीव ! सद्गुरु के चरणों से लगकर सारे कार्य सँवार ले ।

हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ ना आवै ना जागु ॥२॥

(सद्गुरु के चरण पकड़ने से) हउमै (अहंकार) का रोग और भ्रम कट जायेगा और तब हे जीव ! तू न आएगा न जायेगा (जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जायेगा) ।

करि संगति तू साध की अठसठि तीरथ नाउ ॥

तू साधुओं की संगति कर इसमें ही तेरा अड़सठ तीर्थों का नहान (स्नान) हो जायेगा ।

जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा एहु सुआउ ॥

सत्संगति में जाने से जीव प्राण तन मन सभी प्रफुल्लित हो जाएंगे और तुझे यह सच्चा लाभ प्राप्त होगा ।

ऐथे मिलहि वडाईआ दरगहि पावहि थाउ ॥३॥

इस लोक में तुझे बढ़ाई मिलेगी और प्रभु की दरगाह में तुझे स्थान प्राप्त होगा ॥३॥

करे कराए आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥

वह प्रभु आप ही सब कुछ करने करवाने वाला है और सब कुछ उसके ही हाथ में है ।

मारि आपे जीवालदा अंतरि बाहरि साथि ॥

वह अन्दर (अन्तरात्मा) और बाहर (जगत में सर्वत्र) जीव के साथ है और वह आप ही जीव को मारता है और आप ही उसे जीवित करता है ।

नानक प्रभ सरणागती सरब घटा के नाथ ।।४।।१५।।८५।।

नानक उसी प्रभु की शरण में आया है जो सभी जीवों का स्वामी है ।
।।४।।१५।।८५।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

सरणि पए प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु ।।
सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल ।।
अंदरु लगा रामनामि अंम्रित नदरि निहालु ।।१।।
मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ।।
करे दइआ प्रभु आपणी इक निमख न मनहु विसारु ।।१।।रहाउ।।
गुण गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटणहार ।।
बिनु हरिनाम न सुखु होइ करि डिठे बिसथार ।।
सहजे सिफती रतिआ भवजलु उतरे पारि ।।२।।
तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूरि ।।
लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ।।
थान थनंतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ।।३।।
सचु पातिसाही अमरु सचु सचे सचा थानु ।।
सची कुदरति धारीअनु सचि सिरजिओनु जहानु ।।
नानक जपीऐ सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ।।४।।१६।।८६।।

□

सरणि पए प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु ।।

जिन पुरुषों पर गरु कृपालु हुआ है वे ही अपने प्रभु की शरण में आकर पड़े हैं (शरण प्राप्त की है) ।

सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल ।।

सद्गुरु के उपदेश से उनके विकारों के सभी बंधन नष्ट हो गए हैं ।

अंदरु लगा रामनामि अंम्रित नदरि निहालु ।।१।।

उनके अन्तःकरण में राम का नाम लग गया है (मन राम नाम से लग गया है ।) और प्रभु की अमृत दृष्टि प्राप्त करके कृतार्थ हो गए हैं ।।१।।

मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ।।

हे मेरे मन । तू सत्यगुरु की सेवा और संभाल कर ।

करे दइआ प्रभु आपणी इक निमख न मनहु विसारु ।।१।।रहाउ।।

एक पल के लिए भी प्रभु को अपने मन से न भुला, (ऐसा करने से) प्रभु तुम पर भी अपनी दया दृष्टि करेगा ।।रहाउ।।

गुण गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटणहार ।।

जो प्रभु समस्त अवगुणों को काटने वाला है उस गोविन्द प्रभु के गुणों को नित्य प्रति गाते रहना चाहिए ।

बिनु हरिनाम न सुखु होइ करि डिठे बिसथार ।।

सांसारिक पदार्थों का व्यापक उपभोग करके देख लिया गया है, परन्तु हरि नाम के बिना सच्चा सुख प्राप्त नहीं होता ।

सहजे सिफती रतिआ भवजलु उतरे पारि ।।२।।

स्थिर बुद्धि से प्रभु की सराहना में रच (लग) जाने से इस संसार सागर से पार उतर जाते हैं।।२।।

तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूरि ।।

लाखों तीर्थ, व्रत और संयम का फल साधुओं की चरण धूलि से प्राप्त होता है ।

लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ।।

हे जीव ! तू किससे छुपा कर पाप कर्म करता है जबकि प्रभु सदैव हुजूर (निकट) होकर (तेरे कर्मों को) देख रहा है ।

थान थनंतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ।।३।।

वह मेरा परिपूर्ण प्रभु प्रत्येक देश देशान्तर में रम रहा है ।।३।।

सचु पातिसाही अमरु सचु सचे सचा थानु ।।

उस प्रभु की बादशाही सत्य (सनातन) है उसका हुकुम भी सत्य है। सत्यस्वरूप प्रभु का निवास स्थान (सचखण्ड) भी सत्य है ।

सची कुदरति धारीअनु सचि सिरजिओनु जहानु ।।

उसने सत्य (प्रकृति) शक्ति को धारण कर रखा है और उसके द्वारा रचा गया यह जगत भी सत्य है ।।

नानक जपीऐ सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ।।४।।१६।।८६।।

(पंचम) नानक जी (कथन करते हैं) मैं उन जीवों पर सदैव-सदैव कुर्बान जाता हूं जो सत्यस्वरूप प्रभु का सत्यनाम जपते हैं ।।४।।१६।।८६।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ।।

संत संगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ।।१।।

मन मेरे रामनामु जपि जापु ॥
मन इछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥रहाउ॥
जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥२॥
मनु तनु निरमलु होइआ लागी साचु परीति ॥
चरण भजे पारब्रह्म के सभि जप तप तिन ही कीति ॥३॥
रतन जवेहर माणिका अंम्रितु हरि का नाउ ॥
सूख सहज आनंद रस जन नानक हरिगुण गाउ ॥४॥१७॥८७॥

□

उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥

हे भाग्यशाली मन ! उद्यम कर हरि नाम का जाप कर और नाम धन की कमाई कर ।

संत संगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥१॥

संतों के संग में बैठकर हरि प्रभु के नाम का स्मरण कर और जन्म जन्मान्तर (के पाप कर्म) की मैल को काट ले ॥१॥

मन मेरे रामनामु जपि जापु ॥

हे मेरे मन प्रभु के राम नाम का जाप जप !

मन इछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥रहाउ॥

तू मन इच्छित फल का भोग करेगा और तेरे सभी शोक संताप दूर हो जायेंगे ॥रहाउ॥

जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि ॥

जिस कारण (प्रभु प्राप्ति निमित्त) इस शरीर को धारण किया था उस प्रभु को मैंने अपने निकट ही देख लिया है ।

जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥२॥

वह प्रभु जल स्थल और अन्तरिक्ष में परिपूर्ण हो रहा है और उस प्रभु ने अपनी दया दृष्टि से मुझे कृतार्थ कर दिया है ॥२॥

मनु तनु निरमलु होइआ लागी साचु परीति ॥

मेरा मन और तन पवित्र हो गया है और प्रभु से मुझे सच्ची प्रीति लग गई है ।

चरण भजे पारब्रह्म के सभि जप तप तिन ही कीति ॥३॥

जो जीव पारब्रह्म प्रभु के चरणों का भजन करते हैं सभी जप और तप (मानों) उन्होंने ही कर लिए हैं ॥३॥

रतन जवेहर माणिका अंम्रितु हरि का नाउ ॥

प्रभु का अमृत नाम रत्न जवाहर और माणिक्य (से भी अनमोल) है।

सूख सहज आनंद रस जन नानक हरिगुण गाउ ॥४॥१७॥८७॥

(इसीलिए प्रभु का) यह दास नानक सहजावस्था के आनन्द रस और सुख में (डूबकर) हरि प्रभु के गुणों का ही गायन करता है ॥४॥१७॥८७

□

सिरीरागु महला ५ ॥

सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीऐ हरिनाउ ॥
चरण कमलु गुरि धनु दीआ मिलिआ निथावे थाउ ॥
साची पूंजी सचु संजमो आठ पहर गुण गाउ ॥
करि किरपा प्रभु भेटिआ मरणु न आवणु जाउ ॥१॥
मेरे मन हरि भजु सदा इकरंगि ॥
घट घट अंतरि रवि रहिआ सदा सहाई संगि ॥१॥ रहाउ॥
सुखा की मिति किआ गणी जा सिमरी गोविंदु ॥
जिन चाखिआ से त्रिपतासिआ उह रसु जाणै जिंदु ॥
संता संगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ॥
जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ॥२॥
अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ॥
रसना उचरै गुणवती कोइ न पुजै दानु ॥
द्रिसटि धारि मनि तनि वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥
जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥३॥
मिलिआ कदे न विछुड़ै जो मेलिआ करतारि ॥
दासा के बंधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥
भूला मारगि पाइओनु गुण अवगुण न बीचारि ॥
नानक तिसु सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥४॥१८॥८८॥

□

सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीऐ हरिनाउ ॥

वही शास्त्र उत्तम है वही शगुन उत्तम है जिसके द्वारा हरि का नाम जपा जा सकता है।

चरण कमलु गुरि धनु दीआ मिलिआ निथावे थाउ ॥

सद्‌गुरु ने जिस जीव को भी प्रभु के चरण कमलों की भक्ति रूपी धन दिया है उस आश्रयहीन को मानो आश्रय प्राप्त हो गया है।

साची पूंजी सचु संजमो आठ पहर गुण गाउ ।।

आठों प्रहर प्रभु का गुण गान करते रहना ही सदा स्थिर रहने वाली (धन राशि) पूंजी है और यही इन्द्रियों को वश में करने का सार्थक साधन है ।

करि किरपा प्रभु भेटिआ मरणु न आवणु जाउ ।।१।।

प्रभु कृपा करके जिसे मिल जाता है वह फिर न मरता है न आवागमन के चक्र में आता है न जाता है ।।१।।

मेरे मन हरि भजु सदा इकरंगि ।।

हे मेरे मन ! सदैव उस एक प्रभु के प्रेम रंग में रंग कर हरि नाम का भजन कर !

घट घट अंतरि रवि रहिआ सदा सहाई संगि ।।१।। रहाउ।।

वह प्रभु प्रत्येक जीव की अन्तरात्मा में रम रहा है और सदैव साथ रहकर सहायता करता है ।।१।। रहाउ।।

सुखा की मिति किआ गणी जा सिमरी गोविंदु ।।

गोविन्द प्रभु के नाम का स्मरण करने से जो सुख प्राप्त होते हैं क्या उन सुखों की सीमा गिनी जा सकती (क्या उन सुखों की कोई सीमा है ? नहीं है । क्योंकि नाम स्मरण करने से अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है) ।

जिन चाखिआ से त्रिपतासिआ उह रसु जाणै जिंदु ।।

जिन जीवों ने (प्रभु के नाम स्मरण से उत्पन्न) रस को चखा है वे पूरी तरह से तृप्त हो गए हैं वह रस कितना आनन्द दायक है यह तो उनकी आत्मा ही जानती है ।।

संता संगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ।।

सन्त जनों की संगति करने से बख्श देने वाला वह प्रियतम प्रभु मन में आकर बस जाता है ।

जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ।।२।।

जिन्होंने अपने प्रियतम प्रभु की सेवा की है वे राजाओं के भी राजा हैं ।।२।।

अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ।।

जिस समय हरि प्रभु के यश और गुणों के गायन से रमण (आनन्द लाभ) किया जाता है वह समय करोड़ों तीर्थों में डुबकी लगाकर किए गए स्नान (के बराबर) है ।

रसना उचरै गुणवती कोइ न पुजै दानु ॥

कोई भी दान (प्रभु नाम स्मरण की) बराबरी नहीं कर सकता जो जीभ हरि प्रभु के नाम का उच्चारण करती रहती है वह गुणवान है।

द्रिसटि धारि मनि तनि वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥

वह दयालु मेहरबान परम पुरुष (नाम जपने वाले को) अपनी दृष्टि में धारण कर लेता है।

जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥३॥

यह जीव और शरीर रूपी धन सब उस प्रभु का ही है, मैं सदैव सदैव उस पर कुर्बान जाता हूं ॥३॥

मिलिआ कदे न विछुड़ै जो मेलिआ करतारि ॥

जिन्हें कर्त्ता प्रभु आप अपने साथ मिला लेता है वे प्रभु से मिलकर फिर कभी भी बिछुड़ते नहीं हैं।

दासा के बंधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥

वह सत्य स्वरूप प्रभु सृष्टि का सर्जक कर्त्ता अपने दासों के बंधन काट देता है।

भूला मारगि पाइओनु गुण अवगुण न बीचारि ॥

गुण और अवगुणों का विचार न करते हुए प्रभु भूले हुए (पथ भ्रष्टों) को ठीक मार्ग पर लगा देता है।

नानक तिसु सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥४॥१८॥८८॥

नानक उस प्रभु की शरण में आ गया है जो सभी जीवों का सहारा है ॥४॥१८॥८८॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइ ॥
मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥
मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइ ॥१॥
मन मेरे साचा सेवि जिचरु सासु ॥
बिनु सचे सभ कूड़ु है अंते होइ बिनासु ॥१॥ रहाउ॥
साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइ ॥
मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइ ॥
चारे कुंडा भालीआ सह बिनु अवर न जाइ ॥२॥
तिसु आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥
सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भंडारु ॥

सदा सदा सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥३॥
परवदगारु सालाहीऐ जिस दे चलत अनेक ॥
सदा सदा आराधीऐ एहा मति विसेख ॥
मनि तनि मिठा तिसु लगै जिसु मसतकि नानक लेख ॥४॥१६॥८६॥

□

रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइ ॥

जिह्वा से सदैव सत्यस्वरूप प्रभु के नाम का स्मरण करने से मन और तन पवित्र हो जाते हैं ।

मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥

माता पिता आदि अनेक सगे सम्बन्धी हैं परन्तु उस प्रभु के बिना और कोई भी (साथ निभने वाला) नहीं है ।

मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइ ॥१॥

यदि प्रभु अपनी कृपा दृष्टि कर दें तो एक पल के लिए भी वह प्रभु विस्मृत नहीं होता ॥१॥

मन मेरे साचा सेवि जिचरु सासु ॥

मेरे मन ! जब तक शरीर में सांस है उस सच्चे प्रभु की सेवा कर !

बिनु सचे सभ कुड़ु है अंते होइ बिनासु ॥१॥ रहाउ॥

सत्य प्रभु के बिना बाकी सब मिथ्या है और अन्त में विनष्ट हो जाता है ॥१॥ रहाउ ॥

साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइ ॥

मेरा स्वामी प्रभु मैल रहित है (छल कपट विकार की मैल से रहित पवित्र है) उसके (दर्शन) बिना मुझ से रहा नहीं जाता ।

मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइ ॥

हे मेरी मां ! मेरे मन और तन को (उसके दर्शन की) अति अधिक भूख है कोई (संतजन) आकर मुझे उस प्रभु से मिला दे ।

चारे कुंडा भालीआ सह बिनु अवर न जाइ ॥२॥

मैंने चारों दिशाओं में खोज कर देख लिया है उस पति परमात्मा के बिना (सहारे के लिए) अन्य और कोई जगह नहीं है ॥२॥

तिसु आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥

उस (सद्गुरु) के सामने प्रार्थना करो जो कर्त्ता प्रभु से मिलाता है ।

सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भंडारु ॥

सद्गुरु ही प्रभु नाम को देने वाला है उसके पास (भक्ति से) परिपूर्ण (ज्ञान का विशाल) भंडार है ।

सदा सदा सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥३॥

(गुरु के माध्यम से) सदैव नित्य रहने वाले प्रभु की सराहना करें जिस प्रभु के आर पार का कोई अन्त नहीं है ॥३॥

परवदगारु सालाहीऐ जिस दे चलत अनेक ॥

जगत के पालन करने वाले उस प्रभु की सराहना करें जिस प्रभु का चरित्र अनेक प्रकार का है ॥

सदा सदा आराधीऐ एहा मति विसेख ॥

सदैव नित्य प्रभु की आराधना करें यही विशेष (श्रेष्ठ) बुद्धि है ॥

मनि तनि मिठा तिसु लगै जिसु मसतकि नानक लेख ॥४॥१९॥८९॥

(श्री गुरुदेव पंचम) नानक जी (कथन करते हैं) जिसके मस्तक पर भाग्य का लिखा होता है उसे ही प्रभु का नाम तन और मन से मीठा (प्यारा) लगता है ॥४॥१९॥८९॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥
तीसा बंधहु जीआ का ऐथै ओथै नालि ॥
गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदरि निहालि ॥
करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइ दइआलु ॥१॥
मेरे मन गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥
दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सचु सोइ ॥१॥ रहाउ॥
सगल पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइ ॥
गुर चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइ ॥
गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महि रहिआ समाइ ॥
गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लए तराए ॥२॥
कितु मुखि गुरु सालाहीऐ करणकारण समरथु ॥
से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥
गुरि अंमृत नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ॥
गुरु परमेसरु सेविआ भै भंजनु दुख लथु ॥३॥
सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघखंडु ॥
जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न लागै डंडु ॥
गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ॥
नामु निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मंडु ॥४॥२०॥९०॥

□

संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥

हे भाई ! संत जनों के साथ मिलकर प्रभु के सत्य नाम की संभाल करो।

तोसा बंधहु जीआ का ऐथै ओथै नालि ॥

अपने जोव की जीवन यात्रा के लिए खर्चा बांध लो और ऐसी धन सामग्री गाँठ में बांधो जो यहां (इस लोक) और वहाँ (परलोक) दोनों में साथ दे।

गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदरि निहालि ॥

यदि प्रभु अपनी कृपा दृष्टि से जीव को देखे तभी पूर्ण सद्‌गुरु के द्वारा नाम रूपी धन की प्राप्ति होती है।

करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइ दइआलु ॥१॥

जिस जीव पर प्रभु दयालु होते हैं उसे ही यह नाम धन का अनुग्रह प्राप्त होता है ॥१॥

मेरे मन गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥

हे मेरे मन ! गुरु जैसा महान और कोई नहीं है।

दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सचु सोइ ॥१॥ रहाउ॥

गुरु के बिना सहारे के लिए और कोई स्थान नहीं सूझता। गुरु ही उस परम सत्य प्रभु से मिलाता है ॥१॥ रहाउ ॥

सगल पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइ ॥

जिन जीवों ने (गुरु की शरण में) जाकर गुरु के दर्शन किए हैं (धर्म, अर्थ, काम, मोक्षादि) सभी पदार्थ उन्हें मिलते हैं।

गुर चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइ ॥

हे मां वे बड़े भाग्यवान हैं जिनका मन गुरु के चरणों से लगा है।

गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महि रहिआ समाइ ॥

गुरु ही सबको नाम देने वाला है गुरु ही सभी कार्य पूर्ण करने में समर्थ है और गुरु ही सब में समाया हुआ है ॥

गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लए तराए ॥२॥

गुरु ही परमेश्वर और पारब्रह्म (का साक्षात रूप) हैं गुरु(संसार सागर में) डूबते हुए को तरा लेता (पार उतार देता) है।

कितु मुखि गुरु सालाहीऐ करणकारण समरथु ॥

सभी कार्यों को करने और करवाने में समर्थ गुरु को किस मुंह से सराहना की जाय।

से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥

वे मस्तक संसार में निश्चल रहते हैं जिन पर गुरु ने अपना हाथ रखा है।

गुरि अंमृत नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ।।

गुरु ने नाम रूपी अमृत को पिलाकर जन्म और मरण के रोग से मुक्ति का पथ्य (उपचार) दे दिया है ।

गुरु परमेसरु सेविआ भै भंजनु दुख लथु ।।३।।

जिन्होंने गुरु (उपदेश) से भय को नष्ट करने वाले परमेश्वर की सेवा की है उनका जन्म मरण का दुख उतर गया है (दूर हो गया है) ।।३।।

सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघखंडु ।।

सद्‌गुरु अत्यन्त गहरा और गंभीर सुखों का सागर है और पापों का खंडन (नाश) करने वाला है ।

जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न लागै डंडु ।।

जिन्होंने अपने गुरु की सेवा की है उन्हें यमदूतों का डंडा (दण्ड) नहीं लगता ।

गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ।।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में खोजकर देख लिया है गुरु (अतुलनीय है)की तुलना किसी के साथ नहीं लगती ।

नामु निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मंडु ।।४।।२०।।९०।।

नानक को सद्‌गुरु ने नाम का खजाना दिया है और उस सुख के भंडार से उसने अपने मन का अन्तर मंडित कर लिया है (सजा लिया है) ।

।।४।।२०।।९०।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ सादु ।।

भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बादु ।।

जाँदे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ।।१।।

मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ।।

जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु ।।१।। रहाउ।।

जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दहदिस जाइ ।।

लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ।।

काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ ।।२।।

माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ।।

त्रिसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ ।।

जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ।।३।।

अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इहु संसारु ।।
जिसनो रखै सो रहै संम्रिथु पुरखु अपारु ।।
हरिजन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ।।४।।२१।।९१।।

□

मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ सादु ।।

जिन सांसारिक सुखों को मीठा करके (मानकर) खाया (उपभोग किया) जाता है, उनमें से कड़वा स्वाद (दुख) उत्पन्न होता है ।

भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बादु ।।

भाई मित्र सुहृदय करके (मानकर) जीव विषय (जनित सुखों) में रचा रहता है, (परन्तु वे सब) व्यर्थ सिद्ध होते हैं ।

जांदे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ।।१।।

आश्चर्य (तो यह है कि) परमेश्वर के नाम के बिना किसी भी पदार्थ को जाने (विनष्ट होने) में विलम्ब नहीं होता ।।१।।

मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ।।

हे मेरे मन ! तू सद्‌गुरु की सेवा में लग ।

जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु ।।१।। रहाउ।।

जो भी (दृश्यमान जगत में) दिखाई देता है वह नाशवान है इसलिए मन के परामर्श का त्याग कर दें ।।१।।रहाउ।।

जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दहदिस जाइ ।।

जैसे पागल कुत्ता दसों दिशाओं में भाग जाता है (उसी प्रकार लोभी पुरुष कुत्ते की तरह ही भागा फिरता है) ।

लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ।।

(लोभी पुरुष) लोभी जानवर की भाँति कुछ नहीं समझता और भक्ष्य (खाने योग्य) और अभक्ष्य (न खाने योग्य) सभी पदार्थों को खाता है ।

काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ ।।२।।

इस पर काम और क्रोध का नशा व्याप्त हो रहा है जिस कारण यह बार बार योनियों में पड़ता है ।।२।।

माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ।।

माया ने अपना जाल फैला रखा है और (लोभी पुरुष को) फंसाने के लिए इसके मन के अन्दर विषय वासनाओं से उत्पन्न सुख के आकर्षण का दाना डाल रखा है ।

त्रिसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ ।।

हे मां ! तृष्णाओं के प्रति आसक्त जीव रूपी पक्षी इसमें फंसा हुआ है

और निकल नहीं सकता।

जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ॥३॥

जिस प्रभु ने इसे बनाया है उसे यह जानता ही नहीं और बार बार योनियों में आता और जाता है ॥३॥

अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इहु संसारु ॥

माया इस संसार को अनेक प्रकार से और अनेक विधियों से मोहित करती है।

जिसनो रखै सो रहै संम्रिथु पुरखु अपारु ॥

वह समर्थ परम पुरूष अपरंपर प्रभु जिसकी स्वयं अपना हाथ देकर रक्षा करता है वही माया के जाल में फंसने से बचा रहता है।

हरिजन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ॥४॥२१॥९१॥

हरि प्रभु के जिन दासों का हरि प्रभु से प्रेम करके उद्धार हो गया है नानक प्रभु के उन सेवकों के सदैव बलिहार जाता है ॥४॥२१॥९१॥

□

सिरीरागु महला ५ घरु २॥

गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु डंफु पसारु ॥
मुहलति पुंनी चलणा तूं संमलु घरबारु ॥१॥
हरिगुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥
किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥
किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥२॥
मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥
सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥३॥
लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥
नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥४॥२२॥९२॥

□

गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु डंफु पसारु ॥

(जिस प्रकार ग्वाला थोड़े समय के लिए चरागाह पर पशुओं को चराने आता है और पशुओं को चराने के पश्चात् घर लौट जाता है उसी प्रकार यह जीव रूपी) ग्वाला (संसार रूपी) चरागाह पर (थोड़े समय के लिए) आया हुआ है भला यह क्या आडम्बर फैला बैठा है।

मुहलति पुंनी चलणा तूं संमलु घरबारु ॥१॥

यहां रहने की अवधि पूर्ण होते ही तुझे यहां से चलना है (परलोक गमन

करना है) इसलिए अपने असली घर द्वार (स्वस्वरूप को) संभाल ॥१॥

हरिगुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥

हे मन ! हरि प्रभु के गुणों का गान कर और सद्गुरु की प्यार से सेवा कर।

किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥१॥ रहाउ॥

हे जीव ! क्या तुच्छ सी बात (सांसारिक पदार्थों) पर घमण्ड करता है ॥१॥ रहाउ॥

जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥

जैसे रात्रि (व्यतीत) करने को आये हुए मेहमान प्रभात होते ही उठ कर चल पड़ते हैं (वैसे ही आयु रूपी रात्रि के व्यतीत होते यह जीव उठ कर चल देगा, मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा)।

किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥२॥

तू गृहस्थी के सुखों में क्या मस्त हो रहा है यह सब (सुख) बगीचे में खिलने वाले फूलों की तरह (नाशवान) है ॥२॥

मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥

तू मेरी-मेरी क्या करता रहता है जिसने यह सभी सांसारिक पदार्थ दिये हैं उस प्रभु (को प्राप्त करने) की इच्छा कर।

सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥३॥

तू ने यहां से उठ कर चलना (मर कर परलोक जाना) जरूर है और तब लाखों करोड़ों रुपये यहीं छोड़ कर चला जायेगा ॥३॥

लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥

तुमने चौरासी लाख योनियों में भटकते दुर्लभ मानव जन्म प्राप्त किया है।

नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥४॥२२॥९२॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जो (कहते हैं, हे मनुष्य !) प्रभु के नाम की संभाल कर (नाम स्मरण कर) वह दिन (मृत्यु का दिन) निकट ही आ पहुंचा है ॥४॥२२॥९२॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

तिचरु वसहि सुहेलड़ी जिचरु साथी नालि ॥
जा साथी उठि चलिआ ता धन खाकू रालि ॥१॥

मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥
धंनु सु तेरा थानु ॥१॥ रहाउ॥

जिचरु वसिआ कंतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥

जा उठी चलसी कंतड़ा ता कोइ न पुछै तेरी बात ॥२॥

पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥

गुर मिलि चजु आचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥३॥

सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥

नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥४॥२३॥९३॥

□

तिचरु वसहि सुहेलड़ी जिचरु साथी नालि ॥

हे शरीर रूपी स्त्री तू तब तक ही सुखपूर्वक निवास कर रही है जब तक तेरी आत्मा (प्राण) रूपी साथी तुम्हारे साथ है ।

जा साथी उठि चलिआ ता धन खाकू रालि ॥१॥

जब तुम्हारा साथी (तुमसे बिछुड़कर यहां से) उठकर चला जायेगा तब तू मिट्टी में मिल जायेगी ॥१॥

मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥ धंनु सु तेरा थानु ॥१॥रहाउ॥

हे प्रभु ! जिनके मन में बैराग्य उत्पन्न हुआ है और जिन्हें तुम्हारा दर्शन देखने का चाव हैं वे धन्य है क्योंकि उन जीवों के मन में तुम्हारा निवास हो गया है ॥१॥ रहाउ॥

जिचरु वसिआ कंतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥

जब तक इस शरीर रूपी घर में जीव रूपी पति का निवास है तब तक सभी जी जी कहते हैं (आदर सम्मान करते हैं) ।

जा उठी चलसी कंतड़ा ता कोइ न पुछै तेरी बात ॥२॥

जब यह जीव रूपी पति (तुझसे बिछुड़ कर यहां से) उठ कर चला जायेगा तब कोई भी तेरी बात नहीं पूछेगा ॥२॥

पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥

जब तक तू इस संसार रूपी मायके में निवास कर रही है प्रभु पति को प्यार से स्मरण करती रह इससे तुम ससुराल (परलोक) में जाने पर सुख पूर्वक निवास कर सकेगी ।

गुर मिलि चजु आचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥३॥

सद्‌गुरु से मिलकर प्रभु पति को रिझाने का तरीका सीख और (उत्तम) आचरण (बना) तब तुझे कभी भी दुख नहीं लगेगा (दुख नहीं होगा) ।

सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥

सभी जीवात्मा रूपी स्त्रियों ने ससुराल (परलोक) जाना है और सभी

जीव स्त्रियां (काल से) व्याही जाकर बिदा होने योग्य है ।

नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥४॥२३॥९३॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) वे जीव स्त्रियां धन्य हैं सौभाग्यवती हैं जिन्हें अपने पति प्रभु से प्यार है ॥४॥२३॥९३॥

□

सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥

करणकारण एक ओही जिनि कीआ आकारु ॥

तिसहि धिआवहु मन मेरे सरब को आधारु ॥१॥

गुर के चरन मन महि धिआइ ॥

छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिवलाइ ॥१॥रहाउ॥

दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुरमंत्रु हिरदै होइ ॥

कोटि जतना करि रहे गुर बिनु तरिओ न कोइ ॥२॥

देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥

हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥

साध संगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥

से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ ॥४॥२४॥९४॥

□

करणकारण एक ओही जिनि कीआ आकारु ॥

जिस प्रभु ने (जगत को) आकार दिया (बनाया) है, वही एक प्रभु सभी कार्यों का कारण है ।

तिसहि धिआवहु मन मेरे सरब को आधारु ॥१॥

हे मेरे मन ! तुम उस प्रभु का स्मरण करो जो सभी जीवों का सहारा है ॥१॥

गुर के चरन मन महि धिआइ ॥

सद्गुरू के चरणों का मन में ध्यान करो ।

छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिवलाइ ॥१॥रहाउ॥

सभी चतुराइओं को छोड़ कर गुरु के उपदेश द्वारा सत्यस्वरूप प्रभु में अपनी सुरति को लगा दो ॥१॥रहाउ॥

दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुरमंत्रु हिरदै होइ ॥

गुरू का मन्त्र यदि मन में (बस रहा) हो तो कोई भी दुख क्लेश नहीं होता और न ही (मृत्यु का) भय व्याप्त होता है ।

कोटि जतना करि रहे गुर बिनु तरिओ न कोइ ॥२॥

चाहे कोई करोड़ों उपाय करता रहे पर गुरू के बिना कोई भी (संसार

सागर) से तर नहीं सका है ॥२॥

देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥

गुरू को देखते ही उसके दर्शनों ने मन को सांत्वना प्राप्त होती है और सभी पापों का नाश हो जाता है।

हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥

मैं उन जीवों पर बलिहार जाता हूं जो गुरू के चरणों पर आकर गिरते हैं (गुरू के चरणों को पकड़ते हैं)।

साध संगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥

साधुओं की संगति में रहने से हरि प्रभु का सत्यनाम मन में आकर बसता है।

से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ ॥४॥२४॥९४॥

(श्री गुरू अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) वे जीव बड़े भाग्य-शाली हैं जिनके मन में इस प्रकार का (प्रभु के प्रति) प्रेम (भाव) है ॥४॥२४॥९४॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

संचि हरिधनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥
जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥१॥
जपि मन नामु एकु अपारु ॥
प्रान मनु तनु जिनहि दीआ रिदे का आधारु ॥१॥रहाउ॥
कामि क्रोधि अहंकारि माते विआपिआ संसारु ॥
पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥२॥
सतु संतोखु दइआ कमावै एह करणी सार ॥
आपु छोडि सभि होइ रेणा जिसु देइ प्रभु निरंकारु ॥३॥
जो दीसै सो सगल तूं है पसरिआ पासारु ॥
कहु नानक गुरि भरमु काटिआ सगल ब्रहम बीचारु ॥४॥२५॥९५॥

□

संचि हरिधनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥

हे मन ! हरि के नाम धन को एकत्रित कर सद्गुरू की पूजा कर और सभी विकारों को छोड़ दे।

जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥१॥

जिस प्रभु ने तुम्हें बनाया है और बनाकर सुन्दर संवारा है उसी हरि प्रभु का नाम स्मरण करने से तेरा उद्धार हो सकता है।

जपि मन नामु एकु अपारु ॥

हे मेरे मन ! उस एक हरि प्रभु का नाम जप ।

प्रान मनु तनु जिनहि दीआ रिदे का आधारु ॥१॥रहाउ॥

जिस प्रभु ने यह शरीर दिया है, मन और प्राण दिए हैं और जो प्रभु (सभी) हृदयों का सहारा है ॥१॥रहाउ॥

कामि क्रोधि अहंकारि मातें विआपिआ संसारु ॥

जो जीव संसार के प्रति अधिक आसक्त है (संसार में अधिक रचे हुए हैं) वे काम क्रोध और अहंकार से ग्रस्त हैं ।

पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥२॥

तू संतों की शरण में पड़ जा और गुरू के चरणों से लग जा, अज्ञान के अन्धकार से उत्पन्न तुम्हारा सारा दुख दूर हो जाएगा ॥२॥

सतु संतोखु दइआ कमावै एह करणी सार ॥

सत्य, संतोष और दया की कमाई (कर्म) करो यही सभी कर्मों का सार तत्व है ।

आपु छोडि सभि होइ रेणा जिसु देइ प्रभु निरंकारु ॥३॥

जिस जीव को निराकार प्रभु आप प्रेरणा देता है वही अपनापन (अहंभाव) छोड़ कर सब के चरणों की धूल बन जाता है ॥३॥

जो दीसै सो सगल तूं है पसरिआ पासारु ॥

हे प्रभु ! इस संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब तुम ही हो (तुम्हारा ही रूप है) सारी सृष्टि का विस्तार तुम्हारे द्वारा ही प्रसारित किया गया है ।

कहु नानक गुरि भरमु काटिआ सगल ब्रहम बीचारु ॥४॥२५॥९५॥

(श्री गुरू अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) जिस जीव के भ्रम के बंधन सद्‌गुरू ने काट दिए हैं वह सर्वत्र ब्रह्म (की स्थिति) पर ही विचार करता है (उसे सर्वत्र ब्रह्म ही व्याप्त प्रतीत होता है) ॥४॥२५॥९५॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

दुक्रित सुक्रित मंधे संसारु सगलाणा ॥

दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥१॥

ठाकुरु सरबें समाणा ॥

किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वडपुरखु सुजाणा ॥१॥रहाउ ॥

मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥

तत समदरसी संतहु कोई कोटि मंधाही ॥२॥
कहन कहावन इहु कीरति करला ॥
कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला ॥३॥
गति अविगति कछु नदरि न आइआ ॥
संतन की रेणु नानक दानु पाइआ ॥४॥२६॥९६॥

□

दुक्रित सुक्रित मंधे संसारु सगलाणा ॥

सम्पूर्ण संसार दुष्कर्म और सत्यकर्म (के विवेचन) में ही उलझा हुआ है।

दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥१॥

जो इन दोनों (के विवेचन) से दूर है वही प्रभु का सच्चा भक्त है परन्तु ऐसा मनुष्य कोई-कोई ही जाना जाता है ॥१॥

ठाकुरु सरबे समाणा ॥

वह स्वामी प्रभु सब में समाया हुआ है।

किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वडपुरखु सुजाणा ॥१॥रहाउ॥

हे स्वामी ! मेरी प्रार्थना सुनो तुम सब कुछ जानने वाले महान परम पुरुष हो ॥१॥ रहाउ॥

मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥

जो जीव मान और अभिमान के (विचार) में (फँसा हुआ) है वह प्रभु का सेवक नहीं हो सकता।

तत समदरसी संतहु कोई कोटि मंधाही ॥२॥

हे संत जनो उस ब्रह्म तत्व को सबमें समान दृष्टि से व्याप्त देखने वाला तो करोड़ों में कोई हो है ॥२॥

कहन कहावन इहु कीरति करला ॥

कहना कहलाना, यह तो यश कमाने का साधन है।

कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला ॥३॥

गुरु के सम्मुख रहने वाला कोई बिरला हो व्यर्थ कहने कहलवाने की प्रवृत्ति से मुक्त होता है ॥३॥

गति अविगति कछु नदरि न आइआ ॥

प्रभु की गति और अवगति कुछ भी दृष्टि में नहीं आई (प्रभु की गति-विधि का जब कुछ भी अनुमान नहीं लगा)

संतन की रेणु नानक दानु पाइआ ॥४॥२६॥९६॥

(तब) नानक ने संत जनों की शरण में जाकर उनके चरणों की धूलि का दान प्राप्त किया है ॥४॥२६॥९६॥

□

सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥

तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥
भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥१॥
सुहेला कहनु कहावनु ॥ तेरा बिखमु भावनु ॥१॥रहाउ॥
हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ जानउ आपा ॥
सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥२॥
पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन जुगता ॥
बंधन मुकतु संतहु मेरी राखै ममता ॥३॥
भए किरपाल ठाकुर रहिओ आवण जाणा ॥
गुर मिलि नानक पारब्रहमु पछाणा ॥४॥२७॥९७॥

□

तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥

हे मेरे प्रभु ! तुम्हारे ही सहारे मैंने लाड़ प्यार किया है ।

भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥१॥

हे हरि प्रभु ! आप ही हमारे पिता हैं और आप ही माता हैं और हम भूल चूक करने वाले आप के ही बच्चे हैं ॥१॥

सुहेला कहनु कहावनु ॥ तेरा बिखमु भावनु ॥१॥रहाउ॥

(मौखिक रूप से बातों का) कहना कहलवाना तो सरल है परन्तु आपकी प्रसन्नता प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है ॥१॥ रहाउ॥

हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ जानउ आपा ॥

हे प्रभु ! मैं आप पर ही गर्व करता हूँ और आपको ही अपना बल समझता हूँ ।

सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥२॥

आप सबके बीच में हो और सब के बाहर भी हो । हे पिता ! आप किसी पर निर्भर नहीं करते आप बेमोहताज हैं ॥२॥

पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन जुगता ॥

पिता जी मैं नहीं जानता कि तुम्हारी प्राप्ति की युक्ति क्या है (किस युक्ति से तुम्हें प्राप्त किया जा सकता है) ।

बंधन मुकतु संतहु मेरी राखै ममता ॥३॥

हे सन्तजनो ! आप बन्धन मुक्त हो प्रभु के प्रति मेरी बाल ममता की रक्षा करो ।

भए किरपाल ठाकुर रहिओ आवण जाणा ॥

ठाकुर प्रभु के कृपालु हो जाने से मेरा आना जाना (आवागमन का

चक्र) समाप्त हो गया है।

गुर मिलि नानक पारब्रहमु पछाणा ॥४॥२७॥९७॥

नानक ने गुरु से मिल कर ही पारब्रह्म प्रभु को पहचाना है।

॥४॥२७॥९७॥

□

सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥

संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥
सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइआलु ॥
पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु ॥१॥
मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥
तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अंम्रितनामु ॥१॥रहाउ॥
जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ॥
तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु ॥
गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ॥२॥
आए से परवाणु हहि जिन गुरु मिलिआ सुभाइ ॥
सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइ ॥
करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइ ॥३॥
सचु करता सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ॥
सचो सचु वखाणीऐ सचो बुधि बिबेक ॥
सरब निरंतरि रवि रहिआ जपि नानक जीवै एक ॥४॥२८॥९८॥

□

संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥

हे भाईयो ! प्रभु के दास संतों से मिलकर यमदूत और मृत्यु (काल) का डर कट जाता है।

सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइआलु ॥

जब प्रभु स्वामी आप ही दयालु हो जाता है तब वह सच्चा मालिक मन में आकर बस जाता है।

पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु ॥१॥

पूर्ण सद्गुरु से मिलने पर (माया और काल के) सभी जाल (बंधन) विनष्ट हो जाते हैं ॥१॥

मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥

हे मेरे सद्गुरु जी मैं तुम्हारे पर कुर्बान जाता हूं।

तेरें दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अंम्रितनामु ।।१।। रहाउ।।

मैं तुम्हारे दर्शन के लिए अपने को न्यौछावर करता हूं। तुमने प्रसन्न होकर अमरता प्रदान करने वाला अपना नाम दिया है ।।१।।रहाउ।।

जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ।।

जिन पुरुषों ने अत्यन्त प्रेम से तुम्हारी सेवा की है वही बुद्धिमान पुरुष हैं।

तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु ।।

जिनके हृदय के अन्दर नाम का खजाना है उनके पीछे लगकर (विकार और माया के बंधन से) छूट जाते हैं।

गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ।।२।।

उस गुरु जैसा महान दाता और कोई नहीं है जिस गुरु ने आत्मिक जीवन को सुखी बनाने के लिए ज्ञान का दान दिया है ।।२।।

आए से परवाणु हहि जिन गुरु मिलिआ सुभाइ ।।

(जिन्होंने गुरु से प्यार किया है और) गुरु अत्यन्त प्रेम से जिन्हें मिले हैं उनका ही इस संसार में आना कबूल (सार्थक) है।

सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइ ।।

सत्य स्वरूप प्रभु के प्रेमरंग में रंग (रच) जाने से ही प्रभु की दरगाह में बैठने को मिलता है।

करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइ ।।

बड़प्पन (का दान) कर्त्ता प्रभु के अपने ही हाथ में है और आरम्भ से ही जिसके मस्तक पर लिख दिया गया है वही इसे प्राप्त करता है ।।३।।

सचु करता सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ।।

वह सत्यस्वरूप प्रभु ही (जगत का) कर्त्ता है, वह सत्यस्वरूप परमात्मा ही सभी कार्यों को करने वाला है और वह सत्य स्वरूप प्रभु ही जगत का मालिक है और उस सत्य स्वरूप प्रभु का ही सब (जीवों) को सहारा है।

सचो सचु वखाणीऐ सचो बुधि बिबेक ।।

उस (एक मात्र) सत्य स्वरूप प्रभु का ही सत्य बखान किया जाता है और वह सत्यस्वरूप प्रभु ही (एक मात्र) बुद्धिमान और विवेकशील (ज्ञानवान पुरुष) है।

सरब निरंतरि रवि रहिआ जपि नानक जीवै एक ।।४।।२८।।९८।।

वह एक सत्य पुरुष ही सर्वत्र अविरल रूप से रम रहा है (व्याप्त है)

नानक उस एक प्रभु को ही जप कर जीवित रहता है (वही नानक का जीवन आधार है) ॥४॥२८॥९८॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

गुरु परमेसरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु ॥
सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु ॥
सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु ॥
बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु ॥१॥
मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥
साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥१॥रहाउ॥
गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ ॥
गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥
गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ॥
गुर ते बाहरि किछु नही गुर कीता लोड़े सु होइ ॥२॥
गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥
गुरु दाता हरिनामु देइ उधरै सभु संसारु ॥
गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥
गुर की महिमा अगम है किआ कथै कथनहारु ॥३॥
जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥
पूरबि लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥
सतिगुर सरणी आइआं बाहुड़ि नही बिनासु ॥
हरि नानक कदे न विसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु ॥४॥२९॥९९॥

□

गुरु परमेसरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु ॥

सद्गुरु को परमेश्वर मानकर उसकी पूजा करनी चाहिए और उससे तन और मन से प्रेम लगाना (करना) चाहिए।

सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु ॥

(क्योंकि) सद्गुरु ही आत्मा को जीवन देने वाला है और शरण में आने वाले सभी जीवों को प्रभु के नाम का सहारा देता है।

सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु ॥

सद्गुरु के बचनों को सुनकर उसके अनुसार कमाई (कर्म) करो, यही सबसे उत्तम विचार है।

बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु ॥१॥

साधुजनों की संगति से प्रेम किए बिना जितने भी माया से मोह करते हुए कर्म किए जाते हैं वे सब व्यर्थ हैं ॥१॥

मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥
साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥१॥रहाउ॥

हे मेरे मित्र हरि प्रभु के नाम की संभाल कर। साधुओं की संगति करने से हरि प्रभु का नाम मन में बस जाता है और तब सारा परिश्रम सफल होता है, जीवन सार्थक हो जाता है ॥१॥रहाउ॥

गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ ॥

गुरु (सभी कार्यों को करने में) समर्थ (शक्तिमान) है, गुरु अनन्त है, किसी बड़े भाग्यवान को ही गुरु के दर्शन प्राप्त होते हैं।

गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥

गुरु इन्द्रियों की पहुंच से परे हैं, गुरु (अविद्या की मल से रहित) पवित्र है गुरु जैसा महान अन्य कोई नहीं है।

गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ॥

गुरु ही कर्त्ता है, गुरु ही सभी कार्यों को करने वाला है, गुरु के सम्मुख रहने (शरण में आने) पर सच्ची शोभा प्राप्त होती है।

गुर ते बाहरि किछु नही गुर कीता लोड़े सु होइ ॥२॥

गुरु की इच्छा से बाहर कुछ भी नहीं है गुरु जो करना चाहता है वही होता है ॥२॥

गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥

गुरु महान तीर्थ स्थल है गुरु पारिजात वृक्ष है गुरु सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

गुरु दाता हरिनामु देइ उधरै सभु संसारु ॥

गुरु ही सारे संसार को हरि का नाम देने वाला है और गुरु द्वारा दिए गए हरि के नाम को जप कर ही सारे संसार का उद्धार होता है।

गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥

गुरु समर्थ है, गुरु निराकार प्रभु का रूप है, गुरु अत्यन्त महान अगम्य और अनन्त प्रभु का रूप है।

गुर की महिमा अगम है किआ कथै कथनहारु ॥३॥

गुरु के बड़प्पन को जाना नहीं जा सकता। कहने वाला कोई भला क्या कह सकता है ॥३॥

जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥

जितने प्रकार के फलों को पाने की मन में अभिलाषा हो उतने ही फल सद्‌गुरु के पास (से प्राप्त हो जाते) हैं।

पूरबि लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥

यदि पूर्व जन्म का (कर्मफल) मस्तक पर लिखा हो तो गुरु सत्य प्रभु के नाम की पूँजी देता है जिससे (उन फलों को) प्राप्त किया जाता है।

सतिगुर सरणी आइआं बाहुड़ि नही बिनासु ॥

सद्‌गुरु की शरण में आ जाने पर पुनः विनाश नहीं होता।

हरि नानक कदे न विसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु ॥४॥२९॥९९॥

हे हरि ! नानक तुम्हें कभी भी विस्मृत न करे यह जीव, यह शरीर और इस शरीर मे चलने वाली सांस प्राण सब तुम्हारे हैं (तुम्हारे द्वारा प्रदत्त है) ॥४॥२९॥९९॥

□

सिरीरागु महला ५ ॥

संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ ॥
गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ ॥
आगै दरगहि मंनीअहि मिलै निथावे थाउ ॥ १॥
भाई रे साची सतिगुर सेव ॥
सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥१॥रहाउ॥
सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥
अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥
सचु खाणा सचु पैन्हणा सचे सचा नाउ ॥२॥
सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥
गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि ॥
नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥३॥
गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥
जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥
नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥४॥३०॥१००॥

□

संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ ॥

हे भाइयो ! प्रभु के दास संतों से सत्य स्वरूप प्रभु के नाम सुनकर ही जन्म मरण के बंधन से छुटकारा हो सकता है।

गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ ॥

गुरु के चरणों को सेवा करने से हरि नाम रूपी तीर्थ (में स्नान करने का फल) प्राप्त होता है।

आगै दरगहि मंनीअहि मिलै निथावे थाउ ॥१॥

आगे परलोक में प्रभु की दरगाह में सम्मान होता है और निराश्रितों को आश्रय मिलता है ॥१॥

भाई रे साची सतिगुर सेव ॥

हे भाई ! सद्‌गुरु की सेवा हो सच्चो सेवा है।

सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥१॥रहाउ॥

सद्‌गुरु के प्रसन्न होने पर पूर्ण अदृश्य और अद्वितीय प्रभु की प्राप्ति होती है ॥१॥ रहाउ॥

सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥

उस सद्‌गुरु के बलिहार जाओ जिन्होंने सत्यनाम का दान दिया है।

अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥

जिससे दिन रात सत्य प्रभु की ही सराहना की जाती है और सच्चे प्रभु के ही गुण गाये जाते हैं।

सचु खाणा सचु पैन्हणा सचे सचा नाउ ॥२॥

जिन्होंने सच्चे नाम की अराधना की है उन पुरुषों का खाना ही सफल है और उनका ही पहनना सफल है ॥२॥

सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥

सद्‌गुरु की अपनी मूर्ति सफल (दर्शन करने योग्य) है इसलिए (हे प्रभु !) (वह मूर्ति) श्वास प्रश्वास (किसी भी पल) विस्मृत न हो।

गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि ॥

गुरु जैसा महान और कोई दूसरा व्यक्ति दिखाई नहीं देता इसलिए आठों प्रहर उसी (के नाम) का जाप कर।

नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥३॥

जब सद्‌गुरु दया दृष्टि करते हैं तभी गुणों के भंडार सत्य प्रभु के नाम की प्राप्ति होती है ॥३॥

गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥

गुरु और परमेश्वर एक है इसलिए परमेश्वर स्वरूप गुरु ही सब में समा रहा है।

जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥

जिनके मस्तक पर पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों का फल लिखा है वही प्रभु के नाम का ध्यान करते हैं।

नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥४॥३०॥१००॥

(गुरु अर्जुनदेव) नानक जी (कथन करते हैं) जो गुरु की शरण में आ जाते हैं वे न मरते हैं न (आवागमन के चक्र में) आते हैं न जाते हैं ॥ ॥४॥३०॥१००॥

□

श्री राग में रचित १०० शब्द (पद) यहाँ समाप्त होते हैं और अष्टपदी प्रारम्भ होती है।

□

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥

आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥
जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥
आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥
बाबा अलहु अगम अपारु ॥
पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥१॥रहाउ॥
तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥
जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥
कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥२॥
पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥
सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥
बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥३॥
पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥
आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥
सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥४॥
थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥
जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥
अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥५॥
वरना वरन न भावनीजे किसै वडाकरेइ ॥
वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥

हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥६॥
सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥
केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥
नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥७॥१॥

□

अष्टपदी आठ पदों का समूह है। प्रत्येक पद में अधिकांशत: तीन और कहीं कहीं चार पंक्तियां अर्थात् छ: और आठ चरण का योग है। इसमें दोहा सोरठा और चौपाई छन्द का प्रयोग किया गया है। श्री राग में अष्टपदी का प्रारंभ श्री गुरु नानक देव जी (महला १) द्वारा रचित पद से किया गया है। इसमें श्री गुरुदेव प्रभु को महानता का वर्णन कर रहे हैं।

□

आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥

जिस जिस जाप द्वारा कह कह कर मन प्रभु नाम का उच्चारण करे (उसे उसी विधि से) उच्चारण करने दो।

जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥

जिस प्रभु के गुणों का वर्णन कर करके सुनाया जाता है वह कितना बड़ा है और किस स्थान पर रहता है (यह कोई नहीं जानता)।

आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥

प्रभु के गुणों का बखान करने वाले जितने भी (भक्त हैं) सभी चित्तवृत्ति लगाकर उसके गुणों को कहते रहते हैं ॥१॥

बाबा अलहु अगम अपारु ॥

हे भाई ! वह स्वयं प्रकाश प्रभु मन वाणी से न जानने योग्य अगम्य और अनन्त है।

पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥१॥रहाउ॥

उस प्रभु का नाम पवित्र है उसका निवास स्थान पवित्र है और वह सत्य सनातन प्रभु सारे जगत का पालन हार है ॥१॥रहाउ॥

तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥

उसका हुकुम कितना बड़ा है, कोई नहीं जानता और न ही कोई लिख कर जान सकता है।

जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥

यदि सैंकड़ों कवी भी एकत्रित कर लिए जाएं तब भी उस प्रभु की शोभा के तिल मात्र तक भी नहीं पहुंच सकते (शोभा का तिल मात्र भी वर्णन नहीं कर सकते)।

कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥२॥

कोई भी उसकी कीमत नहीं जान पाया है (मूल्यांकन नहीं कर सका है) सभी उसकी महानता (शोभा) का वर्णन सुना सुनाया करते हैं ॥२॥

पीर पैकामर सालक सादक सुइदे अउरु सहीद ॥

पीर पैगम्बर, धैर्यवान धर्मवीर और शहीद—

सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥

शेख, साधक काजी मुल्ला और प्रभु के द्वार तक पहुंचे हुए फकीर

बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥३॥

(और) वे भक्त जिनको तुम्हारा अत्यधिक अनुग्रह प्राप्त है सब तुम्हारी ही दुआएँ पढ़ते रहते हैं (प्रार्थना करते रहते हैं) ॥३॥

पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥

वह प्रभु न तो किसी से पूछ कर जीवों की सर्जना करता है न ही पूछ कर विनाश करता है न ही किसी से पूछ कर (पदार्थों के भंडार) देता है और देकर पुनः वापिस ले लेता है।

आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥

अपनी कुदरत (शक्ति) को प्रभु आप ही जानता है वह प्रभु आप ही सृष्टि का कारण है और आप ही कर्त्ता है।

सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥४॥

प्रभु सभी जीवों को कृपा की दृष्टि से देखता है और उसे जो अच्छा लगता है उसको ही वह इच्छानुकूल दान देता है ॥४॥

थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥

उसके रहने के स्थानों का नाम नहीं जाना जा सकता। प्रभु के अनेक नामों में से कौन सा नाम कितना बड़ा है यह भी नहीं कहा जा सकता।

जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥

जहाँ मेरा बादशाह प्रभु निवास करता है वह स्थान कितना बड़ा है ?

अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥५॥

वहाँ तक तो कोई पहुंच ही नहीं सका है मैं किससे पूछने को जाऊँ ॥५॥

वरना वरन न भावनीजे किसै वडाकरेइ ॥

जब परमेश्वर किसी को बड़ा करता है (बड़प्पन देता है) तो उसके उच्च वर्ण या निम्न वर्ण (ऊँची नीची जाति) को नहीं देखता।

वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥

उस महान प्रभु के हाथ में ही सभी बड़ाईयां है जिसे उसे देना अच्छा लगता है उसको ही वह देता है।

हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥६॥

अपने हुकुम से जिसको प्रभु सँवारता है उसे बड़प्पन देने में पल मात्र की भी देर नहीं करता ॥६॥

सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥

सभी प्रभु से (धन द्रव्य आदि) लेने के विचार से ही उसे बहुत बहुत (महान) कहते हैं ।

केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥

हे प्रभु ! तुम्हें किस दाता के बराबर बड़ा कहें । तुम्हारे दिए हुए पदार्थों की गणना हो ही नहीं सकती ।

नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥७॥१॥

(श्री गुरुदेव पंचम) नानक जी (का कथन है) हे प्रभु ! तुम्हारे भण्डार युग युगान्तर से भरे हुए हैं उनमें कमी कभी आ ही नहीं सकती ॥७॥१॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥
गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥
पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥१॥
हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥
तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥१॥रहाउ॥
गुरसबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥
दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥
लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥२॥
प्रिअ की चेरी कांडीऐ लाली मानै नाउ ॥
साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥
सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥३॥
साधन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ॥
पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥
नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥४॥
साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥
चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥
दीपकु सबदि विगासिआ रामनामु उर हारु ॥५॥
नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥

सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥

बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥६॥

निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥

अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलिबलि जाइ ॥

जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥७॥

सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥

हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥

सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥८॥२॥

□

सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥

सभी जीवात्माएँ प्रभु पति की स्त्रियां हैं और सभी प्रभु पति को रिझाने के लिए श्रृंगार करती हैं ।

गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥

परन्तु जो स्त्रियां केवल (गणना मात्र) गिनती गिनवाने के लिए प्रभु पति के निकट आई हैं (मन से प्रेम नहीं करतीं) उनके लाल वस्त्र (साधना रूपी श्रृंगार) व्यर्थ हैं ।

पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥१॥

(बाहरी) आडम्बरों से प्रभु प्रेम की प्राप्ति नहीं होती, झूठ प्रदर्शन का भेद खुल जाने पर (पाखंडी की) बुरी दशा होती है ।।१।।

हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥

इस प्रकार की (आडम्बरहीन) जीव स्त्री ही हरि प्रियतम जी के साथ रमण करती है ।

तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥१॥रहाउ॥

हे प्रभु ! तुम्हें जो जीवात्मा रूपी स्त्री अच्छी लगती है वही सौभाग्यवती होती है, तुम उसे अपनी कृपा दृष्टि से सँवार लेते हो ॥१॥रहाउ॥

गुरसबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥

गुरु के शब्द-उपदेश द्वारा जिसने अपने को संवारा है उनका तन मन सदैव प्रियतम प्रभु के पास ही अर्पित रहता है ।

दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥

वह (जीव स्त्री) अपने दोनों हाथ जोड़ कर प्रियतम प्रभु की ओर ही देखती रहती है और सदैव सत्य स्वरूप प्रभु प्रियतम से प्रार्थना करती रहती है ।

लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥२॥

वह प्रभु प्रियतम के प्रेम में रंगी रहती है सत्यस्वरूप प्रियतम का भय ही उसके मन में बसा रहता है और प्रभु प्रियतम के प्रेम के रंग में रंगी आनन्द प्राप्त करती है ।।२।।

प्रिअ की चेरी कांडीऐ लाली मानै नाउ ।।

जो जीव स्त्री स्वयं को प्रभु की दासी नाम से मानती है वही प्रभु प्रियतम की सेविका मानी जाती है ।

साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ।।

प्रभु से उसका सच्चा प्रेम होता है जो टूटता नहीं और सच्चे प्रभु से उसका मेल-मिलन हो जाता है ।

सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ।।३।।

जिन जीव स्त्रियों का मन गुरु के शब्द उपदेश में रच गया है और गुरु के शब्द उपदेश से जिनका मन विंध गया है मैं उनके बलिहार जाता हूं ।।३।।

साधन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ।।

वह जीव स्त्री विधवा होकर नहीं बैठती जो सद्गुरु के शब्द उपदेश में समाहित रहती है ।

पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ।।

परमात्मा प्रियतम आनन्द स्वरूप है नित नूतन है और सत्य स्वरूप है, वह न मरता है न जाता है (नष्ट होता है) ।

नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ।।४।।

जिस जीव स्त्री पर प्रियतम प्रभु अपनी इच्छा से सच्ची कृपा दृष्टि कर देता है वह नित्य ही सुहागिन रहती है ।।४।।

साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ।।

ऐसी जीव स्त्री सत्य व्यवहार के लेपन आदि मंडन प्रसाधनों का प्रयोग करती है और प्रेम के वस्त्रों से अपना शृंगार करती है ।

चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ।।

प्रियतम परमात्मा की स्मृति रूपी चन्दन को वह अपने चित्त में बसा कर रखती है और दशम द्वार रूपी मन्दिर को सजा कर रखती है (दशम द्वार की साधना करती है) ।

दीपकु सबदि विगासिआ रामनामु उर हारु ।।५।।

(दशम द्वार रूपी मन्दिर में) गुरु के शब्द उपदेश रूपी दीपक को जला कर रखती है और राम प्रभु के नाम जाप का ही गले में हार पहनती है ।

नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ।।

ऐसी जीव स्त्री प्रियतम प्रभु के प्रेम का ही माथे पर चूड़ामणि आभूषण धारण करती है और समस्त नारियों में सौन्दर्य को प्राप्त होती है (सभी स्त्रियों में सर्वाधिक सुन्दर लगती है) ।

सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥

सत्यस्वरूप प्रभु के अपार प्रेम में निमग्न रहने के कारण उसकी चित्त-वृत्ति सुहावनी होती है और वह शोभा को प्राप्त होती है। (उसकी सुन्दरता निखरती है) ।

बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥६॥

परम हितैषी गुरु द्वारा प्रभु प्रेम का उपदेश प्राप्त कर वह सत्यस्वरूप परमात्मा प्रियतम के अतिरिक्त अन्य किसी पुरुष को नहीं जानती ॥६॥

निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥

दूसरी ओर ऐसी जीवात्मा जो अंधेरी रात्रि में अज्ञान की निद्रा में सो रही है प्रियतम प्रभु से मिले बिना उसकी जीवन रूपी रात्रि सुखपूर्वक कैसे व्यतीत होगी ?

अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलिबलि जाइ ॥

हे अज्ञानी जीवात्मा प्रियतम प्रभु के बिछोह में तुम अपने अंग प्रत्यंग को जला दो, तुम्हारा तन भी जल जाय मन भी जल जाय और धन भी जल फुक जाय ।

जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥७॥

हे जीव स्त्री यदि पति परमात्मा तुम्हारे साथ रमण नहीं करता तो तुम्हारा यौवन व्यर्थ चला जायेगा ॥७॥

सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥

(कितने आश्चर्य की बात है कि) जीव स्त्री की हृदय रूपी शैय्या पर प्रियतम विराजमान हैं परन्तु अज्ञान की निद्रा में सोई होने के कारण वह ऐसा समझ ही नहीं रही है।

हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥

मैं जीवात्मा सदा ही अज्ञान निद्रा में सोने वाली हूँ और प्रियतम प्रभु चैतन्य स्वरूप सदा ही जागने वाला (चेतन ज्ञानवान) है। दोनों का मिलन कैसे हो सकता है यह मैं किससे जा कर पूछूँ ?

सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥८॥२॥

नानक जी सद्गुरु से मिलन होने पर उसने प्रभु का भय मन में बसा दिया (भयवश) प्रभु से प्रेम करते करते उसे मैंा अपना परम मित्र बना लिया है ॥८॥२॥

सिरीरागु महला १ ॥

आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥
आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥
साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥१॥
हरि जीउ तूं करता करतारु ॥
जिउ भावै तिउ राखु तूं हरिनामु मिलै आचारु ॥१॥रहाउ॥
आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥
आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥
गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥२॥
आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥
साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु ॥
निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥३॥
असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ॥
आपे निरमलु एकु तूं होर बंधी धंधै पाइ ॥
गुरि राखे से उबरें साचे सिउ लिव लाइ ॥४॥
हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर बाकि ॥
तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ॥
नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥५॥
जिन्ही सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥
हउमै त्रिसना मारि कै सचु रखिआ उरधारि ॥
जगु महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥६॥
साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥
साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥
पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥७॥
ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥
जह देखा तह एकु तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥
जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥८॥३॥

□

आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥

हे प्रभु ! आप स्वयं ही गुण हैं और आप ही गुणों का कथन करने वाले हैं आप ही गुणों को सुनने वाले और आप ही गुणों का विचार करने वाले हैं ।

आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ।।

हे प्रभु ! आप स्वयं ही (नामरूपी) रत्न हैं आप ही (रत्न की) परख करने वाले हैं और आप ही उसका मूल्य आंकने वाले और आप ही उसका अपार (मूल्य) हैं ।

साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ।।१।।

हे प्रभु ! आप ही सदा स्थिर रहने वाला सम्मान और महत्त्व हैं और आप ही (स्थाई) सम्मान और महत्त्व को देने वाले हैं ।।१।।

हरि जीउ तूं करता करतारु ।।

हे दुखहर्त्ता प्रभु जो ! आप स्वयं ही सब कर्मों को करने वाले हो और आप ही (सृष्टि रचना) करने वाले कर्त्ता हो ।

जिउ भावै तिउ राखु तूं हरिनामु मिलै आचारु ।।१।।रहाउ।।

हे प्रभु ! तुम्हें जैसे अच्छा लगता हो वैसे ही मेरी रक्षा करो और हे हरि प्रभु ! मुझे आपसे नाम जप सकने योग्य आचरण की प्राप्ति हो । ।।१।।रहाउ।।

आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ।।

हे प्रभु ! आप स्वयं ही नामरूपी निर्मल हीरा हो और आप ही प्रभु भक्ति का लाल रंग हैं ।

आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ।।

हे प्रभु ! आप ही वैराग्य रूपी उज्ज्वल मोती हैं और आप ही प्रभु से भक्तों को मिलाने वाले गुरु रूपी वकील है ।

गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ।।२।।

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा ही प्रभु की सराहना की जाती है और उस अदृश्य प्रभु को प्रत्येक जीव म (व्याप्त, देखा जा सकता है ।।२।।

आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ।।

हे प्रभु ! आप स्वयं ही सागर हो और आप ही इस अपार संसार सागर से पार उतारने वाले जहाज (यान) हो ।

साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु ।।

हे प्रभु ! तुम स्वयं भक्ति रूपो मार्ग हो और स्वयं ही (इस मार्ग का ज्ञान देने वाले) चतुर ज्ञानी हो । तुम स्वयं ही शब्द उपदेश देने वाले हो और स्वयं ही (जीव को संसार सागर से) पार लगाने वाले हो ।

निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ।।३।।

हे प्रभु ! जो तुम्हारा डर नहीं जानते उन्हें (यमों से) डरना पड़ता है

और गुरु के बिना गहन अंधेरा बना रहता है ।।३।।

असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ।।

सृष्टि का कर्त्ता (परम पुरुष प्रभु ही) स्थिर देखा जाता है और कितनी ही सृष्टि आती (जन्म लेती) और (नष्ट हो) जाती है ।

आपे निरमलु एकु तूं होर बंधी धंधै पाइ ।।

हे प्रभ ! एक मात्र तुम ही (स्वयं) शुद्ध स्वरूप हो और शेष सारी सृष्टि माया के धंधों में पड़ी (माया के) बंधन में बंधी है ।

गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ।।४।।

जिनकी गुरु ने आप रक्षा की है वे सच्चे प्रभु से चित्तवृत्ति लगा कर माया से उबर जाते हैं ।।४।।

हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ।।

जो जीव सत्य गुरु की वाणी में अनुरक्त हैं वे गुरु के शब्द उपदेश द्वारा हरि प्रभु जी को पहचान जाते हैं ।

तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ।।

जिस जीव का उठना बैठना हृदय रूपी सच्चे घर में है उसके शरीर को विकारों की मैल नहीं लगती ।

नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ।।५।।

गुरु कृपा दृष्टि करें तभी सत्यस्वरूप प्रभु को (नाम स्मरण के द्वारा) प्राप्त किया जा सकता है बिना नाम स्मरण के (प्रभु से) क्या सम्बन्ध ? (प्रभु से सम्बन्ध कैसे जुड़ सकता है) ।।५।।

जिन्ही सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ।।

जिन्होंने सत्यनाम को पहचाना है वे चारों युगों में सुखी हैं ।

हउमै त्रिसना मारि कै सचु रखिआ उरधारि ।।

(क्योंकि उन्होंने) अहंकार (हउमै) और (पदार्थों की) तृष्णा को मार कर सच्चे प्रभु के नाम को हृदय में धारण कर रखा है ।

जगु महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ।।६।।

संसार में आने का लाभ एक मात्र नाम (जपने) से ही है इस प्रभु के नाम को (गुरु द्वारा प्रदत्त) विचार द्वारा ही प्राप्त करते हैं ।।६।।

साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ।।

जिन्होंने सच्ची श्रद्धा रूपी पूंजी लगाकर सत्यस्वरूप प्रभु के नाम का सौदा लाद लिया है उन्हें सदैव लाभ की प्राप्ति हुई है ।

साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ।।

जो भक्त भक्ति भाव से प्रभु के चरणों में सच्ची प्रार्थना करता है वह परमेश्वर की सच्ची दरगाह में बैठता है।

पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥७॥

जिनकी अन्तरात्मा में प्रभु के राम नाम का प्रकाश है उनके (जीवन का) हिसाब किताब प्रतिष्ठा सहित निपट जाता है ॥७॥

ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥

जो प्रभु ऊंचे से भी ऊंचा (सर्वोच्च) कहा जाता है उसके सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता केवल (अनुभव से) देखा जाता है।

जह देखा तह एकु तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥

जहाँ देखता हूं वहाँ एक तुम ही दिखाई देते हो (ऐसा) सद्‌गुरु ने ही (दिखा) दिया है।

जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥८॥३॥

नानक ने स्थिर स्वभाव से ही जीव मात्र में जलने वाली प्रभु की निरन्तर ज्योति को जाना है ॥८॥३॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥
अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥
कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥१॥
भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥१॥रहाउ॥
सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥
सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥
हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥२॥
सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥
गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥
बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥३॥
सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥
जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥
मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥४॥
सतिगुरि अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥
साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥
नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥५॥

बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥
गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥
तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥६॥
तूं है साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ॥
गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥
तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥७॥
हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥
हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥
नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥८॥४॥

□

मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥

गहरे और खारे समुद्र में रहने वाली मछली ने जाल को जाना ही नहीं। (जाल की गंभीरता को नहीं समझा)।

अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥

मछली अत्यन्त चतुर है अत्यन्त सुन्दर है परन्तु उसने (जाल पर) इतना विश्वास क्यों किया ? (कि वह उसे धोखा नहीं देगा)।

कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥१॥

(विश्वास) करने के कारण ही वह (जाल में) पकड़ी गई क्योंकि सिर पर खडा काल टलता नहीं ॥१॥

भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥

हे भाई ! इसी प्रकार (अपने भी) सिर पर काल को (खड़ा) जानो।

जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥१॥रहाउ॥

जैसे मछली (अचानक जाल मे फँस जाती है) वैसे ही मनुष्य अचानक (काल के) जाल में फँस जाता है ॥१॥ रहाउ॥

सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥

सारा ही जगत काल (के जाल) में बंधा हुआ है गुरु के बिना वह काल और किसी से टल नहीं सकता।

सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥

जो जीव दुबिधा और कामादि विकारों को छोड़कर सत्य प्रभु के नाम में रच गये हैं उनका उद्धार हो जाता है।

हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥२॥

जो सत्य प्रभु के दरबार में जाने पर सच्चे (प्रमाणित) होते हैं, मैं उन पर बलिहार जाता हूँ ॥२॥

सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥

जिस प्रकार बाज पक्षियों (को मारता है) और शिकारी के हाथ में (जानवरों को फँसाने के लिए) जाली होती है।

गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥

(उसी प्रकार काल विषय वासनाओं के) दाने के साथ और सभी जीवों को फँसा लेता है। केवल वे ही उबरते हैं जिनकी रक्षा गुरु करता है।

बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥३॥

जो जीव प्रभु का नाम स्मरण नहीं करते उनको यमराज चुन-चुन कर नरक में फकता है और उस समय न तो कोई (इस लोक में) सहायक होता है और न ही (परलोक में) कोई साथी होता है ॥३॥

सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥

सत्य स्वरूप प्रभु का सत्य नाम सदैव कहते (स्मरण करते) रहना चाहिए इससे ही सत्य स्वरूप प्रभु का सत्य स्थान (आत्म स्वरूप) प्राप्त होता है।

जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥

जिन्होंने सत्य स्वरूप प्रभु को माना है उनके मन में सदैव सत्य प्रभु का ध्यान रहता है।

मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥४॥

गुरु के सम्मुख होकर जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया है उनका मन और मुख पवित्र जानने योग्य हैं ॥४॥

सतिगुरि अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥

हे जीव ! सद्गुरु के सामने विनम्र प्रार्थना कर कि तुझे साजन प्रभु से मिला दे।

साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥

साजन प्रभु से मिलने से सुख प्राप्त होता है और यमदूत (नामरूपी) विष खाकर मर जाते हैं।

नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥५॥

(प्रार्थना कर) मेरा निवास प्रभु नाम के अन्दर हो जाय और प्रभु का नाम मेरे मन में आकर बस जाय (दोनों एक हो जाय) ॥५॥

बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥

गुरु के बिना अज्ञान का अन्धेरा ही अन्धेरा है गुरु के शब्द उपदेश के बिना कुछ भी समझ में नहीं आता।

गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥

गुरु की शिक्षा द्वारा ही ज्ञान का प्रकाश होता है और सत्य स्वरूप प्रभु से चित्तवृत्ति लगती है।

तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥६॥

(ऐसी अवस्था में फिर) वहां काल नहीं पहुँच सकता और (शुद्ध प्रबुद्ध) जीवात्मा की ज्योति परम ज्योति में समा जाती है ॥६॥

तूं है साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ॥

हे प्रभु जी ! तुम्ही मेरे साजन हो तुम्ही चतुर ज्ञाता हो और तुम आप ही (बिछुड़े हुए जीवों को अपने से) मिला लेने वाले हो।

गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥

जिस प्रभु के आर पार का अन्त नहीं है, उस (प्रभु की) गुरु के शब्द उपदेश द्वारा ही सराहना करो।

तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥७॥

जहां अनन्त प्रभु की सराहना करने वाले गुरु के शब्द उपदेश होते हैं वहां काल नहीं पहुंच सकता ॥७॥

हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥

प्रभु के हुकुम से ही समस्त जीव उत्पन्न होते हैं और प्रभु के हुकुम से ही वे कर्मों (की कमाई) को करते हैं।

हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥

प्रभु के हुकुम से ही जीव काल के वश में (जन्मता और मरता) है और प्रभु के हुकुम से ही सत्य स्वरूप प्रभु में समा जाता है।

नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥८॥४॥

नानक जी (कहते हैं कि) उस परमेश्वर को जो अच्छा लगता है वही होता है, इन जीव जन्तुओं के वश में तो कुछ भी नहीं है ॥८॥४॥

□

सिरीरागु महला ॥१॥

मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥

मुखि झूठै झूठु बोलणा किउकरि सूचा होइ ॥

बिनु अभ सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ ॥१॥

मुंधे गुणहीणी सुखु केहि ॥

पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥१॥रहाउ ॥

पिरु परदेसी जे थीऐ धन वांढी झूरेइ ॥

जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥

पिर भावै सुखु पाइऐ जा आपे नदरि करेइ ॥२॥

पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥

तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥
सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥३॥
कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥
ना सुख पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥
आवणु वंजणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥४॥
पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥
पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥
दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥५॥
पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि बीचारु ॥
अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥
कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥६॥
केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥
वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥
विनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥७॥
सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥
हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥
नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥८॥५॥

□

मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥

जिस जीव का मन (विकारों से जूठा) है उसका शरीर (कर्मेन्द्रियां) भी जूठा होता है और उसकी जीभ (निकृष्ट पदार्थों का रस भोगने से) जूठी होती है।

मुखि झूठै झूठु बोलणा किउकरि सूचा होइ ॥

वह अपने झूठे मुख से झूठ बोलता रहता है (ऐसी अवस्था में) वह शुद्ध कैसे हो सकता है ?

बिनु अभ सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ ॥१॥

बिना गुरु शब्द-उपदेश रूपी जल के ऐसा (झूठा मन तन) मंज नहीं सकता, सच्चे प्रभु के नाम स्मरण से ही (यह मन) शुद्ध हो सकता है ॥१॥

मुंधे गुणहीणी सुखु केहि ॥

हे मुग्धे (भ्रमित जीवात्मा) गुणहीन स्त्री को सुख कैसा ?

पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥१॥रहाउ ॥

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा जो सच्चे प्रभु से प्रेम करती है उस जीवात्मा

को ही सच्चा सुख प्राप्त होता है और वही जीवात्मा रूपी स्त्री प्रभु प्रियतम से मिलकर आनन्द रस का भोग करती है ॥१॥रहाउ॥

पिरु परदेसी जे थीऐ धन वांढी झूरेइ ॥

यदि पति परमेश्वर (जीवात्मा रूपी स्त्री के हृदय रूपी घर से दूर जाकर) परदेसी बन जाय तो वह प्रियतम से बिछुड़ी हुई स्त्री विछोह दुख से झूरती रहती है।

जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥

जिस प्रकार थोड़े जल में रहने वाली मछली तड़पती है (उसी प्रकार बिछुड़ी हुई जीवात्मा रूपी स्त्री) करुण प्रलाप करती है।

पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥२॥

जीव स्त्री प्रियतम प्रभु को भा जाय तभी उसे सुख की प्राप्ति होती है और जीवात्मा सुखों को तभी प्राप्त कर सकती है जब प्रभु आप उस पर कृपा दृष्टि करे ॥२॥

पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥

जो जीवात्मा रूपी स्त्री सखी सहेलियों (सत्संगति) में बैठकर अपने प्रियतम की सराहना करती है।

तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥

उसका तन (शुभ गुणों से) शोभायमान हो जाता है, उसका मन प्रभु प्रियतम के गुणों पर मोहित होता है और प्रियतम के प्रेम रंग में रंग कर वह कृतार्थ हो जाती है।

सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥३॥

गुरु के शब्द-उपदेश द्वारा संवारी गई और शुभ गुणों को धारण करने से सुन्दर बनी वह जीव स्त्री प्रियतम प्रभु के साथ सुख भोग करती है ॥३॥

कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥

जो जीव स्त्री (दिल की) खोटी है और अवगुणों से पूर्ण है वह प्रियतम प्रभु के काम की नहीं रहती।

ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥

न तो उसे पीहर (इस लोक) में और ना ही ससुराल (परलोक) में सुख मिलता है, वह मिथ्या विकारों में जलती रहती है।

आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥४॥

प्रियतम प्रभु उसे छोड़ देता है, उसे भूल जाता है और वह आने और जाने (आवागमन) से दुखी होती है ॥४॥

पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥

प्रियतम प्रभु को वह सुहावनी स्त्री थी। भला वह किस स्वाद के कारण त्यक्ता बनी।

पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥

वह व्यर्थ वाद विवाद में (उलझी) बातें बोलती थी जो प्रियतम (से मिलाने) के काम नहीं आती।

दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥५॥

वह प्रियतम प्रभु के प्रेम को भुलाकर द्वैत भाव के स्वाद में फंस गई इसलिए पति प्रभु द्वारा छोड़ दी गई और प्रभु प्रियतम के द्वार पर और उसके घर (महल) में सहारा ना ले सकी ॥५॥

पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि बीचारु ॥

पंडित लोग धार्मिक ग्रन्थों को केवल पढ़ते हैं लेकिन विचार (तत्त्व) को नहीं समझते।

अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥

(वे) दूसरों को उपदेश देते चलते हैं (स्वयं उनके लिए यह ग्रन्थ) केवल धन (कमाने) का व्यापार (साधन) हैं।

कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥६॥

कथनी से जो झूठा है (कहता कुछ और करता कुछ और है) वह मनुष्य योनियों में भटकता है परन्तु जिसका आचरण गुरु शब्द उपदेश के अनुसार है वही मनुष्य संसार में श्रेष्ठ है (उसी का आचरण उत्तम है) ॥६॥

केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥

कितने ही पंडित हैं (कितने ही) ज्योतिषी हैं (और कितने ही) वेदों का विचार करने वाले हैं।

वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥

(परन्तु ये सभी) एक दूसरे के विरोधी बन वाद विवाद करते हैं, अपने पक्ष को सराहना करते हैं और केवल वाद-विवाद (में उलझे रहने) से (आवागमन के चक्र में) आते हैं और जाते हैं।

बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥७॥

बिना गुरु की कृपा के कर्म बन्धन से छूट नहीं सकते इसलिए कथन की गई बातों को केवल कहना और सुनना व्यर्थ है ॥७॥

सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥

सभी जिज्ञासु जीव स्त्रियाँ गुणवान कही जाती है एक मुझमें ही कोई गुण नहीं है।

हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥

हरि प्रियतम जिस नारी का वरण करते हैं वही सुहावनी हो जाती है इसलिए क्या उपाय करूँ कि मैं उस प्रभु को प्रिय लगने लगूं ?

नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥८॥५॥

नानक जी जिस जोव स्त्री का गुरु शब्द के माध्यम से प्रभु पति से मिलन हो गया है उसका फिर कभी भी विछोह नहीं होता ॥८॥५॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीचै वासु ॥
पुंन दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥
जेहा राधें तेहा लुणै बिनु गुण जनमु विणासु ॥१॥
मुंधे गुण दासी सुखु होइ ॥
अवगण तिआगि समाईऐ गुरमति पूरा सोइ ॥१॥रहाउ॥
विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ॥
मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घरबारि ॥
विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥२॥
लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥
वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥
वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमखि ब्रहमु बीचारि ॥३॥
संतां संगति पाईऐ जे मेले मेलणहारु ॥
मिलिआ होइ न विछुड़ै जिसु अंतरि जोति अपार ॥
सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ॥४॥
जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ॥
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥
त्रिभवणि सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ॥५॥
साधन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ॥
महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ॥
सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥६॥
भूली भूली थलि चड़ा थलि चड़ि डूगरि जाउ ॥
बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥
नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥७॥

पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ।।
राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइ ।।
नानक एको रवि रहिआ दूजा अवरु न कोइ ।।८।।६।।

□

जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीचै वासु ।।
पुंन दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ।।

वेद मन्त्रों का जाप करते रहें, शरीर को कष्ट देकर कठिन तप करते रहें और इन्द्रियों को संयम पूर्वक वश में करके सिद्धि प्राप्त कर लें, पवित्र तीर्थों पर जाकर निवास करने लगे, पुण्य (समझे जाने वाले) दान कर लें और श्रेष्ठ कार्य करते रहें परन्तु बिना सच्चे प्रभु के नाम स्मरण के (ये सब अन्तिम समय) क्या सहायता कर सकते हैं ।

जेहा राधे तेहा लुणै बिनु गुण जनमु विणासु ।।१।।

जैसा कोई बीज बोता है वैसा ही (फल) काटता है प्रभु का गुणगान किए बिना यह जन्म व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है ।।१।।

मुंधे गुण दासी सुखु होइ ।।

हे (सांसारिक पदार्थों के प्रति) मुग्ध जीवात्मा ! गुणों के भंडार प्रभु की दासी बनने से ही आत्मिक सुख प्राप्त होता है ।

अवगण तिआगि समाईऐ गुरमति पूरा सोइ ।।१।।रहाउ।।

गुरु की शिक्षा (मानकर) जो अवगुणों का त्याग करता है वह परमेश्वर में समा जाता है और वही पूर्ण होता है ।।१।। रहाउ।।

विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ।।

प्रभु नाम सुमिरन रूपी राशि के बिना जीव रूपी व्यापारी (आत्मिक सुख के लिए) चारों दिशाओं में देखता है (भटकता फिरता है) ।

मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घरबारि ।।

वह अपने मूल स्वरूप को नहीं समझता (कि आत्मा को आनन्द देने वाली मूल) वस्तु तो उसके घर (अन्तरात्मा) के अन्दर ही है (वह उसे बाहर खोजता है) ।

विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ।।२।।

(विषय वासनाओं के) मिथ्या सुखों द्वारा ठगी गई मिथ्या (व्यापार में लगी) जीवात्मा हरि नाम रूपी सौदे के बिना बहुत दुखी होती है ।।२।।

लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ।।

जो (गुरु द्वारा दिये गये) विचार (ज्ञान तत्व) रूपी रत्न को भली भांति

परख कर धारण करता है उसे दिन रात नया से नया लाभ प्राप्त होता है।

वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ।।

वह (आत्मानन्द) वस्तु को अपने घर (अन्तरात्मा) में ही ले लेता है और (मुक्ति रूपी) कार्यों को सम्पन्न कर यहां से चला जाता है।

वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमुखि ब्रहमु बीचारि ।।३।।

वह (प्रभु नाम के) व्यापारी (महात्माओं) से (नाम का) व्यापार करता है और गुरु के सम्मुख होकर ब्रह्म का विचार करता है ।।३।।

संतां संगति पाईऐ जें मेले मेलणहारु ।।

यदि मिलाने वाला प्रभु मिला दे तभी सन्तों की संगति प्राप्त होती है।

मिलिआ होइ न विछुड़ै जिसु अंतरि जोति अपार ।।

जिस जीव के अन्तःकरण में अनन्त प्रभु की ज्योति प्रकाशित हो जाती है उसका प्रभु से मिलन हो जाता है और फिर वह कभी भी बिछुड़ता नहीं है।

सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ।।४।।

सत्य स्वरूप प्रभु से प्रेम पूर्वक प्यार करने से वह सत्य स्वरूप प्रभु का ही होकर रह जाता है और सच्चे प्रभु के सत्य स्वरूप में स्थित हो जाता है ।।४।।

जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ।।

जिन्होंने अपने घर के शुभ स्थान (अन्तःकरण) में प्रभु के स्वरूप को पहचान लिया है।

सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ।।

उन्होंने प्रभु के सच्च नाम में मस्त होकर मन रूपी पल्ले में सत्य प्रभु को प्राप्त कर लिया है।

त्रिभवणि सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ।।५।।

(और) सच्चे प्रभु के सच्चे नाम के द्वारा वे तीनों लोकों में उसी प्रभु (को व्याप्त) जानते हैं ।।५।।

साधन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ।।

वही जीवात्मा रूपी स्त्री शुद्ध शोभा वाली है जिसने प्रियतम प्रभु को अपने संग (निकट) जाना है।

महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ।।

उस स्त्री को प्रभु पति अपने महल (स्वरूप) में बुलाता है और वह पति परमात्मा के प्रेम रंग का (सच्चे अर्थों में) आनन्द भोगती है।

सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥६॥

वही जीव स्त्री सौभाग्यवान है और वही उत्त म है जिसने अपने गुणों से पति प्रभु को मोहित कर लिया है ॥६॥

भूली भूली थलि चड़ा थलि चड़ि डूगरि जाउ ॥

(दूसरी ओर तन और मन से पति परमेश्वर को) भूल भुला चुकी जीवात्मा प्रभु को पाने के लिए यदि मरुस्थलों के ऊँचे टीलों पर भी चढ़ जाय और मरुस्थलों के टीलों पर चढ़ने के बाद पर्वतों पर चढ़ जाय—

बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥

(और) ईश्वर को भूली हुई (वह जीवात्मा) यदि बन में (उसे खोजने को) भटकती फिरे तब भी (उसे प्राप्त नहीं कर सकती क्योंकि) बिना गुरु (की शरण में आये) उस प्रभु को समझा नहीं जा सकता।

नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥७॥

प्रभु के नाम को भूल कर यदि इधर-उधर भटकती फिरे तो (मुक्ति नहीं हो सकती) बार-बार आना (जन्म) और जाना (मरण) होता है ॥७॥

पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥

जो प्रभु के सेवक होकर प्रभु के मार्ग पर चले हैं उन पथिकों से जाकर पूछो।

राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइ ॥

जो जीव प्रभु को ही अपना स्वामी (राजा) जानते हैं उन्हें प्रभु के घर और द्वार पर जाने में कोई रुकावट नहीं होती।

नानक एको रवि रहिआ दूजा अवरु न कोइ ॥८॥६॥

नानक जी (कहते हैं कि) ऐसा मानते हैं कि एक प्रभु ही सर्वत्र रम रहा है और कोई दूसरा नहीं है ॥८॥६॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

गुर ते निरमलु जाणीऐ निरमल देह सरीरु ॥
निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै अभ पीर ॥
सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ॥१॥
भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाइ ॥
निरमलु साचा एकु तू होरु मैलु भरी सभ जाइ ॥१॥ रहाउ॥
हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥
रवि ससि दीप अनूप जोति त्रिभवणि जोति अपार ॥

हाट पटण गड़ कोठड़ी सचु सउदा वापार ।।२।।
गिआन अंजनु भैभंजना देखु निरंजन भाइ ।।
गुपतु प्रगटु सभ जाणीऐ जे मनु राखै ठाइ ।।
ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजें लए मिलाइ ।।३।।
कसि कसवटी लाईऐ परखे हितु चितु लाइ ।।
खोटे ठउर न पाइनी खरे खजानै पाइ ।।
आस अंदेसा दूरि करि इउ मलु जाइ समाइ ।।४।।
सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ।।
सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ।।
सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ ।।५।।
बेदु पुकारे वाचीऐ बाणी ब्रहम बिआसु ।।
मुनिजन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ।।
सचि रते सें जिणि गए हउ सद बलिहारै जासु ।।६।।
चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ।।
भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पतिखोइ ।।
जिनी नामु बिसारिआ अवगण मुठी रोइ ।।७।।
खोजत खोजत पाइआ डरु करि मिलै मिलाइ ।।
आपु पछाणै घरि वसै हउमै त्रिसना जाइ ।।
नानक निरमल ऊजले जो राते हरिनाइ ।।८।।७।।

□

गुर ते निरमलु जाणीऐ निरमल देह सरीरु ।।

गुरु के उपदेश से जब नाम रूपी निर्मल जल को जान जाते हैं तो उससे स्थूल देह और सूक्ष्म शरीर पवित्र हो जाते हैं ।

निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै अभ पीर ।।

शुद्ध स्वरूप सत्य प्रभु मन में बस जाए तो सुख प्राप्त होता है । बिना उसके मन में जो पीड़ा होती है उसे वही प्रभु जानता है ।

सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ।।

स्थिर अवस्था को प्राप्त करने से ही अत्यधिक सुखों की प्राप्ति होती है और यमदूत का तीर नहीं लगता ।।१।।

भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाइ ।।

हे भाई ! नाम रूपी निर्मल जल में नहाने से हृदय पर अज्ञान की मैल नहीं रहती ।

निरमलु साचा एकु तू होरु मैलु भरी सभ जाइ ।।१।।रहाउ।।

हे प्रभु ! एक तुम सत्य स्वरूप प्रभु ही मैल हीन (पवित्र) हो और जितने भी स्थान है सभी मैल से भरे हुए हैं ॥१॥रहाउ॥

हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥

उस कर्त्ता हरि प्रभु ने इस मनुष्य शरीर को अपने रहने के लिए सुन्दर मन्दिर बनाया है ।

रवि ससि दीप अनूप जोति त्रिभवणि जोति अपार ॥

तीनों लोकों में प्रभु की अनन्त ज्योति से प्रकाशित होने वाले सूर्य और चन्द्रमा रूपी दीपक इसमें अनुपम प्रकाश देते हैं ।

हाट पटण गड़ कोठड़ी सचु सउदा वापार ॥२॥

इस शरीर में हाट, नगर, किले कोठड़ियाँ हैं जहाँ सत्य नाम के सौदे का व्यापार किया जाता है ॥२॥

गिआन अंजनु भैभंजना देखु निरंजन भाइ ॥

जिन जिज्ञासुओं ने ज्ञान का काजल डालकर प्रेम पूर्वक निरंजन प्रभु को देखा है उनका यम का भय नष्ट हो गया है ।

गुपतु प्रगटु सभ जाणीऐ जे मनु राखै ठाइ ॥

यदि मन को एक ही स्थान पर (एकाग्र) रखा जाय तो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सर्वत्र प्रभु को (व्याप्त) जाना जाता है ।

ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजे लए मिलाइ ॥३॥

यदि ऐसे सत्यज्ञान को देने वाला गुरु मिल जाय तो सुगमता से प्रभु से मिला जा सकता है ॥३॥

कसि कसवटी लाईऐ परखे हितु चितु लाइ ॥

गुरु प्रेम की कसौटी पर कस लगाकर शिष्य के चित्त के प्रेम को परख लेते हैं ।

खोटे ठउर न पाइनी खरे खजानै पाइ ॥

जो मनुष्य हृदय के खोटे होते हैं वे कसौटी पर ठहर नहीं पाते परन्तु जो शुद्ध हृदय के होते हैं वे प्रभु के स्वरूप रूपी खजाने की प्राप्त करते हैं ।

आस अंदेसा दूरि करि इउ मलु जाइ समाइ ॥४॥

सांसारिक सुखों की आशा (समाप्त हो जाती है) शंका (दूर हो जाती है) मन पर जमी विकारों की मैल धुल जाती है और इस प्रकार वे प्रभु में समा जाते हैं ॥४॥

सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ॥

सुख को तो सभी मांगते हैं दुख को कोई भी नहीं मांगता ।

सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ।।

सांसारिक सुखों को भोगने वाला अत्यधिक दुखी होता है, मन के पीछे लगने वाले मनमुख को यह समझ नहीं होती ।

सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ ।।५।।

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा जो इस रहस्य को जान जाता है कि सुख और दुख को समान करके जानना है उसे सच्चा सुख प्राप्त होता है ।।५।।

बेदु पुकारे वाचीऐ बाणी ब्रहम बिआसु ।।

ब्रह्म वाणी वेद और व्यास मुनि द्वारा रचित पुराणों को अच्छी तरह पढ़े तो वे यही पुकार पुकार कर कहते हैं कि—

मुनिजन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ।।

सभी ऋषि, मुनि प्रभु के दास, प्रभु की सेवा करने वाले भक्त साधक आदि सभी गुणों के भंडार प्रभु के नाम रंग में ही रंगे रहते हैं ।

सचि रते से जिणि गए हउ सद बलिहारै जासु ।।६।।

जो सत्य नाम में रंगे हैं वे ही इस संसार से जीत कर गए हैं । मैं उनके सदा बलिहार जाता हूँ ।।६।।

चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ।।

जिनके मुख में प्रभु का नाम नहीं होता वे चारों युगों में अज्ञान की मैल से भरे मैले हैं ।

भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पतिखोइ ।।

प्रभु की प्रेम भक्ति के बिना उनका मुंह काला होता है और वे प्रतिष्ठा खो बैठते हैं ।

जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइ ।।७।।

जिसने प्रभु के नाम को भुला दिया है वह जीवात्मा रूपी स्त्री अवगुणों से ठगी हुई रोती है ।।७।।

खोजत खोजत पाइआ डरु करि मिलै मिलाइ ।।

(सांसारिक दुखों से) डरकर जिन्होंने गुरु को खोजा है उन्होंने खोजते खोजते उस सद्‌गुरु को प्राप्त कर ही लिया है जिसके मिलने से प्रभु परमात्मा मिलता है ।

आपु पछाणै घरि वसै हउमै त्रिसना जाइ ।।

अपने आप को पहचान कर जो स्वस्वरूप रूपी घर में निवास करता है, उसका अहंकार और सांसारिक पदार्थों की तृष्णा चली जाती है ।

नानक निरमल ऊजले जो राते हरिनाइ ॥८॥७॥

नानक जी उन पवित्र (जीवों) के (मुख) उज्ज्वल होते हैं जो हरि प्रभु के नाम में रंगे हुए हैं ॥८॥७॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु ॥
हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु ॥
दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु ॥१॥
भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥
मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥१॥रहाउ॥
गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥
तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥
मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥२॥
गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥
आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ ॥३॥
बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥
तब लगु महलु न पाईऐ जबलगु साचु न चीति ॥
सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥४॥
हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥
सबदि सालाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥
सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥५॥
सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥
नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उरधारि ॥
सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥६॥
सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥
सबदै ही ते पाईऐ हरिनामे लगै पिआरु ॥
बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥७॥
सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥
गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥
नानक सबदि पछाणिऐ हउमै करै न कोइ ॥८॥८॥

□

सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु ॥

हे प्रभु को भूले हुए बावले मन ! सुनो ! गुरु के चरणों से लग जाओ।

हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु ॥

तू हरि नाम का जाप कर और प्रभु के नाम का ध्यान कर इससे यमों का डर और जन्म मरण का दुख भाग जायेगा (दूर हो जायेगा)।

दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु ॥१॥

पति द्वारा त्याग दी गई स्त्री (दोहागणी) को बहुत दुख होता है उसका सौभाग्य स्थिर कैसे रह सकता है ॥१॥

भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥

हे भाई ! प्रभु के बिना मेरा और कहीं (आश्रय) स्थान नहीं है।

मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥१॥रहाउ॥

प्रभु नाम का खजाना ही मेरा धन है (यह धन मुझे) गुरु ने दिया है (मैं सद्गुरु के) बलिहार जाता हूँ ॥१॥ रहाउ॥

गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥

जिस गुरु की शिक्षा पर चलने से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और प्रभु द्वारा शाबासी मिलती है, (हे भाई !) तू अपने आपको उस गुरु से मिला ले।

तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥

उस गुरु के बिना मैं एक घड़ी भी नहीं जी सकता प्रभु के नाम स्मरण के बिना मैं मर जाता हूँ।

मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥२॥

मुझ अज्ञान के कारण अन्धे को एक पल के लिए भी प्रभु का नाम न भूले, मैंने नाम की ही शरण ली है जिससे मैं अपने घर (स्वस्वरूप) में जाऊं (स्थित हो जाऊँ) ॥२॥

गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥

जिनका गुरु ही अज्ञानान्ध है उसके चेलों को कोई स्थान (निजस्वरूप) प्राप्त नहीं होता।

बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥

सद्गुरु की शरण में गए बिना प्रभु के नाम की प्राप्ति नहीं होती और प्रभु के नाम के बिना (मानव जीवन का) क्या लाभ ?

आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ ॥३॥

(नाम आराधना से हीन मनुष्य जन्म लेकर संसार में) आता है और (मरकर) चला जाता है जैसे सूने घर में कौआ (प्रवेश करता है और

खाद्य द्रव्य चोग आदि प्राप्त किये बिना भूखा ही लौट जाता है और (बाद में) पश्चाताप करता है (कि उसका आना और जाना व्यर्थ रहा) ॥३॥

बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥

प्रभु नाम के बिना इस शरीर को दुख प्राप्त होते हैं और जैसे कलसुर की बनी हुई दीवार कच्ची होने के कारण धीरे-धीरे गिरती रहती है वैसे ही यह शरीर जीर्ण शीर्ण होकर गिर जाता है।

तब लगु महलु न पाईऐ जबलगु साचु न चीति ॥

जब तक चित्त में सत्यनाम का निवास नहीं होता तब तक प्रभु के महल (स्वरूप) को नहीं पाया जाता।

सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥४॥

गुरु के शब्द उपदेश में रंगने से नित्य निर्वाण पद को घर (निजस्वरूप) में ही प्राप्त कर लेते हैं ॥४॥

हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥

मैं अपने गुरु से पूछता हूँ और गुरु से पूछ कर ही कर्मों की कमाई करता हूँ।

सबदि सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा जब सराहने योग्य प्रभु मन में बस जाता है तब अहंभाव (हउमै) से उत्पन्न दुख जल जाते हैं।

सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥५॥

(और तब जीव) स्थिर अवस्था से मिलन (प्राप्ति) होने से सत्य ही सत्य स्वरूप प्रभु से मिल जाते हैं ॥५॥

सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥

गुरु के शब्द में रंगे वे जीव निर्मल हो जाते हैं और काम क्रोध और अहंकार आदि विकारों का त्याग कर देते हैं।

नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उरधारि ॥

(ऐसे जीव) प्रभु के नाम की ही सदैव सराहना करते हैं और नित्य हरि प्रभु को हृदय में धारण करके रखते हैं।

सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥६॥

उस प्रभु को मन से क्यों विस्मृत किया जाय जो प्रभु समस्त जीवों का (जीवन) आधार है ॥६॥

सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥

गुरु के शब्द उपदेश को सुनकर जो मर जाता है (विकारहीन हो जाता है) वह मृत्यु से रहित हो जाता है। वह दूसरी बार नहीं मरता (जन्म मरण से छूट जाता है)।

सबदै ही तें पाईऐ हरिनामे लगै पिआरु ॥

गुरु के शब्द उपदेश से हो प्रभु के नाम से प्यार लगता है और प्रभु को पाया जाता है।

बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥७॥

गुरु के शब्द उपदेश के बिना यह सारा जगत भूला फिरता है और बार-बार मरता है और जन्म लेता है (आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है) ॥७॥

सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥

सभी मनुष्य अपने आपको ही सराहते हैं और चाहते हैं उनका यश बड़े (प्रसिद्ध) लोगों से भी बड़ा हो जाय।

गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥

गुरु के बिना अपने स्वरूप को पहचाना नहीं जाता (व्यर्थ कुछ भी) कहने सुनने से क्या होता है।

नानक सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ ॥८॥८॥

नानक जी (कथन करते हैं कि) गुरु के शब्द उपदेश द्वारा जो अपने मूल स्वरूप को पहचान लेता है तब कोई भी अहंकार नहीं करता ॥८॥८॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥
ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥
दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥
मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥
बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥रहाउ॥
गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥
सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥
गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥
सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥
मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥
हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥३॥
मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥

इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ।।
संतसभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम आधारु ।।४।।
खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ।।
सबद पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु संताइ ।।
साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ।।५।।
वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ।।
कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ।।
पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ।।६।।
गुरमुखि तोलि तोलाइसी सचु तराजी तोलु ।।
आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ।।
आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ।।७।।
कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ।।
काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ।।
नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ।।८।।९।।

□

बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ।।

प्रियतम प्रभु की प्रसन्नता के बिना जीवात्मा रूपी स्त्री द्वारा किया गया (जप तप साधना आदि का) शृंगार व्यर्थ है और उसे दुखी करता है ।

ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ।।

वह प्रियतम प्रभु के साथ हृदय रूपी शैय्या पर सुख आनन्द का उपभोग नहीं कर सकती और प्रियतम के बिना उसका सारा शृंगार व्यर्थ चला जाता है ।

दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ।।१।।

जिस प्रकार पति द्वारा त्यागी गई (दुहागिन) स्त्री को बहुत दुख होता है क्योंकि पति प्रभु घर में होते हुए भी उसके हृदय रूपी शैय्या पर नहीं आता ।।१।।

मन रे राम जपहु सुखु होइ ।।

हे मन ! प्रभु का राम नाम जप ! इस जाप से तुम्हें आत्मिक सुख प्राप्त होगा ।

बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ।।१।।रहाउ।।

गुरु के बिना प्रभु के प्रेम को नहीं पाया जा सकता । गुरु के शब्द उपदेश से मिलने पर ही आनन्द की प्राप्ति होती है ।।१।।रहाउ।।

गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥

गरु को सेवा करने से सुख प्राप्त होता है, हरि प्रभु को वर रूप में प्राप्त कर स्थिर श्रृंगार की प्राप्ति होती है ।

सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥

प्रियतम प्रभु के प्रति गहरा प्रेम होने से जीव स्त्री अन्तकरण रूपी शैय्या पर प्रियतम प्रभु से सुख उपभोग करती है ।

गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥

जिन्होंने गुरु के सम्मुख होकर ज्ञान प्राप्त किया है और प्रभु को पहचान लिया है वे (विवेक वैराग्य आदि) चार गुणों से पूर्ण हो जाते हैं और गुरु उन्हें प्रभु से मिला देता है ॥२॥

सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥

हे जीव स्त्री ! जिस जीव स्त्री ने पति परमेश्वर से प्रेम करके उसे मोह लिया है तुम उस स्त्री के द्वारा सत्य स्वरूप प्रभु पति से मिलने का प्रयत्न करो ।

मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥

जिसका मन और तन सच्चे प्रभु के प्रेम में प्रफुल्लित रहता है उसकी कीमत कही नहीं जाती ।

हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥३॥

जो जीव स्त्री सच्चे प्रभु के नाम को जप कर निर्मल हो गई है, उस सौभाग्यवती ने हृदय रूपी घर में हरि प्रभु पति को प्राप्त कर लिया है ॥३॥

मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥

प्रभु के नाम का मन में मनन करने से यदि मन (के विकार) मर जाय तो जोवात्मा रूपी नारी प्रियतम प्रभु से रमण कर सकती है ।

इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥

ऐसी जीव स्त्री प्रभु पति से मिलकर उसी प्रकार अभेद हो जाती है जैसे गले में पहनने वाले मोतियों के हार का एक ही धागा सभी मोतियों में (अभेद होकर) मिला रहता है ।

संतसभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥४॥

गुरु के सम्मुख होकर जो प्रभु के नाम को ही जीवन का आधार बना लेते हैं उन्हें सन्तों की सभा में आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है ॥४॥

खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥

सांसारिक पदार्थ नाशवान है एक क्षण में ये उत्पन्न होते हैं दूसरे ही क्षण में नष्ट हो जाते हैं । एक क्षण में आते हैं (जन्म लेते हैं) दूसरे ही क्षण में चले जाते हैं (मर जाते हैं) ।

सबद पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु संताइ ॥

(लेकिन जा जीव गुरु द्वारा दिए गए) शब्द से प्रभु को पहचान लेता है और उसके प्रेम में ही रंगा रहता है उसे काल सताता नहीं है ।

साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥५॥

वह मालिक प्रभु अतोल है, उसे तोला नहीं जाता और न ही कथनी द्वारा उसे पाया जाता है ॥५॥

वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥

प्रभु नाम के जिज्ञासु रूपी व्यापारी, व्यवसायियों की तरह अपनी आय (कर्मों का विवरण) लिखा कर ही संसार में आए हैं ।

कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥

वे सच्चे प्रभु के नाम रूपी कार्य की ही कमाई करते हैं और प्रभु की इच्छा (कृपा) रूपी लाभ को प्राप्त करते हैं ।

पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥६॥

प्रेम रूपी सत्य पूंजी से उन्हें सद्गुरु की प्राप्ति होती है और उन्हें तिल मात्र भी सांसारिक सुखों के उपभोग की तृष्णा नहीं रहती और न ही अज्ञान का अन्धेरा रहता है ॥६॥

गुरमुखि तोलि तोलाइसी सचु तराजी तोलु ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाला हो सच्चे प्रभु के तराजू के तोल में ठीक तोला जाता है (प्रभु की तराजू पर उसका ही तोल ठीक रहता है जो गुरु की शरण में आ कर प्रभु नाम का स्मरण करता है) ।

आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥

गुरु के सत्य बोलों से माया से उत्पन्न आशाएँ और कामनाएँ रुक जाती हैं । (समाप्त हो जाती है) ।

आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥७॥

पूर्ण प्रभु के पूर्ण विचारों की तोल मनुष्य तभी तोलता है जब वह प्रभु आप तुलवाता है । ७॥

कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥

केवल मौखिक कथन करने से छुटकारा नहीं होता और न ही पुस्तकों के भार (ढेर) पढ़ने से ही छूटना (मुक्त) होता है ।

काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥

हरि प्रभु की भक्ति और प्यार के बिना केवल शारीरिक शुद्धता से प्रभु को नहीं पाया जाता।

नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥८॥९॥

नानक जी (कथन करते हैं) यदि प्रभु का नाम विस्मृत न हो तो गुरु (कृपा करके) कर्त्ता प्रभु से मिला देता है ॥८॥९॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥
मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥
मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥१॥
भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ॥
पूछहु ब्रहमे नारदै बेदबिआसै कोइ ॥१॥रहाउ॥
गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ॥
सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ॥
लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइ ॥२॥
गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥
साचो वखरु संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥
सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर संघारु ॥३॥
भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ॥
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ॥
सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥४॥
इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ॥
जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ॥
घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ॥५॥
मेरी मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ॥
बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥
साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ॥६॥
आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ॥
पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥
बिनु हरिनाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥७॥
तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥

हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥

नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥८॥१०॥

□

सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥

यदि पूर्ण सद्गुरु मिल जाय तो उससे (श्रेष्ठ) विचार रूपी रत्न की प्राप्ति होती है।

मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥

मन अपने गुरु को अर्पित कर दिया जाय तो समस्त जीवों से प्रेम करने वाले प्रभु की प्राप्ति होती है।

मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥१॥

अवगुणों को मिटाने वाले प्रभु के मिलने पर मुक्ति रूपी अमूल्य पदार्थ की प्राप्ति होती है ॥१॥

भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ॥

हे भाई ! गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

पूछहु ब्रहमे नारदै बेदबिआसै कोइ ॥१॥रहाउ॥

बेशक कोई ब्रह्मा, नारद मुनि और वेद व्यास मुनि से जाकर पूछ ले ॥१॥ ॥रहाउ॥

गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ॥

वह प्रभु जो अकथनीय कहा जाता है उसे गुरु द्वारा दिये गये ज्ञान बताई गई ध्यान की विधि और ध्वनि उपदेश (ओंकार ध्वनि) द्वारा जाना जाता है।

सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ॥

गुरु फलयुक्त और हरियाली से पूर्ण वृक्ष की भांति (सुखदायक) हैं जिसकी घनी छाया (शान्तिदायक) होती है।

लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइ ॥२॥

गुरु के मन रूपी भंडारे में (प्रेम ज्ञान और भक्ति के) रत्न जवाहर और मोती शोभायमान होते हैं ॥२॥

गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥

गुरु के अन्तःकरण रूपी भण्डार में से ही प्रभु के पवित्र नाम के प्रति प्रम (भावना) की प्राप्ति होती है।

साचो वखरु संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥

पूर्ण गुरु की अनुकम्पा से ही अनन्त प्रभु का नाम रूपी सच्चा सौदा संचित किया जाता है।

सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर संघारु ।।३।।

सद्‌गुरु ही सुखों का दाता है और दुखों को मिटाने वाला है और (कामादि) राक्षसों का संहार करने वाला है ।।३।।

भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ।।

संसार सागर अत्यन्त विषम और डरावना है इसका न इस पार का किनारा दिखाई देता है न उस पार का ।

ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ।।

संसार सागर को पार करने के लिए जीव के पास न तो नौका है न तख्ते हैं न पतवार है और न ही (नौका खेने के लिये) मल्लाह है ।

सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ।।४।।

सद्‌गुरु ही इस भयानक संसार सागर से तैरने के लिये जहाज है, वह अपनी कृपा दृष्टि से पार उतार देता है ।।४।।

इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ।।

यदि एक पल के लिए भी प्यारा प्रभु भूल जाय तो दुख आकर लग जाते हैं और सुख चले जाते हैं ।

जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ।।

जो जिह्वा प्रभु के नाम रस में मग्न होकर प्रभु का नाम नहीं जपती वह जिह्वा जल जाय क्योंकि वह जलने योग्य ही है ।

घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ।।५।।

जब यह शरीर विनष्ट होता है और यमदूत पकड़कर ले जाते हैं और अत्यन्त दुख देते हैं तब मनुष्य पछताते हैं ।।५।।

मेरी मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ।।

अनेक जीव मेरो-मेरो करते इस संसार से चले गये लेकिन तन, धन और स्त्री कोई भी वस्तु साथ नहीं गई ।

बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ।।

प्रभु का नाम स्मरण किए बिना धन (का संचय) व्यर्थ है क्योंकि (माया के आकर्षण में बंधा) जीव (प्रभु भक्ति का) मार्ग भूल जाता है ।

साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ।।६।।

गुरु के सम्मुख होकर अकथनीय प्रभु की कथा करो और उस सच्चे मालिक की सेवा करो ।।६।।

आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ।।

बिना नाम स्मरण किए जीव आता है और जाता है (आवागमन के

चक्र में) घुमाया जाता है और भाग्य में पड़े हुए (लिखे गये) कर्मों को कमाता (फल भोगता) है ।

पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥

पहले से ही (प्रभु द्वारा) लिखा हुआ भाग्य कैसे मिट सकता है क्योंकि वह भाग्य प्रभु के हुकुम द्वारा ही लिखा गया है ।

बिनु हरिनाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥७॥

हरि प्रभु के नाम स्मरण के बिना (माया के बन्धन से) छूटा नहीं जा सकता गुरु की शिक्षा में मन मिल जाय तो गुरु प्रभु से मिला देता है ॥७॥

तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥

जिस प्रभु का (दिया हुआ) यह जीव है और प्राण है उस प्रभु के बिना मेरा कोई भी (सहारा) नहीं है ।

हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥

नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥८॥१०॥

नानक जी का अनुभव है कि गुरु के शब्द उपदेश पर विचार करने से जब अहंकार (हउमै) और ममता जल जाती है लोभ विकार फुँक जाता है और अभिमान भी जल जाता है तब गुणों का भंडार प्रभु प्राप्त होता है ॥८॥१०॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥
लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ॥
जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥१॥
मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥१॥रहाउ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥
जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ॥
बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥२॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ॥
सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ॥
करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥३॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ॥
आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥

आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ।।४।।

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ।।

खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ।।

मनमखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ।।५।।

मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ।।

ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ।।

गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ।।६।।

सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ।।

गिआन पदारथु पाईऐ त्रिभवण सोझी होइ ।।

निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ।।७।।

खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तलि ।।

घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ।।

जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ।।८।।

बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ।।

सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ।।

गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ।।९।।

मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ।।

मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ।।

नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ।।१०।।११।।

□

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ।।

हे मन तू हरि परमात्मा से ऐसी प्रीति कर जैसो कमल फूल की जल से होती है ।

लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ।।

यद्यपि जल की लहरें उसका स्पर्श करके उसे पछाड़ती रहती हैं फिर भी वह जल के प्रेम में निमग्न होकर विकसित रहता है ।

जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ।।१।।

कमल के फूल के जीवन को उत्पत्ति जल में ही होती है और जल के बिना उसका मरना होता है ।।१।।

मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ।।

हे मन ! प्रभु से प्रेम किए बिना तू यमदूत से कैसे छूटेगा ।

गुरमुखि अन्तरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ।।१।।रहाउ।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले (गुरुमुख) को, गुरु, भक्ति के भंडार बख्शीश

में देते हैं और उनके अन्तः करण में परमात्मा रमण करता है।
।१।।रहाउ।।

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ।।

हे मन ! हरि प्रभु से ऐसी प्रीति कर जैसी मछली जल से करती है।

जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ।।

जैसे जैसे जल की मात्रा बढ़ती है वैसे वैसे मछली अधिक सुख अनुभव करती है और उसका मन, तन और शरीर शान्त हो जाता है।

बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ।।२।।

जल के बिना वह एक घड़ी भी जीवित नहीं रहती, उसके हृदय की पीड़ा को प्रभु ही जानता है ।।२।।

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ।।

हे मन हरि प्रभु से ऐसी प्रीति कर जैसी चातक मेघ से करता है।

सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ।।

(वर्षा के जल से) सरोवर भर जाते हैं। (धरती का प्रत्येक) स्थल हरियाली से युक्त हो जाता है किन्तु चातक के मुख में यदि (स्वाति नक्षत्र में बरसे जल की) एक बूंद नहीं गिरती तो इतना जल उसके किस काम का ?

करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ।।३।।

यदि उसे प्रभु की कृपा मिल जाय तो (स्वाति बूंद को) प्राप्त कर लेता है नहीं तो उसके मस्तक पर (जल के बिना) देह त्याग का भाग्य लिखा पड़ा है ।।३।।

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ।।

हे मन हरि प्रभु से ऐसी प्रीति कर जैसी जल की दूध से होती है ।

आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ।।

दूध औटाने (उबालने) पर जल स्वयं दुख सहता है (सूख जाता है) परन्तु दूध को नष्ट नहीं होने देता।

आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ।।४।।

जिन्हें प्रभु ने सच्ची बढ़ाई देनी होती है उन बिछुड़ी हुई जीवात्माओं को प्रभु आप ही (अपने साथ) मिला लेता है ।।४।।

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ।।

हे मन ! हरि प्रभु से ऐसी प्रीति कर जैसी चकवी सूर्य से करती है।

खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ।।

यद्यपि सूर्य दूर है परन्तु वह उसे अपने हुजूर (निकट) अनुभव करती है

और रात्रि में सूर्य दिखाई न देने पर वह एक क्षण के लिए भी सोती नहीं है और पल भर भी उसे नींद नहीं आती।

मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥५॥

मन के पीछे चलने वाले मनमुख को प्रभु की सूझ नहीं होती परन्तु गुरु के सम्मुख रहने वाले गुरुमुख सदा ही प्रभु को अपने हुजूर (निकट) अनुभव करते हैं ॥५॥

मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ॥

मनमुखि जीव स्त्री गिनतियाँ ही गिनती रहती है परन्तु होता वही है जो कर्त्ता प्रभु करता है।

ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥

यद्यपि सभी चाहते भी है फिर भी उस प्रभु की कीमत नहीं पाई जा सकती।

गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥६॥

गुरु की शिक्षा में चलने वाला जीव प्रभु को प्राप्त कर सकता है और सत्य स्वरूप में मिलकर सुखी हो सकता है ॥६॥

सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥

यदि सद्गुरु उस प्रभु से मिला दे तो जीव का सच्चा प्रेम टूटता नहीं है।

गिआन पदारथु पाईऐ त्रिभवण सोझी होइ ॥

गुरु से ज्ञान पदार्थ प्राप्त होने पर तीनों भवनों की सूझ हो जाती है।

निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥७॥

जो शुभ गुणों का गाहक होता है उसे प्रभु का निरमल नाम विस्मृत नहीं होता ॥७॥

खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तलि ॥

जो संसार रूपी सरोवरों और तालाबों के किनारे संसारिक पदार्थों की चोग को चुगते थे वे बिलासी जीव रूपी पक्षी बिलास के अनेक प्रकार के खेल खेल कर चले गए।

घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥

एक घड़ी में या कि आधी घड़ी में (संसार छोड़कर) चलना पड़े बिलास के खेल आज तक ही हो या कि कल तक हो (कोई नहीं जानता)।

जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ॥८॥

हे प्रभु ! जिसे तुम गुरु से मिलाते हो वही मिलता है और वही जाकर सत्यस्वरूप में आसीन होता है ॥८॥

बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ॥

गुरु के बिना प्रभु की प्रीति मन में उत्पन्न नहीं होती और प्रभु प्रीति के बिना अहंभाव और अज्ञान की मैल नहीं जाती ।

सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥

गुरु के शब्द के रहस्य को जानकर और उस पर विश्वास करने से ही "मैं वह हूँ" (मैं ब्रह्म का रूप हूं) ऐसा अपने आप को जीव पहचान लेता है ।

गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥९॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जिज्ञासु अपने आप को पहचानते हैं और भला उन्हें क्या करना कराना होता है ॥९॥

मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ॥

गुरु के शब्द उपदेश पर विश्वास करके जो परमात्मा से मिल गए हैं उन मिले हुओं को फिर क्या मिलाना ।

मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥

मन के पीछे लगने वालों को प्रभु परमात्मा की सूझ नहीं होती इसलिए प्रभु से बिछुड़ कर वे यमदूतों से चोटें खाते हैं (यमदूत के प्रहार सहते हैं) ।

नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥१०॥११॥

नानक जी वह परमात्मा एक मात्र शरीर रूपी घर के द्वार पर ही अवस्थित है अन्य दूसरी जगह पर नहीं है ॥१०॥११॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

मनमुखि भुलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥
गुर बिनु को न दिखावई अंधी आवै जाइ ॥
गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥१॥
बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥
भरमि भुली डोहागणी ना पिर अंकि समाइ ॥१॥रहाउ॥
भूली फिरै दिसंतरी भूली गृहु तजि जाइ ॥
भूली डूंगरि थलि चड़ै भरमै मनु डोलाइ ॥
धुरहु विछुंनी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥२॥
विछुड़िआ गुरु मेलसी हरि रसि नाम पिआरि ॥
साचि सहजि सोभा घणी हरिगुण नाम अधारि ॥
जिउ भावै तिउ रखु तूं मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥३॥
अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥

तीरथ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥
गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु राजा सुलतानु ॥४॥
प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु वीचारु ॥
साधन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥
घर ही सो पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥५॥
गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥
गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥
नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ॥६॥
करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लइआ जाइ ॥
गुर की चरणी लगि रहु विचहु आपु गवाइ ॥
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥७॥
भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ॥
गुरमति मनु समझाइआ लागा तिसै पिआरु ॥
नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ॥८॥१२॥

□

मनमुखि भूलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥

मन के पीछे लगने वाली मनमुख जीव स्त्री (स्वयं मार्ग) भूली हुई है और दूसरों को भी भुलाती (पथभ्रष्ट करती) है। उस भूली हुई के लिए कोई भी स्थान नहीं है।

गुर बिनु को न दिखावई अंधी आवै जाइ ॥

सद्‌गुरु के बिना (प्रभु प्राप्ति का मार्ग) कोई नहीं दिखाता (अज्ञान के कारण) अंधी (दुनिया आवागमन के चक्र में) आती और जाती है।

गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥१॥

जिस जीव ने ज्ञान रूपी बहुमूल्य पदार्थ को खो दिया है वह (काम क्रोध आदि विकारों के ठगों से ठगा जाता है ॥१॥

बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥

हे बाबा ! माया जीव को भ्रम में (डाल निज स्वरूप की पहचान) भुला देती है।

भरमि भुली डोहागणी ना पिर अंकि समाइ ॥१॥रहाउ॥

भ्रम वश (भटकी) भूली पति द्वारा त्यागी जीव स्त्री प्रियतम प्रभु के अंक में समाहित नहीं हो सकती ॥१॥ रहाउ॥

भूली फिरै दिसंतरी भूली गृहु तजि जाइ ॥

भूली हुई देश देशान्तरों में (भटकती) फिरती रहती है और भ्रम वश

भूली भटकी अपने घर (निज स्वरूप) का त्याग कर जाती है।

भूली डूंगरि थलि चड़ै भरमै मनु डोलाइ ॥

भटकी जीवात्मा कभी पर्वतों पर जा चढ़ती है और कभी मरुस्थल के टीलों पर जा चढ़ती है भ्रम के कारण उसका मन डोलता रहता है।

धुरहु विछुंनी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥२॥

अपने मूल से बिछुड़ी हुई जीव स्त्री प्रभु प्रियतम से कैसे मिल सकती है अभिमान द्वारा ठगी गई वह जीव स्त्री बिलखती ही रहती है ॥२॥

विछुड़िआ गुरु मेलसी हरि रसि नाम पिआरि ॥

प्रभु से बिछुड़ी हुई जीवात्माओं को गुरु मिलाता है और हरि प्रभु के नाम रस के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है।

साचि सहजि सोभा घणी हरिगुण नाम अधारि ॥

हरि प्रभु के गुणों और उसके नाम का आश्रय लेने से सच्ची शान्ति और अत्यधिक शोभा (यश) की प्राप्ति होती है।

जिउ भावै तिउ रखु तू मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥३॥

हे प्रभु! आपको जैसे भी अच्छा लगे वैसे ही आप मेरी रक्षा करें तुम्हारे बिना मेरा और कौन स्वामी है ॥३॥

अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥

अक्षरों (ग्रन्थों) को पढ़ पढ़ कर तो और भटकते हैं और मिथ्या वेश धारण करने वाला बहुत अभिमान को प्राप्त होता है।

तीरथ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥

यदि मन में अहंकार की मैल है तो तीर्थों पर नहा कर भी कोई क्या कर लेगा (क्या लाभ होगा तीर्थ स्नान से)।

गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु राजा सुलतानु ॥४॥

यह मन (जो स्वयं को) राजा और बादशाह (मानता) है इसे गुरु के बिना किसने समझाया है (कौन समझा सकता है)।

प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु वीचारु ॥

प्रेम पदार्थ को पाकर और गुरु के सम्मुख होकर ही तत्व ज्ञान का विचार होता है।

साधन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥

जिस जीव स्त्री ने गुरु के शब्द उपदेश से शृंगार किया है वह स्त्री अपने आपको (अहं भाव को) गँवा देती है।

घर ही सो पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥५॥

गुरु से अपार प्रेम करके वह घर (निजस्वरूप) में ही प्रियतम प्रभु को प्राप्त कर लेती है ।।५।।

गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ।।

सद्गुरु की सेवा सुश्रुषा करने से मन पवित्र होता है और सुख की प्राप्ति होती है ।

गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ।।

गुरु का शब्द उपदेश मन में बस जाने से हृदय में से अहंभाव (हउमै) समाप्त (नष्ट) हो जाता है ।

नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ।।६।।

प्रभु नाम रूपी अमूल्य पदार्थ प्राप्त करने से मन को सदैव आनन्द लाभ होता है ।।६।।

करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लइआ जाइ ।।

प्रभु की कृपा (दृष्टि) मिले तभी नाम की प्राप्ति होती है अपने आप नहीं लिया (प्राप्त किया) जा सकता ।

गुर की चरणी लगि रहु विचहु आपु गवाइ ।।

अन्तःकरण से हउमै (अहंकार) को गँवा कर गुरु के चरणों से लग जाओ ।

सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ।।७।।

प्रभु के सत्य नाम में रच जाने पर बुद्धि रूपी पल्ले में सत्य स्वरूप को प्राप्त करते हैं ।।७।।

भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ।।

समस्त संसार भुलावे में है । केवल सद्गुरू और कर्त्ता प्रभु ही भुलावे से बाहर है (भ्रमहीन है) ।

गुरमति मनु समझाइआ लागा तिसै पिआरु ।।

जिसने गुरू से शिक्षा लेकर अपने मन को समझा लिया है (मन को वश में कर लिया है) उसे ही प्रभु के प्रति प्यार लगता है । (उसके मन में ही प्रभु के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है ।

नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ।।८।।१२।।

नानक जी (कहते हैं) जिन्हें गुरु ने अपरम्पार शब्द ब्रह्म से मिला दिया है उन्हें सत्यस्वरूप प्रभु कभी भी विस्मृत नहीं होता ।।८।।१२।।

□

सिरीरागु महला १ ।।

त्रिसना माइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ।।

धनि जोबनि ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ॥
मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ॥१॥
मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥
मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ॥१॥रहाउ॥
नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥
जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥
वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ॥२॥
आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥
नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥
जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ॥३॥
गुर सरणाई छुटीऐ मनमुखि खोटी रासि ॥
असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥
आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ॥४॥
तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥
कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ॥
गुरमति तूं सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥५॥
जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥
गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥
बिनु गण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥६॥
आसा अंदरि जंमिआ आसा रस कस खाइ ॥
आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥
अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ॥७॥
सरबे थाई एकु तूं जिउ भावै तिउ राखु ॥
गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साथु ॥
हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥८॥
आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥
आपे भगती भाउ तूं आपे मिलहि मिलाइ ॥
नानक नामु न वीसरै जिउ भावै तिवै रजाइ ॥८॥१३॥

□

त्रिसना माइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ॥

माया की तृष्णा में भटका जीव, पुत्र, मित्र, घर और नारी के प्रति मोहित हो रहा है।

धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ॥

धन और यौवन ने सारे संसार को ठग लिया है और जीव खाने का लोभ पदार्थ संग्रह का लालच और अहंकार करता है।

मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ॥१॥

जिस मोह और अहंकार रूपी बूटो ने सारे संसार को मार (ठग) रखा है, वही (सारे संसार में) व्याप्त हो रही है ।

मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥

हे मेरे प्रियतम प्रभु ! मेरा तुम्हारे बिना अन्य कोई नहीं है ।

मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ॥१॥रहाउ॥

हे प्रभु ! मुझे तुम्हारे बिना अन्य कोई भो दूसरा अच्छा नहीं लगता । तुमसे प्रेम करके ही मुझे सुख होता है ॥१॥ रहाउ॥

नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥

गुरु के शब्द उपदेश से सन्तुष्ट होकर प्रभु के नाम की आनन्द से सराहना करता हूँ ।

जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥

जो कुछ भी दिखाई देता है वह चलने वाला (नाशवान) है इसलिए मिथ्या वस्तुओं को मोह से मत देखो ।

वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ॥२॥

रास्ते का मुसाफिर (रूपी जीव संसार रूपी मुसाफिर खाने में जीवन रूपी रात्रि व्यतीत करने) आता है और (अपने अन्य) साथियों को नित्य प्रति चलता हुआ (जाता हुआ) देखता है ॥२॥

आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥

व्याख्यानों द्वारा तो कितने हो कहते रहते हैं परन्तु गुरु के बिना सूझ नहीं होती ।

नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥

यदि गुरु से नाम की बढ़ाई मिल जाय तो मन सत्यस्वरूप प्रभु में रंग जाता है और प्रभु के दरबार में जोव की इज्जत होती है ।

जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ॥३॥

हे प्रभु ! जो आपको अच्छा लगता है वहो अच्छा है । आपकी दृष्टि में कोई खोटा नहीं कोई खरा नहीं ॥३॥

गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि ॥

गुरु की शरण ग्रहण करने से ही छुटकारा होता है मन के पीछे लगने वाले मनमुख के पास खोटे कर्मों की पूंजी होती है (इसलिये वह गुरु की शरण में नहीं आता) ।

असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य और ओज इन आठ धातुओं

द्वारा बना शरीर परमेश्वर का ही है इसे गुरु उपदेश द्वारा (सजाया) गठित किया जाता है और आनन्द को प्राप्ति की जाती है।

आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ॥४॥

यह परखने वाला प्रभु आप ही जीव को परखता है और परखने के बाद जो जीव मूल्यवान राशि की भांति होते हैं वे प्रभु के खजाने में डाल दिये जाते हैं ॥४॥

तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥

मैंने सभी प्रकार से ठोक बजा कर देख लिया है हे प्रभु ! तुम्हारी कीमत आँकी नहीं जा सकती।

कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ॥

हे प्रभु ! केवल कथन मात्र से ही तुम्हारा स्वरूप हाथ को प्राप्त नहीं होता। सत्यस्वरूप में मन को टिकाने से ही इज्जत की प्राप्ति होती है।

गुरमति तूं सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥५॥

गुरु द्वारा दी गई शिक्षा से ही तुम्हारी सराहना हो सकती है, अन्य किसी प्रकार तुम्हारी कीमत कही नहीं जा सकती ॥५॥

जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥

जिस जीव के अन्तःकरण को प्रभु का नाम प्रिय नहीं लगता उस अन्तः करण में अहंकार होता है और वह वाद विवाद करता है।

गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥

गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता और ज्ञान के बिना मन विषय वासनाओं के ज्ञान से भिन्न दूसरे निकृष्ट स्वादों में लगा रहता है।

बिनु गुण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥६॥

प्रभु के गुणों का गान किये बिना यह शरीर किसी काम नहीं आता (व्यर्थ है) क्योंकि माया से जुड़े हुये जितने भी स्वाद (सुख) हैं सभी फीके (सारहीन) हैं ॥६॥

आसा अंदरि जंमिआ आसा रस कस खाइ ॥

जन्म लेते ही जीव के मन के अन्दर आशाएँ जन्म लेने लगती हैं। उन आशाओं को पूरा करने के लिये वह कसैले रसों को खाता है (कामादि का सुख उपभोग करता है)।

आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥

आशाओं में बंधा हुआ हो जीव परलोक मार्ग पर चला दिया जाता है और मोह में बंधा हुआ वह जीव मुँह पर यमदूत से चोट (प्रहार) खाता (सहन करता) है।

अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ॥७॥

अवगुणों से बंधा होने के कारण ही वह यमदूत से मार खाता है। गुरु से शिक्षा प्राप्त करके प्रभु नाम का स्मरण करने से ही (यमदूतों की मार से) छूटा जा सकता है ॥७॥

सरबे थाई एकु तूं जिउ भावै तिउ राखु ॥

हे प्रभु ! सभी स्थानों पर एक तुम ही (व्याप्त) हो जैसे तुम्हें अच्छा लगता है वैसे ही मेरी रक्षा करो।

गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साथु ॥

गुरु की शिक्षा द्वारा यदि सत्य प्रभु मन में बस जाय तो उस प्रभु का श्रेष्ठ नाम आराधना करने से जीव की प्रतिष्ठा होती है और उसका यश होता है।

हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥८॥

गुरु के शब्द उपदेश द्वारा सत्य प्रभु के सत्य नाम का उच्चारण करो और अपने अन्तःकरण में से अहंकार के रोग को गँवा दो ॥८॥

आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥

हे प्रभु ! तुम आकाश पाताल और तीनों भवनों में समा रहे हो।

आपे भगती भाउ तूं आपे मिलहि मिलाइ ॥

हे प्रभु ! तुम स्वयं ही भक्तिभाव हो और तुम स्वयं ही उस जीव को आकर मिलते हो जिसे गुरु मिलाता है।

नानक नामु न वीसरै जिउ भावै तिवै रजाइ ॥९॥१३॥

नानक जी को प्रभु का नाम कभी भी विस्मृत न हो, प्रभु को जैसा उचित लगे वैसा हो वह (नानक को) हुकुम दे ॥९॥१३॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ॥
सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥
जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरिनामु अधारु ॥१॥
मन रे साची खसम रजाइ ॥
जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ ॥१॥रहाउ॥
तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ॥
तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ॥
हरिनामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ॥२॥
अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ ॥
तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ॥

हरिनामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥३॥
कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ॥
भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥
रामनामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ॥४॥
मन हठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥
केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोखदुआर ॥
सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥५॥
सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥
इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥
करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ॥६॥
साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ ॥
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥
पी अम्रितु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥७॥
घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ॥
विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥
नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥८॥१४॥

□

राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ॥

जब प्रभु के राम नाम से मन विंध गया हो तो अन्य किसी विचार का क्या करना है।

सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥

गुरु के शब्द उपदेश में चित्तवृत्ति लगने से सुखों की उत्पत्ति होती है और प्रभु के प्रेम रंग में रंगना सुखों का सार तत्त्व है।

जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरिनामु अधारु ॥१॥

हे प्रभु ! तुम्हें जैसे अच्छा लगता है मेरी रक्षा करो मुझे तो तुम्हारे हरि नाम का ही सहारा है ॥१॥

मन रे साची खसम रजाइ ॥

हे मेरे मन उस मालिक प्रभु की आज्ञा ही सच्ची है।

जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ ॥१॥रहाउ॥

जिस प्रभु ने तन और मन को रचा है और इसका शृंगार किया है उसी प्रभु से चित्तवृत्ति लगाओ ॥१॥रहाउ॥

तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ॥

यदि शरीर को एक एक रत्ती भर तोल से काट लिया जाय और उसे आग में जला दिया जाय

तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ।।

यदि तन और मन को हवन कुण्ड में जलने वाली लकड़ियाँ (समिधा) बनाया जाय और दिन रात अग्नि कुण्ड में जलाया जाय ।

हरिनामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ।।२।।

इस प्रकार के यदि लाखों करोड़ों कर्म भी किए जायं तो हरि प्रभु के नाम स्मरण के बराबर नहीं पहुंच सकते (बराबरी नहीं कर सकते) ।।२।।

अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ ।।

सिर पर करवट (आरा) रखवा कर शरीर को आधा-आधा (दो टुकड़ों में) कटवा दें ।

तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ।।

यदि शरीर को हिमालय पर्वत की बर्फ में गलवा दें तब भी मन से हउमै (अहंकार) का रोग नहीं जाता ।

हरिनामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ।।३।।

कर्मकाण्ड की कठिन क्रियाओं को ठोंक पीट (परख) कर देख लिया है परन्तु ये कर्म हरि प्रभु के नाम स्मरण की तुलना में नहीं पहुंच सकते (बराबरी नहीं कर सकते) ।।३।।

कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ।।

चाहे करोड़ों सोने की वस्तुएं दान कर दें और अनेकों उत्तम घोड़े और श्रेष्ठ हाथियों का दान कर दें ।

भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ।।

चाहे कितनी ही भूमि दान कर दें और अनेकों गऊओ का दान कर दें फिर भी हृदय में (दान का) अहंकार और अभिमान रहता है ।

रामनामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ।।४।।

जिनको गुरु ने प्रभु के सच्चे नाम का दान दिया है उनका मन राम के नाम से विंध जाता है ।।४।।

मन हठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ।।

कितने ही बुद्धि से और हठ (यौगिक क्रियाओं) से मन को वश में करते हैं और कितने विभिन्न प्रकार से वेदों का विचार करते हैं ।

केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोखदुआर ।।

जीव को तो कितने ही माया के बंधन हैं परन्तु गुरु के सम्मुख होकर (शरण में आकर) ही इन बंधनों से मुक्ति का द्वार प्राप्त होता है ।

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ।।५।।

सभी (प्रकार के दान कर्म) सत्य से इधर (नीचे) है, सत्याचरण सबसे ऊपर है ।।५।।

सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ।।

सभी को ऊँचा कहना चाहिए, नीचा तो कोई भी दिखाई नहीं देता ।

इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ।।

एक ही परमेश्वर प्रभु ने सभी शरीरों को रचा है और तीनों लोकों में एक ही चैतन्य सत्ता का प्रकाश है ।

करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ।।६।।

गुरु की कृपा होने से ही प्रभु के सत्यनाम की प्राप्ति होती है उस मूल स्रोत परमात्मा से प्राप्त होने वाली बख्शीश को कोई मिटा नहीं सकता ।।६।।

साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ ।।

यदि साधु भाव (विनम्र भाव) से साधु महात्माओं से मिला जाय तो उनकी संगति से गुरु के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न होता है और उससे मन में संतोष का निवास होता है ।

अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ।।

सद्‌गुरु के उपदेश में जिज्ञासु समाहित हो जाय तभी प्रभु की अकथनीय कथा पर विचार करता है ।

पी अंम्रितु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ।।७।।

जो प्रभु के नाम रूपी अमृत को पीकर संतुष्ट हो जाता है वही प्रभु की दरगाह में (यशरूपी) वस्त्रों को पहन कर जाता है ।।७।।

घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ।।

प्रत्येक जीवात्मा में किंगुरी नाद (चैतन्य सत्ता का संगीत) बजता प्रतीत होता है ।

विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ।।

(चैतन्य सत्ता का किंगुरी नाद प्रत्येक जीव आत्मा में बजता है) ऐसी सूझ किसी बिरले को ही प्राप्त होती है जो गुरु के सम्मुख होकर अपने मन को समझाता है ।

नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ।।८।।१४।।

नानक जी गुरु के शब्द उपदेश (के अनुसार कर्म) की कमाई करके जो (सांसारिक बंधनों से) छूट जाता है उसे प्रभु का नाम विस्मृत नहीं होता ।।८।।१४।।

□

सिरीरागु महला १॥

चिते दिसहि धउलहर बगे बंक दुआर ॥

करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि ॥

अंदरु खाली प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥१॥

भाई रे तनु धनु साथि न होइ ॥

रामनामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभु सोइ ॥१॥रहाउ॥

रामनामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु ॥

आगै पूछ न होवई जिसु बेली गुरु करतारु ॥

आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥२॥

मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥

नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥

गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरिरसु भोगु ॥३॥

चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि डोलाइ ॥

बाहरि ढूंढि विगुचीऐ घर महि वसतु सुथाइ ॥

मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥४॥

साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥

रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥

पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥५॥

बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥

सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥

नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरिगुर दरसु न होइ ॥६॥

जिउ सुपनै निसि भुलीऐ जबलगि निद्रा होइ ॥

इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि हउमै दोइ ॥

गुरमति होइ वीचारीऐ सुपना इहु जगु लोइ ॥७॥

अगनि मरै जलु पाईऐ जिउ बारिक दूधै माइ ॥

बिनु जल कमल सु ना थीऐ बिनु जल मीनु मराइ ॥

नानक गुरमुखि हरिरसि मिलै जीवा हरिगुण गाइ ॥८॥१५॥

□

चिते दिसहि धउलहर बगे बंक दुआर ॥

विचित्र चित्रित हुए जो श्वेतमहल दिखाई दे रहे हैं जिनके सफेद सुन्दर दरवाजे हैं।

करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि ॥

(प्रभु नाम के बिना) जिनका दूसरी वस्तुओं से प्रेम है, उन्होंने अपने

मन को खुश रखने के लिए खूब प्यार से इन महलों को बनाया है ।

अंदरु खाली प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥१॥

जिन जीवों के अन्तःकरण प्रभु नाम से खाली है प्रभु प्रेम के बिना उनके ये महल गिरकर ढेर हो जायेंगे और उनका शरीर मिट्टी हो जायगा ॥१॥

भाई रे तनु धनु साथि न होइ ॥

हे भाई ! यह तन और धन (परलोक का) साथी नहीं होता ।

रामनामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभु सोइ ॥१॥रहाउ॥

रामनाम रूपी पवित्र धन ही साथ जाता है, परन्तु इस धन का दान, वह प्रभु आप ही गुरु के द्वारा करता है ।

रामनामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु ॥

यदि देने वाला दाता गुरु दे तभी राम नाम रूपी पवित्र धन प्राप्त होता है ।

आगै पूछ न होवई जिसु बेली गुरु करतारु ॥

जिस जीव का मित्र कर्त्ता प्रभु रूपी गुरु होता है उससे आगे परलोक में जाने पर कोई पूछ ताछ नहीं होती ।

आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥२॥

वह प्रभु आप ही बख्श देने वाला है और वह आप जब छुड़ाता है तभी जीव बन्धनों से छूटता है ॥२॥

मनमुख जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥

मन के पीछे लगने वाला अज्ञानी जीव कन्या और पुत्र को अपना करके जानता है । (यह नहीं जानता) कि यह थोड़े दिन का संयोग है ।

नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥

स्त्री को देखकर अति प्रसन्न होता है, यह नहीं जानता कि इस हर्ष के साथ शोक लगा हुआ है ।

गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरिरसु भोगु ॥३॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीव गुरु के शब्द उपदेश द्वारा हरि नाम के रस का उपभोग करते हैं और रात दिन आनन्द में रंगे हुए रहते हैं ।

चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि डोलाइ ॥

अज्ञानी जीव का चित्त चले जाने वाले (नाशवान) धन के प्रति चंचल बना रहता है वह स्वयं भी डोलता रहता है और दूसरों को भी अस्थिर डोलायमान करता रहता है ।

बाहरि ढूंढि विगुचीऐ घर महि वसतु सुथाइ ॥

आत्मवस्तु तो शरीर के भीतर श्रेष्ठ स्थान अन्तःकरण में ही प्राप्त होती है परन्तु अज्ञानी उसे बाहर खोजता हुआ दुखी होता है ।

मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥४॥

मनमुख (अज्ञानी) जीव स्त्री हउमै (अहंकार) के कारण लुटी जाती है और गुरुमुख गुरु की शरण में आने वाली जीवस्त्री (अपने बुद्धि रूपी) पल्ले में (आत्मवस्तु को) प्राप्त कर लेती है ॥४॥

साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥

हे गुणहीन अज्ञानी जीव तुम अपने मूल को पहचानो ।

रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥

माता के रक्त और पिता के वीर्य बिन्दु से बना यह शरीर अन्त में अग्नि के पास पहुंच जायगा ।

पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥५॥

यह देह पवन (वायु प्राण) के वश में है और (प्राण निकलने तक ही देह है) ऐसा प्रत्येक व्यक्ति के मस्तक पर सत्य का निशान पड़ा हुआ है (मृत्यु सत्य है) ॥५॥

बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥

सभी अधिक (लम्बा) जीवन मांगते हैं मरनें की इच्छा कोई नहीं करता ।

सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जिस जीव के मन में वह प्रभु बसा हुआ है उसका जीवन ही सुखी कहा जा सकता है ।

नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरिगुर दरसु न होइ ॥६॥

जिन्हें हरि रूप गुरु के दर्शन हो नहीं होते उन्हें जीवित प्राणियों में क्या गिनना (वे मृत तुल्य हैं) ॥६॥

जिउ सुपनै निसि भुलीऐ जबलगि निद्रा होइ ॥

जैसे जब तक नींद होती है तब तक जीव रात्रि के सपनों में भटकता रहता है ।

इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि हउमै दोइ ॥

(वैसे ही) जब तक अज्ञान रूपी सर्पिणी के वश में यह जीव होता है तब तक उसके अन्तर (मन) में अहंकार और द्वैत भावना बनी रहती है ।

गुरमति होइ वीचारीऐ सुपना इहु जग लोइ ॥७॥

गुरु द्वारा दी गई सद्बुद्धि प्राप्त होने पर ही यह विचार उत्पन्न होता

है कि इस संसार में प्रकाशित होने वाली दृश्यमान वस्तुएँ स्वप्न की भांति (क्षणभंगुर) हैं ॥७॥

अगनि मरै जलु पाईऐ जिउ बारिक दूधै माइ ॥

जैसे जल को प्राप्त कर अग्नि मर (शान्त हो) जाती है और जैसे माता के दूध को प्राप्त कर बालक तृप्त हो जाता है।

बिनु जल कमल सु ना थीऐ बिनु जल मीनु मराइ ॥

जैसे जल के बिना कमल का फूल (प्रफुल्लित) नहीं होता और जैसे जल के बिना मछली मर जाती है।

नानक गुरमुखि हरिरसि मिलै जीवा हरिगुण गाइ ॥८॥१५॥

वैसे ही गुरु के सम्मुख रहने वाले जीवों को हरि प्रभु के नाम में ही रस मिलता है (वे उसके द्वारा ही जीवित रहते हैं) नानक जी की प्रभु से प्रार्थना है, हे हरि प्रभु ! मैं तुम्हारे गुणों का गान करते हुए ही जीवित रहूँ ॥८॥१५॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ॥
ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ॥
गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥१॥
भाई रे भवजलु बिखमु डरांउ ॥
पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरिनाउ ॥१॥रहाउ॥
चला चला जे करी जाणा चलणहारु ॥
जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥
भी सचा सालाहणा सचै थानि पिआरु ॥२॥
दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥
हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ॥
किसही नालि न चलिआ खपि खपि मुए असार ॥३॥
सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ॥
सभु जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ॥
पिंडु पड़ै जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥४॥
पुता देखि विगसीऐ नारी सेज भतार ॥
चोआ चंदनु लाईऐ कापड़ु रूपु सीगारु ॥
खेहू खेह रलाईऐ छोडि चलै घर बारु ॥५॥
महर मलूक कहाईऐ राजा राउ कि खानु ॥

चउधरी राउ सदाईऐ जलि बलीऐ अभिमान ।।
मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ।।६।।

हउमै करि करि जाइसी जो आइआ जग माहि ।।
सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ।।

गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ।।७।।
नानक तरीऐ सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ।।

मै हरिनामु न वीसरै हरिनामु रतनु वेसाहु ।।
मनमुख भउजलि पचि मुए गुरमुखि तरे अथाहु ।।८।।१६।।

□

श्री गरुदेव संसार के दुखों से व्याकुल जीव रूपी स्त्री को हृदय में ही प्रियतम प्रभु को प्राप्त करने का सरल मार्ग बतला रहे हैं। जिस प्रकार ऊँचे विशाल पर्वत के शिखर पर पहुंचा हुआ व्यक्ति पर्वतों की भयानकता में भटक कर मार्ग भूल जाता है उसी प्रकार जीव रूपी स्त्री संसार के विभिन्न दुखों में भटक जाती है। श्री गुरुदेव उसका मार्ग दर्शन कर रहे हैं।

□

डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ।।

पीहर (इहलोक) में रहती हुई जीव स्त्री (ससुराल-परलोक) भयानक पर्वतों वाले यम मार्ग को देखकर डरतो है।

ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ।।

जीवात्मा रूपी स्त्री के पास (उन पर्वतों पर चढ़ने के लिए पुण्य कर्मों की) सीढ़ी भी नहीं है।

गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ।।१।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीवों ने अन्तरात्मा को जान लिया है और गुरु से मिल कर (ज्ञान प्राप्त कर वे भयानक पर्वतों को) पार हो गये हैं ।।१।।

भाई रे भवजलु बिखमु डरांउ ।।

हे भाई यह संसार सागर अत्यन्त कठिन और डरावना है।

पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरिनाउ ।।१।।रहाउ।।

यदि रसिक जिज्ञासु को पूर्ण सद्गुरु मिल जाय तो गुरु हरि प्रभु का नाम देकर जिज्ञासु का उद्धार कर देता है ।।१।। रहाउ।।

चला चला जे करी जाणा चलणहारु ।।

इस संसार से चले जाना है, चले जाना है, यदि जोव ऐसा करता रहे

और अपने आप को चलने वाला (नाशवान) समझ लें ।

जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ।।

(और ऐसा मान ले) जो भी यहाँ आया है वह चलेगा (चला जायेगा) केवल कर्त्ता परमेश्वर रूप गुरु ही अमर है ।

भी सचा सालाहणा सचै थानि पिआरु ।।२।।

(ऐसा निश्चय हो जाने पर) भी सच्चे स्थान (सत्यसंगति के स्थान) से प्यार करते हुए सत्य प्रभु की सराहना करे (तभी प्रभु की प्राप्ति होती है) ।।२।।

दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ।।

भले ही किसी के पास सुन्दर दरवाजों वाले घर और महल हो और हजारों पक्के किले हों ।

हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ।।

लोहे की झूलों वाले लाखों हाथो और घोड़े हों और अपार सेना हो ।

किसही नालि न चलिआ खपि खपि मुए असार ।।३।।

(परन्तु ये वस्तुएँ) किसी के भी साथ नहीं चलती हैं (संसार के अज्ञानी जीव) व्यर्थ ही व्याकुल हो कर मर गये हैं ।।३।।

सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ।।

सोना और चांदी का संचय किया जाता है परन्तु यह धन समूह जीव को बन्धन में बांधने वाला जाल है ।

सभु जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ।।

भले ही किसी पुरुष के नाम की दुहाई सारे संसार में फिरा दी जाय (सारा संसार उससे डरे) परन्तु प्रभु का नाम स्मरण किये बिना काल उसके सिर पर ही खड़ा रहता है (वह जन्म मरण से छूट नहीं सकता)।

पिंडु पड़ै जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ।।४।।

शरोर के गिरते ही जीव (जन्ममरण का खेल) खेलेगा, बुरे कर्म करने वालों का पता नहीं क्या हाल होगा ।।४।।

पुता देखि विगसीऐ नारी सेज भतार ।।

पति शैय्या पर स्त्री को (देखकर) और पुत्र को देखकर प्रसन्न होता है ।

चोआ चंदनु लाईऐ कापड़ रूपु सीगारु ।।

जिस शरीर पर चन्दन और इत्र लगाया जाता है और रूपवान बनाने के लिए (सुन्दर) वस्त्रों से जिसका श्रृंगार किया जाता है ।

खेहू खेह रलाईऐ छोडि चलै घर बारु ।।५।।

परन्तु जब जीव घर द्वार छोड़ कर चलता है (जाता है) तो उसी शरीर की मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है ।।५।।

महर मलूक कहाईऐ राजा राउ कि खानु ।।

चाहे कोई मुखिया बादशाह कहलवाता हो, राजा राव या कि खान (सरदार) हो ।

चउधरी राउ सदाईऐ जलि बलीऐ अभिमान ।।

और चाहे अपने को चौधरी राय नाम से बुलवाता हो, सभी अहंकार की अग्नि में जल रहे हैं ।

मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ।।६।।

(ये सब मन के पीछे चलने वाले) मनमुख प्रभु के नाम को विस्मृत कर (अहंकार की अग्नि में ऐसे जलते हैं) जैसे दावाग्नि में सरकण्डे का काना जलता है ।।६।।

हउमै करि करि जाइसी जो आइआ जग माहि ।।

जो भी इस जगत में आया है वह अहंकार करता करता चला जाता है ।

सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ।।

(उस अज्ञानी के लिए) यह सारा संसार काजल की कोठड़ी के समान है जिसमें उसका तन मन और सूक्ष्म देह मैली होती रहती है ।

गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ।।७।।

जिनको गुरु ने अपनी शरण में रख लिया है केवल वे ही पवित्र रहते हैं क्यों कि उन्होंने गुरु के शब्द उपदेश द्वारा तृष्णा रूपी अग्नि से अपना निवारण कर लिया है ।।७।।

नानक तरीऐ सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ।।

गुरुदेव नानक जी कथन करते हैं कि (समस्त) शाह और बादशाहों के शिरोमणि (बादशाह) सत्य स्वरूप प्रभु के नाम को जप कर संसार सागर से तर जाते हैं ।

मै हरिनामु न वीसरै हरिनामु रतनु वेसाहु ।।

हे प्रभु ! मुझे हरि का नाम कभी भी विस्मृत न हो क्योंकि मुझे हरि नाम रूपी रत्न का ही विश्वास है (सहारा है) ।

मनमुख भउजलि पचि मुए गुरमुखि तरे अथाहु ।।८।।१६।।

मन के पीछे लगने वाले मनमुख संसार सागर में दुखी होकर मर जाते हैं और गुरु के सम्मुख रहने वाले इस अथाह सागर से तर (पार हो) जाते हैं ।।८।।१६।।

□

सिरीरागु महला १ घरु २ ॥

मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥
मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥१॥
दुनीआ कैसि मुकामे करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥१॥रहाउ॥
जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥
पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देवसथानि ॥२॥
सुर सिध गण गंधरब मुनिजन सेख पीर सलार ॥
दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥३॥
सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥
घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥४॥
सबदाह माहि वखाणीअहि विरला त बूझै कोइ ॥
नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥५॥
अलाहु अलखु अगंम कादरु करणहारु करीमु ॥
सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥६॥
मुकामु तिसनो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥
असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥७॥
दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥
मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥८॥१७॥
महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥

□

मक्का मदीना की यात्रा के दौरान मदीना में अनेक मौलवी काजी गुरु नानक देव जी के उपदेशों को सुन कर प्रभावित हुए। गुरुदेव जी से उन्होंने और कुछ दिन ठहर कर उपदेशामृत पिलाने का आग्रह किया। गुरु साहिब ने अत्यन्त वैराग्य भावना से अभिभूत होकर इस शब्द के माध्यम से बताया कि यह संसार क्षणभंगुर है, अतः यहां स्थायी रूप से ठहरना कैसा ?

□

मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥

नित्य प्रति जब चलने (संसार से जाने) की धुकधुकी लगी रहती है तो अस्थायी रूप से ठहरने के स्थान को स्थायी घर मान कर बैठना (कैसा ?)

मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥१॥

स्थिति को (स्थायी) तब जाने जब यह लोक निश्चल (स्थायी) हो ॥१॥

दुनीआ कैसि मुकामे करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥१॥रहाउ॥

यह संसार ठहरने का स्थान हो भी कैसे सकता है।

परमात्मा पर विश्वास करो (परलोक मार्ग पर चलने के लिये शुभ) कर्मों का राह खर्च (साथ में) बांध लो और हरि के साथ लगे रहो (चित्तवृत्ति हरिनाम में लगाये रखो) ॥१॥ रहाउ॥

जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥

योगी तो आसन लगा कर बैठे हैं और मौलवी मस्जिदों में स्थान बना कर बैठे हैं।

पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देवसथानि ॥२॥

पंडित (धार्मिक) ग्रन्थों को सिद्ध (अध्ययन) करके देवस्थानों (मन्दिरों-देवालयों) में बैठ कर उन ग्रन्थों पर व्याख्यान देते हैं ॥२॥

सुर सिध गण गंधरब मुनिजन सेख पीर सलार ॥

देवता, सिद्ध योगी, नन्दोगण, गंधर्व, किन्नर, यक्ष आदि, नारद एवं अन्य मुनि प्रह्लाद आदि भक्तजन, शेख, पोर, बड़े-बड़े सरदार (आदि सभी)।

दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥३॥

अपने द्वार ठिकानों से कूच कर गये हैं तथा अन्य (बचे हुए) भी चलने वाले हैं ॥३॥

सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥

बादशाह नवाब सरदार उमराव सभी यहां से कूच करके चले गए।

घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥४॥

घड़ो आध घड़ो में सब को यहां से चलना है, हे मन ! तू भी स्वयं को वहीं पहुंचा हुआ समझ ॥४॥

सबदाह माहि वखाणीअहि विरला त बूझै कोइ ॥

शब्दों के द्वारा प्रभु का बखान तो सभी करते हैं परन्तु कोई विरला ही उस प्रभु को समझता है।

नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥५॥

श्री गुरु नानक जो (उस प्रभु के चरणों में) विनम्र प्रार्थना करते हैं (जो प्रभु) जल स्थल और अन्तरिक्ष में (व्याप्त) है ॥५॥

अलाहु अलखु अगंम कादरु करणहारु करीमु ॥

वह प्रभु अदृश्य है, अगम्य है, सर्वशक्तिमान है, सृष्टि का कर्त्ता है और कृपालु है।

सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥६॥

यह सारी दुनिया आने और जाने वाली है, एक मात्र परम कृपालु परमात्मा ही सदा स्थायी रहने वाला है ॥६॥

मुकामु तिसनो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥

सदा स्थिर रहने वाला उसे कहा जायेगा जिसके सिर पर अस्थिरता का लेख न लिखा हुआ हो (जिसके भाग्य में लिखा हो कि उसका कभी नाश नहीं होगा जबकि ऐसा संभव नहीं है)।

असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥७॥

यह आसमान और यह धरती (पंचमहाभूत-आकाश, पृथ्वी, जल, वायु और तेज) सब चलने वाली (नष्ट होने वाली) है, स्थिर केवल एक मात्र वही है ॥७॥

दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥

दिन और सूर्य चले जायेंगे (नष्ट होंगे) रात्रि और चन्द्रमा भी चले जायेंगे और लाखों तारे भी नष्ट हो जायेंगे।

मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥८॥१७॥

गुरु नानक देव जी कहते हैं मैं सत्य बोलता हूं कि एक मात्र वही परमात्मा ही सदा स्थिर रहने वाला स्थान है ॥८॥१७॥

महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥

पहले गुरुदेव श्री गुरु नानक जी की सत्रह अष्टपदियां यहां पर समाप्त हैं।

□

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ ॥

गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥
हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥१॥
भाई रे भगति हीणु काहे जगि आइआ ॥
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥रहाउ॥
आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ॥
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥
गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ॥२॥
देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥
सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥

प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥

पेईअड़ै जग जीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥

बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ॥

हरिसुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ॥४॥

पेईअड़ै जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ॥

अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ ॥

जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥५॥

आपे नदरि करे भाउ लाए गुरसबदी बीचारि ॥

सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै त्रिसना मारि ॥

हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उरधारि ॥६॥

प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥

नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ ॥

सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥७॥

आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥

हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ॥

नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई

॥८॥१॥१८॥

□

यहाँ से तृतीय ज्योति गुरु अमरदास जी द्वारा रचित अष्टपदियों का प्रारंभ है। इस अष्टपदी में श्री गुरुदेव जो जीव को नाम भक्ति आराधना की प्रेरणा दे रहे हैं। आपका कथन है कि नाम भक्ति आराधना से हीन मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। उसका इस संसार में आना ही व्यर्थ है। भक्ति की प्राप्ति गुरु की कृपा से होती है।

□

गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥

गुरु के सम्मुख होने पर (गुरु की शरण में आने पर) जब गुरु कृपा करता है तभी प्रभु की भक्ति की जा सकती है बिना गुरु की कृपा के भक्ति नहीं हो सकती।

आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥

जब जिज्ञासु अपने आपको गुरु से मिलाता है और गुरु के उपदेशों को समझता है तभी वह पवित्र हो सकता है, परन्तु ऐसा जिज्ञासु कोई (विरला) ही है।

हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥१॥

हरि प्रभु जी स्वयं सत्यस्वरूप हैं (उनके मुख से निसृत) वाणी ही सत्य है गुरु के शब्द उपदेश से ही उस सत्यस्वरूप प्रभु से मिलन होता है ।।१।।

भाई रे भगति हीणु काहे जगि आइआ ।।

हे भाई ! भक्तिहीन जीव संसार में आया ही क्यों ?

पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ।।१।।रहाउ।।

क्योंकि ऐसे जीव ने पूर्ण सद्‌गुरु की सेवा नहीं की है और अपना जन्म व्यर्थ गँवा दिया है ।।१।।रहाउ।।

आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ।।

हरि प्रभु आप ही सारे जगत का जीवन दाता है और आप ही कृपा करके गुरु से मिलाता है ।

जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ।।

ये बेचारे जीव जन्तु हैं क्या (क्या है इनका सामर्थ्य) (प्रभु के सम्बन्ध में ये) क्या कह कर सुना सकते हैं ।

गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ।।२।।

प्रभु गुरु के सम्मुख आने वालों को आप ही बड़प्पन देता है और अपने आप ही उनसे सेवा कराता है ।।२।।

देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ।।

जीव जिस कुटुम्ब को देखकर उनके प्रति लोभित होकर उनसे मोह करता है वह यहां से चलते हुए साथ नहीं जाता ।

सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ।।

सद्‌गुरु की सेवा करके गुणों का भंडार प्रभु पाया जा सकता है परन्तु उस प्रभु की कीमत नहीं पाई जा सकती (उसकी महानता को जाना नहीं जा सकता) ।

प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई ।।३।।

प्रभु (मेरा) मित्र है और हरि प्रभु जी ही अन्त में मेरे सहायक होंगे ।।३।।

पेईअड़ै जग जीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ।।

समस्त संसार को जीवन देने वाला प्रभु पीहरघर (इहलोक) में ही है (किन्तु उसे विस्मृत कर) मनमुख जीव स्त्री ने (परलोक में) अपनी इज्जत खो दी है ।

बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ।।

सद्‌गुरु के बिना प्रभु प्राप्ति का मार्ग कोई नहीं जानता और अज्ञान में अन्धे जीव को (प्रभु दरबार में) कोई स्थान नहीं मिलता ।

हरिसुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ।।४।।

समस्त सुखों का दाता हरि जिसके मन में नहीं बसता उसे अन्त में परलोक जाकर पछताना पड़ता है ।।४।।

पेईअड़ै जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ।।

गुरु की शिक्षा पर चलने वाला जीव पीहर (इसलोक) में ही समस्त जगत को जीवन देने वाले प्रभु को अपने मन में बसा लेता है ।

अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ ।।

वह प्रतिदिन दिन और रात्रि में प्रभु की भक्ति करता है, उसका अहंकार और मोह चुक जाता है (समाप्त हो जाता है) ।

जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ।।५।।

वह जिससे अनुरक्त होता है उसके जैसा ही हो जाता है। सत्य (मार्ग पर चलता हुआ) सत्यस्वरूप प्रभु में समा जाता है ।।५।।

आपे नदरि करे भाउ लाए गुरसबदी वीचारि ।।

जिस पर प्रभु आप कृपा दृष्टि करता है, उसे ही गुरु का प्रेम लगता है और वही गुरु के शब्द उपदेशों पर विचार करता है ।

सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै त्रिसना मारि ।।

अहंकार और तृष्णा को मार कर सद्गुरु की सेवा करने से आत्मज्ञान की उत्पत्ति होती है ।

हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उरधारि ।।६।।

जिन्होंने हृदय में सत्य को धारण करके रखा है, श्रेष्ठ गुणों का प्रदाता प्रभु सदैव उनके मन में निवास करता है ।।६।।

प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ।।

मेरा प्रभु सदैव शुद्ध पवित्र है और शुद्ध पवित्र मन से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है ।

नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ ।।

जिसके मन में हरि के नाम का खजाना निवास करता है उसका अहंकार और उसस उत्पन्न सभी दुख चले जाते हैं ।

सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ।।७।।

जिस सद्गुरु ने मुझे शब्द उपदेश सुनाया है मैं उसके सदैव बलिहार जाता हूं ।।७।।

आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ।।

यदि कोई अपने मन और चित्त से कहे और दूसरों से भी कहलवाए

(कि यह अहंकार रहित है) परन्तु गुरु के बिना आपा (अहंकार) जाता नहीं है।

हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ।।

हरि प्रभु जी भक्तवत्सल हैं और सुखों को देने वाले हैं प्रभुजी जिस पर कृपा करते हैं वही अपने मन में भक्ति का बसाता है।

नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ।।८।।१।।१८।।

(तृतीय) नानकजी (कथन करते हैं कि) गुरु के सम्मुख रहने वाले जीवों को प्रभु आप ही शोभावान चित्तवृत्तियां देता है और उन्हें बढ़ाई भी देता है ।।८।।१।।१८।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

हउमै करम कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ।।
जे सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ।।१।।
मन रे गुरमुखि नामु धिआइ ।।
धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ।।१।।रहाउ।।
विणु सतिगुर परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ।।
सुपनै सुखु न पावई दुख महि सबै समाइ ।।२।।
जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिआ जाइ ।।
हरि का भाणा भगती मंनिआ से भगत पए दरि थाइ ।।३।।
गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ न जाइ ।।
जे सउ अंम्रितु नीरीऐ भी बिखु फलु लागै धाइ ।।४।।
से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ।।
सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ।।५।।
मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिम्रिति सासत्र सोधहु जाइ ।।
मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ।।६।।
हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ।।
गुरमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ।।७।।
नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ।।
गुरपरसादी पाईऐ करमि परापति होइ ।।८।।२।।१९।।

□

श्री गुरु अमरदास जी बता रहे हैं कि अज्ञानी और अहंकारी जीव यमों

की यातना सहता है और प्रभु की शरण में आने वाले ज्ञानवान जीव शोभा और सम्मान प्राप्त करते हैं।

□

हउमै करम कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ॥

जो अज्ञानी जीव अहंकार से पूर्ण कर्मों की कमाई करते हैं उन्हें यमों का डण्डा आकर लगता है।

जे सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥१॥

जो सदगुरु की सेवा करते हैं और हरि प्रभु से चित्तवृत्ति लगाते हैं वे (यम के दण्ड से) उबर (छूट) जाते हैं ॥१॥

मन रे गुरमुखि नामु धिआइ ॥

रे मन ! गुरु के सम्मुख होकर प्रभु नाम का ध्यान कर।

धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ॥१॥रहाउ॥

सृष्टि के कर्त्ता प्रभु ने प्रारम्भ से ही जिनके (मस्तक पर) लिख दिया है वे ही गुरु की शिक्षा मानकर नाम में समा जाते हैं ॥१॥रहाउ॥

विणु सतिगुर परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥

बिना सद्गुरु के विश्वास ही नहीं आता है, प्रभु नाम के प्रति प्रेम नहीं लगता।

सुपनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥२॥

(नाम के बिना जीव को) स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता और वह दुख में ही सोता है और दुख में ही समा जाता है (मर जाता है) ॥२॥

जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिआ जाइ ॥

ऐसे जीव को (जिसे नाम से प्यार नहीं है) हरि प्रभु के हरि नाम का उपदेश करे और बहुत इच्छा भी करे कि यह हरि नाम का स्मरण करे फिर भी उसके पूर्व जन्म के कर्मों को मिटाया नहीं जा सकता (उसके पूर्व जन्म के संस्कार उसे हरि नाम का स्मरण करने ही नहीं देते)।

हरि का भाणा भगती मंनिआ से भगत पए दरि थाइ ॥३॥

जिन भक्तों ने हरि की आज्ञा को माना है वे भक्त प्रभु के द्वार पर (ठहरने को) स्थान प्राप्त करते हैं ॥३॥

गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ न जाइ ॥

गुरुदेव अत्यन्त प्रेम से अपने शब्द उपदेश को दृढ़ कराते हैं परन्तु यह उपदेश प्रभु की कृपा के बिना गुरु से लिया नहीं जा सकता।

जे सउ अंम्रितु नीरीऐ भी बिखु फलु लागै धाइ ॥४॥

यदि सौ बार भी अमृत जल से सींचा जाय तब भी विषैले वृक्षों पर दौड़ कर (प्रभूत मात्रा में) विषैले फल ही लगते हैं। (इसी प्रकार अज्ञानी जीवों को सैकड़ों बार नाम अमृत का उपदेश दिया जाय फिर भी उनका मन विषय विकारादि के विषैले फलों की ओर ही आकृष्ट होता है)।

से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥

प्रभु के वे दास सच्चे और निर्मल हैं जिन्हें सद्गुरु के साथ प्यार है।

सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥५॥

(प्रभु के वे दास) अहंकार और विकारों के विषैलेपन का त्यागकर सद्गुरु की आज्ञा के अनुसार ही कर्मों की कमाई करते हैं ॥५॥

मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिम्रिति सासत्र सोधहु जाइ ॥

मन को हठ पूर्वक (वश में करके) चाहे कितने ही उपाय कर ले और (कितना ही) स्मृतियों और शास्त्रों का अध्ययन करता रहे (परन्तु गुरु की कृपा के बिना) विकारों से छुटकारा नहीं होता।

मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥६॥

साधु जनों की संगति में मिलकर जो सद्गुरु के शब्द उपदेशानुसार (सत्कर्मों की) कमाई करता है वह उबर जाता है ॥६॥

हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ॥

वह प्रभु हरि जिसके अन्त का कोई आर पार नहीं है उसका नाम सुखों का भंडार है।

गुरमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥७॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले वे ही जीव (प्रभु के दरबार में) शोभावान होते हैं जिनपर कर्त्ता प्रभु स्वयं कृपा करता है ॥७॥

नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ॥

नानक (गुरु अमरदास जी कहते हैं) सभी सुखों को देने वाला वह एक ही प्रभु है और कोई दूसरा नहीं है।

गुरपरसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥८॥२॥१९॥

(वह दाता प्रभु) गुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है और श्रेष्ठ भाग्य होने से गुरु की प्राप्ति होती है ॥८॥२॥१९॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥
हरिरसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥

निजघरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥१॥
मन रे गुर की कार कमाइ ॥
गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरिनाइ ॥१॥रहाउ॥
पंखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥
जेता ऊडहि दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि ॥
बिनु गुर महलु न जापई ना अंम्रित फल पाहि ॥२॥
गुरमुखि ब्रहमु हरीआवला साचै सहजि सुभाइ ॥
साखा तीनि निवारीआ एक सबदि लिव लाइ ॥
अंमृत फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ ॥३॥
मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिंना छाउ ॥
तिंना पासि न बैसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥
कटीअहि तै नित जालीअहि ओन्हा सबदु न नाउ ॥४॥
हुकमे करम कमावणे पइऐ किरति फिराउ ॥
हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥
हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥५॥
हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥
मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥
अंतरि सांति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥६॥
गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥
सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥
आए से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥७॥
सभ नदरी करम कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ॥
जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥
नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ ॥८॥३॥२०॥

□

गुरु अमरदास जी इस वाणी के माध्यम से गुरुमुख और मनमुख का अन्तर वृक्ष और उस पर बैठने वाले पक्षियों के रूपक द्वारा स्पष्ट कर रहे हैं। शरीर रूपी वृक्ष पर बसने वाले जोवात्मा रूपी गुरमुख पक्षी तो सत्यनाम रूपी मधुर फलों का आस्वादन करते हैं और मनमुख पक्षी विकारादि के विषैले फलों का भक्षण करते हैं।

□

पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥

शरीर रूपी वृक्ष पर सुशोभित होने वाला जीव रूपी पक्षी गुरु से प्रेम

करता है और सत्यनाम रूपी चुग्गा चुगता है।

हरिरसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥

(ऐसा पक्षी) हरिनाम के रस को पीता है, स्थिर अवस्था में रहता है इधर उधर उड़ता (भटकता) नहीं और आवागमन के चक्र में न आता है न जाता है।

निजघरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥१॥

वह अपने घर (स्वरूप) में (बसता) स्थिति प्राप्त करता है और हरि प्रभु के हरिनाम में समा जाता है ॥१॥

मन रे गुर की कार कमाइ ॥

हे मन ! तू गुरु के (सेवा) कार्यों की कमाई कर !

गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरिनाइ ॥१॥रहाउ॥

जब तू गुरु को आज्ञा में चलेगा तब दिन रात्रि हरि प्रभु के नाम रंग में रच जायेगा ॥१॥ रहाउ॥

पंखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥

अनेको शरीर रूपी सुहावने वृक्षों पर (ऐसे) जीव रूपी पक्षी भी हैं जो मन की अस्थिरता के कारण चारों दिशाओं में उड़-उड़ कर जाते हैं (भटकते फिरते हैं)।

जेता ऊडहि दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि ॥

जितना ज्यादा उड़ते (भटकते) हैं उतना ही अधिक दुख पाते हैं और दुख में जलने पर नित्यप्रति बिलखते हैं।

बिनु गुर महलु न जापई ना अंम्रित फल पाहि ॥२॥

गुरु के बिना उन्हें स्वस्वरूप की जानकारी नहीं होती और न ही वे आत्म ज्ञान के अमृत फल को प्राप्त करते हैं ॥२॥

गुरमुखि ब्रहमु हरीआवला साचै सहजि सुभाइ ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाला गुरुमुख सत्यस्वरूप प्रभु से प्रेम करने के कारण स्वाभाविक रूप से ही (शाश्वत) हरियाली से सम्पन्न ब्रह्म रूप (वृक्ष) हो जाता है।

साखा तीनि निवारीआ एक सबदि लिव लाइ ॥

(ऐसा गुरुमुख) एक शब्द ब्रह्म से प्रेम लगाकर शरीर रूपी वृक्ष की (रजो गुण, तमो गुण और सतोगुण) तीनों शाखाओं से निवृत्त (छूट) हो जाता है।

अंमृत फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ ॥३॥

एक मात्र हरि प्रभु का नाम ही अमृत फल है। प्रभु जिस पर कृपा करता है उसे आप ही यह फल खिला देता है ॥३॥

मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिंना छाउ ॥

मनमुख रूपी वृक्ष खड़ा खड़ा ही (प्रभु प्रेम की हरियाली के अभाव में) सूख गया है। न तो इसके पास ज्ञान रूपी फल होता है और न ही शान्ति रूपी छाया होती है।

तिंना पासि न बैसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥

उन मनमुख अज्ञानियों के पास बैठना नहीं चाहिए क्योंकि उनके पास न तो (स्वस्वरूप की पहचान रूपी) घर है और न ही (उनके पास सत्संगति का) ठिकाना है।

कटीअहि तै नित जालीअहि ओन्हा सबदु न नाउ ॥४॥

मनमुख रूपी वृक्ष नित्यप्रति काटे जाते हैं और जलाए जाते हैं (अर्थात् आवागमन के चक्र में पड़े जन्म लेते हैं और मरते हैं) क्योंकि उनके पास न गुरु का शब्द उपदेश होता है और न हरि प्रभु का नाम होता है ॥४॥

हुकमे करम कमावणे पइऐ किरति फिराउ ॥

प्रभु के हुकुम से ही जीव कर्म करते हैं और जैसे कर्मों की कमाई करते हैं वैसा ही (फल) पाते हैं और कर्मों के अनुसार ही (आवागमन के चक्र में) फिरते रहते हैं।

हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥

प्रभु के हुकुम से ही उसका दर्शन देखना होता है वह जहां (जिस योनि में) भेजता है वहीं जीव जाते हैं।

हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥५॥

प्रभु के हुकुम से ही दुखों को हरण करने वाला हरि मन में आकर बसता है और प्रभु के हुकुम से ही जीव सत्यस्वरूप प्रभु में समा जाता है ॥५॥

हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥

(लेकिन मनमुख) प्रभु के हुकुम को नहीं जानता और इसलिए बेचारा मूर्ख प्रभु को भूलकर अनेक योनियों में भटकता फिरता है।

मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥

वह हमेशा मन के हठ स पूण (जैसा मन कहता है) कर्मों की कमाई करता है और सदैव खराब होता है।

अंतरि सांति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥६॥

सत्यस्वरूप प्रभु के साथ प्यार न लगने के कारण उनके हृदय में शान्ति नहीं आती ॥६॥

गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥

गुरमुखों के मुख सुन्दर होते हैं क्योंकि (वे मुख) गुरु के प्रेम के लिए होते हैं (गरु से प्रेम करते हैं) ।

सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥

वे प्रभु के प्रति सच्ची भक्ति रखते हैं सत्य स्वरूप प्रभु में अनुरक्त रहने से सच्चे प्रभु के दरबार में सत्य (प्रमाणित) होते हैं ।

आए से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥७॥

ऐसे गुरुमुखों का ही इस संसार में आना कबूल (सार्थक) है और वे गुरुमुख (अपने साथ) अपनी सम्पूर्ण कुल का उद्धार कर लेते हैं ॥७॥

सभ नदरी करम कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ॥

सभी जीव प्रभु की कृपा दृष्टि से ही शुभ और अशुभ कर्मों की कमाई करते हैं । प्रभु की कृपा दृष्टि से बाहर कुछ भी नहीं है (कोई जीव कर्म नहीं कर सकता) ।

जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥

वह सत्यस्वरूप प्रभु जैसी कृपा दृष्टि करके किसी जीव को देखता है वैसा ही (बुरा या भला) कोई होता है ।

नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ ॥८॥३॥२०॥

(गुरु अमरदास) नानक जी (कहते हैं) प्रभु के नाम आराधन में बड़प्पन है, (नाम जपने वाले को अनेक बढ़ाईयाँ प्राप्त होती हैं) परन्तु यह बड़प्पन प्रभु की कृपा दृष्टि से ही प्राप्त होता है ॥८॥३॥२०॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ ॥
गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥
सहजे ही सुखु पाईऐ सहजें रहै समाइ ॥१॥
भाई रे दासनिदासा होइ ॥
गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोइ ॥१॥रहाउ॥
सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥
सदा पिरु निहचलु पाईऐ ना ओहु मरै न जाइ ॥
सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥२॥
हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥
पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥
गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥३॥
माइआ मोहु चुकाइआ गुरमती सहजि सुभाइ ॥

बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥
सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ ॥४॥
माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥
तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥
बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाइ ॥५॥
माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ ॥
दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ ॥
बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥६॥
बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ ॥
सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ
नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥७॥
बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण भगति न होइ ॥
भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥
नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ ॥८॥४॥२१॥

□

इस शब्द में पिछले शब्द के विचार को ही प्रौढ़ता दी गई है। गुरुमुख और मनमुख के अन्तर को स्पष्ट किया गया है।

□

गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीव प्रभु के नाम का ध्यान करते हैं और मन के पीछे चलने वाले मनमुख प्रभु नाम को समझ ही नहीं पाते।

गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥

गुरुमुख का मुख सदैव उज्जवल रहता है और उसके मन में हरि प्रभु आकर बसता है।

सहजे ही सुखु पाईऐ सहजे रहै समाइ ॥१॥

स्थिर अवस्था में रहकर वह आत्मिक सुखों को प्राप्त करता है और स्थिर अवस्था में ही वह निरन्तर प्रभु में समाया रहता है ॥१॥

भाई रे दासनिदासा होइ ॥

हे भाई! तू प्रभु के दासों का दास हो जा।

गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोइ ॥१॥रहाउ॥

यही गुरु की सेवा है और यही गुरु की भक्ति है। कोई बिरला हो इस (गुरु) भक्ति को प्राप्त करता है ॥१॥ रहाउ॥

सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥

(परन्तु) जो (जीव स्त्री) सद्गुरु से प्रेम रखकर चलती है वह सदैव सौभाग्यशाली होती है और (सदैव) शोभाशाली होती है।

सदा पिरु निहचलु पाईऐ ना ओहु मरै न जाइ ॥

वह सदैव स्थिर रहने वाले प्रभु प्रियतम को प्राप्त कर लेती है और वह प्रियतम न मरता है, न जाता है (न जन्मता है)।

सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥२॥

शब्द ब्रह्म में मिल जाने पर फिर वह बिछुड़ती नहीं है और (हमेशा के लिए) प्रियतम प्रभु की गोद में समा जाती है।

हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥

वह हरि प्रभु जो अत्यन्त पवित्र और अत्यन्त उज्जवल है गुरु के (उपदेश) बिना पाया नहीं जा सकता।

पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥

जो मनुष्य केवल धार्मिक ग्रन्थों का पठन पाठन करता है वह प्रभु को समझ नहीं सकता और (जो केवल) वाह्य वेशभूषा (और आडम्बरों) में विश्वास रखता है। वह भ्रम में भूला हुआ (भटका) है।

गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥३॥

गुरु की शिक्षा पर चलकर ही सदा स्थिर रहने वाले हरि प्रभु को पाया जाता है और जिह्वा को हरि नाम के रस के आस्वादन में लगाए रखने से उस प्रभु में समाया जाता है ॥३॥

माइआ मोहु चुकाइआ गुरमती सहजि सुभाइ ॥

गुरु की शिक्षा पर चलने वाला जीव अपने अन्दर से माया के मोह को समाप्त कर देता है और स्थिर अवस्था से प्रभु के प्रेम में लीन रहता है।

बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥

गुरु के शब्द उपदेश को प्राप्त किए बिना यह जगत दुखी हो कर भटकता फिरता है और मनमुख जीवों को माया ने खा (ग्रस) लिया है।

सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ ॥४॥

गुरु के शब्द उपदेश से ही प्रभु के नाम का ध्यान किया जाता है और गुरु के शब्द उपदेश से ही सत्यस्वरूप प्रभु में समाया जाता है ॥४॥

माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥

(यहां तक कि योगसाधना में सिद्धियां प्राप्त करने वाले) सिद्ध पुरुष भी माया में भूले (भटकते) फिरते हैं, उनका मन न समाधि में लगता है और न ही उनका प्रभु से उत्तम प्रेम है।

तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥

वह (माया) तीनों लोकों में व्याप्त है और अधिक से अधिक लोगों को अपने से लिपटा रही है।

बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाइ ॥५॥

गुरु की शरण में गए बिना न तो माया का आकर्षण जाता है और ना ही द्वैत बुद्धि जाती है और न ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है ॥५॥

माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ ॥

(यदि कोई प्रश्न करे कि) माया किसे कहते हैं और माया कौन से कर्मों (कामो) को कमाती (करती है।

दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ ॥

दुख और सुख में इस जीव का बन्धन (माया के कारण ही) है और (माया के प्रभाव से ही जीव) अहंकार युक्त कर्मों को कमाता (करता) है।

बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥६॥

गुरु के शब्द उपदेश के बिना (माया का) भ्रम नष्ट नहीं होता और न ही अन्तःकरण से अहंकार जाता है ॥६॥

बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ ॥

जब तक गुरु से प्रेम न हो तब तक गुरु की भक्ति नहीं होती (गुरु भक्ति न होने से गुरु का शब्द उपदेश प्राप्त नहीं होता) और गुरु के शब्द उपदेश के बिना जी को निज स्थान (स्वरूप) की प्राप्ति नहीं होती।

सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ ॥

गुरु के शब्द उपदेश से ही अहंकार को मारा जाता है और अहंकार के मरने पर ही माया का भ्रम जाता (दूर होता) है।

नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥

(और तब) सहज स्वाभाविक रूप से ही गुरु के सम्मुख रहने वाले (गुरु-मुख) को प्रभु नाम (के अमूल्य) पदार्थ की प्राप्ति होती है ॥७॥

बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण भगति न होइ ॥

गुरु के बिना श्रेष्ठ गुणों की पहचान नहीं होती और शुभ गुणों को अपनाए बिना प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती।

भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥

जिस जीव के मन में भक्त वत्सल हरि निवास करता है वह स्वाभाविक ही उस प्रभु से मिल जाता है (अभेद हो जाता है)।

नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ ॥८॥४॥२१॥

(गुरु अमरदास) नानक जी (कहते हैं) गुरु के शब्दोपदेश से ही हरि प्रभु

की सराहना की जा सकती है और गुरु की प्राप्ति प्रभु की कृपा दृष्टि द्वारा होती है ॥८॥४॥२१॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥
मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥
गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥१॥
मन रे नामु जपहु सुखु होइ ॥
गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥रहाउ॥
भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ ॥
गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि आइ ॥
घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ ॥२॥
नामा छीबा कबीरु जुोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥
ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥
सुरिनर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥३॥
दैत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाण ॥
सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥
एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥४॥
खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥
सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ॥
सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाए ॥५॥
पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥
लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाए ॥
जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलाए ॥६॥
सत संगति महि नामु हरि उपजै जा सतिगुरु मिलै सुभाए ॥
मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाए ॥
सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जि हरि सेती चितु लाए ॥७॥
सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता ॥
प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता ॥
नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ॥८॥५॥२२॥

□

श्री गुरु अमर दास जी इस वाणी के माध्यम से बता रहे हैं कि जीव किस कारण अपने स्वरूप को भूल गया है और किस प्रकार विस्मृत

होकर जन्म मरण के चक्र में भटक रहा है। गुरु का उपदेश अज्ञान अन्धकार को दूर कर स्वस्वरूप को पहचान कराने में सहायक होना है और जन्म मरण के भय से जीव को मुक्त करता है।

□

माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥

माया के प्रति मोह मेरे प्रभु ने स्वयं ही उत्पन्न किया है और प्रभु आप ही जीवों को माया के भ्रम में भुलाए रखता है ॥

मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥

मनमुख अज्ञानी (कामादिक विकारी) कर्मो को करते हैं, प्रभु को (अज्ञान के कारण) समझते नहीं हैं और मानव जन्म को व्यर्थ ही गँवा देते हैं।

गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥१॥

गुरु की उपदेश-बाणी इस संसार में अज्ञान के अन्धकार को दूर करने के लिए ज्ञान का प्रकाश है परन्तु प्रभु जिस पर कृपा दृष्टि करता है यह प्रकाश उस जीव के ही मन में आकर बसता है ॥१॥

मन रे नामु जपहु सुखु होइ ॥

हे मन प्रभु के नाम का जाप कर तभी तुझे सुख प्राप्त होगा।

गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥रहाउ॥

पूर्ण सद्गुरु की सराहना करो (पूर्ण सद्गुरु की सराहना करने से) वह प्रभु परमात्मा स्वाभाविक रूप से ही मिल जाता है ॥१॥रहाउ॥

भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ ॥

माया का भ्रम नष्ट हो जाता है और यम का भय दूर हो जाता है और चित्तवृत्ति हरि प्रभु के चरणों में लग जाती है।

गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि आइ ॥

गुरु के सम्मुख रहकर गुरु के शब्द उपदेशानुसार कमाई (कर्म) करने से हरि प्रभु मन में आकर बसता है।

घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ ॥२॥

अन्त:करण रूपी निज घर में ही सत्यस्वरूप (की पहचान कर उस) में समा जाने से मृत्यु के यमदूत खा नहीं सकते ॥२॥

नामा छीबा कबीरु जुोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥

नामदेव छींबा था और कबीर जुलाहा था पर पूर्ण सद्गुरु (की सराहना करने) से उन्होंने परमगति प्राप्त की।

ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥

गुरु के शब्द उपदेश को पहचान कर वे ब्रह्मवेत्ता (ब्रह्म को जानने वाले

बन गए और जाति का अहंकार उन्होंने (समूल) नष्ट कर दिया।

सुरिनर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥३॥

देवता और मानव सभी उनकी रची वाणी का गायन करते हैं और हे भाई! कोई भी उनकी कीर्त्ति को मिटा नहीं सकता ॥३॥

दत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥

(हिरण्यकश्यप) दैत्य का पुत्र (प्रह्लाद) किसी भी धर्मशास्त्रानुमोदित कर्म को नहीं करता था और ना ही यम नियमादि योग साधना के संयम अनुष्ठान में पड़ा हुआ था वह केवल एक परमात्मा के बिना और किसी द्वैत भाव को नहीं जानता था।

सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥

सद्गुरु (नारदमुनि) से मिलकर वह पवित्र (हृदय) हो गया और दिन रात्रि प्रभु के नाम का बखान करने लगा।

एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥४॥

वह एक प्रभु के नाम को ही (बार बार) पढ़ता था और एक प्रभु के नाम को ही जानता था, अन्य किसी दूसरे (के नाम) को नहीं जानता था ॥४॥

खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥

छः दर्शन शास्त्रों (सांख्य, योग, न्याय-वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, जैन और बौद्धदर्शन) के ज्ञाता योगी संन्यासी गुरु के बिना भ्रम में भूले हुए हैं।

सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ॥

ये योगी संन्यासी जब सद्गुरु की सेवा करेंगे और हरि प्रभु जी को मन में वसायेंगे तभी मोक्ष की सीमा को प्राप्त कर सकेंगे।

सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाए ॥५॥

जब गुरु की सत्य उपदेश वाणी से चित्तवृत्ति लगती है तो आना जाना (आवागमन का चक्र) रह जाता है (समाप्त हो जाता है) ॥५॥

पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥

पण्डित लोग धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ पढ़ कर व्यर्थ का वाद विवाद करते हैं परन्तु गुरु क (उपदेश के) बिना भ्रम में भूले हुए हैं।

लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाए ॥

चौरासी लाख योनियों के चक्र में वे पड़े रहते हैं और गुरु के शब्द उपदेश के बिना मुक्ति की प्राप्ति नहीं कर सकते।

जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलाए ॥६॥

जब प्रभु कृपा करके सद्गुरु से मिलन करा देता है और जब जीव प्रभु के नाम को स्मरण करता है तभी परमगति प्राप्त करता है ॥६॥

सत संगति महि नामु हरि उपजै जा सतिगुरु मिलै सुभाए ।।

सत्संगति में जाकर यदि सद्गुरु से मिलन हो जाय तो सहज स्वाभाविक ही हृदय में हरि नाम (के प्रति प्रेम) उत्पन्न होता है।

मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाए ।।

(गुरुदेव जी कथन करते हैं कि) मैं अपना मन और तन गुरु को अर्पण करता हूँ। आपा (अहंभाव) गँवा करसद् गुरु की इच्छानुसार चलता हूं।

सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जि हरि सेती चितु लाए ।।७।।

और अपने गुरु के सदैव बलिहार जाता हूं जिन्होंने अन्तर्मन की चित्त-वृत्तियों को हरि प्रभु के साथ लगा दिया है ।।७।।

सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता ।।

जो ब्रह्म को जानता है और हरि प्रभु के प्रेम रंग में रंगा हुआ है, वही ब्राह्मण है।

प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता ।।

प्रभु निकट ही निवास करता है और सभी जीवों के अन्तःकरण में (निवास करता) है ऐसा कोई बिरला ही गुरु द्वारा जाना जाता है।

नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ।।८।।५।।२२।।

(गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं कि) गुरु के शब्द उपदेश द्वारा जिसने प्रभु को पहचान लिया है उसे प्रभु के नाम के द्वारा (लोक परलोक में) बड़प्पन की प्राप्ति होती है ।।८।।५।।२२।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ।।
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाइ ।।
गुर भेटे सहजु पाइआ आपणी किरपा करे रजाइ ।।१।।
भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ।।
सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ।।१।।रहाउ।।
सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ।।
सहजै ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ।।
सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ।।२।।
सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ।।
सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइ ।।
सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरिरसु खाइ ।।३।।
सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ।।

सहजे हरिनामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ॥
से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ॥४॥
माइआ विचि सहजु न ऊपजै माइआ दूजै भाइ ॥
मनमुख करम कमावणे हउमै जलै जलाइ ॥
जंमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ॥५॥
त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥
पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ ॥
चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥६॥
निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइ ॥
गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोइ ॥
भुलिआ सहजि मिलाइसी सबदि मिलावा होइ ॥७॥
बिनु सहजै सभु अंधु है माइआ मोहु गुबारु ॥
सहजे ही सोझी पई सचै सबदि अपारि ॥
आपे बखसि मिलाइअनु पूरे गुर करतारि ॥८॥
सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु ॥
सभना जीआ का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥
पूरै सबदि सालाहीऐ जिसदा अंतु न पारावारु ॥९॥
गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥
अनदिनु लाहा हरिनामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥
नानक तोटि न आवई दीए देवणहारि ॥१०॥६॥२३॥

□

इस शब्द के माध्यम से श्री गुरु अमरदास जी सहजावस्था की प्राप्ति का वर्णन कर रहे हैं।

□

सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥

सारी सृष्टि स्थिर अवस्था की इच्छा करती है किन्तु यह स्थिर अवस्था गुरु की शरण में गए बिना प्राप्त नहीं की जा सकती।

पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाइ ॥

धर्म ग्रन्थों को पढ़ पढ़ कर पंडित (थक गए हैं), ज्योतिष शास्त्रों को पढ़ते पढ़ते ज्योतिषी थक गये हैं, बाह्य दिखावों में विश्वास रखने वाले ढ़ोंगी साधु वैसे ही भ्रम में भूले (भटकते) फिरते हैं।

गुर भेटे सहजु पाइआ आपणी किरपा करे रजाइ ॥१॥

प्रभु जब अपनी कृपा दृष्टि द्वारा हुकुम करते हैं तभी सद्गुरु से मिलन होता है और स्थिर अवस्था की प्राप्ति होती है ॥१॥

भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ॥

हे भाई ! गुरु के बिना स्थिर अवस्था की प्राप्ति नहीं होती ।

सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ॥१॥रहाउ॥

गुरु के शब्द उपदेश से ही स्थिर अवस्था उत्पन्न होती है और वह (स्थिर मन व बुद्धि की अवस्था से ही) सत्यस्वरूप हरि प्रभु प्राप्त होता है ॥१॥ रहाउ॥

सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ॥

स्थिर अवस्था से किया गया (प्रभु का यश) गायन ही (प्रभु की दृष्टि में) कबूल होता है । स्थिर अवस्था की प्राप्ति के बिना (प्रभु के सम्बन्ध मे) किए गए (केवल मौखिक) कथन व्यर्थ (का वाद विवाद हो) है ।

सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ॥

स्थिर अवस्था प्राप्त होने पर ही प्रभु के प्रति भक्ति उत्पन्न होती है, स्थिर अवस्था प्राप्त होने पर ही प्रभु के प्रति प्रीति होती है और प्रभु के प्रति प्रोति होने पर संसार के प्रति वैराग्य की भावना उत्पन्न होती है ।

सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ॥२॥

स्थिर अवस्था से ही सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है, स्थिर अवस्था प्राप्त किये बिना जीवन व्यर्थ है ॥२॥

सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ॥

स्थिर अवस्था में रहकर ही सदैव नित्य प्रभु को सराहना होतो है और स्थिर अवस्था को प्राप्त करके ही समाधि लगाई जाती है ।

सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइ ॥

स्थिर अवस्था से हो प्रभु के गुणों का उच्चारण होता है और चित्तवृत्ति लगा कर ही प्रभु की भक्ति होती है ।

सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरिरसु खाइ ॥३॥

गुरु के शब्द उपदेश से हो हरि प्रभु मन में बसता है और जिनके मन में हरि प्रभु का निवास होता है, उन्हीं की जिह्वा हरि नाम के रस को खाती है ॥३॥

सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ॥

(वे) स्थिर अवस्था से ही सत्यस्वरूप प्रभु की शरण प्राप्त करके महा-काल (मृत्यु) को दूर भगा देते हैं ।

सहजे हरिनामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ॥

स्थिर अवस्था से ही हरि का नाम मन में बसता है और जीव सत्य कर्मों की कमाई करता है ।

से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ॥४॥

वे जीव बड़े भाग्यशाली हैं जिन्होंने स्थिर अवस्था में रहकर प्रभु को प्राप्त कर लिया है और (सदा-सदा के लिये) उस प्रभु में समा कर रह गये हैं।

माइआ विचि सहजु न ऊपजै माइआ दूजै भाइ ॥

माया में लिप्त रहने से सहज अवस्था की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि माया से तो द्वैत भावना की उत्पत्ति होती है।

मनमख करम कमावणे हउमै जलै जलाइ ॥

(मन के पीछे लगने वाले) मनमुख द्वैत भावना से पूर्ण कर्मों की कमाई करते हैं, वे स्वयं भी अहंकार भाव में जलते रहते हैं और दूसरों को भी जलाते हैं।

जंमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ॥५॥

(मनमुख का) जन्म और मरण का चक्र चुकता (समाप्त) नहीं होता और वह फिर फिर (आवागमन के चक्र में) आता है और जाता है ॥५॥

त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥

(सत्व, रज और तम) तीन गुणों में लगा हुआ जीव स्थिर अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि ये तीन गुण जीव को अपने भ्रमों में भुलाए रखते हैं।

पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ ॥

धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने से उनका चिन्तन करने से और (अर्जितज्ञान) कथन (व्याख्यान) करने से क्या (लाभ) है जब कि जीव मूल रूप से (प्रभु से) बिछुड़ा हुआ हो।

चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥६॥

चौथे पद अर्थात् तुरीय अवस्था में मन के पहुंचने पर ही स्थिर (मन बुद्धि) अवस्था प्राप्त होती है परन्तु यह तुरीय पद (अलौकिक सुख की अवस्था) गुरु के सम्मुख रहने से (शरण में आने से) पल्ले में (दान में) प्राप्त होता है ॥६॥

निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइ ॥

तीनों गुणों से अतीत निर्गुण प्रभु का नाम सुखों का खजाना है, यह सूझ स्थिर आत्मिक अवस्था की प्राप्ति होने पर ही होती है।

गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोइ ॥

जिन गुणवान जीवों ने सत्य प्रभु की सराहना की है उनकी ही संसार में उत्तम शोभा है।

भुलिआ सहजि मिलाइसी सबदि मिलावा होइ ॥७॥

भूले भटके जीवों का यदि गुरु से मिलन हो जाय तो शब्द उपदेश द्वारा गुरु उन्हें सहज ही प्रभु से मिला देता है ॥७॥

बिनु सहजै सभ अंधु है माइआ मोहु गुबारु ॥

स्थिर आत्मिक अवस्था की प्राप्ति के बिना सारा ही संसार माया के मोह के गहन अंधेरे में अंधा (हुआ भटक रहा) है।

सहजे ही सोझी पई सचै सबदि अपारि ॥

स्थिर आत्मिक अवस्था द्वारा ही अपरंपर शब्द ब्रह्म की सूझ प्राप्त होती है।

आपे बखसि मिलाइअनु पूरे गुर करतारि ॥८॥

कर्त्ता प्रभु आप ही कृपा करके पूर्ण गुरु से मिलाता है ॥८॥

सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु ॥

स्थिर अवस्था से ही अदृश्य निर्भय ज्योतिस्वरूप निराकार प्रभु को पहचाना जाता है।

सभना जीआ का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥

समस्त जीवों का जो एक मात्र दाता है उस परम ज्योति से जीवों की ज्योति (आत्मा) को मिलाने वाला (मिलन का मार्ग बताने वाला) गुरु ही है।

पूरै सबदि सालाहीऐ जिसदा अंतु न पारावारु ॥९॥

उस पूर्ण गुरु के शब्द उपदेश से ही उस प्रभु की सराहना की जा सकती है जिस प्रभु के अन्त का कोई आर पार (सीमा) नहीं है।

गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥

ज्ञानियों के पास प्रभु का नाम ही धन (का भंडार) है और वे स्थिर बुद्धि से उस नाम धन से ही कार्य व्यापार करते हैं।

अनदिनु लाहा हरिनामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥

(ज्ञानी) दिन रात्रि हरिनाम (के व्यापार) से ही लाभ अर्जित करते हैं और हरि नाम के धन का भंडार सदैव भरा रहता है कभी कम होता ही नहीं।

नानक तोटि न आवई दीए देवणहारि ॥१०॥६॥२३॥

(गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं कि) ऐसे ज्ञानियों के नाम धन के भंडार में कभी कमी आती ही नहीं क्योंकि समस्त जगत को देने वाले दाता प्रभु ने स्वयं ही यह धन उन्हें दिया है ॥१०॥६॥२३॥

□

सिरीरागु महला ३ ॥

सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥
पूरै सबदि सभ सोझी होई हरिनामै रहै समाइ ॥१॥
मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥
निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥१॥रहाउ॥
हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ॥
गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ॥२॥
वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई ॥
आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ॥३॥
इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ॥
लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ ॥४॥
भगता मनि आनंदु है सचै सबदि रंगि राते ॥
अनदिनु गुणु गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते ॥५॥
गुरमुखि अंम्रित बाणी बोलहि सभु आतमरामु पछाणी ॥
एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥६॥
सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ॥
सदा रंगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥७॥
आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ ॥
आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥८॥७॥२४॥

□

श्री गुरु अमरदास जी महाराज इस शब्द के द्वारा हरिनाम की महिमा और सद्गुरु का महत्व प्रतिपादित कर रहे हैं और गुरु के द्वारा हरिनाम प्राप्ति की प्रेरणा दे रहे हैं।

□

सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥

सद्गुरु को मिलने से (आवागमन के) चक्र में नहीं पड़ते और (बार-बार) जन्म और मरण का दुख चला जाता (समाप्त हो जाता) है।

पूरै सबदि सभ सोझी होई हरिनामै रहै समाइ ॥१॥

पूर्ण सद्गुरु के शब्द उपदेश से सारी सूझ हो जाती है और जीव हरि-नाम में लीन हो कर रहता है ॥१॥

मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥

हे मेरे मन तू सद्गुरु से चित्तवृत्त को लगा।

निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥१॥रहाउ॥

प्रभु का नाम जो परम पवित्र है और सदैव नूतन है, स्वयं ही मन में आकर बस जाता है ।।१।। रहाउ।।

हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ।।

हे हरि प्रभु जी हमें अपनी शरण में रख लीजिये । आप जैसे भी हमें रखेंगे हम उसी अवस्था में रहेंगे ।

गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ।।२।।

गुरु के शब्द उपदेश के द्वारा जो जीते जी मरता है (आपा मारता है) गुरु की शरण में रहने वाला वही गुरमुख संसार सागर से तर जाता है ।।२।।

वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई ।।

बड़े भाग्य से ही गुरु के शब्द उपदेश से हरि नाम की प्राप्ति होती है और बुद्धि शोभनीय होती है ।

आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ।।३।।

कर्त्ता प्रभु आप ही उसके मन में निवास करता है और स्थिर आत्मिक अवस्था को प्राप्त कर वह प्रभु में लीन हो रहता है ।।३।।

इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ।।

एक ऐसे भी मन के पीछे लगने वाले मनमुख हैं जिन्हें गुरु का शब्द उपदेश भाता ही नहीं ऐसे जीवों को प्रभु अज्ञान के बन्धन में बांध कर आवागमन के चक्र में घुमाता ही रहता है ।

लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ ।।४।।

(मनमुख) चौरासी लाख योनियों में फिर-फिर आता है और अपना जन्म व्यर्थ गँवाता है ।।४।।

भगता मनि आनंदु है सचै सबदि रंगि राते ।।

प्रभु के उन भक्तों के मन सदा ही आनन्दित रहते हैं जो गुरु के शब्द उपदेश द्वारा सत्य प्रभु के प्रेम रंग में अनुरक्त रहते हैं ।

अनदिनु गुणु गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते ।।५।।

वे नित्य पवित्र प्रभु के गुणों का दिन रात गायन करते हैं, इसलिए स्वाभाविक ही नामी अर्थात् परमात्मा में समाहित हो जाते हैं ।।५।।

गुरमुखि अंम्रित बाणी बोलहि सभु आतमरामु पछाणी ।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले गुरुमुख सदा नाम अमृत (से पूर्ण) बाणी बोलते हैं और सभी जीवात्माओं में राम प्रभु (के निवास) को पहचानते हैं ।

एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ।।६।।

गुरुमुख शरीर से एक प्रभु की ही सेवा करते हैं मन में उस एक प्रभु की ही आराधना करते हैं और मुख से उस एक अकथनीय प्रभु की ही कहानियां कहते हैं ।।६।।

सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ।।

जब गुरु के सम्मुख रहकर जीव उस सत्यस्वरूप स्वामी की सेवा करता है तो वह सत्यस्वरूप प्रभु उसके मन में आकर निवास करता है ।

सदा रंगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ।।७।।

(ऐसे जीव) सदैव सत्यस्वरूप प्रभु के नाम रंग में ही रंगे रहते हैं और प्रभु आप उन पर अपनी कृपा दृष्टि करता है और उन्हें अपने साथ मिला लेता है ।।७।।

आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ ।।

इस जगत के समस्त कार्य (वह सर्वशक्तिमान प्रभु) आप ही करता और आप ही (प्राणियों से विभिन्न कर्मों को) करवाता है । माया की निद्रा में सोए पड़े किसी किसी जीव को तो प्रभु आप ही जगा देता है ।

आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ।।८।।७।।२४।।

(गुरु अमरदास) नानक जी (का कथन है कि) प्रभु आप ही गुरु के शब्द उपदेश से मेल मिलवा (मिलन करवा) कर अपने स्वरूप में समाहित कर लेता है ।।८।।७।।२४।।

□

सिरीरागु महला ३ ।।

सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ।।
मनि आनंदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर गंभीरु ।।
सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ।।१।।
मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ।।
सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु ।।१।।रहाउ।।
सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ।।
जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ।।
मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ।।२।।
सचु खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ।।
सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ।।
सभु आतमरामु पछाणिआ गुरमती निजघरि वासु ।।३।।
सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ।।

सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥
जिनी सचु विसारिआ से दखीए चले रोइ ॥४॥
सतिगुरु जिनी न सेविओ से कितु आए संसारि ॥
जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमहि वारो वार ॥५॥
एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥
सतिगुरि सचु दिड़ाइआ सदा सचि संजमि रहणा ॥
सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥६॥
लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई ॥
सतिगुरि सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥७॥
जो सचै लाए सें सचि लगे नित सची कार करंनि ॥
तिना निजघरि वासा पाइआ सचै महलि रहंनि ॥
नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचंनि ॥८॥१७॥८॥२५॥

□

श्री गुरु अमरदास जी महाराज इस शब्द के माध्यम से बता रहे हैं कि सद्गुरु की सेवा करने से मन एवं तन शुद्ध होता है और नित्य सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होती है।

□

सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥

सद्गुरु की सेवा करने से मन शुद्ध होता है और शरीर पवित्र होता है।

मनि आनंदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर गंभीरु ॥

(गुरु की कृपा द्वारा) गहन गंभीर परमात्मा की प्राप्ति होती है और मन को नित्य सुख से उत्पन्न आनन्द (आह्लाद) की प्राप्ति होती है।

सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥१॥

सत्यपुरुषों की संगति में बैठने से सत्यस्वरूप परमेश्वर में मन टिक जाता है ॥१॥

मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ॥

हे मन तुम निःशंक होकर सद्गुरु की सेवा करो।

सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु ॥१॥रहाउ॥

सद्गुरु की सेवा करने से हरि प्रभु मन में आकर बसता है और मन को मैल (पाप) का कीड़ा नहीं लगता (अथवा मन को मैल नहीं लगती और मन सूर्य की भांति निर्मल प्रकाशवान हो जाता है)।

सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥

सत्यगुरु के शब्द उपदेश से सत्य प्रभु का सत्यनाम आराधना करने से (लोक परलोक में) प्रतिष्ठा की उत्पत्ति होती है ।

जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥

जिन जीवात्माओं ने अहं (हउमै) को मार कर स्वस्वरूप को पहचान लिया है मैं उनके बलिहार जाता हूँ ।

मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥२॥

(मन की मानने वाले) मनमुख सत्यस्वरूप प्रभु को नहीं जानते इसलिए उन्हें ठहरने के लिए कहीं भी स्थान प्राप्त नहीं होता ॥२॥

सचु खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ॥

(परन्तु हरि के भक्तों का) सत्य प्रभु का नाम ही भोजन होता है (जिससे) उनका मन रूपी (पहरावा) वस्त्र सदैव पवित्र रहता है और (अन्त में) वे सत्यस्वरूप प्रभु के चरणों में ही जाकर निवास करते हैं ।

सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ॥

वे सदैव सच्चे प्रभु की ही सराहना करते हैं और सत्य शब्द ब्रह्म में ही स्थित रहते हैं ।

सभु आतमरामु पछाणिआ गुरमती निजघरि वासु ॥३॥

गुरु की शिक्षा के अनुसार वे समस्त आत्माओं में राम (की अवस्थिति) को ही पहचानते हैं इसलिए उनका निज स्वरूप में निवास होता है ॥३॥

सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ॥

(प्रभु के भक्त) शुद्ध दृष्टि से ही वस्तुओं को देखते हैं वे सदैव सत्य वचन बोलते हैं शुद्ध कर्मों में लिप्त उनका तन शुद्ध होता है और विकारादि से हीन उनका मन भी शुद्ध ही होता है ।

सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥

सत्यप्रभु की कथाएँ (सुनने सुनाने) सत्य प्रभु के ही उपदेश (सुनने सुनाने) के कारण संसार में उनकी सच्ची शोभा होती है ।

जिनी सचु विसारिआ से दखीए चले रोइ ॥४॥

जिन्होंने सत्य प्रभु को भुला दिया है वे दुख भोगते हुए (इस संसार से) रोते हुए चले जाते हैं ॥४॥

सतिगुरु जिनी न सेविओ से कितु आए संसारि ॥

जिन्होंने सद्गुरु की सेवा नहीं की वे जीव संसार में आए ही क्यों ?

जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥

यमदूत के द्वार पर उन्हें बांध कर मारा जाता है वे चीखते चिल्लाते हैं परन्तु उनकी पुकार कोई नहीं सुनता।

बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमहि वारो वार ॥५॥

उन्होंने अपना (मानव) जन्म व्यर्थ गँवा दिया है और वे बारम्बार जन्म लेते हैं और मरते हैं ॥५॥

एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥

इस संसार को (विकारों की अग्नि में) जलता हुआ देखकर विवेकशील जीव दौड़ कर सद्गुरु की शरण में आ गए हैं।

सतिगुरि सचु दिड़ाइआ सदा सचि संजमि रहणा ॥

(तब शरण में आए जिज्ञासुओं के हृदय में) सद्गुरु सत्य प्रभु का सत्य नाम दृढ़ करवाते हैं और उन्हें सदैव सत्य एवं संयमपूर्ण आचरण से रहने (का उपदेश देते हैं)।

सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥६॥

सद्गुरु ही सच्चा जहाज है उसके शब्द उपदेश से ही प्राणी संसार सागर से तरता है ॥६॥

लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥

चौरासी लाख योनियों में जीव फिरते रहते हैं परन्तु सद्गुरु के उपदेश के बिना मुक्ति नहीं होती।

पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई ॥

विविध धर्म ग्रन्थों को पढ़ पढ़ कर पंडित लोग और वाणी का संयम करके मौनी साधु थक गए हैं परन्तु द्वैत भाव में पड़कर इन्होंने अपनी प्रतिष्ठा खो दी है।

सतिगुरि सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥७॥

सद्गुरु के शब्द उपदेश ने तो यह सुनाया है कि सत्यस्वरूप परमेश्वर के बिना अन्य और कोई भी नहीं है।॥७॥

जो सचै लाए से सचि लगे नित सची कार करंनि ॥

जिन्हें सद्गुरु ने सत्यस्वरूप प्रभु की नाम भक्ति के साथ लगा दिया है वे ही सच्चे नाम के साथ लगे हुए हैं और नित्यप्रति प्रभु भक्ति की सच्ची कमाई करते हैं।

तिना निजघरि वासा पाइआ सचै महलि रहंनि ॥

उन जीवों ने निजस्वरूप में निवास प्राप्त किया है और वे सत्यस्वरूप प्रभु में समाए रहते हैं।

नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचंनि ॥८॥१७॥८॥२५॥

(गरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में अनुरक्त रहने के कारण प्रभु के भक्त नित्य सुखी रहते हैं।

॥८॥१७॥८॥२५॥

□

यहाँ श्री राग के अन्तर्गत श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रचित आठ अष्टपदियां समाप्त होती है।

□

सिरीरागु महला ५॥

जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥
लागू होए दुसमना साक भि भजि खले ॥
सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥
चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥१॥
साहिबु निताणिआ का ताणु ॥
आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥१॥रहाउ॥
जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥
दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥
सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥
चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ॥२॥
जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥
गृसति कुटंबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥
गउणु करे चहुकुंट का घड़ी न बैसणु सोइ ॥
चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइ ॥३॥
कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥
चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु ॥
पोथी गीत कवित किछु कदे न करांन धरिआ ॥
चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ॥४॥
सासत सिम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥
तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥
खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥
रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ ॥५॥
राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण विसथार ॥
बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥

रंग तमासे बहुबिधी चाइ लगि रहिआ ॥

चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ ॥६॥

बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निरमल रीति ॥

मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ॥

लसकर तरकसबंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥

चिति न आइओ पारब्रहमु ता खड़ि रसातलि दीत ॥७॥

काइआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥

मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ॥

सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न संक धरिआ ॥

चिति न आइओ पारब्रहमु जम कंकर वसि परिआ ॥८॥

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥

जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥

दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥

सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ ॥९॥१॥२६॥

□

श्री राग में पंचम गुरु श्री अर्जुन देव जी महाराज द्वारा रचित दो अष्टपदियां संकलित हैं। इस प्रथम अष्टपदी में श्री गुरुदेव जी प्रभु के नाम अराधना की अनन्य विशेषताओं का निरूपण करते हुए प्रभु के चरणों में अटूट विश्वास और आस्था की प्रेरणा दे रहे हैं।

□

जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥

जब कभी किसी मनुष्य के जीवन पर अत्यन्त कठोर मुश्किलें आ बनती हैं तब उसे सहारा देने वाला कोई नहीं होता।

लागू होए दुसमना साक भि भजि खले ॥

उसके सभी शत्रु उस पर लागू हो जाय (उसे घेर ले और उसे बचाने वाले सभी) सगे सम्बन्धी भी भाग खड़े हों।

सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥

उसे सहारा देने वाले सभी बन्धु बान्धव भाग जायं और उसे आश्रय देने वाली (धन व शरीर की) सभी शक्तियां समाप्त हो जाय।

चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥१॥

(ऐसी स्थित में यदि) उसके चित्त में परब्रह्म प्रभु की सच्ची स्मृति हो आती है तो कष्टों को गर्म हवा उसे लगती नहीं (छू भी नहीं सकती)।

साहिबु निताणिआ का ताणु ॥

वह प्रभु मालिक सभी निर्बलों का बल है।

आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥१॥रहाउ॥

वह नित्य स्थिर है, न आता (जन्मता) है और न जाता (मरता) है। गुरु शब्द उपदेश से ही उस सत्यस्वरूप प्रभु को जाना जाता है ॥१॥ रहाउ॥

जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥

यदि कोई मनुष्य अत्यन्त दुर्बल होता है शरीर ढ़कने को वस्त्र नहीं होता (नग्न फिरता है) पेट भरने को भोजन नहीं होता और भूख से पीड़ित होता है।

दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥

कहीं से एक दमड़ी भी उसके पल्ले में न डाली जाती हो (कोई एक दमड़ी भी देने वाला न हो) और ना ही कोई धैर्य देता हो (धीरज बंधाने वाला हो)।

सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥

न तो वह किसी दूसरे का स्वार्थ सिद्ध कर सकता हो और न उससे अपना ही कुछ काम हो सकता हो।

चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ॥२॥

(ऐसी अवस्था में यदि) उसे पारब्रह्मु प्रभु को स्मृति हो आती है तो उसका निश्चल राज्य हो जाता है (अर्थात् स्थायी राज्य की प्राप्ति हो जाती है) ॥२॥

जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥

जिस मनुष्य का मन अनेकानेक चिन्ताओं (से घिरा हो) और जिसके शरीर को (अनेकानेक) रोग व्याप्त हो।

गृसति कुटंबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥

गृहस्थी और कुटुम्ब (की उलझनों) में लिपटा हुआ कभी हर्षातिरेक और कभी शोक से (पीड़ित) हो।

गउणु करे चहु कुंट का घड़ी न बैसणु सोइ ॥

(गृहस्थी में फँसा) चारों दिशाओं मे (धनोपार्जन व अन्य प्रयोजनों से) भ्रमण करता रहे और एक घड़ी के लिए भो उसे (चैन से) बैठने को न मिले।

चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइ ॥३॥

(ऐसे में) यदि उसे पारब्रह्म प्रभु की स्मृति हो आती है तो उसका तन और मन शान्त हो जाता है।

कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ।।

जिस जीव को काम, क्रोध और मोह ने अपने वश में कर रखा है और जो अत्यन्त कँजूस है और (धन का) लोभ और (धन से ही) प्यार करता है।

चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु ।।

जिस मनुष्य ने ब्रह्म हत्या, गुरुपत्नी रमण, स्वर्ण चोरी और सुरापान आदि चार महापाप किये हों और अनेकों पाप करने के कारण असुरों द्वारा मारे जाने के योग्य हो गया हो ।

पोथी गीत कवित किछु कदे न करांन धरिआ ।।

धर्म की ओर से इतना उदासीन हो गया हो कि किसी धार्मिक पुस्तक के उपदेश, प्रभु यश से सम्बन्धित किसी गीत या कविता को कभी भी कानों में धारण न किया हो (श्रवण न किया हो) ।

चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ।।४।।

उस (ऐसे अधार्मिक और महापापी व्यक्ति) को यदि परब्रह्म प्रभु की स्मृति हो आये तो निमिष मात्र प्रभु का स्मरण करते ही वह (संसार सागर से) तर जाता है ।।४।।

सासत सिम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे ।।

छ: शास्त्र, सत्ताईस स्मृतियाँ, चार वेद यदि कोई विद्वान कण्ठस्थ करके मुख से उच्चारण करता है ।

तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ।।

कठोर तप करके महान् तपीश्वर हो जाता है और योगियों में श्रेष्ठ योगी हो जाता है और समस्त तीर्थों को यात्रा करता है।

खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ।।

मनुस्मृति अनुसार ब्राह्मण के छ: कर्म—अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह से भो दुगने छ: और स्नान, जप, हवन, देव-पूजन, तीर्थ यात्रा और तप आदि (द्वादश कर्म करता है) और प्रतिदिन स्नान करके पूजा करता है ।

रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ ।।५।।

इतना होने पर भी यदि उसके मन में परब्रह्म प्रभु का प्रेम नहीं लगा तो वह अवश्य ही नरक में जायेगा ।।५।।

राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार ।।

यदि किसी के पास राज्य हो, जागीर हो, प्रान्तों का शासन हो, विस्तृत रूप से (विभिन्न) रसों का उपभोग (करने के साधन) हो ।

बाग सुहावे सोहणें चलै हुकमु अफार ।।

यदि उसके पास सुहावने सुन्दर बगीचे हों और सर्वत्र उसका निर्विघ्न आदेश चलता हो ।

रंग तमासे बहुबिधी चाइ लगि रहिआ ।।

अनेक प्रकार के रंग तमाशे देखने में जो अत्यन्त चाव के साथ लगा रहता हो ।

चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ ।।६।।

(इस प्रकार के व्यक्ति को) यदि परब्रह्म प्रभु स्मरण नहीं आता तो उसे सर्प की योनि में गया (निश्चित समझो) ।।६।।

बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निरमल रीति ।।

यदि कोई बहुत बड़ा धनाढय हो, आचरणवान हो, शोभनीय हो और पवित्र मर्यादाओं (का पालन करने) वाला हो ।।

मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ।।

माता, पिता, पुत्र भाई और मित्रों के साथ प्रीति करने वाला हो ।।

लसकर तरकसबंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ।।

विशाल तरकश (तूणीर) बंद सेना जिसको बंदना करती हो और सारी दुनिया जिसके सामने जी हुजूरी करती हो ।।

चिति न आइओ पारब्रहमु ता खड़ि रसातलि दीत ।।७।।

(ऐसे मनुष्य को) यदि परब्रह्म प्रभु का स्मरण नहीं होता तो यमदूत उसे लाकर रसातल (नरक) में खड़ा कर देते हैं ।।७।।

काइआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु ।।

जिस मनुष्य की काया को कोई रोग नहीं है । न हीं उसमें कोई विकार (अंगभंग आदि) है, न ही कोई चिन्ता व शोक है ।

मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ।।

जिस मनुष्य को मृत्यु की याद ही नहीं आती और दिन रात जो (विषय वासनाओं के) भोग भोगने में लगा हुआ है ।

सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न संक धरिआ ।।

जिसने सभी को अपना बना लिया हो और मन में जरा भी शंका धारण न की हुई हो (कि मेरा कोई शत्रु है) ।

चिति न आइओ पारब्रहमु जम कंकर वसि परिआ ।।८।।

(ऐसे मनुष्य को) यदि परब्रह्म प्रभु स्मरण नहीं आता तो वह यमदूतों के वश में (अवश्य ही) पड़ता है ।।८।।

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥

जिस पर प्रभु कृपा दृष्टि करते हैं उसे साधुओं को संगति प्राप्त होती है।

जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥

ज्यों ज्यों इसे (साधु संगति को) बढ़ाया जाता है त्यों त्यों हरि प्रभु से प्रेम बढ़ता है।

दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥

दोनों लोकों (इहलोक और परलोक) का स्वामी वह प्रभु आप ही है (उसके बिना जीव के लिए) अन्य कोई दूसरा (आश्रय का) स्थान नहीं है।

सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ ॥६॥१॥२६॥

(श्री गुरु अर्जुनदेव) नानक जी (कथन करते हैं कि) सद्गुरु की प्रसन्नता होने पर ही प्रभु के सच्चे नाम को प्राप्ति होती है ॥६॥१॥२६॥

□

सिरीरागु महला ५ घरु ५ ॥

जानउ नही भावै कवन बाता ॥
मन खोजि मारगु ॥१॥रहाउ ॥
धिआनी धिआनु लावहि ॥
गिआनी गिआनु कमावहि ॥
प्रभु किनही जाता ॥१॥
भगउती रहत जुगता ॥
जोगी कहत मुकता ॥
तपसी तपहि राता ॥२॥
मोनी मोनि धारी ॥
सनिआसी ब्रहमचारी ॥
उदासी उदासि राता ॥३॥
भगति नवै परकारा ॥
पंडितु वेदु पुकारा ॥
गिरसती गिरसति धरमाता ॥४॥
इकसबदी बहुरूपि अवधूता ॥
कापड़ी कउते जागूता ॥
इकि तीरथि नाता ॥५॥
निरहार वरती आपरसा ॥

इकि लुकि न देवहि दरसा ॥
इकि मन ही गिआता ॥६॥
घाटि न किनही कहाइआ ॥
सभ कहते है पाइआ ॥
जिसु मेले सो भगता ॥७॥
सगल उकति उपावा ॥
तिआगी सरनि पावा ॥
नानकु गुरचरणि पराता ॥८॥२॥२७॥

□

श्री गुरु अर्जुनदेव जो महाराज इस अष्टपदी में बता रहे हैं कि संसार में विभिन्न साधना पद्धतियों के द्वारा परमात्मा को पाने का प्रयास किया जा रहा है, किन्तु अपने अनुभव से उन्होंने जाना है कि सदगुरु के चरण ही मुक्तिदाता है। इसलिए सद्गुरु की शरण ही प्रभु प्राप्ति का सुगम साधन है।

□

जानउ नही भावै कवन बाता ॥ मन खोजि मारगु ॥१॥रहाउ॥

मन प्रभु प्राप्ति के मार्ग को खोजता है। यह नहीं जानता कि प्रभु को कौन सी बात अच्छी लगती है ॥१॥ रहाउ॥

धिआनी धिआनु लावहि ॥ गिआनी गिआनु कमावहि ॥ प्रभु किनही जाता ॥१॥

योग शास्त्र के अनुयायी ध्यानी (योगी) प्रभु प्राप्ति के लिये ध्यान (योग) लगाते हैं। सांख्यवादी ज्ञानी ज्ञान सिद्धि करते हैं। परन्तु प्रभु को किसी विरले ने ही जाना है ॥१॥

भगउती रहत जुगता ॥ जोगी कहत मुकता ॥ तपसी तपहि राता ॥२॥

भगवती शक्ति के उपासक वाध्याचार की युक्तियों में लगे हैं। योगी स्वयं को अष्टांगयोग साधना द्वारा मुक्त करते हैं। तपस्वो तप में मस्त हैं ॥२॥

मोनि मोनि धारी ॥ सनिआसी ब्रहमचारी ॥ उदासी उदासि राता ॥३॥

मौनी महात्मा मौन धारण किये हुए हैं। सन्यासी ब्रह्मचर्य पालन में प्रभु प्राप्ति मानता है। उदासी संसार से उदासीन रहने में खुश हैं ॥३॥

भगति नवै परकारा ॥ पंडितु वेदु पुकारा ॥ गिरसती गिरसति धरमाता ॥४॥

भक्त भक्ति को नारद द्वारा प्रतिपादित श्रवण कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य एवं आत्मनिवेदन आदि नवधा) नौ प्रकार के

मानते हैं। पंडित पुकार-पुकार कर वेदों को ही मुक्ति का साधन मानते हैं। गृहस्थी लोग यज्ञ, दान, अतिथि सत्कार आदि को ही गृहस्थ का धर्म मानते हैं ॥४॥

इकसबदी बहुरूपि अवधूता ॥ कापड़ी कउते जागूता ॥ इकि तीरथि नाता ॥५॥

व्याकरण शब्द विवेचन में ही ज्ञान प्राप्ति मानते हैं। कई बहुरूपिया बन कर प्रभु को पाने का प्रयास कर रहे हैं। अवधूत नग्न रहकर विभूति रमा कर ही प्रभु को प्रसन्न कर रहे हैं। कापड़ी जोगिया वस्त्रों में मुक्ति मान रहे हैं। कूको भक्त कविता और गीत गा कर प्रभु को रिझा रहे हैं, कोई रात्रि जागरण में ही कल्याण मान रहे हैं। कोई तीर्थों के स्नान में ही मोक्ष खोज रहा है ॥५॥

निरहार वरती आपरसा ॥ इकि लूकि न देवहि दरसा ॥
इकि मन ही गिआता ॥६॥

कुछ निराहार (निर्जला) व्रतों को प्रभु प्राप्ति का साधन मानते हैं। कुछ निम्न जाति के लोगों का स्पर्श न करने (अस्पृश्यता) में ही कल्याण मानते हैं। कुछ लोग गुफाओं में छिप कर बैठने और किसी को भी दिखाई न देने में कल्याण सिद्धि समझते हैं। कुछ (चिन्तन) मनन को ही ज्ञान मानते हैं ॥६॥

घाटि न किनही कहाइआ ॥ सभ कहते है पाइआ ॥ जिसु मेले सो भगता ॥७॥

किसी ने भी स्वयं को दूसरे से कम (महत्वपूर्ण) नहीं कहलवाया है। सभी साधना मार्ग कहते हैं कि हमने प्रभु को पा लिया है । परन्तु असलियत यह है कि जिसे प्रभु कृपा करके अपने साथ मिला लेता है वही सच्चा भक्त है ॥७॥

सगल उकति उपावा ॥ तिआगी सरनि पावा ॥
नानकु गुरचरणि पराता ॥८॥२॥२७॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं कि) बताए गये इन सभी उपायों को त्यागकर मैंने सद्गुरु की शरण प्राप्त की है क्योंकि मैं सद्गुरु के चरणों को ही प्रभु की प्राप्ति का (सर्वोत्तम साधन) पहचानता (मानता) हूँ ॥८॥२॥२७॥

□

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥

जोगी अंदरि जोगिआ ॥ तूं भोगी अंदरि भोगीआ ॥

तेरा अंतु न पाइआ सुरगि मछि पइआलि जीउ ॥१॥
हउ वारी हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥१॥रहाउ॥
तुधु संसारु उपाइआ ॥ सिरे सिरि धंधे लाइआ ॥
वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥२॥
परगटि पाहारै जापदा ॥ सभु नावै नो परतापदा ॥
सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥३॥
सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥ जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ ॥
सुरिनर मुनिजन लोचदे सो सतिगुर दीआ बुझाइ जीउ ॥४॥
सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥ जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥
एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥५॥
इहु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ आपहु तुधु खुआइआ ॥
परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥६॥
दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥
मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणि विहाइ जीउ ॥७॥
सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥ पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥
नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥८॥
हुकमु जिना नो मनाइआ ॥ तिन अंतरि सबदु वसाइआ ॥
सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥९॥
जिना भाणे का रसु आइआ ॥ तिन विचहु भरमु चुकाइआ ॥
नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥१०॥
सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ ॥ जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥
दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥११॥
अंम्रितु तेरी बाणीआ ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥
सुख सेवा अंदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥१२॥
सतिगुरु मिलिआ जाणीऐ ॥ जितु मिलिऐ नामु वखाणीऐ ॥
सतिगुर बाझु त पाइओ सभ थकी करम कमाइ जीउ ॥१३॥
हउ सतिगुर विटहु घुमाइआ ॥ जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥
नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥१४॥
तूं सभना माहि समाइआ ॥ तिनि करतै आपु लुकाइआ ॥
नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥१५॥
आपे खसमि निवाजिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजिआ ॥
आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइ कर मसतकि धारि जीउ ॥१६॥
सभि संजम रहे सिआणपा ॥ मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥

प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥१७॥
मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥ प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥
कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥१८॥
मै मनि तनि प्रभू धिआइआ ॥ जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥
साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक जीवै नाउ जीउ ॥१९॥
तुधु आपे आपु उपाइआ ॥ दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥
सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥२०॥
गुर परसादी पाइआ ॥ तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥
किरपा करि कै आपणी आपे लए समाइ जीउ ॥२१॥
गोपी नै गोआलीआ ॥ तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥
हुकमी भांडे साजिआ तूं आपे भंनि सवारि जीउ ॥२२॥
जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥
निरमल जोति तिन प्राणीआ ओइ चले जनमु सवारि जीउ ॥२३॥
तेरीआ सदा सदा चंगिआईआ ॥ मै राति दिहै वडिआईआं ॥
अणमंगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥२४॥१॥

□

श्री गुरु नानक देव जी इस शब्द के माध्यम से प्रभु के अनन्त गुणों का बखान कर रहे हैं और जीव को नित्यप्रति उस प्रभु का गुणगान करने की प्रेरणा दे रहे हैं जो प्रभु प्रत्येक को प्रत्येक वस्तु बिना मांगे ही देता रहता है।

□

जोगी अंदरि जोगीआ । तूं भोगी अंदरि भोगीआ ॥

हे प्रभु योगियों में तुम स्वयं ही योगी रूप में व्याप्त हो और भोगीओं के अन्दर भोगी रूप में (तुम्हारी लीला कितनी विचित्र है)।

तेरा अंतु न पाइआ सुरगि मछि पइआलि जीउ ॥१॥

स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक और पाताल लोक के वासियों में से किसी ने भी तुम्हारा अन्त प्राप्त नहीं किया है ॥१॥

हउ वारी हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥१॥रहाउ॥

मैं बलिहारी हूँ, जीव भी मेरा बलिहारी है और मैं कुर्बान हूँ तेरे नाम पर ॥१॥ रहाउ॥

तुधु संसारु उपाइआ ॥ सिरे सिरि धंधे लाइआ ॥

हे प्रभु तुमने ही संसार उत्पन्न किया है और प्रत्येक जीव को (कर्मानुसार) धंधे में लगाया है।

वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥२॥

सारी कुदरत की रचना तुमने ही की है और सभी जीवों को पासे की गोट की तरह चला कर अपने रचित तमाशे को आप ही देख रहे हो ॥२॥

परगटि पाहारै जापदा ॥ सभु नावै नो परतापदा ॥

हे प्रभु ! संसार के विस्तृत फैलाव में आप प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। सभी जीव आप के नाम के प्रताप को स्वीकार (करते हुए इसे पाने की इच्छा करते) हैं।

सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥३॥

परन्तु आपका नाम सद्गुरु के बिना प्राप्त नहीं होता अतः सभी जीव माया के द्वारा मोहित होकर उसके जाल में फँसे रहते हैं ॥३॥

सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥ जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ ॥

मैं सद्गुरु पर बलिहार जाता हूँ जिसके मिलने से परमगति (मुक्ति) की प्राप्ति होती है।

सुरिनर मुनिजन लोचदे सो सतिगुर दीआ बुझाइ जीउ ॥४॥

जिस प्रभु को प्राप्त करने के लिये देवगण, मानव एवं मुनिजन लालायित रहते हैं वह प्रभु हृदय में ही है ऐसा सद्गुरु ने समझा दिया है ॥४॥

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥ जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥

सत्संगति की पहचान कैसे की जाय ? जहां एकमात्र प्रभु के नाम का ही बखान होता है। (वह सत्संगति है)।

एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥५॥

श्री गुरु नानक जी कहते हैं कि एक मात्र प्रभु के नाम का बखान करना ही उसके हुकुम को मानना है ऐसा मुझे मेरे सद्गुरु ने समझा दिया है ॥५॥

इहु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ आपहु तुधु खुआइआ ॥

यह सारा संसार भ्रम में भूला हुआ है। हे प्रभु ! आपने स्वयं ही इसे (भ्रम में) भुलवाया है।

परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥६॥

जिनके भाग्य में प्रभु का मिलन नहीं है उन्हें पति द्वारा त्यागी गई स्त्री (दोहागणी) की भांति (पति वियोग का) दुख लगा रहता है ॥६॥

दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥

पति द्वारा त्यागी गई स्त्रियों की क्या निशानी है ? पति द्वारा भुला दी

गई स्त्रियां चारो ओर आदरहीन होकर भटकती फिरती हैं।

मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणि विहाइ जीउ ॥७॥

उन स्त्रियों का वेश मलिन होता है (वे जीवात्माएँ मलिन होती हैं) और जीवन रूपी रात्रि दुख पूर्वक व्यतीत करती हैं ॥७॥

सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥ पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥

सुहागिन ने किस शुभ कर्म की कमाई की है ? पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर जो उनका भाग्य लिखा गया था उसका फल प्रभु का नाम उन्होंने प्राप्त किया है।

नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥८॥

प्रभु ने अपनी कृपा दृष्टि करके आप ही उन सौभाग्यवती जीवात्माओं को अपने साथ मिला लिया है ॥८॥

हुकमु जिना नो मनाइआ ॥ तिन अंतरि सबदु वसाइआ ॥

जिन जीवात्मा रूपी स्त्रियों से प्रभु ने अपना हुकुम मनवाया है। उनके अन्त:करण में गुरु का शब्द उपदेश बस जाता है।

सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥९॥

वही जीवात्मा रूपी सखियां सौभाग्यवती हैं जिनका अपने प्रियतम प्रभु के साथ प्रेम है ॥९॥

जिना भाणे का रसु आइआ ॥ तिन विचहु भरमु चुकाइआ ॥

जिन जीवात्माओं को प्रभु का हुकुम मानने में आनन्द प्राप्त हुआ हैं, उनके अन्तर से माया का भ्रम चुक (समाप्त हो) गया है।

नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥१०॥

श्री गुरु नानक देव जी (कथन करते हैं कि) ऐसा समझो कि सद्गुरु ही समस्त (जिज्ञासु) जीवों को प्रभु से मिला देते हैं ॥१०॥

सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ ॥ जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥

जिन जिज्ञासु जीवों ने सद्गुरु से मिलकर (ज्ञान) फल की प्राप्ति की है। (और) जिनके अन्तर से अहंकार समाप्त हो गया है।

दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥११॥

उनके दुर्बुद्धि से उत्पन्न होने वाले सभी दुख कट जाते हैं और उनके मस्तक पर सौभाग्य आकर बैठ जाता है ॥११॥

अंम्रितु तेरी बाणीआ ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारी वाणी मृत्यु भय से रहित करने वाली है। (और यह

वाणी) तुम्हारे भक्तों के हृदय में ही समाती है।

सुख सेवा अंदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥१२॥

हे प्रभु ! आपने (आत्मा का सच्चा) सुख गुरु की सेवा के अन्दर ही रखा है (और गुरु की सेवा वही करता है जिस पर) आप अपनी कृपा दृष्टि करते हो और उसी जीव का आप (इस संसार सागर से) उद्धार भी करते हो ॥१२॥

सतिगुरु मिलिआ जाणीऐ ॥ जितु मिलिऐ नामु वखाणीऐ ॥

सद्गुरु से मिलन सार्थक समझो। जिस सद्गुरु से मिलते ही मन प्रभु के नाम का बखान करने लग जाय।

सतिगुर बाझु त पाइओ सभ थकी करम कमाइ जीउ ॥१३॥

सद्गुरु के बिना प्रभु को प्राप्त नहीं किया जा सकता। सारी सृष्टि अनेक प्रकार के कर्म करते-करते थक गई है ॥१३॥

हउ सतिगुर विटहु घुमाइआ ॥ जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥

मैं पूर्ण सद्गुरु पर से न्यौछावर होता हूं। जिन्होंने मेरे भ्रम में भूले हुए को ठीक मार्ग प्राप्त करवा दिया है (मार्ग पर लगा दिया है)।

नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥१४॥

जिस जिज्ञासु जीव पर प्रभु अपनी कृपा दृष्टि करते हैं उसे आप ही अपने साथ अभेद कर लेते हैं ॥१४॥

तूं सभना माहि समाइआ ॥ तिनि करतै आपु लुकाइआ ॥

हे प्रभु ! तुम सभी जीवों में समाए हुए हो। हे सृष्टि के कर्त्ता प्रभु ! तुमने स्वयं को इनमें छुपाया हुआ है।

नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥१५॥

नानक जी (कथन करते हैं) गुरु के सम्मुख रहनेवाले उन्हीं जीवों के हृदय में परमात्मा प्रकट होता है जिनमें हे कर्त्ता प्रभु ! तुमने स्वयं ज्ञान की ज्योति प्रतिष्ठित की है ॥१५॥

आपे खसमि निवाजिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजिआ ॥

उस मालिक प्रभु ने आप ही जीवों को बड़प्पन दिया है। आप ही उन्हें जीवन देकर शरीर की रचना की है।

आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइ कर मसतकि धारि जीउ ॥१६॥

हे दयालु प्रभु ! तुम अपने दोनों हाथ अपने सेवकों के माथे पर धर कर उनकी लाज रखते हो ॥१६॥

सभि संजम रहे सिआणपा ॥ मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥

मैं इन्द्रिय निगम आदि सभी संयम विधियां और समस्त बुद्धि कौशल द्वारा किए गए साधनों से रह गया हूं। मेरा कृपालु प्रभु सब कुछ जानता है (कि मुझ में कितने अवगुण हैं)।

प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥१७॥

परन्तु हे प्रभु ! आपने मेरा प्रताप प्रकट करके संसार में फैला दिया है जिससे सारा संसार मेरी जय जय कार कर रहा है ॥१७॥

मेरे गुण अवगन न वीचारिआ ॥ प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥

हे प्रभु ! आपने मेरे गुण और अवगुणों का विचार नहीं किया है, आपने अपने ही बड़प्पन का पालन किया है।

कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥१८॥

आपने मुझे अपने कंठ के साथ लगा कर रख लिया है जिससे कि दुखों (की गर्म हवा) का मुझे स्पर्श भी नहीं लग सकता ॥१८॥

मै मनि तनि प्रभू धिआइआ ॥ जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥

प्रभु ! मैंने मन और तन से आपकी आराधना की है। इससे मन इच्छित फलों को मैंने प्राप्त किया है।

साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक जीवै नाउ जीउ ॥१९॥

हे प्रभु ! तुम राजा महाराजाओं के भी शिरोमणि (बादशाह) हो, (और तुम इस सभी के) स्वामी हो। श्री नानकदेव जी (कथन करते हैं कि) मैं ऐसे प्रभु का नाम जप कर ही जीता हूं ॥१९॥

तुधु आपे आपु उपाइआ ॥ दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥

हे प्रभु ! तुमने अपने आप (स्वतन्त्र रूप से ही) इस सृष्टि की उत्पत्ति की है। अपने से भिन्न एक दूसरा ही खेल करके दिखा दिया है।

सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥२०॥

वास्तव में वह एक मात्र सत्य ही सर्वत्र व्याप्त है। ऐसा ज्ञान हे प्रभु ! जिसे तुम चाहते हो उसे समझा देते हो ॥२०॥

गुर परसादी पाइआ ॥ तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥

गुरु की कृपा से जिसने प्रभु का नाम प्राप्त कर लिया है उसके हृदय से माया का मोह चुक (समाप्त) हो जाता है।

किरपा करि कै आपणी आपे लए समाइ जीउ ॥२१॥

(ऐसे जीव को) प्रभु कृपा करके आप ही अपने में समाहित कर लेता है ॥२१॥

गोपी नै गोआलीआ ॥ तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥

हे प्रभु ! तुम स्वयं ही गोपी हो स्वयं ही यमुना नदी हो और स्वयं ही ग्वाला कृष्ण हो। तुमने स्वयं ही इस पृथ्वी का बोझ उठा रखा है।

हुकमी भांडे साजिआ तूं आपे भंनि सवारि जीउ ॥२२॥

हे प्रभु ! तुमने अपनी इच्छा से ही जीवों की रचना की है (अपनी इच्छा से ही) इनका संहार करते हो और (अपनी इच्छा से ही इन्हें) संवारते (पालन करते) हो ॥२२॥

जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥

जिन्होंने सद्गुरु से चित्तवृत्ति लगा ली है। उनका द्वैत भाव चुक (समाप्त) हो जाता है।

निरमल जोति तिन प्राणीआ ओइ चले जनमु सवारि जीउ ॥२३॥

(द्वैतभाव हीन) उन जीवों को निर्मल ज्योति प्रभु की प्राप्ति होती है और वे अपना जन्म सार्थक करके संसार से चले जाते हैं ॥२३॥

तेरीआ सदा सदा चंगिआइआ ॥ मै राति दिहै वडिआइआ ॥

हे प्रभु तुम सदैव सर्वदा हमारे साथ भलाइ ही करते हो। मैं रात दिन तुम्हारी बढ़ाइ करता रहूं (यही मुझ पर कृपा करो)।

अणमंगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥२४॥१॥

श्री गुरु नानक जी कहते हैं, हे प्रभु ! तुम सब को बिना मांगे हो (सर्व सुखों का) दान देते रहते हो (मझे भी दान दो कि मैं हर पल) तुम्हारे सत्यस्वरूप का स्मरण करता रहूँ ॥२४॥१॥

□

सिरीरागु महला ५॥

पै पाइ मनाई सोइ जीउ ॥

सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ जीउ ॥१॥रहाउ॥

गोसाई मिहंडा इठड़ा ॥ अंम अबे थावहु मिठड़ा ॥

भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ॥१॥

तेरै हुकमे सावणु आइआ ॥ मै सत का हलु जोआइआ ॥

नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ॥२॥

हउ गुर मिलि इकु पछाणदा ॥ दुया कागलु चिति न जाणदा ॥

हरि इकतै कारै लाइओनु जिउ भावै तिवै निबाहि जीउ ॥३॥

तुसी भोगिहु भुंचहु भाईहो ॥ गुरि दीबाणि कवाइ पैनाईओ ॥

हउ होआ माहरु पिंड दा बंनि आदे पंजि सरीक जीउ ॥४॥

हउ आइआ साम्है तिहंडीआ ॥ पंजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥

कंनु कोई कढि न हंघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ।।५।।
हउ वारी घुंमा जावदा ।। इकसाहा तुधु धिआइदा ।।
उजड़ु थेहु वसाइओ हउ तुध विटहु कुरबाणु जीउ ।।६।।
हरि इठै नित धिआइदा ।। मनि चिंदी सो फलु पाइदा ।।
सभे काजि सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ।।७।।
मै छडिआ सभो धंधड़ा ।। गोसाई सेवी सचड़ा ।।
नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ।।८।।
मै सुखी हूं सुखु पाइआ ।। गुरि अंतरि सबदु वसाइआ ।।
सतिगुरि पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ।।९।।
मै बधी सचु धरमसाल है ।। गुरसिखा लहदा भालि कै ।।
पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ।।१०।।
सुणि गला गुर पहि आइआ ।। नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ ।।
सभु मुकतु होआ सैसारड़ा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ।।११।।
सभ स्रिसटि सेवे दिनु राति जीउ ।। दे कंनु सुणहु अरदासि जीउ ।।
ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छडाइ जीउ ।।१२।।
हुणि हुकमु होआ मिहरवाणदा ।। पै कोइ न किसै रञाणदा ।।
सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ।।१३।।
झिमि झिमि अंम्रितु वरसदा ।। बोलाइआ बोली खसम दा ।।
बहु माणु कीआ तुधु उपरे तूं आपे पाइहि थाइ जीउ ।।१४।।
तेरिआ भगता भुख सद तेरीआ ।। हरि लोचा पूरन मेरीआ ।।
देहु दरसु सुखदातिआ मै गलि विचि लैहु मिलाइ जीउ ।।१५।।
तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ।। तूं दीप लोअ पइआलिआ ।।
तूं थानि थनंतरि रवि रहिआ नानक भगता सचु अधारु जीउ ।।१६।।
हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा ।। मै गुर मिलि उचदुमालड़ा ।।
सभ होई छिंझ इकठीआ दयु बैठा वेखै आपि जीउ ।।१७।।
वात वजनि टंमक भेरीआ ।। मल लथे लैदे फेरिआ ।।
निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ।।१८।।
सभ इकठे होइ आइआ ।। घरि जासनि वाट वटाइआ ।।
गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ ।।१९।।
तूं वरना चिहना बाहरा ।। हरि दिसहि हाजरु जाहरा ।।
सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत रते गुणतासु जीउ ।।२०।।

मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ।। गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ।।
हउ बाहुड़ि छिंझ न नचऊ नानक अउसरु लधा भालि जीउ

।।२१।।२।।२६।।

□

श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज इस शब्द में परम कृपालु प्रभु के अनन्त गुणों का वर्णन कर रहे हैं और उस तत्ववेत्ता सद्गुरु की वन्दना कर रहे हैं जिसकी अपार कृपा से वे माया के बंधनों से मुक्त हो गये हैं।

□

पै पाइ मनाई सोइ जीउ ।।
सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ जीउ ।।१।।रहाउ।।

मैं पैर पड़ कर अपने सद्गुरु को मनाता हूँ। सद्गुरु ने ही परम पुरुष परमात्मा से मुझे मिलाया है इसलिए सद्गुरु जितना महान् और कोई नहीं है ।।१।। रहाउ।।

गोसाई मिहंडा इठड़ा ।। अंम अबे थावहु मिठड़ा ।।

पृथ्वी के स्वामी हे प्रभु ! तुम मेरे परम प्रिय हो। तुम मुझे अम्मा (माँ) और अब्बा (पिता) से भी अधिक प्रिय हो।

भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ।।१।।

बहन, भाई, मित्र (आदि मेरे) सभी हैं परन्तु तुम्हारे जैसा कोई नहीं है ।।१।।

तेरै हुकमे सावण आइआ ।। मै सत का हलु जोआइआ ।।

हे प्रभु ! तुम्हारे हुक्म से ही (गुरु से मिलन हुआ है और मेरे जीवन में खुशियों से भरा) सावन का महीना आया है। मैंने सत्कर्मों का हल जोत दिया है।

नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ।।२।।

हे प्रभु ! मैं यह आशा लगाकर नाम को बीजने लगा हूँ कि हे हरि ! तुम कृपा करोगे और मेरा नामरूपी अन्न का समूह खूब सारा जमा हो जायेगा ।।२।।

हउ गुर मिलि इकु पछाणदा ।। दुया कागलु चिति न जाणदा ।।

हे प्रभु ! मैंने गुरु से मिलकर केवल एकमात्र तुमसे ही पहचान की है। अन्य किसी दूसरे (द्वैतभाव को) तो (अपने मन रूपी) कागज पर चित्रित करना जानता ही नहीं।

हरि इकतै कारै लाइओनु जिउ भावै तिवै निबाहि जीउ ।।३।।

हे हरि ! आपने मुझे एक ही (भक्ति) कार्य में लगाया है। अब आपको जैसे उचित लगता हो उसी प्रकार मुझ से निर्वाह कीजिये ।।३।।

तुसी भोगिहु भुंचहु भाईहो ॥ गुरि दीबाणि कवाइ पैनाईओ ॥

हे भाईयो ! अब आप भी (गुरु की शरण में आकर) प्रभु नाम के सुख का उपभोग करो और भोग कराओ। मुझे तो प्रभु ने अपने दरबार में भक्ति का आदर सूचक वस्त्र (सिरोपा) पहना दिया है।

हउ होआ माहरु पिंड दा बंनि आदे पंजि सरीक जीउ ॥४॥

मैं अब अपने मन रूपी गांव का चौधरी बन गया हूँ और मैंने अपने काम, क्रोध आदि पांचों शत्रुओं को लाकर बांध दिया है ॥४॥

हउ आइआ साम्है तिहंडीआ ॥ पंजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥

हे प्रभु ! मैं जैसे ही आपके निकट (शरण में) आया, पाँचों किसान (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकार) मेरे अधीन काम करने वाले (मुजेरे) बन गये हैं।

कंनु कोई कढि न हंघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ॥५॥

अब कोई भी विकार कान के पीछे से सिर निकाल कर (मेरे बराबर) खड़ा नहीं हो सकता (अर्थात् सभी विकारों पर काबू पा लिया गया है) (श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं कि) मेरा हृदय रूपी सूना ग्राम अब शुभ गुणों से आबाद हो गया है ॥५॥

हउ वारी घुंमा जावदा ॥ इकसाहा तुधु धिआइदा ॥

हे प्रभु ! मैं आप पर बलिहार जाता हूं, न्यौछावर होता हूँ। मैं एक सांस से (श्वास प्रश्वास लगातार) तुम्हारा ही ध्यान करता हूँ।

उजड़ु थेहु वसाइओ हउ तुध विटहु कुरबाणु जीउ ॥६॥

मेरे उजड़े हुए हृदय रूपी ग्राम को आपने बसा दिया है, मैं आप पर से अपना जीव कुर्बान करता हूँ।

हरि इठै नित धिआइदा ॥ मनि चिंदी सो फलु पाइदा ॥

प्रिय हरि प्रभु को नित्य प्रति ध्यान करने से जैसी मन की इच्छा हो वैसे ही फल प्राप्त किये जाते हैं।

सभे काजि सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ॥७॥

हरि प्रभु जी का ध्यान करने से सभी कार्य सँवर जाते हैं और मन की तृष्णाओं की भूख दूर हो जाती है ॥७॥

मै छडिआ सभो धंधड़ा ॥ गोसाई सेवी सचड़ा ॥

(इसीलिए) मैंने संसार के सभी धंधों को छोड़ दिया है और उस (एक मात्र) पृथ्वी के सच्चे मालिक की सेवा करता हूँ।

नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ॥८॥

हरि का नाम नव निधियों का खजाना है, मैंने इस खजाने को ही कस कर अपने हृदय रूपी पल्ले में बांध लिया है ।।८।।

मै सुखी हूं सुखु पाइआ ।। गुरि अंतरि सबदु वसाइआ ।।

मैंने सुखों में सर्वश्रेष्ठ (उत्तम) सुख (आत्म सुख) प्राप्त कर लिया है । मैंने अन्तःकरण में गुरु के शब्द उपदेश को बसा लिया है ।

सतिगुरि पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ।।९।।

सद्गुरु ने मेरे मस्तक पर कृपा पूर्वक हाथ रख कर मुझे परम पुरुष (ब्रह्म) दिखा दिया है (साक्षात्कार करा दिया है) ।।९।।

मै बधी सचु धरमसाल है ।। गुरसिखा लहदा भालि कै ।।

मैंने अपने हृदय रूपी शाला (गृह) को सत्य और धर्म से बांध लिया है । मैंने गुरु को खोज लिया है (और गुरु को खोज कर अब उससे) शिक्षा लेता हूँ ।

पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ।।१०।।

मैं अपने सद्गुरु के पैर धोता हूँ, उसे पंखा करता हूँ और पूर्ण मन (जीउ) से झुक-झुक कर उसके पैर लगता हूँ (चरणों का स्पर्श करता हूँ) ।।१०।।

सुणि गला गुर पहि आइआ ।। नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ ।।

सभु मुकतु होआ सैसारड़ा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ।।११।।

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) सद्गुरु सत्यस्वरूप प्रभु के नाम रूपी नौका पर चढ़ाता है (और इस नौका पर सवार होकर) सारा संसार (भवसागर के बन्धनों से) मुक्त हो जाता है, ऐसी बातें सुनकर मैं गुरु के पास आया हूँ । गुरु ने प्रभु का नाम सुमिरन (जरूरत मंद को) दान और प्रतिदिन प्रातः स्नान करने का दृढ़ निश्चय कराया है ।

सभु स्रिसटि सेवे दिनु राति जीउ ।। दे कंनु सुणहु अरदासि जीउ ।।

हे प्रभु ! सारी सृष्टि दिन रात आपकी ही सेवा करती है । हे प्रभु जी ! मेरी प्रार्थना आप कान देकर (ध्यान से) सुनो ।

ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छुडाइ जीउ ।।१२।।

हे प्रभु ! जी मैंने सब को ठोक बजा कर (अच्छी तरह परख कर) देख लिया है । आपने ही प्रसन्न होकर जीवों को (माया के बन्धनों से) छुड़ा लिया है (अन्य कोई नहीं छुड़ा सकता) ।।१२।।

हुणि हुकमु होआ मिहरवाणदा ।। पै कोइ न किसै रञाणदा ।।

हे मेहरबान प्रभु ! (जिन जीवों पर आप प्रसन्न हो जाते हैं) आपके हुकुम अनुसार अब कोई भी (कामादिक) विकार प्रबल होकर उन्हें किसी प्रकार का दुख नहीं दे सकता ।

सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥१३॥

(उन सभी के) अन्तःकरण में विनम्रता (शान्ति) का राज्य स्थापित हो गया है, जहाँ उनके सभी सद्गुण अत्यन्त सुखपूर्वक निवास करते हैं। (और ये जीव आत्मिक सुखों का आनन्द लाभ कर रहे हैं) ॥१३॥

झिमि झिमि अंम्रितु वरसदा ॥ बोलाइआ बोली खसम दा ॥

हे प्रभु ! (जिन जीवों पर आपकी कृपा हो गई है) उनके अन्तःकरण में आपके नाम अमृत की मूसलाधार वर्षा हो रही है। हे मेरे मालिक ! आपकी प्रशंसा के ये बोल आपके द्वारा बुलवाये जाने पर हो बोल रहा हूँ।

बहु माणु कीआ तुधु उपरे तूं आपे पाइहि थाइ जीउ ॥१४॥

हे प्रभु जी ! मैं तुम पर बहुत मान करता हूँ (मुझे पूरा निश्चय है कि) तुम आप ही (मुझे अपने चरणों में) स्थान प्राप्त करवा दोगे (मुझे स्वीकार करोगे) ॥१४॥

तेरिआ भगता भुख सद तेरीआ ॥ हरि लोचा पूरन मेरीआ ॥

हे प्रभु ! तुम्हारे भक्तों को सदैव तुम्हारे दर्शनों की भूख रहती है। ह हरि ! मेरी भी यही चाह है (मेरी इस इच्छा को) पूरा करो।

देहु दरसु सुखदातिआ मै गलि विचि लैहु मिलाइ जीउ ॥१५॥

हे सुखों के दाता प्रभु जी ! मुझे अपने दर्शन दो और मुझे अपने गले में (आलिंगन में) लेकर अपने साथ मिला लो ॥१५॥

तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ॥ तूं दीप लोअ पइआलिआ ॥

हे प्रभु ! मैंने खूब खोज कर देख लिया है, तुम्हारे जैसा महान और कोई दूसरा नहीं है। सात द्वीप, चौदह लोक और सात पातालों में तुम ही व्याप्त हो।

तूं थानि थनंतरि रवि रहिआ नानक भगता सचु अधारु जीउ ॥१६॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी का कथन है, हे प्रभु ! तुम ही समस्त देश देशान्तरों में व्याप्त हो रहे हो, भक्तों को तुम्हारा ही सहारा है ॥१६॥

हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा ॥ मै गुर मिलि उचदुमालड़ा ॥

मैं अपने मालिक प्रभु का साधारण-सा पहलवान हूँ, परन्तु गुरु से मिलकर (गुरु की कृपा से) मैंने (जीवन रूपी अखाड़े में विकारों से कुश्ती लड़कर उन्हें परास्त करके) ऊँचा दुमाला (सम्मान सूचक पगड़ी) बांधा है।

सभ होई छिंझ इकठीआ दयु बैठा वेखै आपि जीउ ॥१७॥

संसार रूपी अखाड़े में सभी जोव एकत्रित हैं और प्रभु आप (इस अखाड़े में) बैठकर (सब को) देखता है ।।१७।।

वात वजनि टंमक भेरीआ ।। मल लथे लैदे फेरीआ ।।

लोगों के मुख से निकली बातों (की आवाज) के अखाड़े में बाजे और नगाड़े बजते हैं। पहलवान अखाड़े में उतर आते हैं और (कुश्ती लड़ने के लिए अखाड़े के) चक्कर काटते हैं ।

निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ।।१८।।

मेरे गुरु ने मेरी पीठ को थपथपा दिया और (प्रेरित होकर) मैंने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि पाँचों विकारों के जवानों को मार दिया ।।१८।।

सभ इकठे होइ आइआ ।। घरि जासनि वाट वटाइआ ।।

(संसार रूपी अखाड़े में) सभी जीव एकत्रित होकर आये हैं परन्तु सभी अपने अपने मार्ग बदल कर परलोक रूपी घर में जायेंगे ।

गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ ।।१९।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले पुरुष प्रभु नाम का लाभ लेकर यहां से चले गए हैं, परन्तु मन के पीछे लगने वाले मनमुख पुरुष अपनो मूल पूंजी को भी गवाँ कर चले हैं ।।१९।।

तूं वरना चिहना बाहरा ।। हरि दिसहि हाजरु जाहरा ।।

हे प्रभु ! तुम वर्ण और चिह्न से बाहर हो। हे हरि ! तुम प्रत्यक्ष निकट दिखाई देते हो ।

सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत रते गुणतासु जीउ ।।२०।।

हे गुणों के भण्डार प्रभु जी ! तुम्हारे भक्त तुम्हारे प्रेम में रंगे हुए तुम्हारे गुणों को सुन सुन कर तुम्हारा ही ध्यान करते रहते हैं ।।२०।।

मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ।। गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ।।

हे प्रभु ! मैं युग युग तक तुम्हारी सेवा करता रहूँ। मेरे सद्गुरु ने मेरी मोह रूपी रस्सी के बंधन को काट दिया है ।

हउ बाहुड़ि छिंझ न नचऊ नानक अउसरु लधा भालि जीउ ।।२१।।२।।२९।।

(श्री गुरु अर्जुनदेव) नानक जी कथन करते हैं कि मैं संसार रूपी अखाड़े में पुनः नहीं नाचूंगा (पुनः जन्म प्राप्त नहीं करूंगा)। मैंने इस मानवयोनि के पुण्य अवसर में सद्गुरु को ढूंढ कर प्राप्त कर लिया है ।।२१। २।।२९।।

□

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥
सिरीरागु पहरे महला १ घरु १ ॥

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥
उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥
खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥
नामरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥
जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥१॥
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥
हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥
हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥
चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥
जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥
कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥२॥
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥
हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥
हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥
धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥
धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥
कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥
जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥
भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥
झूठा रुदनु होआ दुोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥
साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥

□

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा पहरे शीर्षक के अन्तर्गत रचित दो शब्द श्रीराग में संकलित हैं। इस पहले शब्द के माध्यम से श्रीगुरुदेव जी जीव को बन्जारा बता कर उसे हरि नाम का व्यापार करने को प्रेरणा दे रहे हैं। बन्जारा गाँव नगरों में घूम घूम कर सौदा बेचता है और रात्रि होने पर कहीं भी विश्राम के लिए टिक जाता है और रात्रि के चार प्रहर व्यतीत करता है। जीव भी बन्जारे की ही

भाँति आयु रूपी रात्रि के चार प्रहर व्यतीत करने इस संसार में आता है। आयु रूपी रात्रि के इन प्रहरों को वह कैसे व्यतोत करे कि उसका जीवन सार्थक हो जाय, यही उपदेश गुरुदेवजी दे रहे हैं।

□

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥

हे बंजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में प्रभु के हुकुम से जीव माता के गर्भाशय को प्राप्त होता है।

उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥

हे बंजारे मित्र ! माता के गर्भ में उलटा लटका हुआ यह संतप्त जीव अपने मालिक प्रभु से (कष्टमुक्ति के लिए) प्रार्थना करता है।

खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥

जीव मालिक प्रभु से प्रार्थना करता है और उलटे लटके हुए जीव की चित्तवृत्ति (पूर्णत:) प्रभु के ध्यान में लगी रहतो है।

नामरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥

जीव बिना किसी (मान) मर्यादा (पद प्रतिष्ठा गौरव) के इस संसार में आता है और फिर यहाँ से नंगा ही चला जायगा।

जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥

प्रभु ने जीव के मस्तक पर जैसो कलम चलाई है (भाग्यरेखा लिखी है) वैसा ही भाग्य (सुख दुख) जीव के पास होता है।

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥१॥

श्रीगुरु नानकदेव जी कथन करते हैं आयु रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में जीव प्रभु के हुकुम से माता के गर्भाशय को प्राप्त होता है ॥१॥

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के दूसरे प्रहर में (जन्म लेते ही) जीव को प्रभु का ध्यान विस्मृत हो गया।

हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥

हे बंजारे मित्र ! जन्म लेने क बाद जीव को हाथों हाथ प्रेम से नचाया जाता है जैसे यशोदा के घर कन्हैया (कृष्ण भगवान) को (नचाया जाता था)।

हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥

जन्म लेने वाले प्राणी को (सभी सम्बन्धी) हाथों हाथ नचाते हैं (खिलाते हैं) और मां कहती है यह मेरा पुत्र है।

चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥

हे मेरे अज्ञानी मूर्ख मन ! समझ ले अन्त में कुछ भी तेरा नहीं है।

जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥

हे मूर्ख मन ! जिस प्रभु ने तुम्हारो रचना रची है तुम उसे ही नहीं जानते तुम्हें तो मन के भीतर उसका ही ज्ञान धारण करना चाहिए।

कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥२॥

श्री गुरु नानक देवजी कथन करते हैं आयु रूपी रात्रि के दूसरे प्रहर में जीव को प्रभु का ध्यान विस्मृत हो जाता है ॥

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के तीसरे प्रहर में जीव का चित्त धन और यौवन के प्रति आसक्त हो जाता है।

हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के इस तीसरे प्रहर में जीव हरि प्रभु के नाम को स्मरण नहीं करता। जिस नाम के सहारे जीव इन्द्रियों को जीत कर माया के बंधनों से छूट सकता है।

हरि का नामु न चेतै प्राणी विकलु भइआ संगि माइआ ॥

प्राणी हरि का नाम-स्मरण नहीं करता और माया के संग रहकर व्याकुल रहता है।

धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥

धन में अनुरक्त होकर और यौवन म मस्त होकर प्राणो अपने जन्म को व्यर्थ गवां देता है।

धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥

उसने धर्म का व्यापार नहीं किया (धर्म का आचरण नहीं किया) और हे मित्र प्राणी शुभ कर्म भी नहीं करता।

कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥

श्री गुरु नानक देवजी कथन करते हैं आयु रूपो रात्रि के तीसरे प्रहर में प्राणी धन और यौवन से चित्त लगाता है ॥३॥

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के चौथे प्रहर म शरीर रूपी खेत को काटने के लिए यमदूत रूपी खेतिहर मजदूर आ पहुंचते हैं ॥

जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥

हे बंजारे मित्र ! जब यमदूतों ने प्राणो को पकड़ कर साथ चला लिया तो यह भेद किसी को भी नहीं मिल सका कि जीव कहाँ चला गया।

भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥

जब यमदूत जीव को पकड़ कर ले चले तो यह भेद किसी को भी नहीं मिल सका, इसलिए हे मित्र ! हरि प्रभु का स्मरण करो।

झूठा रुदनु होआ दुोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥

(प्राण निकल जाने पर) शरीर के इर्द गिर्द बैठकर सगे सम्बन्धियों द्वारा झूठा दिखावे का रोना रोया गया (वस्तुतः प्राण निकलने पर) क्षण मात्र में ही (सगे सम्बन्धियों के लिए) मृत शरीर पराया हो गया।

साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥

(आगे परलोक में जाकर) जिस वस्तु के साथ जीव ने (इहलोक में) प्रेम लगाया था (कर्म) के अनुसार वहाँ उसे उसी वस्तु (फल) की प्राप्ति हुई।

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥

श्री गुरु नानक देव जी का कथन है, हे प्राणी आयु रूपी रात्रि के चौथे प्रहर (वृद्धावस्था) में (यमदूत रूपी) खेतिहर मजदूरों ने तुम्हारे शरीर रूपी खेत को काट लिया (शरीर से प्राणों का सम्बन्ध सूत्र काट दिया) ॥४॥१॥

□

सिरीरागु महला १ ॥

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥
खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥
मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥
संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥
रामनाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥
अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति ॥
रामनामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥
गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥
तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥
नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥२॥
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइ ॥
जोबनु घटै जरूआ जिणै वणजारिआ मित्रा आंव घटै दिनु जाइ ॥
अंति कालि पछुतासी अंधुले जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥
सभु किछु अपुना करि करि राखिआ खिन महि भइआ पराइआ ॥

बुधि विसरजी गई सिआणप करि अवगण पछुताइ ॥
कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ॥३॥
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिरधि भइआ तनु खीणु ॥
अखी अंधु न दीसई वणजारिआ मित्रा कंनी सुणै न वैण ॥
अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ॥
गुण अंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख आवणजाणा ॥
खड़ पकी कुड़ि भजै बिनसै आइ चलै किआ माणु ॥
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु ॥४॥
ओड़कु आइआ तिन साहिआ वणजारिआ मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥
इक रती गुण न समाणिआ वणजारिआ मित्रा अवगण खड़सनि बंनि ॥
गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जंमणु मरणा ॥
कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥
पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥
कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥५॥२॥

□

पहरे शीर्षक के पहले शब्द के अन्तर्गत दिये गये विचार का ही विस्तार इस दूसरे शब्द में किया जा रहा है। श्री गुरु देव जी प्राणी रूपी बंजारे को आयु रूपी रात्रि के चार प्रहर नाम भक्ति आराधन में लगा कर सार्थक विधि से व्यतीत करने का उपदेश दे रहे हैं।

□

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में प्राणी की बाल बुद्धि होती है और वह नासमझ होता है।

खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥

हे बंजारे मित्र ! उस समय बालक दूध पीता है और माता पिता अपने पुत्र से खूब प्रेम करते हैं और उसे (गोद में) खिलाते हैं।

मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥

माता पिता पुत्र से खूब गहरा प्रेम करते हैं क्योंकि वह सारा ही संसार माया के द्वारा मोहित है।

संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥

पूर्व जन्म में कमाए (किये) गये कर्मों के संयोग से ही प्राणी यहां आया है और (संसार में) आकर वह वही काम करता है जो प्रभु उससे करवाता है।

रामनाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥

राम प्रभु के नाम आराधना के बिना प्राणी की मुक्ति नहीं हो सकती (परन्तु यह सारी सृष्टि प्रभु के नाम को छोड़कर) दूसरी वस्तुओं (सांसारिक पदार्थों) से प्रेम करती है (फलस्वरूप भवसागर में) डूब रही है।

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥

श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं हे प्राणो ! आयु रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में हरि प्रभु के नाम की (चेतना) अराधना करने से ही तुम द्वैत भाव से छूटोगे ॥१॥

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के दसरे प्रहर में प्राणी भरपूर यौवन की मदिरा से मदमस्त होता है (यौवन में मस्त फिरता है)।

अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति ॥

हे बंजारे मित्र ! प्राणी पर दिन रात कामवासना व्याप्त रहती है और उस अज्ञानान्ध को प्रभु के नाम की स्मृति ही नहीं होती।

रामनामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥

राम प्रभु का नाम प्राणी के अन्तःकरण में नहीं रहता और अन्य वासना के कसैले रसों को मीठा करके जानता है।

गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥

(परन्तु हे प्राणी) न तो तुममें ज्ञान है ना ही तुमने प्रभु का ध्यान धारण किया है न कोई शुभ गुण है और न ही इन्द्रियों का संयम है। संसार के झूठे पदार्थों से मोह करने के कारण तुम बार-बार जन्म धारण करोगे और मरोगे (आवागमन के चक्र में फँसे रहोगे)।

तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥

तीर्थों की यात्रा करने से और व्रत उपवास रखने से और ना ही कर्मकाण्ड के अनुसार धार्मिक क्रियाएँ करने से और पूजा के विधि विधानों का पालन करने से मुक्त हो सकते हैं)।

नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥२॥

(गुरुदेव) नानक जो (कथन करते हैं) प्रेम पूर्वक प्रभु की भक्ति करने से ही जीव का उद्धार हो सकता है, अन्यथा द्वैत भाव से व्याप्त होकर वह दूसरे (आवागमन के चक्र) में फँसा रहता है ॥२॥

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइ ।।

हे बन्जारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के तोसरे प्रहर में शरीर रूपी सरोवर पर हंस रूपी सफेद केश राशि उतर आती है।

जोबनु घटै जरुआ जिणै वणजारिआ मित्रा आंव घटै दिनु जाइ ।।

हे बन्जारे मित्र ! (आयु रूपी रात्रि के तीसरे प्रहर में) यौवन की शक्ति कम होने लगती है, शरीर पर वृद्धावस्था विजय प्राप्त करने लगती है, आयु के दिन जाने लगते हैं और आयु कम होती जाती है ।

अंति कालि पछुतासी अंधुले जा जमि पकड़ि चलाइआ ।।

हे अज्ञानान्ध ! अन्त समय जब यमदूत तुम्हें पकड़ कर ले चलेंगे तब तुम पछताओगे ।

सभु किछु अपुना करि करि राखिआ खिन महि भइआ पराइआ ।।

वह सब कुछ जो तुमने अपना कर करके रखा हुआ है, वह क्षण मात्र में ही पराया हो जायेगा ।

बुधि विसरजी गई सिआणप करि अवगण पछुताइ ।।

बुद्धि विस्मृत (मति-भंग) हो जाती है, सारी चतुराई चली जाती है और जीव अपने अवगुणों को याद करके पछताता है ।

कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ।।३।।

(श्री गुरु देव) नानक जी कहते हैं, हे प्राणी ! आयु रूपी रात्रि के तीसरे प्रहर में चित्तवृत्ति लगाकर प्रभु को स्मरण करो ।।३।।

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिरधि भइआ तनु खीणु ।।

हे बन्जारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के चौथे प्रहर में प्राणी वृद्ध हो जाता है और शरीर क्षोण हो जाता है ।

अखी अंधु न दीसई वणजारिआ मित्रा कंनी सुणै न वैण ।।

हे बन्जारे मित्र ! प्राणी आंखों से अन्धा हो जाता है उसे कुछ दिखाई नहीं देता और कानों से उसे बचन सुनाई नहीं देते ।

अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ।।

प्राणी आंखों से अंधा हो जाता है, जिह्वा में रस ग्रहण की शक्ति नहीं रहती और पराक्रम से हीन हो जाता है ।

गुण अंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख आवणजाणा ।।

जिस प्राणी के अन्तःकरण में शुभ गुण नहीं हैं वह कैसे आत्मिक सुख प्राप्त कर सकता है ? मन के पीछे लगने वाले उस मनमुख का आना जाना (जन्म मरण) लगा ही रहता है ।

खड़ु पकी कुड़ि भजै बिनसै आइ चलै किआ माणु ॥

(जैसे) खेती पक जाने पर झुक जाती है वैसे ही शरीर (वृद्ध होने पर) झुक जाता है। जैसे पकी खेती टूटने लगती है वैसे ही वृद्ध शरीर के अंग टूटने लगते हैं और शरीर नष्ट होने लगता है (हे प्राणी जिस शरीर को) आकर चले जाना है उसके लिए तू मान (अहंकार) क्यों करता है।

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु ॥४॥

(श्री गुरु देव) नानक जी का कथन है, हे प्राणी ! आयु रूपी रात्रि के चौथे प्रहर में गुरु के सम्मुख होकर (गुरु की शरण में आकर) शब्द ब्रह्म को पहचान ॥४॥

ओड़कु आइआ तिन साहिआ वणजारिआ मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥

हे बन्जारे मित्र ! जिस समय वृद्धावस्था रूपी निर्दयी आक्रमणकारी कंधे पर सवार हो जाता है तो उन श्वासों का अन्त आ जाता है (जिनके बाल पर शरीर चलता था)।

इक रती गुण न समाणिआ वणजारिआ मित्रा अवगण खड़सनि बंनि ॥

हे बन्जारे मित्र ! जिस प्राणी के हृदय में एक रत्ती भर भी शुभ गुण नहीं समाते हैं अवगुणों के कारण उसे यमदूत बांध कर ले जायेंगे।

गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जंमणु मरणा ॥

जो प्राणी गुणों से भरपूर संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करके संसार से जाता है उसे यम के डंडों की चोट नहीं खानी पड़ती और ना ही उसका जन्म लेना और मरना होता है (वह आवागमन के चक्र से छूट जाता है)।

कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥

महाकाल के यमदूत जाल लेकर उसकी ओर देख भी नहीं सकते वह प्रभु की प्रेम पूर्ण भक्ति से भयभीत करने वाले संसार सागर से तर जाता है।

पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥

स्थिर अवस्था को प्राप्त कर वह प्रतिष्ठा के साथ संसार से जाता है, प्रभु में अभेद हो जाता है और आने-जाने (जन्म मरण) के सभी दुखों को मिटा देता है।

कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥५॥२॥

श्री गुरु देव नानक जी कहते हैं कि गुरु के सम्मुख रहने वाला प्राणी ही जन्म मरण के बन्धन से छूट सकता है और सत्यस्वरूप प्रभु द्वारा प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है ॥५॥२॥

□

सिरीरागु महला ४ ॥

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि पाइआ उदर मंझारि ॥
हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥
हरि हरि नामु जपे आराधे विचि अगनी हरि जपि जीविआ ॥
बाहरि जनमु भइआ मुखि लागा सरसे पिता मात थीविआ ॥
जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥१॥
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥
मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिआ मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥
लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥
जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥
कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिआवै मनि लिव लाइ ॥
कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥२॥
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लगा आलि जंजालि ॥
धनु चितवै धनु संचवै वणजारिआ मित्रा हरिनामा हरि न समालि ॥
हरिनामा हरि हरि कदे न समालै जि होवै अंति सखाई ॥
इहु धनु संपै माइआ झूठी अंति छोडि चलिआ पछुताई ॥
जिसनो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥
कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥३॥
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥
करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥
हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ॥
हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥
गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखांदी ॥
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओ रैणि भगता दी ॥४॥१॥३॥

□

पहरे शीर्षक के अन्तर्गत चतुर्थ ज्योति श्री गुरु रामदास जी द्वारा रचित यह शब्द संकलित है जिसमें गुरु नानक देव जी महाराज द्वारा रचित पहरे के दो शब्दों के समान जीव को बंजारा बता कर आयु रूपी रात्रि के चार प्रहर प्रभु–भक्ति में व्यतीत करने का उपदेश दिया गया है।

□

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि पाइआ उदर मंझारि ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में हरि प्रभु जीव को

माता के उदर में डाल देता है।

हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥

हे बंजारे मित्र! उस समय जीव हरि प्रभु का ही ध्यान करता है, हरि के नाम का ही उच्चारण करता है और दुखों का हरण करने वाले हरि प्रभु के नाम को ही स्मरण करता है।

हरि हरि नामु जपे आराधे विचि अगनी हरि जपि जीविआ ॥

दुखों के नाशक हरि प्रभु के नाम का ही जप करता है, हरि नाम की ही आराधना करता है और माता के उदर की जठराग्नि में हरि प्रभु के नाम को जप कर ही जीवित रहता है।

बाहरि जनमु भइआ मुखि लागा सरसे पिता मात थीविआ ॥

जब जीव का जन्म हुआ और वह माता के गर्भ से बाहर आया तो वह अपने माता पिता के मुख लगा। माता पिता उसे देख कर बहुत प्रसन्न होते हैं।

जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥

हे प्राणी ! गुरु के सम्मुख होकर (गुरु की शरण में आकर) हृदय में उस प्रभु का विचार करो जिसकी (दी हुई) यह वस्तु (बालक) है।

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥१॥

(श्रीगुरु रामदास) नानक जी कहते हैं, हे प्राणो आयु रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में कृपा करने वाले हरि प्रभु का नाम जपना चाहिए ॥१॥

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के दूसरे प्रहर में जीव का मन द्वैत भाव में लग जाता है।

मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिआ मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥

हे बंजारे मित्र! (आयु रूपी रात्रि के दूसरे प्रहर में जीव को) माता पिता गले से लगाते हैं और मेरा मेरा करके उसका पालन करते हैं।

लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥

मात पिता सदैव गले से लगाते हैं और मन में समझते हैं कि यह हमें कमा कर खिलाएगा।

जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥

मूर्ख माता पिता उस प्रभु को तो जानते नहीं जिसने बालक दिया है। उस प्रभु द्वारा दी गई वस्तु (बालक) से लिपटते रहते हैं।

कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिआवै मनि लिव लाइ ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाला कोई ही होता है जो यह विचार करता है (कि पदार्थों के दाता प्रभु से प्रेम करना चाहिए पदार्थों से नहीं) और वही पुरुष मन में पूरी तरह से प्रेम लगा कर हरि प्रभु का ध्यान करता है ।

कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥२॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी कहते हैं आयुरूपी रात्रि के दूसरे प्रहर में (गुरुमुख) प्राणी को काल कभी भी खाता नहीं है ॥२॥

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लगा आलि जंजालि ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के तीसरे प्रहर में जीव का मन घर के जंजाल में लग जाता है ।

धनु चितवै धनु संचवै वणजारिआ मित्रा हरिनामा हरि न समालि ॥

हे बंजारे मित्र ! जीव (इस युवा अवस्था में) धन का ही चिन्तन करता है, धन का ही संचय करता है, दुखों का हरण करने वाला हरि नाम स्मरण नहीं करता है ।

हरिनामा हरि हरि कदे न समालै जि होवै अंति सखाई ॥

जीव हरि प्रभु के दुखों का नाश करने वाले हरिनाम को कभी भी स्मरण नहीं करता, जो हरिनाम उसका अन्त में मित्र होगा ।

इहु धनु संपै माइआ झूठी अंति छोडि चलिआ पछुताई ॥

माया के मिथ्या आकर्षण में फंस कर वह उस धन का संग्रह करता है, जिसे अन्त में छोड़कर चला जाता है और फिर पछताता है ।

जिसनो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥

जिस जीव पर वह हरि प्रभु कृपा करके गुरु से मिला देता है वही जीव हरि नाम का स्मरण करता है ।

कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥३॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी कहते हैं, आयु रूपी रात्रि के तीसरे प्रहर में वह प्राणी (जिस पर प्रभु कृपा करते हैं) हरि प्रभु से जाकर मिल जाता है (अभेद हो जाता है)।

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥

हे बंजारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के चौथे प्रहर में हरि प्रभु संसार से चलने (मृत्यु) की बेला ले आता है ।

करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥

हे बंजारे मित्र! (इस वृद्धावस्था में) अपने पूर्ण सद्गुरु की सेवा

करो क्योंकि आयु रूपी संपूर्ण रात्रि व्यतीत होती चली जा रही है।

हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ।।

क्षण क्षण (प्रतिक्षण) हरि प्रभु की सेवा करो किंचित मात्र भी देरी मत करो जिससे युग युगान्तर के लिए अटल (अमर) हो जाओगे।

हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ।।

हरि प्रभु के साथ सदा सदा के लिए आनन्द का उपभोग करो और जन्म मरण के दुख को नष्ट कर दो।

गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखांदी ।।

पूजनीय सद्गुरु और मालिक प्रभु में कोई अन्तर मत जानो जिस सद्गुरु से मिलकर हरि प्रभु की सुखदायी भक्ति की प्राप्ति होती है।

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओ रैणि भगता दी ।।४।।१।।३।।

(श्री गुरु रामदास) नानक जी कहते हैं हे प्राणी! आयुरूपी रात्रि के चौथे प्रहर में प्रभु की भक्ति करने वाले भक्तों की संपूर्ण आयु रूपी रात्रि सफल (सार्थक) हो जाती है ।।४।।१।।३।।

□

सिरीरागु महला ५ ।।

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ।।
दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति करम कमाही ।।
मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइआ ।।
मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइआ ।।
करम सुकरम कराए आपे इसु जंतै वसि किछु नाहि ।।
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ।।१।।
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ।।
बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहंमेइ ।।
बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ।।
पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ।।
धरमराइ जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ।।
कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ।।२।।
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ।।
पुत्रि कलत्रि मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अंतरि लहरि लोभानु ।।
अंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ।।
साध संगति सिउ संगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ।।
सिरजनहारु विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआनु ।।

कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे अंधु अगिआनु ॥३॥
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥
गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइ ॥
गुरमुखि नामु समालि पराणी अंते होइ सखाई ॥
इहु मोहु माइआ तेरै संगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥
सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥४॥
लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ॥
इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा ओनी तकड़े पाए हाथ ॥
लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥
जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥
करम धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ॥
कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ॥५॥१॥४॥

□

पहरे शीर्षक में श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज द्वारा रचित इस शब्द में जीव को बन्जारा रूप से सम्बोधित करते हुए आयु रूपी रात्रि के चार प्रहर प्रभु भक्ति और नाम स्मरण में ब्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है।

□

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ॥

हे बन्जारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में प्रभु ने जीव के संसार में आने के लिए माता के उदर में रक्त और वीर्य का पैतड़ा रख दिया है।

दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति करम कमाहि ॥

हे बन्जारे मित्र ! दस महीने में प्रभु ने मनुष्य शरीर तैयार कर दिया है और शुभ कर्म कमाने के लिए आयु की अवधि निश्चित कर दी है।

मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइआ ॥

कार्य करने के लिए प्रभु ने अवधि निश्चित कर दी है परन्तु जीव वैसे ही कार्य करता है जैसा प्रभु ने प्रारम्भ से ही उसके भाग्य में लिख कर डाल दिया है।

मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइआ ॥

माता, पिता, भाई, पुत्र और स्त्री इन सब के बीच में प्रभु ने ही उसे मिलाया है।

करम सुकरम कराए आपे इसु जंतै वसि किछु नाहि ॥

प्रभु आप ही इस जीव से दुष्कर्म और शुभ कर्म करवाता है। (बेचारे) जीव के वश में कुछ भी नहीं है।

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ॥१॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी कहते हैं, हे ! प्राणी आयु रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में प्रभु जीव के संसार में आने के लिए माता के उदर में रक्त और वीर्य का पैतड़ा रख देता है ॥१॥

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ॥

हे बन्जारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के दूसरे प्रहर में जवानी (रूपी नदी पूरे बल रूपी जल से) भर जाती है और (विकारों की) लहरें देने (उठने) लगती है।

बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहंमेइ ॥

(इस अवस्था में) मन की बातों को मानता हुआ अहंकार में मतवाला जीव अच्छे और बुरे की पहचान नहीं करता।

बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ॥

बुरे और भले को पहचान न करने वाला यह प्राणी यह नहीं जानता कि आगे का मार्ग कितना कठिन है (जहां इसके अच्छे बुरे कर्मों का लेखा जोखा होना है)।

पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ॥

जीव पूर्ण सद्गुरु की सेवा कभी भी नहीं करता है, इसलिए निर्दयी यमदूत उसके सिर पर खड़ा रहता है।

धरमराइ जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ॥

हे पागल जीव जब धर्मराज तुम्हारे बुरे कर्मों का हिसाब मांगने के लिये तुम्हें पकड़ेगा तब छूटने के लिए क्या जवाब तैयार करोगे।

कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥२॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी कहते हैं, हे प्राणी ! आयु रूपी रात्रि के दूसरे प्रहर में यौवन रूपी नदी बल रूपी जल से भर जाती है और वह कामादिक विकारों की लहरें देने लगती है (उसमें विकारों की लहरें उठने लगती है) ॥२॥

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ॥

हे बन्जारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के तीसरे प्रहर में यह अज्ञान से अंधा जीव विषय वासनाओं के साधन संग्रह करता है।

पुत्रि कलत्रि मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अंतरि लहरि लोभानु ॥

हे बन्जारे मित्र ! जीव पुत्र और स्त्री के मोह से लिपटता है और उसके अन्त:करण में लोभ की लहरें उठती हैं ।

अंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ॥

अन्त:करण में लोभ की लहरें उठने के कारण प्राणी को वह प्रभु स्मरण में ही नहीं आता ।

साध संगति सिउ संगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ॥

साधुओं की संगति से उसने कभी भी मिलन नहीं किया इसलिए वह अनेक योनियों में भटकने का दुख प्राप्त करता है ।

सिरजनहारु विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआनु ॥

रचना करने वाले उस मालिक प्रभु को उसने भुला दिया और एक पल मात्र भी उसका ध्यान प्रभु से नहीं लगा ।

कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे अंधु अगिआनु ॥३॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी कहते हैं, आयु रूपी रात्रि के तीसरे प्रहर में प्राणी अज्ञान से अंधा होकर विषय वासना के साधनों का संग्रह करता है ॥३॥

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥

हे बन्जारे मित्र ! आयु रूपी रात्रि के चौथे प्रहर में वह दिन (मृत्यु का दिन) निकट आने लगता है ।

गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइ ॥

हे बन्जारे मित्र ! गुरु के सम्मुख होकर तू प्रभु का नाम स्मरण कर । प्रभु का नाम ही प्रभु के दरबार में तुम्हारा सच्चा मित्र होगा ।

गुरमुखि नामु समालि पराणी अंते होइ सखाई ॥

हे प्राणी ! गुरु के सम्मुख होकर प्रभु के नाम का स्मरण कर । यही प्रभु का नाम ही अन्त काल में तुम्हारा सहायक होगा ।

इहु मोहु माइआ तेरै संगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥

यह माया जिससे तुम मोह करते हो झूठी है, यह तुम्हारे साथ अन्तकाल में नहीं चलेगी । इसलिए इससे लगी हुई तुम्हारी प्रीति मिथ्या है ।

सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥

तुम्हारी आयु रूपी सम्पूर्ण रात्रि अज्ञान के कारण अन्धेरे में ही गुजरती जा रही है । सद्गुरु की सेवा करने से ही इसमें ज्ञान का प्रकाश होगा ।

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥४॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी कहते हैं, हे प्राणी ! आयु रूपी रात्रि के चौथे प्रहर में वह दिन (मत्यु का दिन) निकट आने लगता है ।

लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ।।

हे बन्जारे मित्र ! जब गोबिंद प्रभु का लिखा हुआ हुकुम आता है तो जीव इस संसार से उठ चलता है, उस समय उसके कर्म ही साथ जाते हैं ।

इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा ओनी तकड़े पाए हाथ ।।

हे बन्जारे मित्र ! उन (यमदूतों) ने इतने मजबूत हाथ जीव पर डाले हैं कि एक रत्ती भर की भी देरी नहीं होने देते (फौरन पकड़ कर ले जाते हैं) ।

लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ।।

जब प्रभु का लिखा हुआ हुक्म आया तो यमदूतों ने जीव को पकड़ कर अपने मार्ग पर चला लिया, ऐसी अवस्था में मन के पीछे लगने वाले जीव सदा बहुत दुखी होते हैं ।

जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ।।

जिन्होंने पूर्ण सद्गुरु की सेवा की है वे जीव प्रभु के दरबार में सदैव सुखी होते हैं ।

करम धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ।।

पृथ्वी और शरीर दोनों के अन्दर जैसे बीज बोने का कर्म किया जाता है वैसा ही खाने को मिलता है । शरीर के द्वारा जैसे कर्म किये जाते हैं वैसे ही फल मिलना है और धरती के अन्दर जैसा बीज डाला जाता है वैसा ही फल खान को मिलता है ।

कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ।।५।।१।।४।।

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी कहते हैं प्रभु के भक्त प्रभु के दरबार में सदैव ही सुशोभित होते हैं और मन के पीछे लगने वाले सदैव जन्म मरण के चक्र में घुमाये जाते हैं ।।५।।१।।४।।

□

सिरीराग महला ४ घरु २ छंत

१ओं सतिगुर प्रसादि ।।

मुंध इआणी पेईअड़ै किउकरि हरि दरसनु पिखै ।।

हरि हरि अपनी किरपा करे गुरमुखि साहुरड़ै कंम सिखै ।।

साहुरड़ै कंम सिखै गुरमुखि हरि हरि सदा धिआए ।।

सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाइ ।।

लेखा धरमराइ की बाकी जपि हरि हरि नामु किरखै ।।

मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुखि हरि दरसनु दिखै ॥१॥
वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥
बलिआ गुरगिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥
अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ ॥
वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ ॥२॥
हरि सति सते मेरे बाबुला हरिजन मिलि जंञ सुहंदी ॥
पेवकड़ै हरि जपि सुहेली विचि साहुरड़ै खरी सोहंदी ॥
साहुरड़ै विचि खरी सोहंदी जिनि पेवकड़ै नामु समालिआ ॥
सभु सफलिओ जनमु तिना दा गुरमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ॥
हरि संत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु पाइआ पुरखु अनंदी ॥
हरि सति सति मेरे बाबोला हरिजन मिलि जंञ सोहंदी ॥३॥
हरिप्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥
हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥
हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइआ ॥
खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइआ ॥
होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥
हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥४॥
हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥
हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी ॥
जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥
हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥
नानक संत संत हरि एको जपि हरि हरि नामु सोहंदी ॥
हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥५॥१॥

□

'छंत' शीर्षक से संकलित इस शब्द में श्री गुरु रामदास जी महाराज जीवात्मा को मुग्धा नायिका के रूप में चित्रित कर रहे हैं जो अपने प्रियतम प्रभु से मिलन की विधि से अनभिज्ञ है; किन्तु प्रियतम प्रभु उस पर कृपा दृष्टि करता है। प्रियतम प्रभु से मुग्धा नायिका का विवाह होता है और उसे प्रियतम प्रभु के चरणों में स्थान प्राप्त होता है।

□

मुंध इआणी पेईअड़ै किउकरि हरि दरसनु पिखै ॥

अनजान मुग्धा नायिका के समान अज्ञानी जीवात्मा इस संसार रूपी मायके के सुख उपभोग में फँस कर हरि प्रभु प्रियतम के दर्शन क्यों कर पा सकती है (अर्थात् नहीं पा सकती)।

हरि हरि अपनी किरपा करे गुरमुखि साहुरड़ै कंम सिखै ॥

दुखों का हरण करने वाला हरि प्रभु यदि अपनी कृपा दृष्टि करे तो गुरु के सम्मुख होकर अनजान जीव स्त्री ससुराल में काम आने योग्य गुणों को सीख सकती है (और उन गुणों से हरि प्रभु को प्रसन्न कर मिलन सुख पा सकती है)।

साहुरड़ै कंम सिखै गुरमुखि हरि हरि सदा धिआए ॥

ससुराल (परलोक) के योग्य कामों का सीखना यह है कि (इस लोक में, मायके में) गुरु के सम्मुख होकर सदैव हरि के हरिनाम का ध्यान करें।

सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाइ ॥

(ऐसा करने से) जीव स्त्री अपने सद्संगी साथियों में सुखपूर्वक घूमती फिरती है और हरि प्रभु के दरबार में भुजा हिलाकर अर्थात निश्चिन्त होकर जाती है।

लेखा धरमराइ की बाकी जपि हरि हरि नामु किरखै ॥

धर्मराज के पास कर्मों का जो लेखा जोखा बाकी रह गया था उसे वह हरिप्रभु का हरिनाम जप कर काट देती है (समाप्त कर देती है)।

मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुखि हरि दरसनु दिखै ॥१॥

इस संसार रूपी मायके घर में जो मुग्धा जीव स्त्री अनजान (अज्ञानी) बनी हुई थी उसने गुरु के सम्मुख होकर (गुरु की शरण में आकर) हरि प्रियतम के दर्शन कर (प्राप्त कर) लिए हैं॥१॥

वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥

(मुग्धा जीव स्त्री अब प्रसन्न होकर बताती है) हे मेरे पिता गुरुदेव ! मेरा विवाह हो गया है। (आप) गुरु के सम्मुख होकर (गुरु की शरण में आकर हो) मैंने हरि प्रियतम को प्राप्त किया है।

अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥

सद्गुरु ने तीव्र प्रकाश युक्त ज्ञान का दीपक जलाया जिससे कि अज्ञान का अंधेरा कट गया।

बलिआ गुरगिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥

गुरु के द्वारा ज्ञान रूपी दीपक को जलाते ही अज्ञान का अन्धकार नष्ट

हो गया और ज्ञान के प्रकाश में (मैंने अपने अन्तःकरण में ही) हरि प्रभु रूपी अमूल्य रत्न पदार्थ को खोज लिया।

हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ।।

गुरु की शिक्षा पर चलने से अहंकार (हउमै) का रोग मन से दूर हो गया और जन्म मरण का दुख समाप्त हो गया। आत्मस्वरूप की पहचान ने अपनत्व की भावना को खा डाला (समाप्त कर दिया)।

अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ ।।

ऐसे वर को प्राप्ति हो गई जिस पर काल का प्रभाव नहीं होता जो कभी भी नाश को प्राप्त नहीं होता। जो न कभी मरता है न जन्म लेता है।

वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ ।।२।।

हे मेरे गुरु पिता! मेरा विवाह हो गया है (आप) गुरु के सम्मुख होकर (गुरु की शरण में आकर) मैंने हरि प्रियतम को प्राप्त किया है ।।२।।

हरि सति सते मेरे बाबुला हरिजन मिलि जंञ सुहंदी ।।

हे मेरे गुरु पिता! मेरे उस हरि प्रियतम की सत्ता सत्य है। हरि के भक्तों के मिलन से मेरी बरात शोभनीय हो रही है।

पेवकड़ै हरि जपि सुहेली विचि साहुरड़ै खरी सोहंदी ।।

जो जीव स्त्री मायके (इहलोक) में हरि प्रभु का नाम स्मरण कर सुखी होती है वही ससुराल (परलोक) में पूर्णरूप से सुशोभित होती है।

साहुरड़ै विचि खरी सोहंदी जिनि पेवकड़ै नामु समालिआ ।।

वे जीवस्त्रियां ससुराल (परलोक) में पूर्ण शोभा प्राप्त करती हैं जिन्होंने मायके (इहलोक) में हरिनाम की संभाल की है (स्मरण किया है)।

सभु सफलिओ जनमु तिना दा गुरमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ।।

उन जीवों का सम्पूर्ण जीवन सार्थक है जिन्होंने गुरु के सम्मुख होकर मन को जीत लिया है और जीवन को सोने की भांति गला गला कर शुद्ध कर लिया है।

हरि संत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु पाइआ पुरखु अनंदी ।।

हरि प्रभु के सन्तों और भक्तों के मिलने से मेरा विवाह कार्य सुशोभित हो गया और मैंने आनन्द स्वरूप पुरुष परमातमा को वर के रूप में प्राप्त किया है।

हरि सति सति मेरे बाबोला हरिजन मिलि जंञ सोहंदी ।।३।।

हे मेरे गुरु पिता! सत्य स्वरूप हरि प्रभु की सत्ता सत्य है हरि प्रभु के

भक्तों के मिलन से मेरी बारात शोभनीय हो रही है ।।३।।

हरिप्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ।।

हे मेरे पिता गुरुदेव जी ! जो हरि मेरा स्वामी है उस हरि का नाम ही मुझे दहेज में दान दो ।

हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ।।

हे गुरुदेव ! मुझे हरिनाम का कपड़ा दो हरिनाम का शृंगार दो जिससे मेरा विवाह कार्य सज सँवर जाय ।

हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइआ ।।

दुखों का हरण करने वाले हरि प्रभु की भक्ति करने से ही मेरा विवाह कार्य सुखदायी हुआ । है यह नाम का दान मेरे महान सद्‌गुरु ने ही दिलवाया है ।

खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइआ ।।

हरि नाम के दान की शोभा नवखण्डों और समस्त ब्रह्माण्डों में हो रही है और यह नाम का दान अन्य दानों में मिलाने से भी नहीं मिलता है।

होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ।।

हरिनाम के दान के अतिरिक्त मनमुख जो और दहेज रख रख कर दिखाते हैं वह मिथ्या अहंकार का झूठा प्रदर्शन है ।

हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ।।४।।

हे मेरे गुरुदेव पिता ! मेरे हरि प्रभु का हरिनाम ही मुझे दहेज में दान दो ।।४।।

हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ।।

हे मेरे गुरुदेव पिता ! दुखों का हरण करने वाले सर्वत्र रमे हुए राम प्रभु प्रियतम से मिलकर मेरी जीव स्त्री की शुभ गुणों रूपी बेल विकसित हो गई है ।

हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी ।।

हे गुरुदेव (पिता) हरि प्रभु (प्रियतम) युगों युगों से सनातन है उसके साथ मेरा मिलन सम्बन्ध युगों युगों तक और पीढ़िओं तक चलता रहेगा ।

जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ।।

जिन्होंने गुरु के सम्मुख होकर प्रभु के नाम का ध्यान किया है सद्‌गुरु की कृपा से उनक शुभ गुणों की पीढ़ी युग युगान्तर तक चलती है ।

हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ।।

परमात्मा पुरुष कभी भी नाश को नहीं जाता (प्राप्त होता), अपने भक्तों

को वह नित्य प्रति भक्ति का दान देता रहता है। जिससे वे शुभ गुणों में निरन्तर समृद्ध होते रहते हैं।

नानक संत संत हरि एको जपि हरि हरि नामु सोहंदी ॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी कहते हैं कि सन्त हरि का ही रूप है और सन्त और हरि दोनों एक हैं। सन्तों के माध्यम से दुख हर्त्ता प्रभु के हरि नाम का जप कर मैं सुशोभित हो रही हूँ।

हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥५॥१॥

हे पिता गुरुदेव ! दुखों का हरण करने वाले सर्वत्र रमने वाले राम प्रभु प्रियतम से मिलकर मेरी जीव स्त्री की शुभ गुणों रूपी बेल विकसित हो गई है ॥५॥१॥

□

सिरीरागु महला ५ छंत ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मन पिआरिआ जीउ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥
मन पिआरिआ जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥
संगि सहाई हरिनामु धिआई बिरथा कोइ न जाए ॥
मन चिंदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाए ॥
जलि थलि पूरि रहिआ बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥१॥
मन पिआरिआ जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा बिखु सागरु संसारे ॥
चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूखु न बिआपै ॥
गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥
आदि जुगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥२॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि दरु निहचलु मली ॥
हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइआ ॥
तह जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाइआ ॥
चित्र गुपत का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥३॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि संता संगि निवासो ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरिनामु जपत परगासो ॥

सिमरि सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ ॥
पुरबे कमाए स्त्री रंग पाए हरि मिले चिरी विछुंनिआ ॥
अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ॥४॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥
हरि पी आघाने अंम्रितबाने स्रब सुखा मन वुठे ॥
स्री धर पाए मंगल गाए इछ पुंनी सतिगुर तुठे ॥
लड़ि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ सरबसु ठाकुरि दीना ॥
नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥५॥१॥२॥

□

श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज वाणी के इस अंश में जीव को हरि नाम स्मरण का उपदेश दे रहे हैं और बताते हैं कि हरि का नाम सभी दुखों, क्लेशों का नाश करने वाला है।

□

मन पिआरिआ जीउ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन जी ! गोबिन्द प्रभु के नाम का स्मरण करो।

मन पिआरिआ जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! हरि का नाम ही तुम्हारे साथ निभेगा।

संगि सहाई हरिनामु धिआई बिरथा कोइ न जाए ॥

हरि प्रभु के नाम का ध्यान करो (क्योंकि) प्रभु का नाम ही सबसे बड़ा साथी और सहायक है और हरिनाम को जपने वाला कोई भी जीव संसार से व्यर्थ नहीं जाता (जीवन को सार्थक करके जाता है)।

मन चिंदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाए ॥

प्रभु के चरण कमलों में चित्त लगाने से जैसी मन में इच्छा की जाती है वैसे ही फलों की प्राप्ति होती है।

जलि थलि पूरि रहिआ बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥

वह बनवारी प्रभु जल स्थल में परिपूर्ण हो रहा है, और अपनी सर्वज्ञ दृष्टि द्वारा प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक जीव को देख रहा है।

नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥१॥

(गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कहते हैं) हे मेरे प्रियतम ! मन मैं तुम्हें शिक्षा देता हूँ कि साधुओं की संगति में आकर अपने भ्रम को जला दे ॥१॥

मन पिआरिआ जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! हरि नाम के बिना यह सारा संसार (सांसारिक आडम्बर) मिथ्या है।

मन पिआरिआ जीउ मित्रा बिखु सागरु संसारे ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! यह संसार विष से परिपूर्ण सागर है।

चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूखु न बिआपै ॥

हे मेरे मन ! तू कर्त्ता प्रभु के चरण कमलों को जहाज करके जानलें तब तुम्हें कोई भी शंका या दुख व्याप्त नहीं होगा।

गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥

जिस महान भाग्यशाली को पूर्ण गुरु मिलते हैं, वह आठों प्रहर प्रभु के नाम का जाप करता है।

आदि जगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥

प्रारंभ से ही, युगों के प्रारंभ से ही जो प्रभु अपने सेवकों का स्वामी है उस स्वामी के नाम का ही भक्तों को सहारा है।

नानकु सिख देइ मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥२॥

(गुरु अर्जुनदेव) नानकजी (कहते हैं) हे मेरे प्रियतम मन ! मैं तुम्हें शिक्षा देता हूँ कि हरि के बिना और सारा प्रसार (सांसारिक आडम्बर) मिथ्या है ॥२॥

मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! हरि नाम के सार्थक सौदे को ही लाद लो।

मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि दरु निहचलु मली ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! (हरि नाम का सौदा लादकर) हरि प्रभु के निश्चल (अटल) दरबार में स्थान सुरक्षित कर लें।

हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइआ ॥

जो अदृश्य और अभेद्य हरि प्रभु के दरबार की सेवा करते हैं वे स्थायी पद को प्राप्त करते हैं (प्रभु की सेवा करते हुए स्वस्वरूप की पहचान से स्थिर अवस्था को प्राप्त करते हैं)।

तह जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाइआ ॥

उन जीवों का न जन्म होता है न मरण होता है न (आवागमन के चक्र में) आना होता है न जाना होता है। उन्होंने स्वस्वरूप की पहचान से अपना संशय और दुख मिटा दिया है।

चित्र गुपत का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥

चित्र गुप्त का (पाप पुण्य के लेखे जोखे वाला) कागज फाड़ दिया जाता है और उस जीव पर यमदूतों की कुछ भी शक्ति नहीं चलती है।

नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥३॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी का कथन, है हे मेरे प्रियतम मन ! मैं तुम्हें शिक्षा देता हूँ कि हरि नाम के सार्थक सौदे को ही लादो ॥३॥

मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि संता संगि निवासो ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! तुम सन्तों के साथ निवास करो।

मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरिनामु जपत परगासो ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन जी ! हरि प्रभु के नाम को जप कर ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करो।

सिमरि सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ ॥

सुखों की ओर गमन कराने वाले (सुख देने वाले) प्रभु मालिक को याद करो, प्रभु का स्मरण करने से समस्त इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

पुरबे कमाए स्त्री रंग पाए हरि मिले चिरी विछुंनिआ ॥

पूर्व जन्म में अर्जित किए गए श्रेष्ठ कर्मों के फलस्वरूप ही चिरकाल से बिछुड़ा जीव हरि प्रभु से मिलता है और शोभा एवं आनन्द को प्राप्त होता है।

अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥

समस्त जीवों के भीतर औ बाहर ब्रह्माण्ड में सर्वत्र परमात्मा रमण कर रहा है ऐसा मन में विश्वास उत्पन्न हो जाता है।

नानकु सिख देइ मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ॥४॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी कहते हैं कि हे प्रियतम मन ! मैं तुम्हें शिक्षा देता हूं कि संतो के साथ निवास करो ॥४॥

मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! अपने मन को हरि प्रभु की प्रेम भक्ति में लीन करो।

मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥

हे मेरे प्यारे मित्र मन ! हरि प्रभु से मिल कर ही भक्त जीवित रहते हैं जैसे कि जल से मिलकर मछली जीवित रहती है।

हरि पी आघाने अंम्रितबाने स्रब सुखा मन वुठे ॥

हरि नाम रूपी अमृत वाणी को पीकर वे तृप्त हो जाते हैं और उनके मन में सभी सुख आकर बस जाते हैं।

स्री धर पाए मंगल गाए इछ पुंनी सतिगुर तुठे ।।

सद्गुरु के प्रसन्न हो जाने पर शोभा को धारण करने वाले प्रभु की प्राप्ति होती है, सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं और मंगल गीत गाए जाते हैं।

लड़ि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ सरबसु ठाकुरि दीना ।।

जिन जीवों को गुरु ने प्रसन्न होकर अपने कृपा रूपी पल्ले से लगा लिया है उन्होंने नव निधियों को प्राप्त कर लिया है, क्योंकि ठाकुर प्रभु का नाम उन्हें देकर गुरु ने सर्वस्व दे दिया है।

नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ।।५।।१।।२।।

(श्री गुरु अर्जुनदेव) नानक जी कहते हैं कि श्रेष्ठ संत जनों ने यही शिक्षा समझाई है कि मन को हरि प्रभु की प्रेम भक्ति में लीन कर दो।

।५।।१।।२।।

□

सिरीरागु के छंत महला ५

१ओं सतिगुर प्रसादि ।।

डखणा ।। हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ।।
संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ।।१।।

छंतु।। चरन कमल सिउ प्रीति रीति संतन मनि आवए जीउ ।।
दुतीआ भाउ बिपरीति अनीति दासा नह भावए जीउ ।।
दासा नह भावए बिनु दरसावए इक खिनु धीरजु किउ करै ।।
नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ।।
मिलु मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साध संगि मिलि गावए ।।
नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अंकि समावए ।।१।।

□

श्री राग में गुरु अर्जुन देव जी महाराज के पांच डखणे और छन्द संकलित हैं, ये डखणे पंजाब के दक्षिणी क्षेत्र मुल्तान और साहीवाल की बोली में रचित हैं। इस बोली में 'द' के स्थान पर 'ड' का और 'स' के स्थान पर 'ह' का प्रयोग होता है। ये डखणे दोहा और सोरठा छन्द में रचित हैं। प्रारम्भ में डखणा दिया गया है और डखणा में दिए गये विचार का विस्तार आगे की छः पंक्तियों के छन्त (छन्द) में किया गया है।

□

हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ॥

मेरा पति परमात्मा मेरे हृदय के भीतर ही है मैं उसका दर्शन कैसे कर सकती हूँ ।

संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ॥१॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी कहते हैं, प्राणों का आधार वह प्रभु प्रियतम संतों की शरण में आने पर ही प्राप्त होता है ॥१॥

॥ छंतु ॥ चरन कमल सिउ प्रीति रीति संतन मनि आवए जीउ ॥

प्रभु जी के चरण कमलों से प्रेम करने की रीति (मर्यादा) सन्तों के मन में ही आती है (सन्त ही प्रभु से प्रेम करने की रीति जानते हैं)।

दुतीआ भाउ विपरीति अनीति दासा नह भावए जीउ ॥

द्वैत भाव प्रभु प्रेम के विपरीत भाव है (प्रेम के मार्ग की यह) अनीति प्रभु के दासों को अच्छी नहीं लगती ।

दासा नह भावए बिनु दरसावए इक खिनु धीरजु किउ करै ॥

प्रभु के दर्शन विना प्रभु के सेवकों को और कुछ भी अच्छा नहीं लगता (प्रभु के दर्शन बिना) एक क्षण का भी धैर्य वे कैसे (धारण) कर सकते हैं ।

नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ॥

प्रभु नाम के बिना प्रभु के दास तन और मन से हीन (मरे हुए के समान) हो जाते हैं जैसे कि मछली जल के बिना मृत्यु को प्राप्त हो जाती है ।

मिलु मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साध संगि मिलि गावए ॥

हे मेरे प्राणों के आधार प्रिय प्रभु जी ! कृपा करके मुझे मिलो (और दया करो कि) साधुओं की संगति में मिलकर मैं आपके गुणों का गायन कर सकूं ।

नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अंकि समावए ॥१॥

(गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कहते हैं) हे मेरे मालिक ! मेरे प्रति ऐसी कृपा भावना धारण करो (कि तुम्हारी भक्ति करते हुए) मेरा मन और तन तुम्हारी गोद (स्वरूप) में समा जाय ॥१॥

□

डखणा ॥ सोहंदड़ो हभ ठाइ कोइ न दिसै डूजड़ो ॥

खुल्हड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥१॥

छंतु ॥ तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारीऐ जीउ ॥

सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीऐ जीउ ॥

किउ मनहु बेसारीऐ निमख नही टारीऐ गुणवंत प्रान हमारे ॥

मन बांछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥
अनाथ के नाथे स्रब कै साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥
नानक की बेनंती प्रभ पहि क्रिपा करि भवजलु तारीऐ ॥२॥

□

डखणा ॥ सोहंदड़ो हभ ठाइ कोइ न दिसै डूजड़ो ॥

प्रभु सभी स्थानों पर शोभायमान हो रहा है। उस प्रभु के बिना और कोई दूसरा दिखाई नहीं देता।

खुल्हड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥१॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (का कथन है) सद्गुरु के मिलते ही भ्रम के द्वार खुल जाते हैं ॥१॥

छंतु ॥ तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारिऐ जीउ ॥

हे प्रभु! तुम्हारे शब्द अनुपम हैं और अनन्त हैं और सन्तों का आधार हैं और आपकी इस (अनुपम अनन्त) वाणी का सन्त जन विचार करते हैं।

सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीऐ जीउ ॥

हे प्रभु! सन्त जन पूर्ण विश्वास के साथ श्वास प्रश्वास आपका स्मरण करते हैं वे अपने मन से हे प्रभु! आपको कैसे भूल सकते हैं।

किउ मनहु बेसारीऐ निमख नही टारीऐ गुणवंत प्रान हमारे ॥

हे हमारे प्राण गुणों के भण्डार प्रभु! आपकी तो एक क्षण के लिए भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। आपको मन से क्योंकर (कैसे) भूला जा सकता है।

मन बांछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥

हे स्वामी प्रभु! आप मनोवांछित फल देते हैं और (भक्तो के) मन की व्यथा की सार लेते (दूर करते) हैं।

अनाथ के नाथे स्रब कै साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥

अनाथों के नाथ और सबके सदैव साथ रहने वाले प्रभु! आपका नाम जपे और इस (मानव) जन्म की बाजी को जूए में (विषय वासनाओं में) व्यर्थ न हार (गँवा) बैठे।

नानक की बेनंती प्रभ पहि क्रिपा करि भवजलु तारीऐ ॥२॥

(गुरु अर्जुन देव) नानक जी की प्रभु के पास यही विनम्र प्रार्थना है कि प्रभु कृपा करके इस संसार सागर से पार लगा दें ॥२॥

□

डखणा ॥ धूड़ी मजनु साध खे साई थीए क्रिपाल ॥
लधे हभे थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥१॥
छंतु ॥ सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लगि जीवते जीउ ॥
मनि तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अंमृतु पीवते जीउ ॥
अंम्रितु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनु फीका जानिआ ॥
भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥
सरब सो सूख आनंद धन पिआरे हरिरतनु मन अंतरि सीवते ॥
इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ॥३॥

□

डखणा ॥ धूड़ी मजनु साध खे साई थीए क्रिपाल ॥

जब मैंने साधुजनों की चरण धूलि में स्नान किया तो प्रभु स्वामी मुझ पर कृपालु हो गये ।

लधे हभे थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥१॥

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (का कथन है) हरि नाम रूपी धन सम्पत्ति के प्राप्त होते ही लगा कि संसार के सभी मूल्यवान पदार्थ खोज लिये हैं ॥१॥

छंतु ॥ सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लगि जीवते जीउ ॥

सुन्दर स्वामी प्रभु का घर (साधु संगति) ही भक्त जनों का विश्राम स्थल है और हे प्रभु ! आप को पाने की आशा के सहारे ही भक्त जन जीवित रहते हैं ।

मनि तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अंमृतु पीवते जीउ ॥

भक्त जन मन और तन से मग्न होकर प्रभु नाम का स्मरण करते हैं और हे प्रभु जी ! हरि नाम के अमृत को पीते हैं ।

अंम्रितु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनु फीका जानिआ ॥

हरि नाम के अमृत पीकर वे नित्य रूप से स्थिर अवस्था को प्राप्त करते हैं क्योंकि उन्होंने विषय वासनाओं के जल को फीका स्वादहीन जान लिया है ।

भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥

मेरे गोपाल प्रभु उन भक्तों पर कृपालु हो जाते हैं जिन्होंने साधु संगति को ही सबसे बड़ा खजाना मान लिया है ।

सरब सो सूख आनंद धन पिआरे हरि रतनु मन अंतरि सीवते ॥

प्रभु के वे प्यारे भक्त सभी सुखों को प्राप्त करते है और गहन आत्मिक

आनन्द की प्राप्ति करते हैं जो हरि नाम के रत्न को मन के अन्दर पिरो (संजो) कर रखते हैं।

इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ।।३।।

(श्री गुरु अर्जुन देव) नानक जी (कथन करते हैं) भक्तों को प्राणों का आधार प्रभु एक क्षण के लिए भी विस्मृत नहीं होता, वे प्रभु का नाम जप जप कर ही जीवित रहते हैं ।।३।।

□

डखणा ।। जो तउ कीने आपणे तिना कूं मिलिओहि ।।
आपे ही आपि मोहिओहु जसु नानक आपि सुणिओहि ।।१।।
छंतु ।। प्रेम ठगउरी पाइ रीझाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ।।
संतन कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ।।
हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण करि वसि भए ।।
मनि सरब सुख वठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ।।
सखी मंगलो गाइआ इछ पुजाइआ बहुड़ि न माइआ होहिआ ।।
करु गहि लीनें नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही पोहिआ ।।४।।

□

डखणा ।। जो तउ कीने आपणे तिना कूं मिलिओहि ।।

हे प्रभु ! जिन (जीवों) को तुमने अपना (दास) बना लिया है उनको ही आप मिले हो।

आपे ही आपि मोहिओहु जसु नानक आपि सुणिओहि ।।१।।

(श्री गुरु अर्जुनदेव) नानक जी कथन करते हैं कि आपने स्वयं ही जीवों को (अपने गुणों से) मोहित किया है और आप ही उनके मुख से अपना यश श्रवण करते हो ।।१।।

छंतु ।। प्रेम ठगउरी पाइ रीझाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ।।

(भक्तों) प्रेम रूपी ठगबूटी गोबिन्द प्रभु जी के सामने डालकर उसे रिझा कर (मदमस्त कर) गोबिन्द का मन मोह लेते हैं। (जैसे ठग जड़ी बूटियों से बेहोश करके लोगों को ठग लेता है वैसे भक्त प्रेम की बूटी के नशे से प्रभु को मोहित कर लेते हैं)।

संतन कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ।।

सन्तों की कृपा से भक्त जन प्रभु के कंठ से लग कर शोभित होते हैं।

हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण करि वसि भए ।।

सभी दोषों को देखते हुए भी प्रभु के लक्षण भक्त के वश में हो

जाते हैं (दोषों को देखते ही नहीं) और भक्त हरि प्रभु के कंठ से लगकर शोभा प्राप्त करता है ।

मनि सरब सुख वुठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ॥

गोबिन्द प्रभु के प्रसन्न होते ही मन में सभी प्रकार के सुखो का निवास हो गया और जन्म और मरण के सभो दुख मिट गये ।

सखी मंगलो गाइआ इछ पुजाइआ बहुड़ि न माइआ होहिआ ॥

साधु रूपी सखियों के साथ मिलकर मंगल गीत गाए गए सभी इच्छाएँ पूर्ण हो गई और माया का धक्का पुन: नहीं लगा ।

करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही पोहिआ ॥४॥

(श्री गुरु अर्जुनदेव) नानकजी (कथन करते हैं) प्यारे प्रभु ने (मन रूपी) हाथ को (कस कर) पकड़ लिया है अब संसार सागर स्पर्श नहीं कर सकता ॥४॥

□

डखणा ॥ साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥
जिना भाग मथाहि से नानक हरिरंगु माणदो ॥१॥
छंतु ॥ कहते पवित्र सुणते सभि धंनु लिखतीं कुलु तारिआ जीउ ॥
जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ॥
ब्रहमु बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी ॥
करु गहि लीने हरिजसो दीने जोनि न धावै नह मरी ॥
सतिगुर दइआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥
कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु वारिआ ॥५॥१॥३॥

□

डखणा ॥ साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥

प्रभु का नाम अमूल्य है उसकी कीमत कोई नहीं जानता ।

जिना भाग मथाहि से नानक हरिरंगु माणदो ॥१॥

(श्री गुरु अर्जुनदेव) नानक जी (कहते हैं) जिनके मस्तक पर भाग्य रेखा है वे ही हरि नाम के आनन्द का उपभोग करते हैं ॥१॥

छंतु ॥ कहते पवित्र सुणते सभि धंनु लिखतीं कुलु तारिआ जीउ ॥

प्रभु के नाम के महत्त्व को कहने वाले पवित्र हैं और सुनने वाले सभी धन्य हैं और जिन्होंने प्रभु के यश को लिखा है उन्होंने अपनी सारी कुल को तार (उद्धार कर) लिया है ।

जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ॥

जिनको साधुओं की संगति प्राप्त है और (उसमें बैठकर) हरि के नाम का आनन्द-सुख प्राप्त है वे ही ब्रह्म (की महानता) का विचार करते हैं।

ब्रहमु वीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी ॥

जिन्होंने ब्रह्म का विचार किया है उन्होंने अपना जन्म सँवार लिया है और उनके ऊपर प्रभु ने पूर्ण कृपा दृष्टि की है।

करु गहि लीने हरिजसो दीने जोनि न धावै नह मरी ॥

हरि प्रभु ने जिनके मन रूपी हाथ को पकड़ लिया है और जिन्हें हरि नाम का यश (गायन करने का सौभाग्य) दिया है वे फिर योनियों में नहीं दौड़ते (भटकते फिरते) और ना ही (बार बार) मरते हैं।

सतिगुर दइआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥

परम दयालु और कृपालु सद्गुरु से मिलकर जिन्होंने काम, क्रोध और लोभ को (अन्तःकरण से) मार कर (समाप्त कर) दिया है उनका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है।

कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु वारिआ ॥५॥१॥३॥

(श्री गुरु अर्जुनदेव) नानक जो (कथन करते हैं) अकथनीय स्वामी प्रभु का यश (शब्दों में) कहा नहीं जा सकता (केवल) बारम्बार न्यौछावर जाता हूं ॥५॥१॥३॥

□

सिरीरागु महला ४ वणजारा ॥

१ओं सतिनामु गुर प्रसादि ॥

हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥
हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥
सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥
जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥
जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥१॥
मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
हरि गुरसरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ ॥१॥रहाउ॥
संत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥
विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥
पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥
वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥
जन नानकि ब्रहमु पछाणिआ हरि कीरति करम कमाउ ॥२॥

मनि हरि हरि लगा चाउ ॥
　　गुरि पूरै नामु दृड़ाइआ हरि मिलिआ हरिप्रभ नाउ ॥१॥रहाउ॥
जबलगु जोबनि सासु है तबलगु नामु धिआइ ॥
　　चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाए ॥
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ ॥
　　जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अंति गए पछुताइ ॥
धुरि मसतकि हरिप्रभि लिखिआ जन नानक नामु धिआइ ॥३॥
　　मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥
वडभागी गुरु पाइआ गुरसबदी पारि लघाइ ॥१॥रहाउ॥
　　हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥
हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ॥
　　गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ॥
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते ॥
　　जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ॥४॥
मनि हरि हरि जपनु करे ॥
　　हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे
॥१॥रहाउ॥
घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ॥
　　गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥
मै धर नामु अधारु है हरिनामै ते गति मति ॥
　　मै हरि हरि नामु विसाहु है हरिनामे ही जति पति ॥
जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥५॥
　　हरि धिआवहु हरिप्रभु सति ॥
गुर बचनी हरिप्रभु जाणिआ सभ हरिप्रभु ते उतपति ॥१॥रहाउ॥
　　जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥
सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥
　　धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ॥
गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥
　　जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥६॥
हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥
　　मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरिनामु जिना रहरासि
॥१॥रहाउ॥१॥

□

'वणजारा' शीर्षक से संकलित इस शब्द में श्रीगुरु रामदास जी महाराज जीव को बंजारा बताते हुए अत्यन्त प्रेम पूर्ण मित्र भाव से समझा रहे हैं कि उसे हरि नाम का ही व्यापार करना चाहिए। समग्र सृष्टि के सर्जक हरि का नाम ही व्यापार के लिए सर्वोत्तम द्रव्य है। इस व्यापार में संलग्न जीव शाश्वत सुखों को प्राप्त करता है।

□

हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥

जिस हरि प्रभु ने सभी जीवों की रचना की है उस दुख हर्त्ता प्रभु का नाम ही सर्वोत्तम है।

हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥

हरि प्रभु सभी जीवों का पालन करता है और वही प्रभु प्रत्येक शरीर में रमण कर रहा है (व्याप्त है)।

सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥

उस हरि का सदैव ध्यान करना चाहिए, उसके बिना और कोई भी (ध्यान धरने योग्य) नहीं है।

जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥

जो जीव मोह वश माया से ही मन लगाए रखते हैं वे अन्त में माया को छोड़ जाते हैं और दुखी होकर रोते हैं।

जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥१॥

(गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु के जो सेवक हरिनाम में ही ध्यान लगाते हैं, हरि प्रभु अन्त में उनका सहायक होता है ॥१॥

मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥

मेरा हरि के बिना और कोई (सहारा) नहीं है।

हरि गुरसरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ ॥१॥रहाउ॥

हे बंजारे मित्र ! गुरु की शरण में जाने से ही हरि प्रभु की प्राप्ति होती है, परन्तु गुरु की शरण बड़े भाग्य से प्राप्त होती है ॥१॥रहाउ॥

संत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥

हे भाई ! सन्त जनों की शरण में गए बिना किसी ने भी हरिनाम को प्राप्त नहीं किया है।

विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥

अहंकार में डूबकर जीव जितने भी (दान यज्ञादि) कर्म करता है वे) सभी उसी तरह व्यर्थ और महत्वहीन हैं) जिस प्रकार वेश्या का पुत्र

(पिता के) नाम से हीन (कुलीन समाज में सम्मानहीन और शोभा हीन) होता है।

पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥

परमेश्वर पिता की जाति के तब होते हैं जब गुरु प्रसन्न होकर कृपा करे।

वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥

बड़े भाग्य से गुरु की प्राप्ति होती है और (जिसे प्राप्ति हो जाती है उसका) दिन रात हरि प्रभु से प्रेम लग जाता है।

जन नानकि ब्रहमु पछाणिआ हरि कीरति करम कमाउ ॥२॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) जिस दास ने हरि प्रभु के यश गायन के कर्मों की कमाई की है उसने ही ब्रह्म को पहचाना है ॥२॥

मनि हरि हरि लगा चाउ ॥

मन को हरि प्रभु का, हरि नाम जपने का चाव लग गया है।

गुरि पूरै नामु दृड़ाइआ हरि मिलिआ हरिप्रभ नाउ ॥१॥रहाउ॥

पूर्ण सद्गुरु ने प्रभु नाम के प्रति निश्चय दृढ़ कराया है और प्रभु के हरि नाम को जप कर हरि प्रभु से मिलन हुआ है ॥१॥रहाउ॥

जबलगु जोबनि सासु है तबलगु नामु धिआइ ॥

जब तक यौवन है और (जब तक) साँस (चल रहा) है तब तक हरि नाम को स्मरण करो।

चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाए ॥

इस संसार से चलते समय हरि का नाम ही तुम्हारे साथ चलेगा और अन्त में यमों के बन्धन से हरि प्रभु का नाम ही तुम्हें छुड़ा लेगा।

हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ ॥

मैं उन पर बलिहार जाता हूं जिनके मन में आकर हरि प्रभु बस गया है।

जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अंति गए पछुताइ ॥

जिन्होंने दुखहर्त्ता प्रभु के हरि नाम का स्मरण नहीं किया है वे अन्त में इस संसार से पछताते हुए गए हैं।

धुरि मसतकि हरिप्रभि लिखिआ जन नानक नामु धिआइ ॥३॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) जिनके मस्तक पर हरि प्रभु ने प्रारंभ से ही लिख दिया है प्रभु के वे दास ही प्रभु का नाम स्मरण करते हैं ॥३॥

मन हरि हरि प्रीति लगाइ ।।

हे मेरे मन ! दुखों का हरण करने वाले हरि प्रभु से प्रीति लगाओ।

वडभागी गुरु पाइआ गुरसबदी पारि लघाइ ।।१।।रहाउ।।

बड़े भाग्यवाला गुरु को प्राप्त करता है और गुरु का शब्द उपदेश उसे संसार सागर के पार लगा देता है ।।१।।रहाउ।

हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ।।

हरि प्रभु आप स्वयं ही जगत की उत्पत्ति करते हैं, हरि प्रभु आप ही जीवों को जीवन दान देता है और आप ही जीवन शक्ति ले भी लेते हैं।

हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ।।

हरि प्रभु आप हो जीवों को भ्रम में भुलावा देते हैं और हरि आप ही जोवों को सद्‌बुद्धि देते हैं।

गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीवों के मन में ज्ञान का प्रकाश होता है परन्तु ऐसे जीव कोई कोई विरले ही हैं।

हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते ।।

मैं उन पर बलिहार जाता हूं, जिन्हांने गुरु की शिक्षा पर चल कर हरि को प्राप्त किया है।

जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ।।४।।

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) दास का हृदय कमल विकसित हो गया है (क्योंकि) मन में दुख हर्त्ता हरि प्रभु आकर बस गया है ।।४।।

मनि हरि हरि जपनु करे ।।

हे मेरे मन ! दुखों का हरण करने वाले हरि प्रभु के नाम का जाप कर।

हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे ।।१।।रहाउ।।

हे जोव ! हरि प्रभु और गुरु की शरण में दौड़ कर जा पड़ो तुम्हारे सभी पाप और दुखों का निवारण हो जायगा ।।१।। रहाउ ।।

घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ।।

प्रत्येक जीव में रमण करने वाला प्रभु मन में ही बस रहा है परन्तु उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है और किस विधि से पाया जा सकता है।

गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ।।

महान् एवं पूर्ण सद्‌गुरु यदि मिल जाय तो हरि प्रभु मन और चित्त में आकर बस जाता है।

मै धर नामु अधारु है हरिनामै ते गति मति ॥

मुझे प्रभु के नाम का ही आश्रय है, सहारा है। हरि प्रभु का नाम ही मेरा मोक्ष है और प्रभु का नाम ही सद्‌बुद्धि है।

मै हरि हरि नामु विसाहु है हरिनामे ही जति पति ॥

मुझे हरि प्रभु के हरि नाम का ही विश्वास है और हरि प्रभु का नाम ही मेरे लिये प्रतिष्ठा प्राप्ति का (सर्वश्रेष्ठ) साधन है।

जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥५॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कहते हैं कि) दास ने स पूर्ण रंगों में रंगे हुए हरि प्रभु के नाम का स्मरण किया है और हरि प्रभु के नाम के रंग में रंगा गया है ॥५॥

हरि धिआवहु हरिप्रभु सति ॥

दुखों का हरण करने वाले सत्यस्वरूप प्रभु के हरि नाम का स्मरण करो।

गुर बचनी हरिप्रभु जाणिआ सभ हरिप्रभु ते उतपति ॥१॥रहाउ॥

गुरु के बचन (उपदेश) से ही उस हरि प्रभु को जाना जाता है। जिस दुख हर्त्ता प्रभु से सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है ॥१॥ रहाउ॥

जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥

जिनके भाग्य में आरम्भ से ही प्रभु द्वारा लिखा गया है वे ही गुरु के निकट आकर मिलते हैं।

सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥

हे बन्जारे मित्र ! (शिष्य में) सेवक भाव होने पर ही गुरु दुख हर्त्ता प्रभु के हरि नाम का प्रकाश देता है।

धनु धनु वणजु वापारिआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ॥

वह व्यापारी धन्य है और उसका व्यापार भी धन्य है जिसने जीवन रूपी पूंजी लगाकर हरि नाम के सौदे को लाद लिया है।

गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीवों के मुख प्रभु के द्वार पर (पहुँचते समय) उज्जवल होते हैं वे प्रभु के निकट आकर हरि प्रभु में मिल जाते हैं।

जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥६॥

(श्री गुरु रामदास नानक जी) (कथन करते हैं) उन दासों ने गुरु को प्राप्त किया है जिनपर आप गुणों का भण्डार प्रभु प्रसन्न होते हैं ॥६॥

हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥

(प्रत्येक) श्वांस (प्रत्येक) ग्रास पर हरि प्रभु का स्मरण करो।

मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरिनामु जिना रहरासि ॥१॥रहाउ॥१॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले उन जीवों के मन में प्रभु की प्रीति लगती है जिनके पास हरि नाम की पूँजी होती है ॥१॥ रहाउ॥ १॥

□

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीराग की वार महला ४ सलोका नालि ॥

सलोक म० ३ ॥ रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥
सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ॥
रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ॥
जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ॥
नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु ॥१॥
म० ३ ॥ होरु बिरहा सभ धातु है जबलगु साहिब प्रीति न होइ ॥
इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ॥
सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अंधा किआ करेइ ॥
नानक जिनि अखी लीतीआ सोई सचा देइ ॥२॥
पउड़ी ॥ हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥
हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ॥
हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ॥
हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ॥
हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ॥१॥

□

श्री राग की इस वार में २१ पडड़ो (पद) और ४३ श्लोक हैं जो दोहा चौपाई शैली में रचित हैं। साधारणतः दोहा चौपाई शैली में चौपाई के साथ एक ही श्लोक होता है किन्तु यहां प्रत्येक पद के साथ दो दो श्लोक हैं और १४वीं पडड़ी के साथ तीन श्लोक हैं। पद अथवा पडड़ी श्री गुरु रामदास जी द्वारा रचित है परन्तु श्लोक अन्य सद्गुरु साहिबान के हैं। वार पंजाबी लोक गीत शैली का एक रूप है। साधारणतः वार ओजस्वी एवं वीर रसात्मक रचना होती है जिसके द्वारा किसी वोर योद्धा की प्रशस्ति गाई जाती है। यहां ओजस्वो शैली में प्रभु का यश गायन किया गया है और जोव को सर्वशक्तिमान प्रभु का नाम स्मरण करने की प्रेरणा दी गई है।

□

सलोक म० ३ ।। रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ।।

रागों में श्रीराग तभी सर्वोत्तम है जब उसे गाने वाला हृदय में सत्य स्वरूप प्रभु का प्रेम धारण करता हो ।

सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ।।

सदैव सत्यस्वरूप हरि प्रभु मन में बसने से अनन्त प्रभु का ध्यान करने वाली बुद्धि स्थिर हो जाती है ।

रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ।।

गुरु द्वारा दिए गए शब्द उपदेश पर विचार करने से प्रभु नाम के अमूल्य रत्न की प्राप्ति होती है ।

जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ।।

प्रभु का यश गायन करने वाले की जिह्वा पवित्र हो जाती है, उसका मन पवित्र हो जाता है और शरीर की बनावट भी पवित्र हो जाती है ।

नानक सचै सतिगुरि सेवीऐ सदा सचु वापारु ।।१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) सच्चे सद्गुरु की सेवा करने से सदैव जीव सत्य कर्मों के व्यापार में ही लगता है ।।१।।

म० ३ ।। होरु बिरहा सभ धातु है जबलगु साहिब प्रीति न होइ ।।

जबतक साहिब प्रभु से प्रीति नहीं होती तब तक अन्य वस्तुओं से किया गया प्यार सब माया से किया गया मिथ्या प्रेम है ।

इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ।।

माया द्वारा मोहित हुआ यह मन न तो प्रभु को देखता है और न ही उससे प्रभु का यश सुनना होता है ।

सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अंधा किआ करेइ ।।

माया द्वारा मोहित मन प्रभु को देखता नहीं है और प्रभु पति को देखे बिना प्रभु पति के लिए मन में प्रीति उत्पन्न नहीं होतो ऐसी अवस्था में अज्ञान से अन्धा मनुष्य क्या करे ।

नानक जिनि अखी लीतिआ सोई सचा देइ ।।२।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जो (कथन करते हैं) जिस प्रभु ने जीव को मोह माया में फंसा कर उसकी ज्ञान दृष्टि वालो आंखें ले ली हैं वही सत्यस्वरूप प्रभु दिव्य चक्षु दे सकता है ।।२।।

पउड़ी ।। हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ।।

हरि प्रभु ही एक मात्र (जगत का) कर्त्ता है और हरि प्रभु एक अकेला (सारे जगत का) सहारा है ।

हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ।।

एक मात्र हरि का ही हुक्म (सारे जगत पर) चलता है इसलिए उस एक हरि प्रभु को ही मन में धारण करो।

हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ।।

उस हरि प्रभु के बिना (जीव का सहायक) और कोई नहीं है इसलिए (उसकी शरण में आकर) यमों का डर माया का भ्रम और मृत्यु का भय दूर करो।

हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ।।

उस हरि प्रभु की ही प्रशस्ति करो जो तुम्हारी घर और बाहर (दोनों स्थानों पर) रक्षा करता है।

हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ।।१।।

हरि प्रभु जिस पर दयालु होता है वह हरि नाम का जाप करता है और प्रभु नाम का स्मरण करते हुए भयानक संसार सागर से तर जाता है ।।१।।

□

सलोक म० १ ।। दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ।।
इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ।।१।।
म० १ ।। सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकां ।।
दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ।।२।।
पउड़ी ।। सभ आपे तुधु उपाइ कै आपि कारै लाई ।।
तूं आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ।।
हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूं सचा साई ।।
तूं आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ।।
हरि तिसै धिआवहु संत जनहु जो लए छडाई ।।२।।

□

सलोक म० १ ।। दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ।।

जीवों को दी जाने वाली सभी प्रकार की वस्तुएँ मालिक प्रभु के पास ही हैं। उस मालिक के साथ किसी का भो क्या वश चल सकता है (कि फलां को दी है मुझे क्यों नहीं दी)।

इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ।।१।।

कुछ लोग जागते हुए भो ईश्वरीय दान को नहीं लेते और कुछ सोये हुओं को स्वयं उठा कर प्रभु वस्तुएं दान में देता है ।।१।।

म० १ ।। सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकां ।।

प्रभु के भक्तों में विश्वास और सन्तोष होना चाहिये और ज्ञानवान जिज्ञासुओं के पास धैर्य की पूँजी होनो चाहिए।

दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥२॥

(ऐसे जिज्ञासु) पूर्ण परमात्मा के दर्शन प्राप्त करते हैं और अज्ञानी को प्रभु के दरबार में कोई स्थान (निजस्वरूप) प्राप्त नहीं होता ॥२॥

पउड़ी ॥ सभ आपे तुधु उपाइ कै आपि कारै लाई ॥

हे प्रभु ! समस्त सृष्टि को आपने ही उत्पन्न किया है और आप ही उन्हें कामों में लगाते हो।

तूं आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ॥

हे प्रभु ! तुम आप ही अपने बड़प्पन को देखकर प्रसन्न होते हो।

हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूं सचा साई ॥

हे प्रभु ! तुम ही सारे संसार के एक मात्र सच्चे मालिक हो, तुम से बाहर (तुम से अलग) कुछ भी नहीं है (किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं है)।

तूं आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ॥

समस्त स्थानों पर तुम स्वयं ही व्यापक हो रहे हो।

हरि तिसै धिआवहु संत जनहु जो लए छडाई ॥२॥

हे सन्तो उस ! हरि प्रभु का ध्यान करो जो अपने दासों को (माया के बन्धनों से) छुड़ा लेता है।

□

सलोक म० १ ॥ फकड़ जाती फकड़ नाउ ॥
सभना जीआ इका छाउ ॥
आपहु जे को भला कहाए ॥
नानक तापरु जापै जा पति लेखै पाइ ॥१॥
म० २ ॥ जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥
ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥२॥
पउड़ी ॥ तुधु आपे धरती साजीऐ चंदु सूरजु दुइ दीवे ॥
दसचारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ॥
इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ॥
तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अंम्रितु पीवे ॥
ओइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥३॥

□

सलोक म० १ ॥ फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥ सभना जीआ इका छाउ ॥

जाति का अभिमान व्यर्थ है और नाम की प्रसिद्धि का अहंकार भी व्यर्थ है। सभी जीवों में एक ही परमात्मा छाया हुआ है।

आपहु जे को भला कहाए ।। नानक तापरु जापै जा पति लेखै पाइ ।।१।।

यदि कोई अपने आप को अच्छा कहलवाता है (तो वह अच्छा नहीं हो जाता)। (श्री गुरु देव) नानक जी (कथन करते हैं) अच्छा तो तब जाना जायेगा जब उसकी प्रतिष्ठा (प्रभु के दरवार में होने वाले) हिसाब में स्वीकार की जायेगी ।।१।।

म० २।। जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ।।

(यह श्लोक श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा रचित है। प्रचलित विचार है कि श्री गुरु नानक देव जी के ब्रह्म ज्योति में विलीन हो जाने के बाद श्री गुरु अंगद देव जी ने वियोग से व्याकुल होकर इस श्लोक के माध्यम से कहा कि 'जिस प्रियतम से प्रेम हो उसके शरीर त्यागने से पहले ही मर जाना चाहिए' किन्तु गुरुवाणी सनातन सत्य की अभिव्यक्ति है, मानवता की मार्ग दर्शक है। गुरु बाणी में कोई ऐसा विचार नहीं दिया गया है जो व्यवहारिक जीवन में असंभव हो अत: इसका अर्थ इस प्रकार है)।

जिस प्रियतम से प्रेम हो उसके सामने मर कर चलना चाहिए (अर्थात् जाति और बड़प्पन के अहंकार को मार कर उसके सामने आना चाहिए)।

धिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ।।२।।

उसके पीछे रहकर (प्रियतम प्रभु से विमुख होकर) संसार में जीए गए जीवन को धिक्कार है।

पउड़ी ।। तुधु आपे धरती साजीऐ चंदु सूरजु दुइ दीवे ।।

हे प्रभु ! तुमने आप ही पृथ्वी (आदि भौतिक द्रव्यों) को बनाया है और (आप ही इन्हें प्रकाशित करने के लिये) चन्द्रमा और सूर्य दो दीपक बनाये हैं।

दसचारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ।।

दस और चार (चौदह) भुवनों को तुमने ही हाट की तरह सजाया है जिसमें जीव अनेक प्रकार के कर्म व्यापार करता है।

इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ।।

जो जीव गुरु के सम्मुख होकर रहता है उनको हरि प्रभु (जीवन व्यापार में) लाभ देता है। (उनका जीवन सार्थक कर देता है)।

तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अंम्रितु पीवे ।।

जिन्होंने सदा स्थिर रहने वाला नाम अमृत पीया है उन्हें यमकाल व्याप्त नहीं होता (स्पर्श नहीं करता)।

ओइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥३॥

वे स्वयं तो परिवार सहित यमराज के बन्धन से छूट ही जाते हैं, उनके पीछे चलकर (उनके आदर्शों पर चल कर) सारा संसार (यम के बन्धनों से) छूट जाता है ॥३॥

□

सलोक म० १॥ कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥

वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥

कुदरति है कीमति नही पाइ ॥

जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥

सरै सरीअति करहि बीचारु ॥

बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥

सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥

जिहि धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥१॥ म० ३ ॥

गुरसभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥

नानक सतिगुरु तां मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥२॥

पउड़ी ॥ सपत दीप सपत सागरा नव खंड चारि वेद दसअसट पुराणा ॥

हरि सभना विचि तूं वरतदा हरि सभना भाणा ॥

सभि तुझै धिआवहि जीअ जंत हरि सारगपाणा ॥

जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥

तूं आपे आपि वरतदा करि चोज विडाणा ॥४॥

□

कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥

इस सारी सृष्टि की रचना करके प्रभु आप इसमें निवास करता है।

वखतु बीचारे सु बंदा होइ ॥

जो मनुष्य समय का विचार करता है (कि यह मानव जीवन बार-बार नहीं मिलता इसका सदुपयोग करना चाहिये) वह प्रभु का सेवक हो जाता है।

कुदरति है कीमति नही पाइ ॥

प्रभु इसी सृष्टि में प्रत्यक्ष व्याप्त है परन्तु उसकी शक्ति का अन्त नहीं पाया जा सकता।

जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥

यदि प्रभु की शक्ति का अन्त कोई प्राप्त कर भी ले तो उससे इसका वर्णन नहीं किया जा सकता ।

सरै सरीअति करहि बीचारु ॥ बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥

यदि कोई धार्मिक विधि विधान और धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर प्रभु की शक्ति पर विचार करता है तो वह प्रभु को बिना समझे उसका पार (उसकी शक्ति का अन्त) कैसे पा सकता है ।

सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥

प्रभु में दढ़ आस्था रखो, उसकी शक्ति के सामने (श्रद्धा से) सिर झुकाओ, उसी पर पूर्ण विश्वास रखो और (इसी आस्था, विश्वास और श्रद्धा को) जीवन का लक्ष्य बनाओ ।

जिहि धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥१॥

फिर देखो जिस ओर भी तुम दृष्टि घुमाओगे उसी ओर वह प्रभु प्रत्यक्ष दिखेगा ॥१॥

म० ३ ॥ गुरसभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥

निश्चय ही गुरु की संगति इस प्रकार प्राप्त नहीं होती, (शरीर से) न तो गुरु के निकट रहने से और न ही गुरु से दूर रहने में ।

नानक सतिगुरु तां मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥२॥

(गुरु अमरदास) नानक जी (कहते हैं) सद्गुरु तब मिलता है जब जिज्ञासु का मन सद्गुरु के हुजूर (निकट) उपस्थित रहे ॥२॥

पउड़ी ॥ सपत दीप सपत सागरा नव खंड चारि वेद दसअसट पुराणा ॥

जम्बू आदि सप्तद्वीप, सात सागर, पृथ्वी के नौ खण्ड, चार वेद और भागवत आदि दस और आठ (अट्ठारह) पुराण ।

हरि सभना विचि तूं वरतदा हरि सभना भाणा ॥

हे हरि ! इन सभी में तुम व्याप्त हो और हे हरि इन सबको तुम अच्छे लगते हो ।

सभि तुझै धिआवहि जीअ जंत हरि सारगपाणा ॥

हे दुख हर्त्ता सारंगपाणि ! सभी जीव जन्तु तुम्हारा ही ध्यान करते हैं ।

जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥

जो जीव गुरु के सम्मुख होकर (गुरु की शरण में आकर) हरि प्रभु की अराधना करते हैं मैं उन पर कुर्बान जाता हूं ।

तूं आपे आपि वरतदा करि चोज विडाणा ।।४।।

आश्चर्य जनक कौतुक करते हुए हे प्रभु ! तुम स्वयं ही सब में व्यापक हो रहे हो ।।४।।

□

सलोक म० ३ ।। कलउ मसाजनी किआ सदाईऐ हिरदै ही लिखि लेहु ।।
सदा साहिब कै रंगि रहै कबहूं न तूटसि नेहु ।।
कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ।।
नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोडी सचै पाइ ।।१।।
म० ३ ।। नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ ।।
सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ।।
नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ।।२।।
पउड़ी ।। हरि अंदरि बाहरि इकु तूं तूं जाणहि भेतु ।।
जो कीचै सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ।।
सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ।।
तूं सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु ।।
जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेनु ।।५।।

□

सलोक म० ३ ।। कलउ मसाजनी किआ सदाईऐ हिरदै ही लिखि लेहु ।।

(गुरु का उपदेश लिखने के लिए) कलम और दवात मंगाने की क्या जरूरत है (गुरु के उपदेश को) हृदय में ही लिख लो।

सदा साहिब कै रंगि रहै कबहूं न तूटसि नेहु ।।

सदैव प्रभु मालिक के प्रेम रंग में रंगा रहे तो प्रभु के प्रति प्रेम कभी भी नहीं टूटेगा ।

कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ।।

कलम और दवात (तो नष्ट हो) जायगी और उसके साथ ही साथ लिखा हुआ (भी नष्ट हो) जायगा ।

नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोडी सचै पाइ ।।१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु पति के साथ किया गया प्रेम कभी नष्ट नहीं होगा, जो प्रेम सत्य स्वरूप प्रभु ने प्रारम्भ से ही जीव के हृदय में (बीजरूप से) छोड़ दिया है ।।१।।

म० ३ ।। नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ ।।

जो कुछ भी दृष्टि में आता है (दिखाई देता है वह) जीव के साथ नहीं चलता। कोई भी मनुष्य इसका निर्णय करके देख ले।

सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ॥

सद्गुरु ने सत्य को दृढ़ कराया है इसलिए सत्य में ही चित्तवृत्ति लगाए रहो ।

नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ॥२॥

(श्री गुरु अमर दास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरु के शब्द उपदेश ही सत्य है, जीव अपने कर्मों के अनुसार ही इसे हृदय रूपी पल्ले में प्राप्त करता है ॥२॥

पउड़ी ॥ हरि अंदरि बाहरि इकु तूं तूं जाणहि भेतु ॥

हे प्रभु ! एकमात्र तुम ही सृष्टि के अन्दर और बाहर व्याप्त हो और जीवों के हृदय के भेद तुम ही जानते हो ।

जो कीचै सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ॥

हम जो कुछ भी करते हैं उसे हरि प्रभु जानता है । इसलिए हे मेरे मन ! हरि प्रभु का स्मरण करो ।

सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥

जो जीव पाप कर्म करता है वही डरता रहता है धर्मात्मा पुरुष सदैव प्रसन्न चित्त रहते हैं ।

तूं सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु ॥

हे प्रभु ! आप सत्यस्वरूप हैं आपका न्याय भी सत्य है फिर डरें किस लिए ।

जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेतु ॥५॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) जो सत्य स्वरूप प्रभु को पहचान लेते हैं वे सत्यस्वरूप प्रभु में अभेद हो जाते हैं ॥५॥

□

सलोक म० ३ ॥ कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलि जाउ ॥
लिखण वाला जलि बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ॥
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥१॥
म० ३ ॥ होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु ॥
नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होइ खुआरु ॥२॥
पउड़ी ॥ हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥
हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धरम का ॥
हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ॥
हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥
हरि की वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥६॥

सलोक म० ३ ।। कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलि जाउ ।।

कलम दवात सहित जल (नष्ट हो) जाय और कागज भी जल जाय ।

लिखण वाला जलि बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ।।

वह लिखने वाला भी जल फुंक जाय जिसने द्वैत भाव की बातें लिखो हैं ।

नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ।।१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जो (कथन करते हैं) प्रारंभ से हो लिखे गए कर्मों के अनुसार ही कर्मों की कमाई की जातो है, अन्य दूसरे प्रकार से कर्मों की कमाई नहीं की जाती ।।१।।

म० ३ ।। होरु कूड़ पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु ।।

माया से प्रेम करते हुए प्रभु की स्तुति से अलग जो कुछ भी और पढ़ा जाता है, झूठ है और जो कुछ भी बोला जाता है सब झूठ है (मिथ्या है) ।

नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होइ खुआरु ।।२।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) नाम के बिना कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है (प्रभु भक्ति से हीन अन्य ग्रन्थों को) पढ़ पढ़ कर लोग खराब हो रहे हैं ।।२।।

पउड़ी ।। हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ।।

हरि प्रभु का यश सबसे बड़ा है (विशाल है) हरि प्रभु के नाम का कीर्तन दुखों का नाश करने वाला है ।

हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धरम का ।।

हरि प्रभु का यश सबसे महान है जबकि (क्योंकि) वह धर्म का न्याय कर्त्ता है ।

हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ।।

हरि प्रभु का यश सबसे महान है जबकि इस यश का गायन करना जीवन का सर्वोत्तम फल है (जीवन का सार्थक उपयोग है) ।

हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ।।

हरि प्रभु का यश सबसे महान है जबकि वह चुगलों की कही हुई बातों को नहीं सुनता है ।

हरि की वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ।।६।।

हरि प्रभु का यश सबसे महान है क्योंकि वह बिना किसी से पूछे जीवों को दान देता है ।।६।।

□

सलोक म० ३ ।। हउ हउ करती सभ मुई संपउ किसै न नालि ।।
दूजै भाइ दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि ।।
नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ।।१।।
म० १ ।। गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ।।
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ।।
रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ।।
नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलिआह ।।
होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ।।
नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ।।२।।
पउड़ी ।। तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ।।
तूं आपे जालु बताइदा आपे विचि सेबालु ।।
तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ।।
तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ।।
हरि तुधहु बाहरि किछु नही गुरसबदी वेखि निहालु ।।७।।

□

सलोक म० ३।। हउ हउ करती सभ मुई संपउ किसै न नालि ।।

मेरी मेरी करती हुई यह संपूर्ण सृष्टि सम्पत्ति की खातिर मरती जा रही है परन्तु यह सम्पत्ति किसी के भी साथ नहीं जाती ।

दूजै भाइ दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि ।।

द्वैत भाव के कारण (धन के मोह के कारण) सबने दुख प्राप्त किया है क्योंकि ऐसे सभी प्राणियों को यमकाल देखता रहता है ।

नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ।।१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं कि) गुरु के सम्मुख रहने वाला सत्यस्वरूप प्रभु के नाम का स्मरण कर (यमराज के बंधनों से) छूट जाता है ।।१।।

म० १ ।। गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ।।

बातों में तो हम अच्छे हैं परन्तु आचरण से बुरे हैं ।

मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ।।

मन से अशुद्ध और काली है परन्तु बाहर से स्वच्छ (सफेद) है ।

रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ।।

उन जीव स्त्रियों की हम बराबरी करती हैं जो स्थिरभाव से प्रभ के द्वार की सेवा करती हैं ।

नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥

जो जीवस्त्रियां प्रभु मालिक के प्रेम में रंगी हुई हैं वे संयोग के सुख का आनन्द उपभोग करती हैं।

होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥

बल होते हुए भी वे बलहीन हैं और मानहीन होकर रहती हैं।

नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥२॥

श्री गुरु नानक जी कथन करते हैं कि उन जीवों का जन्म सार्थक है जो उनके (जिज्ञासु जीव स्त्रियों के) साथ मिलते हैं ॥२॥

पउड़ी ॥ तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ॥

हे प्रभु तुम स्वयं ही जल हो स्वयं ही मछली हो और तुम आप ही मछली को पकड़ने वाला जाल हो।

तूं आपे जालु वताइदा आपे विचि सेबालु ॥

हे प्रभु ! तुम आप ही जाल को फैलाने वाले हो और आप ही पानी में उत्पन्न होने वाली शैवाल (हरियाली) हो।

तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ॥

हे प्रभु ! तुम आप ही सैकड़ों हाथ गहरे पानी में विकसित होने वाले सुन्दर (लाल) कमल की भांति (इस संसार में व्याप्त होते हुए भी जलरूप सृष्टि से) निस्संग (निर्लिप्त) हो।

तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥

एक निमिष या एक घड़ी मात्र भी जो तुम्हारा ध्यान करता है, हे प्रभु ! तुम आप ही उसे मुक्त (जन्ममरण के बन्धन से मुक्ति) करा देते हो।

हरि तुधहु बाहरि किछु नही गुरसबदी वेखि निहालु ॥७॥

हे हरि ! तुमसे बाहर (तुमसे भिन्न) कुछ नहीं है (किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं है) गुरु के शब्द उपदेश द्वारा तुम्हारे दर्शन करके जीव आनन्दित होता है ॥७॥

□

सलोक म० ३ ॥ हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥
अंदरि धोखा नीद न सोवै ॥
जे धन खसमै चलै रजाई ॥
दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥
नानक करमी इह मति पाई ॥
गुर परसादी सचि समाई ॥१॥

म० ३ ।। मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसुंभा देखि न भुलु ।।
इस का रंगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ।।
दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ।।
बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ।।
नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ।।
भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ ।।२।।
पउड़ी ।। सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु संबाहिआ ।।
इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ।।
तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कंमि ओइ लाइआ ।।
इकना सचु बुलाइओनु तिना अतुट भडार देवाइआ ।।
हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ।।८।।

□

सलोक म० ३ ।। हुकमु न जाणै बहुता रोवै ।। अंदरि धोखा नीद न सोवै ।।

जीव स्त्री प्रभु स्वामी के हुक्म को नहीं जानती इसलिए बहुत रोती है । (दुखी होती है) । उसके मन में संशय है इसलिए चैन की नींद नहीं सोती ।

जे धन खसमै चलै रजाई ।। दरि घरि सोभा महलि बुलाई ।।

यदि जीव रूपी स्त्री पति परमात्मा की रजा (आज्ञा) में चले तो पति प्रभु उसे अपने महल में बुला लेता है और वह जीव स्त्री प्रभु के घर द्वार पर शोभायमान होती है ।

नानक करमी इह मति पाई ।। गुर परसादी सचि समाई ।।१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) शुभ कर्म करने वालों ने ही ऐसी बुद्धि प्राप्त की है । गुरु की कृपा से वे परमसत्य में अभेद हो जाते हैं ।।१।।

म० ३ ।। मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसुंभा देखि न भुलु ।।

हे नाम से हीन मनमुख जीव (साँसारिक पदार्थों के) कुसुम्भ के (अग्नि शिखा पुष्प के भड़कीले परन्तु शीघ्र नष्ट हो जाने वाले) रंग को देख कर मत भूलो (भटको) ।

इस का रंगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ।।

इन सांसारिक पदार्थों) का रंग (आनन्द) थोड़े हो दिनों का होता है और इनका मूल्य तुच्छ है (अथवा इनकी जड़ ऊपरी है गहरी नहीं, अत: विनाशशोल है) ।

दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ।।

मूर्ख अज्ञानान्ध और मूढ़मति जीव प्रभु को छोड़ इन दूसरे पदार्थों के संचय में ही लगे रहते हैं और दुखी होकर मरते हैं ।

बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ।।

गन्दगी के अन्दर रहने वाले कीड़े की भांति वे बारम्बार जन्म मरण के चक्र में पड़कर दुखी होते हैं ।

नानक नाम रते सें रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरु से श्रेष्ठ प्रेम रखने वाले जीव प्रभु के नाम में रंगे जाते हैं और स्थिर अवस्था को प्राप्त कर (नित्य) आनन्द की प्राप्ति करते हैं ।

भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ ।।२।।

(ऐसे जीवों का) भक्ति का रंग उतरता ही नहीं है वे स्वाभाविक रूप से ही भक्ति के आनन्द में समाये रहते हैं ।।२।।

पउड़ी ।। सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु संबाहिआ ।।

हे प्रभु ! तुमने आप ही यह सारी सृष्टि उत्पन्न की है और तुम आप ही सबको जीविका (के साधन) पहुँचाते हो ।

इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ।।

एक ऐसे प्राणी है कि छल कपट करके खाते हैं और वे अपने मुख से झूठ और मिथ्या वाणी गिराते रहते हैं ।

तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कंमि ओइ लाइआ ।।

हे प्रभु ! जो तुम्हें अच्छा लगता है वे वही करते हैं तुमने आप ही तो उन्हें इस काम में लगाया है ।

इकना सचु बुझाइओनु तिना अतुट भंडार देवाइआ ।।

एक ऐसे प्राणी है कि जिन्हें आपने हे प्रभु ! सत्य को पहचानने की सूझ बूझ दी है और उन्हें गुरु के द्वारा प्रभु नाम का अटूट भण्डार दिलवाया है ।

हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ।।८।।

जो जीव हरि प्रभु को स्मरण करते हैं उनका खाना पीना सार्थक है जो जीव प्रभु को याद नहीं करते वे हाथ फैला कर मांगते ही रहते हैं ।

□

सलोक म० ३ ।। पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ।।
दूजै भाइ हरिनामु बिसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ।।
जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु संबाहि ।।
जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ।।

मनमुखि किछू न सूझै अंधुलें पूरबि लिखिआ कमाइ ॥
पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुख दाता नामु बसै मनि आइ ॥
सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि विहाइ ॥
नानक सो नाउ मनहु न बिसारीऐ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥१॥
म० ३ ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥
गुरमती आपु पछाणिआ रामनाम परगासु ॥
सचो सचु कमावणा वडिआई वडे पासि ॥
जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥
सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥
जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै ध्रिगु जीवासु ॥
गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु ॥
जिउ भावै तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु ॥२॥
पउड़ी ॥ सभु को तेरा तूं सभसु दा तूं सभना रासि ॥
सभि तुधै पासहु मंगदे नित करि अरदासि ॥
जिसु तूं देहि तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ॥
तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मंगीऐ मनि पेखहु को निरजासि ॥
सभि तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ॥६॥

□

सलोक म० ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥

माया के मोह और (धन पदार्थों की प्राप्ति के) स्वार्थ से ही पंडित जन वेदों का पढ़ पढ़ कर वर्णन करते हैं।

दूजै भाइ हरिनामु बिसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥

(प्रभु के नाम से भिन्न) दूसरी वस्तुओं से प्रेम करके जिन्होंने हरि प्रभु के नाम को मन से भुला दिया है उन मूर्ख प्राणियों को प्रभु दरबार में सजा मिलती है।

जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु संबाहि ॥

जिस प्रभु ने यह जोव और शरीर दिया है और जो प्रभु सदा सर्वदा सब को भोजनादि पहुंचाता है उस परम कृपालु प्रभु को यह जोव कभी भी स्मरण नहीं करता।

जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ॥

यमराज का बंधन उनके गले में से कभी भी काटा नहीं जाता और वे फिर फिर (आवागमन के चक्र में) आते हैं और जाते हैं।

मनमुखि किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥

मन के पीछे चलने वाले प्राणी कुछ भी नहीं समझते और वे अज्ञान से अन्धे प्राणी पूर्व जन्म के लिखे अनुसार ही कर्मों की कमाई करते हैं।

पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुख दाता नामु बसै मनि आइ ॥

पूर्ण भाग्य से जब सद्गुरु मिलते हैं तो सुखों के दाता प्रभु का नाम मन में आकर बस जाता है।

सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि विहाइ ॥

(और तब जीव) हरि नाम के सुख का ही उपभोग करता हरिनाम के सुख को ही पहनता है और सुख ही सुख में विचरण करता है।

नानक सो नाउ मनहु न विसारीऐ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥१॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) उस नाम को मन से कभी भी नहीं भुलाना जिस नाम स्मरण के कारण सत्यस्वरूप प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त होती है ॥१॥

म० ३ ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥

सद्गुरु की सेवा करने से गुणों के भंडार सत्यस्वरूप प्रभु के नाम को जपने का सुख प्राप्त होता है।

गुरमती आपु पछाणिआ रामनाम परगासु ॥

गुरु की शिक्षा द्वारा ही अपने (स्वस्वरूप) को पहचाना जाता है और (अन्तरात्मा) में राम नाम का प्रकाश होता है।

सचो सचु कमावणा वडिआई वडे पासि ॥

(और तब सत्यमार्ग पर चलते हुए) सच्चे पुरुष केवल सत्य कर्मों की ही कमाई करते हैं और महान प्रभु के निकट उनकी बढ़ाई होती है।

जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥

यह जीव यह शरीर और बाकी सभी वस्तुएँ उसकी ही (दी हुई) है (ऐसा मानकर वह) उस प्रभु की सराहना करता है और उस प्रभु के सामने विनम्र प्रार्थना करता है।

सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥

(गुरु के) शब्द (उपदेश) द्वारा वह सत्य स्वरूप प्रभु को सराहना करता है और (वह प्रतिपल) सुख एवं आनन्द में निवास करता है।

जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै ध्रिगु जीवासु ॥

मन में प्रभु नाम का निवास होना ही सबसे बड़ा जप तप और संयम है प्रभु नाम स्मरण के बिना जीवन को धिक्कार है।

गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु ।।

गुरु की शिक्षा पर चलने वाले प्रभु नाम को प्राप्ति करते हैं और मन के पीछे चलने वाले (सांसारिक पदार्थों के) मोह के कारण विनाश को प्राप्त होते हैं।

जिउ भावै तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु ।।२।।

हे प्रभु ! तुम्हें जैसा उचित लगे वैसे ही मेरी रक्षा करो। नानक तुम्हारा ही सेवक है ।।२।।

पउड़ी ।। सभु को तेरा तूं सभसु दा तूं सभना रासि ।।

हे प्रभु ! सब कोई तुम्हारे हैं और तुम सबके हो और तुम्हीं सबके (सबसे बड़े) खजाने हो (जहाँ से तमाम जरूरतें पूरी होती हैं)।

सभि तुधै पासहु मंगदे नित करि अरदासि ।।

सभी जीव तुम्हारे पास से ही वस्तुएँ मांगते हैं और (अपनी इच्छा पूर्त्ति के लिए) नित्य तुम्हारे सामने ही प्रार्थनाएँ करते हैं।

जिसु तूं देहि तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ।।

हे प्रभु ! जिसे तुम देते हो उसे सब कुछ मिल जाता है। परन्तु एकाध जीव ऐसे भी है जिनके तुम पास होते हुए भी दूर हो (क्योंकि वे तुम्हारी कृपा से वंचित हैं)।

तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मंगीऐ मनि पेखहु को निरजासि ।।

हे प्रभु ! तुम्हारे बिना और कोई भी ऐसा ठिकाना नहीं है जिसके पास से वस्तुएँ मांगी जा सकें। बेशक कोई भी व्यक्ति मन से निर्णय करके (परख कर) देख लें।

सभि तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ।।९।।

सभी जीव तुम्हारी ही सराहना करते हैं। हे प्रभु ! गुरु के सम्मुख रहने वाले जीवों को तुम्हारे ही द्वार से ज्ञान का प्रकाश मिलता है ।।९।।

□

सलोक म० ३ ।। पंडितु पड़ि पड़ि ऊचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु ।।
अंतरि ब्रहमु न चीनई मनि मूरखु गावारु ।।
दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ।।
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमै वारो वार ।।१।।
म० ३ ।। जिनी सतिगुर सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ।।
सदा सांति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार ।।
आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुरसबदी बीचारु ।।
नानक सबदि रते से मुकतु है हरि जीउ हेति पिआरु ।।२।।

पउड़ी ।। हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ।।
जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरिनामु धिआइ ।।
गुरसबदी हरि पाईऐ हरि पारि लघाइ ।।
मनहठि किनै न पाइओ पुछहु वेदा जाइ ।।
नानक हरि की सेवा सो करे जिसु लए हरि लाइ ।।१०।।

□

सलोक म० ३ ।। पंडितु पड़ि पड़ि ऊचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु ।।

पंडित वेद शास्त्रों को पढ़ पढ़ कर ऊँचा चीखता है, वास्तव में उसका प्यार और मोह माया से होता है ।

अंतरि ब्रहमु न चीनई मनि मूरखु गावारु ।।

उसका मूर्ख और मूढ़ मन अन्तरात्मा में स्थित ब्रह्म को पहचानता नहीं है ।

दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ।।

द्वैत भाव में लगा वह संसार को तो ज्ञान देता है परन्तु स्वयं न कुछ समझता है और न ही विचार करता है ।

बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमै वारो वार ।।१।।

(वह मानव) जन्म व्यर्थ गँवा देता है और बार-बार जन्मता है और मरता है ।।१।।

म० ३ ।। जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ।।

जिन्होंने सद्गुरु की सेवा की है उन्हों ने ही प्रभु नाम की प्राप्ति की है इस तथ्य को (अच्छी तरह) समझो और विचारो ।

सदा सांति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार ।।

उनके मन में सदैव सुख और शान्ति का निवास होता है और उनकी चीख पुकार समाप्त हो जाती है ।

आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुरसबदी वीचारु ।।

गुरु के शब्द उपदेश पर विचार करने से जब आपही अपने अहंकार को खा जाते हैं (नष्ट करते हैं) तभी मन पवित्र होता है ।

नानक सबदि रते से मुकतु है हरि जीउ हेति पिआरु ।।२।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कहते हैं) गुरु के शब्द उपदेश में जो जीव रंगे हुए हैं वे ही हरि प्रभु जी के लिये (हृदय में) प्रेम रखते हैं और वे ही मोक्ष को प्राप्त होते हैं ।।२।।

पउड़ी ।। हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ।।

हरि प्रभु जी की सेवा ही सार्थक सेवा है परन्तु गुरु के सम्मुख रहने वाले की ही हरि सेवा कबूल होती है।

जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरिनामु धिआइ ॥

जिस जीव को हरि प्रभु अच्छा समझते हैं उसे ही सद्गुरु से मिलाते हैं और वही जीव हरि प्रभु के नाम का ध्यान करता है।

गुरसबदी हरि पाईऐ हरि पारि लघाइ ॥

गुरु के शब्द उपदेश से ही हरि प्रभु की प्राप्ति होती है और तब हरि प्रभु उस जीव को संसार सागर के पार लगा देता है।

मनहठि किनै न पाइओ पुछहु वेदा जाइ ॥

अपने मन की हठधर्मिता से किसी ने भी प्रभु को नहीं प्राप्त किया है। बेशक विज्ञ जनों से (विद्वानों से) जाकर पूछ लो।

नानक हरि की सेवा सो करे जिसु लए हरि लाइ ॥१०॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) हरि प्रभु की सेवा वह प्राणी करता है जिसे स्वयं हरि अपने साथ लगा लेता है ॥१०॥

□

सलोक म० ३॥

नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ॥
गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ॥
आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ॥
सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिआ ॥
मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ ॥
सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ ॥
आपहु दूजै लगि खसमु विसारिआ ॥
नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥१॥

म० ३ ॥ गुरि पूरै हरिनामु दिड़ाइआ तिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥
रामनामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ॥
हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥
गुरमती जमु जोहि न साकै साचै नामि समाइआ ॥
सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥
जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइया ॥२॥

पउड़ी ॥ जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ ॥
जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू ओस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ॥
ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ ॥

नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ नाइ किलविख सभ हिरिआ ।।
जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिरु जगि रहिआ ।।११।।

□

नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) वही प्राणी वीर शिरोमणि है जिसने अन्तःकरण से दुष्ट अहंकार को मार दिया है।

गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ।।

गुरु के सम्मुख होकर जिसने प्रभु के नाम की सराहना की है और अपना जन्म सँवार लिया है।

आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ।।

वह स्वयं सदैव के लिए (जन्म मरण के बन्धन से) मुक्त हो जाता है और अपनी संपूर्ण कुल को संसार सागर के पार करवा देता है।

सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिआ ।।

प्रभु नाम के प्यारे ऐसे जीव सत्यस्वरूप प्रभु के द्वार पर शोभायमान होते हैं।

मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ ।।

मन के पीछे लगने वाले अहंकार में ही मरते रहते हैं और (जन्म को तो बिगाड़ते ही हैं) मृत्यु को बिगाड़ लेते हैं (क्योंकि मृत्यु के बाद पुनः आवागमन के चक्र में पड़ते हैं)।

सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ ।।

(परन्तु) सर्वत्र प्रभु का ही हुकुम चलता है, ये बेचारे मनमुख जीव और कर भी क्या सकते हैं।

आपहु दूजै लगि खसमु विसारिआ ।।

(मनमुख जीवों ने) आपही द्वैत भाव में लग कर (प्रभु से अन्य दूसरे विषयों में लगकर) मालिक प्रभु को भुला दिया है।

नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ।।१।। म० ३।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु नाम के बिना जीवन में सब दुख ही दुख है और (नाम न जपने वाले जीव) सुख को भूल ही जाते हैं (क्योंकि प्रभु नाम स्मरण के बिना वे सुखों से वंचित रहते हैं) ।।१।।

गुरि पूरै हरिनामु दिड़ाइआ तिनि विचहु भरमु चुकाइआ ।।

जिन जीवों के हृदय में पूर्ण सद्गुरु ने हरिनाम को दृढ़ कर दिया है उनके अन्तःकरण से भ्रम नष्ट हो जाता है।

रामनामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ।।

सद्गुरु ने ज्ञान का प्रकाश देकर जिन्हें प्रभु भक्ति का मार्ग दिखा दिया वे जीव प्रतिपल राम नाम जपते हैं और हरि का यश गाते हैं ।

हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ।।

जिन जीवों ने अहंकार को मारकर अन्तःकरण में प्रभु नाम को बसा लिया है उनकी चित्तवृत्ति एक प्रभु में ही लगी रहती है ।

गुरमती जमु जोहि न साकै साचै नामि समाइआ ।।

गुरु की शिक्षा पर चल कर जिन जीवों ने सत्यस्वरूप प्रभु के नाम को अपने मन में समाहित कर लिया है यमदूत उनकी ओर दृष्टि उठा कर देख भी नहीं सकते ।

सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ।।

सृष्टि का कर्त्ता प्रभु अपने आप ही सर्वत्र व्याप्त हो रहा है उसे अच्छा लगता है उसे अपने नाम के साथ लगा लेता है ।

जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ।।२।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु के दास प्रभु का नाम स्मरण करते हैं तो जीते हैं प्रभु का नाम स्मरण किए बिना (स्वयं को जीवित अनुभव नहीं करते) एक क्षण में ही मर जाते हैं (मृतक के समान हो जाते हैं) ।।२।।

पउड़ी ।। जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ ।।

जो जीव हरि नाम के दरबार से मिलता है वह सभी दरबारों में मिल जाता है (जो प्राणी हरिनाम सत्संग सभा में सम्मानित होता है वह सभी सभाओं में सम्मानित होता है) ।

जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू ओस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ।।

वह जहां भी जाता है वहीं उसका मुख आनन्द से खिला हुआ लालिमा युक्त होता है उसका मुख देखकर सभी पापी भी तर जाते हैं ।

ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ ।।

उसके हृदय में नाम का खजाना होता है और वह (पूर्णतः) नाम से ही आच्छादित होता है ।

नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ नाइ किलविख सभ हिरिआ ।।

नाम का ही पूजन करना चाहिए। नाम का ही चिन्तन और मनन करना चाहिए क्योंकि नाम से ही सभी पापों का नाश होता है ।

जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिरु जगि रहिआ ॥११॥

जिन जीवों ने एकाग्र मन होकर और एकाग्र चित्त होकर प्रभु के नाम का ध्यान किया है वे संसार में अमर होकर रहते हैं ॥११॥

□

सलोक म० ३ ॥ आतमा देउ पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ॥
आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥
आतमा अढोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥
गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु जाइ ॥
खिनु पलु हरिनामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ॥
सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥
धोती मूलि न उतरै जे अठसठि तीरथ नाइ ॥
मनमुख करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥
नानक मैला ऊजलु ता थीऐ जा सतिगुर माहि समाइ ॥१॥
म० ३ ॥ मनमुखु लोकु समझाईऐ कदहु समझाइआ जाइ ॥
मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ ॥
लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ॥
गुरमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥
मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥
मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥
अंम्रित नामु सद भुंचीऐ गुरमुखि कार कमाइ ॥
विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥
मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ ॥
गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥
नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥२॥
पउड़ी ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ॥
जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥
हरि अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुरबचनी सहजे चाखी ॥
तह भइआ प्रगासु मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ॥
अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिआ गुरमुखि आखी ॥१२॥

□

सलोक म० ३ ॥ आतमा देउ पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ॥

गुरु से सहज ज्ञान प्राप्त कर गुरु से उत्कृष्ट प्रेम करते हुये आतमा में स्थिर ब्रह्म का पूजन करो।

आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥

जब जीवात्मा को आत्मस्वरूप ब्रह्म उसके अन्तःकरण है, में ऐसा विश्वास हो जाता है तो उसे अपने हृदय में ही प्रभु प्रेम का परिचय प्राप्त हो जाता है।

आतमा अढोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥

गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु से वह स्वाभाविक ही प्रेम करने लगता है और तब उसकी निश्चल आत्मा में स्थित (चंचल मन) डोलता नहीं हैं।

गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु जाइ ॥

गुरु उपदेश के बिना मन में स्थिरता नहीं आती और अन्तःकरण से लोभ व विकारों की मैल नहीं जाती।

खिनु पलु हरिनामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ॥

यदि एक क्षण निमिष मात्र भी हरि प्रभु का नाम मन में बस जाय तो अड़सठ तीर्थों के स्नान के बराबर पुण्य फल प्राप्त होता है।

सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥

सत्य स्वरूप प्रभु नाम को मन में बसा लेने वाले के मन पर विकारों की मैल नहीं लगती। विकारों की मैल तो द्वैतभाव वाले जीव के मन पर लगती है।

धोती भूलि न उतरै जे अठसठि तीरथ नाइ ॥

अड़सठ तीर्थों में नहा लेने से और शरीर को धो लेने से विकारों की मैल उतरती नहीं हैं।

मनमुख करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥

मन के पीछे लगने वाला (मनमुख) जीव अहंकार से पूर्ण कर्म करता है और उन कर्मों की सारी कमाई का फल दुख ही दुख भोगता है।

नानक मैला ऊजलु ता थीऐ जा सतिगुर माहि समाइ ॥१॥

(गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) विकारों से मैला मन तब (शुद्ध पवित्र) उज्ज्वल होता है जब सद्गुरु के उपदेश में अभेद हो जाता है ॥१॥

म० ३ ॥ मनमुखु लोकु समझाईऐ कदहु समझाइआ जाइ ॥

मनमुख अज्ञानी लोगों को समझाने पर भी क्या कभी समझाया जा सकता है ॥१॥

मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ ॥

अज्ञानी मनमुख ज्ञानी (गुरुमुख) पुरुषों में मिलाते से मिलता नहीं हैं

और लिखे गए कर्मों के अनुसार आवागमन के चक्र में भटकते फिरते हैं।

लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ॥

एक प्रभु में चित्तवृत्ति लगाना और दूसरा सांसारिक द्रव्यों से प्रेम करना ये दो मार्ग (इस संसार में) हैं (दोनों ही मार्गों पर चलने वाले ज्ञानी व अज्ञानी पुरुष प्रभु के हुकुम में ही कर्मों की कमाई करते हैं।

गुरमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥

गुरु के सम्मुख रहने वाले जीवों ने गुरु के शब्द उपदेश की कसौटी पर लगाकर अपने मन को मार लिया है।

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥

(गुरुमुख) अपने मन के साथ ही झगड़ा करता है और (मन में उठने वाले विवादों का निर्णय करने के लिए अपने) मन की पंचायत को ही साथ रखता है (और मन का ही चिन्तन मन्थन करते हुए अन्त में) मन में ही समा जाता है।

मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥

सद्गुरु के शब्द उपदेश से उत्तम प्रेम करने वाला मन में जो भी इच्छा करता है वही प्राप्त करता है।

अंम्रित नामु सद भुंचीऐ गुरमुखि कार कमाइ ॥

वह नाम रूपी अमृत का सदैव उपभोग करता है और गुरु के सम्मुख रहकर शुभ कर्मों की कमाई करता है।

विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥

मन के बिना जो और दूसरी बातों में उलझता रहता है वह जन्म गवाँ कर जायगा।

मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ ॥

मनमुख मन के हठ से परास्त होकर झूठ और कुत्सित कर्मों की कमाई करता है।

गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥

गुरु की कृपा से जिन्होंने मन को जीत लिया है वे हरि प्रभु में अपनी चित्त वृत्ति को लगा लेते हैं।

नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥२॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कहते हैं) गुरु मुख सत्य कर्मों की कमाई करते हैं और मनमुख आवागमन के चक्र में आता है और जाता है ॥२॥

पउड़ी ।। हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ।।

हे हरि के दास संत भाईयो ! हरि से सम्बन्धित सद्‌गुरु द्वारा बताई गई एक शिक्षा ध्यान से सुनो ।

जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ।।

जिनके मस्तक पर प्रारंभ से हो श्रेष्ठ भाग्य लिखा हुआ है, प्रभु के उन दासों ने ही (गुरु की शिक्षा) लेकर हृदय में रख ली है ।

हरि अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुरबचनी सहजे चाखी ।।

गुरु के वचनों को मानने वाले सहज ही हरि प्रभु की श्रेष्ठ और उत्तम कथा के अमृत रस को चखते हैं ।

तह भइआ प्रगासु मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ।।

उनके अन्तःकरण से अन्धकार मिट जाता है और ज्ञान का प्रकाश हो जाता है जैसे सूर्य की किरणें रात्रि (के अन्धकार) का नाश कर देती हैं ।

अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिआ गुरमुखि आखी ।।१२।।

गुरु के सम्मुख रहने वाले पुरुष उस अदृश्य, इन्द्रियातीत, अलक्ष्य, मल रहित प्रभु को ज्ञान की आंखों से देखते हैं ।।१२।।

□

सलोक म० ३ ।। सतिगुर सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ।।

विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ।।

सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ।।

नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ ।।१।।

म० ३ ।। मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइ ।।

दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ।।

आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ।।

जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरू का करमी पलै पाइ ।।

नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ ।।२।।

पउड़ी ।। हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ।।

हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ।।

हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ।।

हरि हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ।।

जितु मुखि भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु मुखि नामु जपाती ।।१३।।

□

सलोकु म० ३ ।। सतिगुर सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ।।

जो जीव सद्गुरु को सेवा करता है वह अपने शीर्ष (मानव जन्म) को हिसाब में लगाता है (सार्थक कर लेता है) ।

विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ।।

ऐसे जीव अपने अन्तःकरण में अहंकार को नष्ट करके सत्यस्वरूप प्रभु में चित्तवृत्ति लगाकर रहते हैं।

सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ।।

जिन जीवों ने सद्गुरु की सेवा नहीं की है उन्होंने अपने मानव जन्म को व्यर्थ गँवा दिया है।

नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ ।।१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु को जो कुछ अच्छा लगता है वह वही करता है, इस सम्बन्ध में किसी को भी कुछ नहीं कहा जा सकता ।।१।।

म० ३ ।। मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइ ।।

विकारों से घिरा हुआ मन विकार युक्त कर्मों की ही कमाई करता है।

दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ।।

द्वैत भाव में फँसे अज्ञानी जीव सांसारिक पदार्थों की पूजा करते हैं, उन्हें प्रभु के दरबार में दण्ड मिलता है।

आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ।।

आत्मा को ही देवता मान कर उसकी पूजा करनी चाहिए (परन्तु आत्मा ही ब्रह्म देव है) बिना सद्गुरु के यह ज्ञान प्राप्त नहीं होता ।

जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरू का करमी पलै पाइ ।।

सद्गुरु के हुक्म को मानना ही सबसे बड़ा जप, तप और संयम है (परन्तु गुरु के हुकुम की पालन की प्रेरणा) प्रभु की कृपा द्वारा ही हृदय रूपी पल्ले में प्राप्त होती है।

नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ ।।२।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) एकाग्र चित्त होकर गुरु की सेवा की कमाई यदि हरि प्रभु को कबूल हो जाय तो जीव का जन्म सफल हो जाता है ।

पउड़ी ।। हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ।।

हे मेरे मन दुख हर्त्ता हरि प्रभु के नाम को स्मरण करो जिससे दिन रात सदैव तुम्हें सुखों की प्राप्ति होती रहे।

हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ।।

हे मेरे मन ! दुख हर्त्ता हरि प्रभु का नाम स्मरण करो, जिसका स्मरण करने से पापों की सारी कालिमा (मैल) उतर (नष्ट हो) जाती है।

हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥

हे मेरे मन ! दुख हर्त्ता हरि प्रभु का नाम स्मरण करो जिस (नाम का स्मरण करने) से सारी दरिद्रता (शारीरिक एवं मानसिक) दुख दूर हो जाते हैं और तृष्णा की भूख उतर (समाप्त हो) जाती है।

हरि हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ॥

हे मेरे मन ! गुरु के सम्मुख रहकर गुरु से उत्तम कोटि का प्रेम लगाकर दुख हर्त्ता हरि प्रभु के नाम का स्मरण कर !

जितु मुखि भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु मुखि नामु जपाती ॥१३॥

जिसके मुख (मस्तक) पर सत्यस्वरूप प्रभु ने आरम्भ से ही भाग्य लिख दिया है उस मुख द्वारा ही हरि प्रभु के नाम का जाप होता है ॥१३॥

□

सलोक म० ३ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥
अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ॥
लख चउरासीह फेरु पइआ मरि जंमै होइ खुआरु ॥
सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराइ सोइ ॥
सतिगुर विचि नामु निधानु है करमि परापति होइ ॥
सचि रते गुरसबद सिउ तिन सची सदा लिव होइ ॥
नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइ ॥१॥
म० ३ ॥ सो भगउती जुो भगवंतै जाणै ॥
गुर परसादी आपु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥
जीवतु मरै हरिनामु वखाणै ॥ ऐसा भगउती उतमु होइ ॥
नानक सचि समावै सोइ ॥२॥
म० ३ ॥ अंतरि कपटु भगउती कहाए ॥
पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाए ॥ पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ॥
बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए ॥
सत संगति सिउ बादु रचाए ॥ अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥
हरिनामु न चेतै बहु करम कमाए ॥
पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥
नानक बिनु सतिगुरु सेवे मोखु न पाए ॥३॥

पउड़ी ।। सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़िन सवाही ।।
सतिगुरि जिनी धिआइआ से त्रिपति अघाही ।।
सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन जम डरु नाही ।।
जिन कउ होआ कृपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ।।
तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ।।१४।।

□

सलोक म० ३ ।। सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ।।
जिन जीवों ने सद्गुरु की सेवा नहीं की है और सद्गुरु के शब्द उपदेश का विचार नहीं किया है ।

अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ।।
और जिनके हृदय में ज्ञान का प्रकाश नहीं आया वे इस संसार में मृतक तुल्य है ।

लख चउरासीह फेरु पइआ मरि जंमै होइ खुआरु ।।
(ऐसे जीव) चौरासी लाख योनियों के फेर में पड़े रहते हैं, बार-बार मरते हैं और जन्म लेते हैं और दुखी होते रहते हैं ।

सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराइ सोइ ।।
सद्गुरु की सेवा वही करता है जिससे वह आप प्रभु सेवा कराता है ।

सतिगुर विचि नामु निधानु है करमि परापति होइ ।।
सद्गुरु के पास प्रभु नाम का खजाना है । परन्तु जिस पर प्रभु की कृपा होती है । उस जीव को ही (गुरु के द्वारा वह खजाना) प्राप्त होता है ।

सचि रते गुरसबद सिउ तिन सची सदा लिव होइ ।।
जो जीव गुरु के शब्द उपदेश के द्वारा सत्य स्वरूप प्रभु में अनुरक्त हो गए हैं उनकी चित्तवृत्ति सदैव पवित्र होती है ।

नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइ ।।१।।
(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) जिसको प्रभु अपने स्वरूप म मिला लेता है वह फिर प्रभु से बिछुड़ता नहीं है, वह सहजावस्था में समा जाता है ।।१।।

म० ३ ।। सो भगउती जु भगवंतै जाणै ।। गुरपरसादी आपु पछाणै ।।
वही भक्त है जो भगवान को जानता है और गुरु की कृपा से अपने स्वरूप को पहचानता है ।

धावतु राखै इकतु घरि आणै ।। जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ।।
इन्द्रिय सुखों के पीछे दौड़ते हुए मन को नियन्त्रण में रखे और उसे एकाग्रता की स्थिति में ले आए । संसार में जीवित होते हुए भी

साँसारिक सुखों की लालसा को) मार दे और हरि प्रभु के नाम का बखान करे।

ऐसा भगउती उतमु होइ ॥

ऐसा भक्त ही श्रेष्ठ होता है।

नानक सचि समावै सोइ ॥२॥

(श्री गुरु अमर दास) नानक जी (कथन करते हैं) वही (ऐसा जीव ही) सत्यस्वरूप प्रभु में समाता है ॥२॥

म० ३ ॥ अंतरि कपटु भगउती कहाए ॥ पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाए ॥

जिसके अन्तःकरण में कपट भावना है पर अपने आप को भक्त कहलवाता है। वह पाखंडो है और उसे परब्रह्म प्रभु की प्राप्ति कभी भी नहीं होती।

पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ॥ बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए ॥

पराई निन्दा करके अन्तःकरण पर पापों की मैल लगाता है। शरीर पर लगी बाहर की मैल को धोता है परन्तु मन की जूठन (मैल) शरीर को धोने से नहीं जाती।

सत संगति सिउ बादु रचाए ॥ अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥

सत्संगियों से विवाद करता है और द्वैत भाव में अनुरक्त होने के कारण दिन रात दुखी रहता है।

हरिनामु न चेतै बहु करम कमाए ॥

हरि नाम का स्मरण नहीं करता, अनेक प्रकार के विकारयुक्त कर्मों की कमाई करता है।

पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥

प्रारम्भ से ही प्रभु द्वारा भाग्य में जो लिख दिया गया है, उसे मिटाया नहीं जा सकता।

नानक बिनु सतिगुरु सेवें मोखु न पाए ॥३॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) बिना सद्गुरु की सेवा किए मोक्ष नहीं पाया जाता ॥३॥

पउड़ी ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़िन सवाही ॥

जिन जीवों ने सद्गुरु का ध्यान किया है, वे नित्य प्रति प्रातःकाल दुखी नहीं होते (उनके दिन की शुरुआत दुख से नहीं होती नाम स्मरण भक्ति से होती है)।

सतिगुरु जिनी धिआइआ से त्रिपति अघाही ॥

जिन्होंने सद्‌गुरु का ध्यान किया है उन्हें पूर्ण तृप्ति और सन्तोष होता है।

सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन जम डरु नाही ॥

जिन्होंने सद्‌गुरु का ध्यान किया है उन्हें यम का डर नहीं है।

जिन कउ होआ क्रिपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥

जिन जीवों के प्रति हरि प्रभु कृपालु होता है वे ही आकर सद्‌गुरु के पैरों में पड़ते हैं (सद्‌गुरु की शरण में आते हैं)।

तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ॥१४॥

उनके यहां (इहलोक) और वहाँ (परलोक) मुख उज्जवल होते हैं और वे हरि प्रभु के दरबार में यश रूपी वस्त्रों को पहन कर जाते हैं ॥१४॥

□

सलोक म० २ ॥ जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥
नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥१॥

म० ५ ॥ मुंढहु भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥
कसतूरी कै भोलड़ै गंदे डुंमि पईआसु ॥२॥

पउड़ी ॥ सो ऐसा हरिनामु धिआईऐ मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाए ॥
सो ऐसा हरिनामु जपीऐ मन मेरे जो अंती अउसरि लए छडाए ॥
सो ऐसा हरिनामु जपीऐ मन मेरे जु मन की त्रिसना सभ भुख गवाए ॥
सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निंदक दुसट सभि पैरी पाए ॥
नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाए ॥१५॥

□

सलोक म० २ ॥ जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥

जो सिर अपने मालिक प्रभु के सामने नहीं झुकता उस सिर को काट कर फेंक डालो।

नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥१॥

(श्री गुरु अंगददेव) नानक जी (कथन करते हैं) जिस शरीर रूपी पिंजरे में प्रभु बिछोह का दुख नहीं है उस शरीर के पिंजरे को लेकर जला डालो ॥१॥

म० ५ ॥ मुंढहु भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥

(गुरु अर्जुनदेव) नानकजी (कथन करते हैं) जो जीवात्मा रूपी स्त्री अपने आदि स्वरूप (प्रभु) को भूल जाती है वह फिर फिर जन्म लेती है और मरती है।

कसतूरी कै भोलड़ै गंदे डुंमि पईआसु ॥२॥

जैसे कि अपनी ही नाभि में बसने वाली कस्तूरी की सुगन्ध को भूलकर

हिरण भ्रमवश उस सुगन्ध को ढूंढ़ने के लिए गन्दे पानी के तालाब में जा पड़ता (गिरता) है (उसी प्रकार अन्तरात्मा में ही बसने वाले मूल स्वरूप ब्रह्म को भूलकर जीवात्मा योनियों की गन्दगी में फंसती है) ।

पउड़ी ।। सो ऐसा हरिनामु धिआईऐ मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाए ।।

हे मेरे मन ! उस ऐसे हरि प्रभु के नाम का ध्यान कर जो सबके ऊपर हुक्म चलाता है ।

सो ऐसा हरिनामु जपीऐ मन मेरे जो अंती अउसरि लए छडाए ।।

हे मेरे मन ! उस ऐसे हरि प्रभु के नाम का ध्यान कर जो अन्त समय में यमदूतों से छुड़ा लेता है ।

सो ऐसा हरिनामु जपीऐ मन मेरे जु मन की त्रिसना सभ भुख गवाए ।।

हे मेरे मन ! उस ऐसे हरि प्रभु के नाम को जप जा मन में (उत्पन्न होने वाली सांसारिक सुखों और पदार्थों की) तृष्णा और भूख को नष्ट करता है ।

सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निंदक दुसट सभि पैरी पाए ।।

जिस भाग्यशाली ने गुरु के सम्मुख होकर हरि प्रभु का नाम जपा है उसके सभी निंदक और दुष्ट (शत्रु) उसके पैरों पर आकर गिर गए हैं ।

नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाए ।।१५।।

(गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु नाम की अराधना करो क्योंकि प्रभु का नाम ही सबसे बड़ा है । प्रभु, नाम जपने वाले के सामने सारे ही संसार को लाकर झुका देता है (नाम जपने वाले के चरणों पर सारा संसार नत मस्तक होता है) ।।१५।।

□

सलोक म० ३ ।। वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि ।।

पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ।।

गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ।।

लिखिआ मेटि न सकीऐ जो धुरि लिखिआ करतारि ।।

मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ।।

बिनु नावै किनै न पाइआ देखहु रिदै बीचारि ।।

नानक सा सुआलिओ सुलखणी जि रावी सिरजनहारि ।।१।।

म० ३ ।। माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ।।

मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरिनामु विसारि ।।

भलके उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइ पिआरु ।।

सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ।।

नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नामु उरधारि ।।२।।

पउड़ी ।। हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइ ।।

हरि आपि बहि करे निआउ कूड़िआर सभ मारि कढोइ ।।

सचिआरा देइ वडिआई हरि धरम निआउ कीओइ ।।

सभ हरि की करहु उसतति जिनि गरीब अनाथ राखि लीओइ ।।

जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डंडु दीओइ ।।१६।।

□

सलोक म० ३ ।। वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि ।।

(जीवात्मा रूपी स्त्री) कुरूप और कुलक्षणी है, मिथ्याभाषिणी और मन की खोटी है, (परन्तु बाहरी सुन्दरता के लिए तरह तरह के) शृंगार करती है ।

पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ।।

(ऐसी स्त्री) पति की आज्ञा में नहीं चलती इसके विपरीत वह मूर्खा पति पर हुक्म चलाती है ।

गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ।।

परन्तु जो जीवात्मा गुरु की आज्ञा में चलती है दुखों को दूर करने वाले प्रभु उसके सभी दुख दूर कर देते हैं ।

लिखिआ मेटि न सकीऐ जो धुरि लिखिआ करतारि ।।

कर्त्ता प्रभ ने आरम्भ से ही जो भाग्य में लिख दिया है उसे मिटाया नहीं जा सकता ।

मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ।।

(जीव स्त्री के लिए उचित है) प्रभु पति को मन और तन समर्पित करदे और गुरु के शब्द उपदेश के प्रति (मन में) प्रेम धारण करे ।

बिनु नावै किनै न पाइआ देखहु रिदै बीचारि ।।

हृदय में विचार करके देख लो नाम स्मरण के बिना किसी ने भी प्रभु पति को प्राप्त नहीं किया है ।

नानक सा सुआलिओ सुलखणी जि रावी सिरजनहारि ।।१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) वही जीव स्त्री सराहना करने योग्य व शुभ लक्षणो वाली है जिसे सृष्टि के सृजन कर्त्ता ने अपने से मिला लिया है ।।१।।

म० ३ ।। माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ।।

अज्ञान और मोह का भयानक अन्धकार छाया हुआ है जिसके कारण विवेकहीन जीवों को न इधर का किनारा दिखाई देता है न उधर का (वे अज्ञानवश अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं)।

मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरिनामु विसारि ।।

मन के पीछे लगने वाले अज्ञानी (अज्ञान के कारण) महान दुखों को प्राप्त करते हैं और हरि प्रभु के नाम को विस्मरण करने के कारण संसार सागर में डूबते हैं।

भलके उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइ पिआरु ।।

प्रतिदिन प्रातः उठ कर (पूरे दिन) अनेक विकारी कर्मों की कमाई करते हैं और प्रभु के नाम को छोड़कर द्वैत भाव के कारण अन्य वस्तुओं से प्रेम करते हैं।

सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ।।

परन्तु जो जीव अपने सद्‌गुरु की सेवा करते हैं वे संसार सागर से पार उतर जाते हैं।

नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नामु उरधारि ।।२।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरु के सम्मुख रहने वाले जीव सत्यस्वरूप प्रभु के नाम को हृदय में धारण कर सत्यस्वरूप प्रभु में ही समा जाते हैं ।।२।।

पउड़ी ।। हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइ ।।

जल, स्थल और अन्तरिक्ष सर्वत्र हरि प्रभु ही परिपूर्ण हैं और दूसरा कोई नहीं है।

हरि आपि बहि करे निआउ कूड़िआर सभ मारि कढोइ ।।

हरि प्रभु आप ही बैठकर न्याय करते हैं और सभी मिथ्यावादी लोगों को (अपने दरबार मे से) मार मार कर निकाल देते हैं।

सचिआरा देइ वडिआई हरि धरम निआउ कीओइ ।।

सत्यवादी लोगों को बड़प्पन (और प्रतिष्ठा) देता है हरि प्रभु अत्यन्त धर्मपूर्वक (भले बुरे कर्मों का) न्याय करता है।

सभ हरि की करहु उसतति जिनि गरीब अनाथ राखि लीओइ ।।

सभी मिलकर हरि प्रभु की सराहना करो जिसने गरीब अनाथ भक्तों को रख लिया (रक्षा की)।

जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डंडु दीओइ ।।१६।।

प्रभु ने धर्मात्मा पुरुषों की सर्वत्र जय जयकार करवा दी और पापी पुरुषों को दण्ड दिया ।।१६।।

□

सलोक म० ३ ।। मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ।।
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ।।
त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ।।
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ।।
म० ३ ।। सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ।।
सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ।।
अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ।।
नानक नामि सोहागणी मेली मेलणहारि ।।२।।
पउड़ी ।। हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ।।
हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ।।
हरि निमाणिआ तूं माणु हरि डाढीहूं तूं डाढिआ ।।
हरि अहंकारीआ मारि निवाए मनमुख मूड़ साधिआ ।।
हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ।।१७।।

□

सलोक म० ३ ।। मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ।।

(मन के पीछे लगने वाली) मनमुख जीव स्त्री विकारों से मैली है कुलक्षणी है और दुष्ट है।

पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ।।

जीव स्त्री ने हृदय रूपी घर में बसने वाले अपने प्रभु प्रियतम को छोड़ दिया है और पराए पुरुषों (अर्थात् सांसारिक विषयों) से प्यार करती है।

त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ।।

मनमुख जीव स्त्री की तृष्णा कभी भी समाप्त नहीं होती और विषय-वासनाओं की अग्नि में जलती हुई चीख-पुकार करती है।

नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ।।१।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जो (कथन करते हैं) प्रभु पति का नाम स्मरण न करने के कारण ही यह मनमुख स्त्री कुरूपा है, अशोभनीय है और इसीलिए प्रभु-पति ने इसे छोड़ दिया है ।।१।।

म० ३ ।। सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ।।

गुरु के सम्मुख रहने वाली गुरमुख जीव स्त्री सौभाग्यवती होती है क्यों कि वह सद्गुरु के शब्द उपदेश में अनुरक्त रहती है और इसलिए प्रभु

पति उसे प्यार करता है ।

सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ।।

सद्गुरु के सत्य उपदेश से अति प्रेम और प्यार करने के कारण (गुरुमुख) जीव स्त्री सदैव अपने प्रभु पति के साथ सुख उपभोग करती है ।

अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ।।

(और इस प्रकार वह जीव स्त्री) अत्यन्त सराहनीय सुन्दरी और शोभा-वान नारी हो जाती है ।

नानक नामि सोहागणी मेली मेलणहारि ।।२।।

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) मिलाने वाले प्रभु ने (स्वयं) उस सौभाग्यवती जीव स्त्री को नामी (प्रभु) के साथ मिला दिया है ।।३।।

पउड़ी ।। हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ।।

हे हरि प्रभु मोह के जाल में फँसे हुए जिन जीवों को तुमने उस जाल में से निकाल दिया है वे सभी जीव तुम्हारी स्तुति करते हैं ।

हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ।।

हे हरि प्रभु ! वे सभी जीव तुम्हें नमस्कार करते हैं जिन जीवों की तुमने पापों से रक्षा की है।

हरि निमाणिआ तूं माणु डाढीहूं तूं डाढिआ ।।

हे हरि ! तुम सम्मानहीनों को मान (सम्मान) देने वाले हो तुम बलवानों से भी बलवान हो (सर्वाधिक शक्तिशाली हो) ।

हरि अहंकारीआ मारि निवाए मनमुख मूड़ साधिआ ।।

हे हरि ! आपने अहंकारियों को मारकर झुका दिया है और मनमुख और मूर्ख जीवों को सुधार दिया है ।

हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ।।१७।।

हे हरि ! तुम अपने गरीब अनाथ भक्तों को बड़प्पन देते हो ।।१७।।

□

सलोक म० ३ ।। सतिगुर कै भाण जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ।।

हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ।।

किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ।।

नानक कारणु करते वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ।।१।।

म० ३ ।। नानक हरिनामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिवतार ।।

माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ।।

पुरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥
गुर परसादी जिनि बुझिआ तिनि पाइआ मोखदुआरु ॥
मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जंदारु ॥
गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥
सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुर आपे बखसणहारु ॥२॥
पउड़ी ॥ हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥
हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥
काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि मारदा ॥
सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥
सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत जन तारदा ॥१८॥

□

सतिगुर कै भाणै जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ॥

जो जीव सद्गुरु की आज्ञा में चलता है उसकी बड़ी बढ़ाई होती है।

हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ॥

हरि प्रभु का नाम श्रेष्ठ जीव के मन में ही बसता है और (जिस जीव के मन में प्रभु का नाम बसता है उसकी) बढ़ाई को कोई मिटा नहीं सकता।

किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ॥

जिस जीव पर प्रभु अपनी कृपा (दृष्टि) करते हैं उसे ही श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त होता है।

नानक कारणु करते वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ॥१॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) समस्त श्रेष्ठ कार्यों के घटित होने का कारण कर्त्ता प्रभु के अधीन है गुरु के सम्मुख (शरण में) रहने वाला कोई बिरला जीव ही (इस तथ्य को) समझ सकता है ॥१॥

म० ३ ॥ नानक हरिनामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिवतार ॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जो (कथन करते हैं) जिन जीवों ने दिन रात चित्तवृत्ति को एकाग्र करके निरन्तर हरि प्रभु के हरि नाम की आराधना की है।

माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥

माया जो प्रभु मालिक की दासी है ऐसे लोगों के सामने (उपस्थित) होकर उनकी सेवा (की कमाई) करती है।

पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥

प्रभु के हुक्म में चलने वाले जीवों को सँवारनेवाले पूर्ण प्रभु ने पूर्ण कर

छोड़ा है (इसलिए पूर्ण प्रभु की दासी माया इन पूर्ण भक्तों की भी दासी हो जाती है)।

गुर परसादी जिनि बुझिआ तिनि पाइआ मोखदुआरु ।।

गुरु की कृपा से जिन्होंने प्रभु के हुक्म को समझ लिया है उन्होंने मोक्ष के द्वार को प्राप्त कर लिया है।

मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जंदारु ।।

(मन के पीछे चलने वाले) मनमुख प्रभु के हुक्म को नहीं जानते इसलिए उन्हें यम भयानक मार मारता है।

गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ।।

गुरु के सम्मुख होकर जिन जीवों ने प्रभु की आराधना की है वे इस संसार सागर से तर गए हैं।

सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु ।।२।।

क्षमावान गुरुदेव ने आप ही उनके समस्त अवगुणों को मिटा दिया है और उन्हें गुणी बना दिया है ।।२।।

पउड़ी ।। हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ।।

हरि प्रभु के भक्तों को हरि पर पूर्ण विश्वास होता है कि हरि प्रभु सब कुछ जानता (सर्वज्ञ) है।

हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ।।

हरि प्रभु जैसा सर्वज्ञ और कोई नहीं है इसलिए हरि प्रभु प्रत्येक जीव के कर्म का धर्म (और न्याय) पूर्वक विचार करता है।

काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि मारदा ।।

जब प्रभु अधर्म और अन्याय पूर्वक किसी को मारता ही नहीं तो चिन्ता और सन्देह क्यों किया जाय ।।१।।

सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ।।

प्रभु मालिक सत्यस्वरूप है उसका न्याय भी सत्य है अतः पापी मनुष्य प्रभु के सत्य न्याय के सामने हार जाते हैं।

सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत जन तारदा ।।१८।।

हे भक्तो ! हाथ जोड़कर प्रभु की सराहना करो क्योंकि हरि प्रभु अपने भक्त जनों का उद्धार करता है ।।१८।।

□

सलोक म० ३ ।। आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ।।
सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ।।

नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥१॥

म० ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जाकउ नदरि करेइ ॥

माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥

हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥

नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी क्रिपा करे ॥२॥

पउड़ी ॥ हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥

आपणी आपि करे परतीति आपे सेव घालीअनु ॥

हरि भगता नो देइ अनंदु थिरु घरी बहालिअनु ॥

पापीआ नो न देई थिरु रहणि चुणि नरक घोरि चालिअनु ॥

हरि भगता नो देइ पिआरु करि अंगु निसतारिअनु ॥१९॥

□

सलोक म० ३ ॥ आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥

अपने प्रियतम प्रभु से मैं मिलती रहूँ और उसे हृदय में धारण कर अपने अन्तःकरण में ही स्थित करके रखूँ।

सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥

सद्गुरु के प्रति मन में प्रेम रखते हुए उस नित्य प्रभु प्रियतम की सदैव सराहना करती रहूँ।

नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥१॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) प्रभु जिस पर कृपा दृष्टि करते हैं, उसे अपने साथ मिला लेते हैं और वही जीवात्मा रूपी स्त्री सौभाग्यवती होती है।

म० ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जाकउ नदरि करेइ ॥

जिन जीवों पर प्रभु कृपा दृष्टि करते हैं वही गुरु की सेवा के द्वारा हरि प्रभु को प्राप्त करते हैं।

माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥

हरि प्रभु के नाम का स्मरण कर वे मनुष्य से देवता हो गए।

हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥

उन्होंने अहंकार को मार दिया है इसलिए प्रभु ने उन्हें अपने साथ मिला लिया है। (ऐसे प्राणी) गुरु के शब्द उपदेश (को धारण करने) से ही संसार सागर से तर गए हैं।

नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी क्रिपा करे ॥२॥

(गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) जिन जीवों पर हरि अपनी

कृपा दृष्टि करता है वे ही स्थिर अवस्था में समाते हैं ।।२।।

पउड़ी ।। हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ।।

हरि प्रभु अपने भक्तो से अपनी भक्ति करवाता है और उनका बड़प्पन (सारे संसार को) दिखाता है ।

आपणी आपि करे परतीति आपे सेव घालीअनु ।।

प्रभु आप ही अपनी प्रतीति (विश्वास) भक्त के हृदय में उत्पन्न करता है और आप ही सेवा का पुरुषार्थ करवाता है ।

हरि भगता नो देइ अनंदु थिरु घरी बहालिअनु ।।

हरि प्रभु आप ही अपने भक्तों को निज स्वरूप में स्थिरता से बैठाता है और उन्हें आनन्द प्रदान करता है ।

पापीआ नो न देई थिरु रहणि चुणि नरक घोरि चालिअनु ।।

प्रभु पाप कर्म करने वाले को (आनन्द) नहीं देता और न ही उन्हें स्थिर रहने देता है उन्हें चुन-चुन कर घोर नरक में चलता करता है ।

हरि भगता नो देइ पिआरु करि अंगु निसतारिअनु ।।१९।।

हरि प्रभु अपने भक्तों को प्यार देता है और उनका उद्धार करके अपना अंग बना लेता है (अपने में समाहित कर लेता है) ।।१९।।

□

सलोक म० १ ।।

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ।।

कारी कढी किआ थीऐ जां चारे बैठीआ नालि ।।

सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ।।

नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही ।।१।।

म० १ ।। किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ।।

जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ।।२।।

पउड़ी ।। कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ।।

कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ।।

संता संगि निधानु अंम्रितु चाखीऐ ।।

भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ।।

नानक हरिगुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ।।२०।।

□

सलोक म० १ ।।

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठि क्रोधि चंडालि ।।

श्री गुरु नानक देवजी ऊंच नीच जाति के सामाजिक बंधनों को निरर्थक, बताते हुए कहते हैं कि व्यक्ति जन्म व वंश से नीच नहीं होता। नीच होता है हृदय में नीच वृत्तियों को स्थान देने से मानव में दुर्बुद्धि का होना ही उसका डोम (जाति का) होना है। हृदय में निर्दयता का होना कसाई (जाति का) होना है, पराई निन्दा करने वाला मन ही भंगी (जाति का) है और क्रोध (करने वाला व्यक्ति) ही चंडाल है (जो शरीर को क्रोधाग्नि में जलाकर) ठग रहा है (धीरे धीरे खा रहा है)।

कारी कढी किआ थीऐ जां चारे बैठीआ नालि ॥

जबकि ये चारों (डोम, कसाई, भंगी, चंडाल) ही नीच (जाति की) वृत्तियां हमारे साथ (मन में) बैठी हैं तो बाहरी लकीरें खींच कर (पवित्रता और अपवित्रता का विभाजन) करने से क्या होगा।

सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ॥

(व्यक्ति के लिए उचित तो यह है कि) सत्य और संयम पूर्ण शुभ कर्मों की लकीरे खींचे (सत्य असत्य कर्मों में विभाजन रेखा खींचे) और प्रभु नाम स्मरण का ही स्नान करे।

नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही ॥१॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) आगे (प्रभु के दरबार में) वे ही उत्तम माने जायेंगे जो पापयुक्त मार्ग पर (पैर) नहीं देते (नहीं चलते) ॥१॥

म० १ ॥ किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥

हंस क्या और बगुला क्या जिसपर प्रभु कृपा दृष्टि कर देते हैं (वह बगुले से हंस बन जाता है)।

जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ॥२॥

(श्री गुरुदेव) नानक जी (कथन करते हैं) जो व्यक्ति उस प्रभु को भा जाता है उसे कौए से हंस बना देता है (दुष्टवृत्ति पूर्ण मानव सद्वृत्ति पूर्ण बन जाता है)।

पउड़ी ॥ कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥

जिस काम को भी हम पूरा करना चाहते हैं उस कार्य की पूर्तिके लिए हरि प्रभु के पास कहना (निवेदन करना) चाहिए।

कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥

सद्गुरु इस बात की सच्ची गवाही देते हैं कि प्रभु सभी कार्यों को सिद्ध कर देता है।

संता संगि निधानु अंम्रितु चाखीऐ ॥

प्रभु के नाम रूपी अमृत का खजाना संतों के पास है, अतः सन्तों की संगति से प्रभु नाम के अमृत-खजाने को चखें।

भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥

हे परम कृपालु परमेश्वर ! इस दास का भय दूर करके यमों से इसकी रक्षा करो।

नानक हरिगुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥२०॥

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) हरि प्रभु के गुणों का गान करने से अदृश्य प्रभु को भी देखा जा सकता है ॥२०॥

□

सलोक म० ३ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभसै देइ अधारु ॥

नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु ॥

हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिआइआ हरि निरंकारु ॥

ओना के मुख सद उजले ओना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥१॥

म० ३ ॥ सतिगुर मिलीऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥

अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निजधारि वसै निजथाइ ॥

अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥

नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥२॥

पउड़ी ॥ हउ ढाढी हरिप्रभ खसम का हरि कै दरि आइआ ॥

हरि अंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥

हरि पुछिआ ढाढी सदि कै कितु अरथि तूं आइआ ॥

नित देवहु दानु दइआल प्रभ हरिनामु धिआइआ ॥

हरि दातै हरिनामु जपाइआ नानकु पैनाइआ ॥२१॥१॥सुधु

□

सलोक म० ३ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभसै देइ अधारु ॥

यह जीव और शरीर और अन्य सभी कुछ उस प्रभु के (द्वारा प्राप्त) हैं, प्रभु ही समस्त जीवों को आश्रय देता है।

नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु ॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) गुरु के सम्मुख होकर सदैव प्रभु की सेवा करनी चाहिये, जो प्रभु नित्य (जीवों को अनेक प्रकार की वस्तुएँ) देने वाला है।

हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिआइआ हरि निरंकारु ॥

जिन जीवों ने दुखों का हरण करने वाले निराकार ब्रह्म का ध्यान किया है, मैं उन जीवों पर बलिहार जाता हूँ।

ओना के मुख सद उजले ओना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥१॥

निराकार ब्रह्म को स्मरण करने वाले जीवों के मुख (परलोक में) प्रभु के दरबार में सदैव उज्ज्वल होते हैं और इस लोक में सारे जगत के प्राणी उनके सामने नतमस्तक होते हैं ॥१॥

म० ३ ॥ सतिगुर मिलीऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥

सद्गुरु को मिलने से चित्तवृत्ति पलट जाती है (सांसारिक विषयों से हट कर प्रभु भक्ति में आसक्त हो जाती है) और भक्तजन नवधा भक्ति के खजाने को ही खर्च करते हैं (लोगों में बांटते हैं, और (स्वयं भी) खाते (उपभोग करते) हैं।

अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निजघरि वसै निजथाइ ॥

अठारह प्रकार की सिद्धियां भक्तों के पीछे लगी फिरती हैं और भक्त जन निज हृदय के निजस्वरूप में निवास करते हैं। (निजस्वरूप को पहचान कर उसी में लीन रहते हैं)।

अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥

हरि प्रभु में चित्तवृत्ति लगी रहने के कारण भक्तों को उनमन (ऊँची) अवस्था की प्राप्ति हो जाती है और उनके आत्म लोक में सदैव अनाहत संगीत बजता रहता है।

नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥२॥

(श्री गुरु अमरदास) नानक जी (कथन करते हैं) हरि प्रभु की भक्ति उनके ही मन में निवास करती है, जिनके मस्तक पर प्रभु ने प्रारम्भ से ही (ऐसा) भाग्य लिख कर डाल दिया है।

पउड़ी ॥ हउ ढाढी हरिप्रभ खसम का हरि कै दरि आइआ ॥

मैं अपने मालिक हरि प्रभु का यश गायन करने वाला (चारण) हूँ और अपने प्रभु का यश गायन करने के लिए उसके द्वार पर आया हूँ।

हरि अंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥

हरि प्रभु ने अपने महलों के अन्दर बैठे हुए मेरी पुकार सुन ली और मुझे अपने सम्मुख बुला लिया।

हरि पुछिआ ढाढी सदि कै कितु अरथि तूं आइआ ॥

मुझ हरि यश गायन करने वाले चारण को हरि प्रभु ने बुला कर पूछा कि तुम किस प्रयोजन से यहां आये हो।

नित देवहु दानु दइआल प्रभ हरिनामु धिआइआ ।।

(मैंने उत्तर दिया) हे दयालु प्रभु ! आप मुझे यह दान दो कि मैं नित्य-प्रति आपके दुख हर्त्ता नाम का स्मरण करता रहूं (ऐसा दान पाने के उद्देश्य से ही द्वार पर आया हूँ)।

हरि दातै हरिनामु जपाइआ नानकु पैनाइआ ।।२१।।१।।सुधु

(श्री गुरु रामदास) नानक जी (कथन करते हैं) दाता हरि ने प्रसन्न होकर मुझे हरि नाम का जाप करने को दिया और सम्मान सूचक वस्त्र (शिरोपा) प्रदान किया (पहनाया) ।।२१।।

सुधु का तात्पर्य है शुद्ध अथवा संशोधित। गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी गुरु अर्जुन देव जी ने भाई गुरुदास जी से ग्रन्थ में क्रमानुसार लिखवाई थी। लिखने के बाद गुरु साहब वाणी के दर्ज किए गए अंश को देखते होंगे और भाई गुरुदास जी के लिए संकेत देते होंगे कि इतना अंश बिलकुल शुद्ध दर्ज हुआ है और इसका संशोधन कर दिया गया है। इस संशोधित अंश के लिए शुद्ध अथवा सुधु शब्द का प्रयोग किया गया है।

□

१ओं सतिगुर प्रसादि ।।

सिरीरागु कबीर जीउ का ।।

एकु सुआनु कै घरि गावणा ।।
जननी जानत सुतु बडा होतु है
इतनाकु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ।।
मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ।।१।।
ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ।।
कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ।।१।।रहाउ।।
कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ।।
रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी
इनि बिधि भवसागरु तरणा ।।२।।
जां तिसु भावै ता लागै भाउ ।।
भरमु भुलावा विचहु जाइ ।।
उपजै सहजु गिआन मति जागै ।।
गुरप्रसादि अंतरि लिव लागै ।।३।।
इतु संगति नाही मरणा ।।
हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ।।१।।रहाउ दूजा।।

□

भक्त कबीर दास जी इस शब्द में मानव जीवन की नश्वरता का संकेत दे रहे हैं। प्रत्येक जीव मरणशील है परन्तु अज्ञानवश वह इस तथ्य को नहीं समझता। समझ तब सकता है जब विषयों का साथ छोड़कर प्रभु भक्ति और ज्ञान के मार्ग पर चले। ज्ञानवान जीव जन्म मरण से मुक्त हो सकता है।

□

एकु सुआनु कै घरि गावणा ॥

यह गायकी के लिए संकेत है। श्री राग में गुरु नानक देव जी महाराज का एक शब्द है 'एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि'। यहाँ यह संकेत दिया जा रहा है कि कबीरदास जी के इस शब्द को गुरु नानकदेव जी के 'एक सुआनु' शब्द की लय पर ही गायन करना है। गायन सम्बन्धी संकेत गुरुवाणी में अनेक स्थलों पर प्राप्त होते हैं।

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतनाकु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥

माता तो यह समझती है कि (मेरा) पुत्र बड़ा हो रहा है परन्तु वह इतना भी नहीं जानती कि दिन प्रति दिन पुत्र की आयु घट रही है।

मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥

मेरा मेरा करके (कहकर) पुत्र के साथ अत्यधिक लाड़ प्यार करती है। (परन्तु माता की इन हरकतों को) देखकर यमराज हंसता है ॥१॥

ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥ कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥१॥रहाउ॥

हे प्रभु ! आपने ही सारे संसार को ऐसे भ्रम में लगा दिया है। (वास्तविकता को) यह समझ भी कैसे सकता है जब यह माया (अज्ञान) द्वारा विमोहित हो रहा है ॥१॥रहाउ॥

कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥

कबीरदास जी कहते हैं, हे प्राणी ! विषय वासना के रस को छोड़ दो, इनकी संगति में रहकर (तुम्हारा बारबार जन्म लेना और) मरना निश्चित है।

रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इनि बिधि भवसागरु तरणा ॥२॥

हे प्राणी ! सर्वत्र रमण करन वाले प्रभु का नाम जपो, जिस वाणी द्वारा प्रभु का नाम जपा जाता है वही वाणी अनन्त काल तक जीवन (अमर जीवन) देने वाली है और इस प्रकार प्रभु का नाम जपकर ही संसार सागर से तरा जा सकता है ॥२॥

जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥ भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥१॥

जब जीव उस प्रभु को अच्छा लगता है तभी उसके मन में प्रभु का प्रेम

लगता है और प्रभु प्रेम के द्वारा ही अन्तःकरण में से भ्रम की छलना दूर होती है ।

उपजै सहजु गिआन मति जागै ।। गुरप्रसादि अंतरि लिव लागै ।।३।।

जब गुरु की कृपा से चित्तवत्तियाँ अन्तर्मुखी हो जाती हैं तो स्थिर अवस्था की प्राप्ति होती है और स्थिर अवस्था के प्राप्त होने पर ज्ञान की उत्पत्ति होती है और विवेक बुद्धि जागृत होती है ।।३।।

इतु संगति नाही मरणा ।। हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ।।१।।रहाउ दूजा ।।

(ज्ञान विवेक बुद्धि और सतोगुण) इनकी संगति में रहने से मरना नहीं होता । (बार बार जन्म मरण नहीं होता) जब जीव प्रभु के हुक्म को पहचान लेता है तभी उस मालिक प्रभु से मिलन होता है ।

।।१।।रहाउ दजा।।

□

सिरीरागु त्रिलोचन का ।।

माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ।।
कुटंबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ।।१।।
दूड़ा आइओहि जमहि तणा ।। तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ।।
कोई कोई साजणु आइ कहै ।। मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ।।
मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ।।१।।रहाउ।।
अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ।।
माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ।।२।।
बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ।।
माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ।।३।।
आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराओ ।।
तह करदल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ।।४।।
जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा ।।
ऐजी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रामईआ ।।५।।२।।

□

इस शब्द में भक्त त्रिलोचन जी मोह माया के बंधन में फँसे जीव को चेतावनी दे रहे हैं और प्रभु चरणों में बन्धन मुक्त होने की कृपा कर रहे हैं ।

□

माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ।।

हे प्राणी ! तुम्हारे मन में माया का मोह इतना अधिक भर गया है कि

तुम वृद्धावस्था और मृत्यु के समय होने वाले कष्टों के भय को बिल्कुल भूल गये हो।

कुटंबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥१॥

हे कपटी मनुष्य ! जैसे सूर्य को देखकर कमल का फूल विकसित हो उठता है वैसे ही तुम अपने कुटुम्ब को देखकर प्रसन्न हो उठते हो और पराए घरों (स्त्रियों) को (कुदृष्टि से) देखते फिरते हो ॥१॥

दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥ तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥

यमराज के दूत भागे चले आ रहे हैं। उन दूतों के सामने मैं टिक नहीं सकता।

कोई कोई साजणु आइ कहै ॥ मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥
मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥१॥रहाउ॥

कोई बिरला सन्त जन ही इस संसार में आकर कहता है कि हे मेरे प्रभु मुझे आकर मिलो, मुझे अपनी भुजाओं में भर लो। हे मेरे सर्वत्र रमण-शील प्रभु ! मुझे मिलो और मुझे माया के बन्धनों से छुड़ा लो ॥१॥रहाउ॥

अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥

अनेकों-अनेकों राजसी सुख उपभोगों में पड़कर प्राणी प्रभु को भूल गया है और इस संसार सागर में गिरा पड़ा अपने आपको अमर हो गया (मानता) है।

माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥२॥

हे आलसी मनुष्य माया द्वारा ठगे गए तुम प्रभु को याद नहीं करते और तुमने मानव जन्म व्यर्थ गँवा दिया है ॥२॥

बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥

हे प्राणी ! तुम्हें ऐसे भयानक और कठिन मार्ग पर चलना होगा जहाँ सूर्य और चन्द्र का प्रवेश नहीं होगा (अर्थात् जहाँ न सूर्य का प्रकाश होगा न चन्द्रमा का, घोर अन्धकार होगा)।

माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जा तजीअले संसारं ॥३॥

हे प्राणी ! जब तू इस संसार का त्याग कर के जायेगा, तब माया का सारा मोह भूल जायेगा (माया के सभी सम्बन्ध यही छूट जायेगें क्यों नहीं इन्हें अभी से छोड़ देता) ॥३॥

आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराओ ॥

आज मेरे मन में यह विचार स्पष्ट प्रकट हो गया है कि तुम्हें स्मरण किये बिना मुझे धर्मराज को अवश्य ही देखना पड़ेगा।

तह करदल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥४॥

वहां (धर्मराज के दरबार में) बड़े-बड़े बलवानों को यमदूत हाथों से ही मसल देते हैं। उनके सामने मैं टिक नहीं सकता ।।४।।

जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा ।।

जो भी कोई मुझे उपदेश देता है, तो वह यही बताता है कि नारायण प्रभु बन और तृण सर्वत्र (वनस्पति और प्रकृति) में रचा हुआ है।

ऐजी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलाचनु रामईआ ।।५।।२।।

त्रिलोचन जी कहते हैं कि हे मेरे सर्वत्र रमणशील प्रभु जी आप स्वयं ही सब कुछ जानते हो ।।५।।२।।

□

सिरी रागु भगत कबीर जीउ का ।।

अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई।।
सुरिनर गण गंध्रब जिनि महि त्रिभवण मेखुली लाई ।।१।।
राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ।।
जा की दिसटि नाद लिव लागै ।।१।।रहाउ।।
भाठी गगनु सिंङिआ अरु चुंङिआ कनक कलस इकु पाइआ ।।
तिसु महि धार चुऐ अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ।।२।।
एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ।।
तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ।।३।।
ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ।।
अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ।।४।।३।।

□

भक्त कबीर जी इस शब्द मे माया के स्वरूप का निरूपण करते हुए बताते हैं कि त्रिगुणी माया ने यद्यपि समस्त सृष्टि को विमोहित कर रखा है परन्तु सन्त कबीर पर उसका असर नहीं है क्योंकि उन्होंने राम नाम के अमृत रस का पान किया है। नाम रस पीने वालों पर माया का प्रभाव नहीं होता।

□

अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ।।

हे पंडित! एक आश्चर्य जनक बात सुनो, जिसके सम्बन्ध में अब कुछ भी कहा नहीं जा सकता। (कुछ कहने को नहीं रहा)

सुरिनर गण गंध्रब जिनि महि त्रिभवण मेखुली लाई ।।१।।

(बात यह है कि) जिस माया ने देवता, मानव, गण, गंधर्व आदि को मोहित कर रखा है और तीनों लोकों को अपनी कटि शृंखला में लगा (बांध) रखा है ।।१।।

राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥

(इस माया का प्रभाव कबीर पर नहीं है क्योंकि उसके अन्दर) प्रकाश-रूप राम के स्मरण का निरन्तर संगीत बजता रहता है।

जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥१॥रहाउ॥

जिस प्रभु की कृपा दृष्टि के कारण चित्तवृत्ति गुरु के शब्द नाद में लगी रहती है ॥रहाउ॥

भाठी गगनु सिंडिआ अरु चुंडिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥

कबीर नाम अमृत रस को पीता है, जिसके लिए दशम द्वार की भट्ठी तैयार की है। इड़ा और पिंगला दोनों नलकियां हैं और शुद्ध अन्तःकरण का एक स्वर्ण कलश (प्रभु से) प्राप्त किया है।

तिसु महि धार चुऐ अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ॥२॥

उस स्वर्ण कलश में दशम द्वार से अत्यन्त पवित्र आत्मिक आनन्द रस की धारा स्रवित होती रहती है और यह सभी रसों में उत्तम रस है जिसे दशम द्वार से टपकाया जा रहा है।

एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥

एक जो बात अपूर्व बन पड़ी है वह यह है कि मैंने अमृतरस पान के लिए वायु का प्याला सजाया (बनाया) है। अर्थात् प्राणायाम करके कुम्भक प्याला बनाया है।

तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥३॥

हे योगी ! कहो कौन है जो तीनों लोकों में एकमात्र सत्ता के रूप में विराजमान है। किसका प्रभाव अधिक है माया का या प्रभु नाम का ॥३॥

ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ॥

कबीर जी कहते हैं कि मुझें तो यह ज्ञात हुआ है कि वह एकमात्र पुरुषोत्तम प्रभु का नाम ही है इसलिए मैं उसी के रंग में रंगा जाता हूँ।

अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥४॥३॥

और सारी दुनिया तो भ्रम में ही भूली हुई है परन्तु मेरा मन राम नाम के अमृत रस को पीकर उसमें ही मदमस्त हो रहा है ॥४॥३॥

□

सिरीरागु बाणी भगत बेणी जीउ की ॥

पहरिआ कै घरि गावणा ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥

मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि एकु अगिआन सु नागा ॥

ते दिन संमलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥
गरभ छोडि मृत मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ॥१॥
फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ॥
चेति रामु नाही जमपुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ॥१॥रहाउ॥
बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥
रसु मिसु मेधु अंमृतु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ॥
जपु तपु संजमु छोडि सुक्रित मति रामनामु न अराधिआ ॥
उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बांधिआ ॥२॥
तरुण तेजु परत्रिअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥
उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुंनु न पछानिआ ॥
सुत संपति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइआ ॥
अवर मरत माइआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइआ ॥३॥
पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥
लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माधाणी ॥
ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥
अवगति बाणि छोडि मृत मंडलि तउ पाछै पछुताणा ॥४॥
निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥
लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥
थाका तेजु उडिआ मनु पंखी घरि आंगनि न सुखाई ॥
बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥५॥

□

भक्त वेणी जी इस शब्द में प्रभु नाम स्मरण की प्रेरणा दे रहे हैं। जब तक जीव माता के गर्भ में रहता है और कष्ट सहता है, केवल तब तक ही प्रभु को याद करता है। माता के गर्भ से मुक्ति पाते ही वह विषयों के सुख में आसक्त हो जाता है। प्रभु का नाम स्मरण नहीं करता और अन्त में पछताता है।

□

पहरिआ कै घरि गावणा ॥

श्री गुरु अर्जुनदेव जी महाराज द्वारा यह गायन शैली से सम्बंधित संकेत दिया गया है। जिस ताल और लय से श्री राग में 'पहरे' शीर्षक से संकलित गुरु नानक देवजी के शब्द का गायन करना है उसी ताल और लय में इस शब्द को भी गाने का संकेत दिया गया है।

रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ।।

हे मनुष्य ! जब तुम माता के गर्भ कुण्ड में थे (और उल्टे लटके हुए कष्ट में थे) तब तुमने चित्तवृत्ति पूर्णत: प्रभु के ध्यान में लगा रखी थी और तुम्हारी चित्तवृत्ति ऊर्ध्वमुखी (उच्च अवस्था की) थी ।

मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि एकु अगिआन सुनागा ।।

(माता के गर्भ में तुम) शरीर से मृत थे (शरोर का अहसास नहीं था) नाम पद प्रतिष्ठा का तुममें अहंकार नहीं था, दिन रात एक (प्रभु का ध्यान करते थे) और अज्ञान से नगण्य (अज्ञान हीन) थे ।

ते दिन संमलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ।।

उन दिनों की याद करो जब तुम महान कष्ट और दुख में थे । (उन दुखों से मुक्ति पाते ही) अब तुमने अपने चित्त को बहुत अधिक (सांसारिक आडम्बरों में) फैला लिया है ।

गरभ छोडि मृत मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ।।१।।

माता के गर्भ कुण्ड को छोड़कर जब से इस मृत्यु मण्डल पर आए हो तब से ही हे मनुष्य ! तुमने हरि प्रभु को भुला दिया है ।।१।।

फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ।।

हे मूर्ख ! भ्रम में पड़कर तू किस दुर्बुद्धि के पोछे लग गया है (अब भी संभल जा) नहीं तो फिर पछताएगा ।

चेति रामु नाही जमपुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ।।१।।रहाउ।।

राम के नाम का स्मरण कर, नहीं तो यमपुरी में जाएगा । प्रभु का आराधन किए बिना (व्यर्थ इधर उधर) मत घूमो ।।१।।रहाउ।।

बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ।।

यह जीव बाल्यावस्था में मनोविनोद और विभिन्न रसों की चिन्ता में ही लगा रहा है और पल पल (खानेपीने का ही) मोह सताता रहा है ।

रसु मिसु मेधु अंमृतु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ।।

युवावस्था में रस भोगने के बहाने विषय वासना के विष को पवित्र अमृत समझकर (सुखदायक जानकर) चखता रहा है और पाँच विकार शरीर में प्रकट होकर जीव को दुखी करते रहे हैं ।

जपु तपु संजमु छोडि सुक्रित मति रामनामु न अराधिआ ।।

प्रभु नाम का जाप, तप, इन्द्रिय संयम और शुभ कर्म को प्रेरणा देने वाली बुद्धि का त्याग कर दिया और राम के नाम की आराधना नहीं की ।

उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बांधिआ ॥२॥

युवावस्था में कामवासना उत्तेजित हो उठती है तो अनुचित मार्ग पर चलने से बुद्धि पर पाप की कालिमा लग जाती है और (काम वासना की तृप्ति के लिए) स्त्री को लाकर गले से बांध लेता है ॥२॥

तरुण तेजु परत्रिअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥

युवावस्था के तेज (उन्माद) में पराई स्त्रियों के मुख देखता फिरता है और समय कुसमय की भी पहचान (ज्ञान) नहीं करता।

उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुंनु न पछानिआ ॥

काम वासना में उन्मत्त होकर विषयों को अधिकता में स्वयं को विस्मृत कर बैठता है और पाप एवं पुण्य को भी नहीं पहचानता।

सुत संपति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइआ ॥

पुत्र और सम्पत्ति आदि को देखकर इस जीव का मन अहंकार करने लगता है और राम को हृदय से भुला बैठता है।

अवर मरत माइआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइआ ॥३॥

दूसरे (सम्बन्धियों) के मरने पर मन ही मन उसके धन को तोलते रहता है (कि यह कितना धन छोड़कर गया है और इस तरह धन का ही चिन्तन करते रहने से) यौन रस और मुख रस (की पूर्ति) के लिए जन्म गँवा लिया है ॥३॥

पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥

वृद्धावस्था आने पर बाल पक जाते हैं और सफेद कमल के फूल से भी अधिक श्वेत हो जाते हैं और आवाज इतनी धीमी हो जाती है, लगता है कि सातवें पाताल से निकल कर आ रही हो।

लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माधाणी ॥

नेत्रों से जल बहने लगता है, बुद्धि नष्ट हो जाती है और शरीर का बल क्षीण हो जाता है तब हृदय में कामनाओं की मथनी डल जाती है अर्थात् हृदय में अनेकानेक कामनाएँ उत्पन्न होकर हृदय को मथनी की तरह मथती रहती हैं।

ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥

यद्यपि शरीर रूपी कमल कुम्हला जाता है फिर भी बुद्धि में विषय वासनाओं की धारासार वर्षा होती है।

अवगति बाणि छोडि मृत मंडलि तउ पाछै पछुताणी ॥४॥

इस मर्त्य लोक में आकर प्रभु की वाणी (भक्ति) को छोड़ कर जीव को पीछे पछताना पड़ेगा ॥४॥

निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥

छोटे छोटे जीवों (नाती-पोतों) को देखकर मन में प्यार की ध्वनि उत्पन्न होती है उनको देखकर अहंकार करने लगता है, परन्तु यह नहीं समझता (कि सब कुछ छोड़ कर जाना है)।

लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥

आंखों से कुछ दिखाई नहीं देता फिर भी परिवार सहित और अधिक दिन तक जीने का लालच करता है।

थाका तेज उडिआ मनु पंखी घरि आंगनि न सुखाई ॥

शरीर का सारा बल समाप्त हो जाता है और जीव रूपी पक्षी जब अन्य लोक को उड़कर चला जाता है तो घर के आंगन में रखा हुआ मृतदेह शोभा नहीं देता (सगे सम्बन्धी ऐसा सोचने लगते हैं और जल्दी से श्मशान भूमि ले जाना चाहते हैं।)

बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥५॥

भक्त वेणी जी कहते हैं हे भक्तजनो सुनो ! मरने पर मुक्ति किसने पाई है। मुक्ति तो जीते जी मिलती है। जो व्यक्ति जीते जी कामासक्ति से दूर प्रभु नाम स्मरण करते हुए निर्लिप्त जीवन जीता है उसे ही मोक्ष की प्राप्ति होतो है।

□

सिरीरागु ॥

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥
जउपै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१॥रहाउ॥
तुम जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२॥
सरीरु अराधै मोकउ बीचारु देहू ॥
रविदास समदल समझावै कोऊ ॥३॥

□

भक्त रविदास इस शब्द में जीव और ब्रह्म की अभेदता का वर्णन कर रहे हैं। उनके अनुसार जीव और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है। दोनों का मूल स्वरूप एवं गुण एक जैसे ही हैं, अन्तर केवल उपाधि का है।

□

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥

हे प्रभु ! तुम में और मुझ में, मुझ में और तुम में किस प्रकार का अन्तर है। वैसा ही अन्तर है जैसा कि स्वर्ण और स्वर्ण से बने कंगन में और जिस प्रकार जल और जल से उत्पन्न लहरों में होता है ।।१।।

जउपै हम न पाप करंता अहे अनंता ।। पतित पावन नामु कैसे हुंता ।।१।।रहाउ।।

हे अनन्त प्रभु जी ! यदि हम पापी जीव पाप न करते तो आपका पतित पावन (पापियों को पवित्र करने वाला) नाम कैसे (सार्थक) होता ।।१।। ।।रहाउ।।

तुम जु नाइक आछहु अंतरजामी ।। प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ।।२।।

हे अन्तर्यामी प्रभु ! तुम जब नायक हो (हमारे स्वामी हो तो तुम्हारा स्वामित्व भी हमारे ही कारण है क्योंकि) स्वामी से दास जाना जाता है और दास के रहने पर ही स्वामी (का महत्व है) ।।२।।

सरीरु अराधै मोकउ बीचारु देहू ।। रविदास समदल समझावै कोऊ ।।३।।

हे प्रभु ! मुझे यह सूझ दो कि जब तक मेरा यह शरीर है मैं तुम्हारी आराधना करता रहूँ। रविदास को हे प्रभु ! कोई यह भी (समझाने वाला महापुरुष मिल जाय जो यह) समझाए कि प्रभु समदर्शी है (सभी जीवों में व्याप्त है) ।।३।।

□

यहां श्री राग की समाप्ति है। गुरु ग्रन्थ साहिब के पृ० १४ से आरम्भ होकर पृ० ९३ पर समाप्त होने वाले इस राग में कुल शब्दों (पदों) का योग २१० है जिसका क्रम इस प्रकार है :

श्री गुरु नानक देव जी के शब्द—३३, गुरु अमरदास जी के शब्द—३१, गुरु रामदास जी के शब्द—६, श्री गुरु अर्जन देव जी के शब्द—३०, श्री गुरुनानक देव जी की अष्टपदियां १७, गुरु अमरदास जी की अष्टपदी ८, श्री गुरु अर्जुन देव जी की अष्टपदो—२, श्रो गुरु नानक देव जी की छिन्न —१, श्री गुरु अर्जुन देव जी की छिन्न—१, श्री गुरु नानक देव जी के पहरे—२, श्री गुरु रामदास जी का पहरा—१, श्री गुरु अर्जुन देव जी का पहरा—१, श्री गुरु रामदास जी का छंत—१, गुरु अर्जुन देव के छंत—६, श्री गुरु रामदास जी का वणजारा १, श्री ाग की वार के श्लोक—२१,—वार के महले—२२, वार की पउड़ी—२१, भक्त बाणी कबीर जी के शब्द—२, त्रिलोचन जी का शब्द—१, बे[illegible]जी का शब्द—१, रविदास जी का शब्द १, ।